TORIES AND PLAYS
SRI AUROBINDO

नाटक
और कहानियां

श्री अरविंद-साहित्य
खण्ड- १५

नाटक और कहानियाँ

STORIES AND PLAYS

भाग दो

श्रीअरविंद

श्रीअरविंद सोसायटी
पांडिचेरी - 2
1972

अनुवादक :

अनुबेन

प्रथम संस्करण, वर्ष 1972

Price Rs. 22.00

मूल्य रु० 22.00

© स्वत्वाधिकारी: श्रीअरविंद आश्रम ट्रस्ट, पांडिचेरी-2, 1972

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-2

मुद्रक : ऑल इन्डिया प्रेस,
श्री अरविंद आश्रम,
पांडिचेरी-2.

विषय सूची

नाटक और कहानियाँ

(द्वितीय खण्ड)

नाटक

बसराके वजीर	343
ईडरका राजकुमार	455
चक्कीघरकी कन्या	507
ब्रूटका राजघराना	549
अकब और ऐसर हद्दान	557
मथुराका राजकुमार	563
पापका जन्म	571
इलनीकी डाइन	581

कविताओंकी कहानियाँ

प्रेम और मृत्यु	601
बाजी प्रभु	625
राक्षस	635
मृतकोंका वार्तालाप*	641
चित्रांगदा	655
विदुला	663
उलूपी	677
ऋषि	687
उर्वशी	699

*यह कविता नहीं, वार्तालाप ही है।

कहानियाँ

मायावी घड़ी 733
आबेलार्डका दरवाजा 747
शैतानका कुत्ता 771
सुनहरी चिड़िया 779

पुस्तक परिचय 785

श्रीअरविंद

बसराके वजीर

नाटक के पात्र

हारून-अल्-रशीद —— खलीफा।

जाफर विन बरमक (बारमकी) —— उनका वजीर।

शेख इब्राहीम —— खलीफाके बागका रखवाला।

मसरूर —— हारून-अल्-रशीद का मित्र और साथी।

अलजैनी (जैनीके) मुहम्मद बिन सुलेमान —— हारूनका चचेरा भाई, बसराका राजा।

अलफज्ल इब्ने सावी —— उनका मुख्य वजीर।

नूरुद्दीन —— अलफज्लका बेटा।

अलमुईन बिन खाकान – बसराका दूसरा वजीर।

फरीद —— अलमुईनका बेटा।

सालार —— अलजैनीका विश्वासपात्र।

मुराद —— बसराकी पुलिसका एक तुर्क कप्तान।

अजीब —— अलमुईनका भतीजा।

संजार —— बसराके राजमहलका प्रबन्धक।

अजीज ——
अब्दुल्ला —— } बसराके व्यापारी।

मुअज्जम —— एक दलाल।

अजीम —— अलफज्लका कारिन्दा।

हरकूस —— इब्ने सावीके घरमें इथियोपियाका एक हिजड़ा।

करीम —— बगदादका एक मछुआ।

गुलाम, सैनिक, जल्लाद।

आमिना —— अलफज्ल इब्ने सावीकी पत्नी।

दुनिया —— अलफज्ल इब्ने सावीकी भतीजी।

अनीस अलजलीस —— फारसकी बांदी।

खातून —— अलमुईनकी पत्नी, आमिनाकी बहन।

बिल्कीस ——
मैमूना —— } बहनें, बादमें अजीबकी बांदियां।

अन्य बांदियां।

* उर्दू शब्दोंके लिये देखिये नाटकके अन्तमें।

प्रकाशक का वक्तव्य

श्रीअरविन्दके बड़े पैमानेपर लिखे गये नाटकोंमेंसे यह एक है। यह बड़ौदामें लिखा गया था। इसका इतिहास मजेदार है। शायद श्री अरविन्दको अपनी जवानीमें लिखी इस कृतिके लिये विशेष प्रेम था। इसी कारण कलेक्टेड 'पोएम्स एण्ड प्लेज की प्रस्तावनामें उन दो पुस्तकोंका उल्लेख किया गया था जो इस शताब्दीके आरम्भमें राजनैतिक जीवनके उतार चढ़ावमें कहीं खो गयी थीं उनमें एक थी कालिदासके मेघदूतका अनुवाद, दूसरा बसराके वजीर।

मेघदूतके अनुवादकी पांडुलिपि अब भी अप्राप्य है। लेकिन नियतिने करवट बदली और यह नाटक सरकारी अभिलेखोंमें लगभग ५० वर्षतक खोये रहनेके बाद ऐसे समय जब उसे रद्दीके टोकरेमें फेंका जा रहा था अभिलेख रखनेवालेके कुतूहलकी कृपासे मिल गया। जिस कापीमें यह नाटक लिखा गया है वह अलीपुर षडयंत्रके प्रख्यात मुकदमेंमें दिखायी गयी थी, और अब भी उसपर अंग्रेजी न्यायालयकी मुहर और हस्ताक्षर दिखायी देते हैं। यह पांडुलिपि लेखकके अपने हाथकी लिखी हुई है और इतने वर्षोंके बाद तथा इतने दुर्व्यवहारके बाद भी यह अच्छी हालतमें है।

अलीपुर बमकांडके सिलसिलेमें जब श्रीअरविन्दको बन्द किया गया तो पुलिस उनके घरकी तलाशी लेकर सारे कागजात, अपने साथ ले गयी थी। बड़ौदामें लिखी रचनाएं भी इन्हीं कागजोंमें थीं। इनका बमके साथ कोई सम्बन्ध नहीं था फिर भी इन सबको मिस्टर एल० बर्लेके सामने पेश किया गया और वहांसे प्रदर्शित करनेके लिये सेशन कोर्टमें भेजा गया। वे सब उनके रेकार्डका एक अंग बन गये। मुकदमेके सम्बन्धमें तो मात्र कुछ पत्रोंका ही उल्लेख किया गया था जिनका जवाब उनके वकीलको देना पड़ा। इस उद्देश्यके लिये कुछ नकलें तैयार की गयीं और शायद इसी तरह इनके कुछ पत्र जो इन्होंने पत्नीके नाम लिखे थे जनताके सामने आये। अन्य कागजात अभिलेखोंके साथ ही रहे। श्रीअरविन्दकी 'कारा काहिनी' से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें इस बातका पता नहीं था कि उनकी सब रचनाएं सरकारके पास हैं इसीलिये उन्हें सारी हस्तलिपियोंके खो जानेका खेद था। अलीपुर बमकांडके कागजात वगैरहको १९३६ में नष्ट कर देनेकी बात थी, यहांतक कि वे छांटकर अलग भी कर दिये गये थे ताकि उन्हें पुराने रद्दी कागजोंके साथ बेच दिया जाय। लेकिन तत्कालीन अभिलेख-पाल——श्री जितेन्द्रनाथ घोष दोस्तीदार (जो अब मेरे आफिसमें सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं) ने श्रीयुत् चन्द्रभूषण बैनरजी, एक प्रतिष्ठित वकीलसे निवेदन किया कि इस जगप्रसिद्ध अलीपुर बमकेसके कागजातको संभालकर रखनेके लिये

कुछ करना ही चाहिये। श्रीयुत् बैनरजी उस समयके जिलाध्यक्ष मिस्टर एलिससे मिले और इस दुर्लभ निधिको नष्ट होनेसे बचानेके लिये अनुरोध किया। मिस्टर एलिस नियमोंसे जकड़े हुए थे। उन्होंने अभिलेख-पालसे कहा कि वह सारे अभिलेख अभिलेखालयके किसी कोनेमें छुपा रखे लेकिन प्रकट रूपमें यही दिखाये कि सारे कागज नष्ट कर दिये गये हैं। ये अभिलेख गैर सरकारी तौरपर बारह वर्ष तक वहां रहे। १६४६ में उन्हें उस अंधेरे कोनेसे निकालकर विशेष रूपसे उन्हींके लिये लायी गयी तथा स्वयं जजके अपने कमरेमें रखी स्टीलकी अलमारीमें रखा गया। कागजोंके छोटे-छोटे बण्डल बड़ी अलमारीके सारे खानोंमें भर गये। लेकिन उस समय जब एक बार कुछ जरूरी कागजात और विशेषरूपसे श्रीअरविन्दकी रचनाओंकी खोज-बीन की तो निराशा ही हाथ लगी। मई १६५१ में प्रोफेसर डा० कालिदास नागने एक बार बातों बातोंमें इन पंक्तियोंके लेखकसे कहा कि यह बड़े ही दुखकी बात है कि अभिलेख बचा तो लिये गये हैं फिर भी जिन जरूरी कागजोंकी आवश्यकता है वही नहीं मिल रहे हैं। उस समय सबका यही ख्याल था कि पुलिस या राजनीतिक विभाग-ने किसी कारणसे वे कागज ले लिये होंगे। एक सुप्रसिद्ध वकील, श्री नरेश चन्द्र बोस, स्वर्गीय अतुल चरण बोस, हाई कोर्टमें अंग्रेजोंकी ओरसे नियुक्त किये गये वकीलके बेटेसे इस सिलसिलेमें सलाह की गयी, उन्होंने अपने पिताके पुस्तकालयसे कागजों-का एक पुलन्दा लाकर दिया जो अलीपुर बमकेसके कागजातोंके साथ रखा था। इनके अध्ययनसे ऐसा लगा कि शायद श्रीअरविन्दकी रचनाओंका कुछ पता लग सके। नयी सहायताके प्रकाशमें श्रीअरविन्दकी अप्राप्य रचनाओंकी खोज दुबारा आरम्भ हुई। इस बार परिणाम अच्छा निकला। श्रीअरविन्दकी लगभग सारी रचनाएं जो अली-पुर बमकेसके कारण यहां लाई गयी थीं मिल गयीं। उनमें अंग्रेजीमें लिखे दो पूर्ण नाटक भी हैं।

सन्तोष चक्रवर्ती
न्यायाधीश अलीपुर

अगस्त १६५१

अंक १

दृश्य १

(महलकी ड्योढ़ी)

मुराद और संजार

मुराद — मीर मुँशी, मैं कहता हूँ, मैं इसे घंटे भरके लिये भी बरदाश्त न करूंगा। जरा मेरे पैरोंको सुलतानके दीवाने खासतक पहुँच लेने दो और वहां पहुँचकर अपने ऊपर की गयी ज्यादतियोंके खिलाफ आवाज बलन्द करने दो। शाहको, जंगली गोरिले और बनमानुससे मिले हुए उस आदमीमें जिसे वह अपना वजीर कहते हैं और मेरे जैसे शरीफ इनसानमें जो खुदाकी छाया है, चुनाव करना ही होगा।

संजार — उसकी बेजा हरकतोंके शिकार तुम अकेले नहीं हो। सारा बसरा और आधा दरबार उसके जुल्मोंकी शिकायत करता है।

मुराद — फिर जैसे उसकी अपनी सख्ती और बदमिजाजी कुछ कम हो, वह अपने बेटेकी बदतमीजी भी हमारे ऊपर लादता है। वह भी बड़े बन्दरका बेटा छोटा बन्दर है।

संजार — वह शरारतकी पुड़िया, वह बन्दरका बच्चा तलवोंपर लकड़ी खाकर काफी सीधा हो सकता है, लेकिन साहब, लगानेकी हिम्मत कौन करेगा ? मुराद, खबरदार, सुलतान सुलतान हैं और इसलिये बिलकुल बेदाग ! वे अपने प्यारे काले फरिश्तेकी बुराई न सुनेंगे। बेहतर है कि तुम अच्छे वजीर अलफज्ल इब्ने सावीसे शिकायत करो।

मुराद — मेहरबान अलफज्ल ! उन्हींकी हस्तीसे सारे बसरामें चमक-दमक है।

संजार — मैं भी तुम्हारी बात मानता हूँ। उन्होंने ऐसा शान्त और रोशन मिजाज पाया है कि किसी आदमी या जिन्दा जानवरको जानबूझकर चोट नहीं पहुँचा सकते। कभी-कभी सोचता हूँ कि हर अच्छा और दयालु आदमी चांद-सा होता है और अपने चारों तरफ रोशनीका घेरा लिये रहता है जब कि काले और दुष्ट मिजाजके साथ-साथ ठंडा बादल घूमता है। हम जब ऐसे लोगोंके पास

जाते हैं तो उसे महसूस कर सकते हैं।

(इब्ने सावी आते हैं)

इब्ने सावी –– (स्वगत) कनीजों में सबसे ज्यादा खूबसूरत! यह अच्छा काम मिला मुझे! अरे मेरा खुशमस्त, रंगीन मिजाज नूरुद्दीन लड़कियोंका शिकारी और क्वांरी लड़कियोंके दिलोंको फांसनेवाला जाल। शायद वह इस कामको ज्यादा अच्छी तरह करता। वह इस कामको खूब पसन्द भी करेगा लेकिन मुझे डर है कि उसके हाथों यह खूबसूरत माल मालिक तक बेदाग न पहुँच सकेगा। यह तो खतरनाक होगा! बदमाश! दस हजार दीनारसे ऐसी उमदा चीज मिलना नामुमकिन है। इतनी सारी दौलत यूँही बेकार जायगी! लेकिन सुलतानोंको मामूली आदमीसे कहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है इसलिये आराम करनेके लिये उन्हें खूबसूरत और मजेदार चीजें मिलनी ही चाहियें। खुदाने उन्हें नायब बनाकर कड़ा इन्साफ करने और शान्त चेहरेके साथ हुकूमत करनेके लिये भेजा है, उनका काम कोई आसान नहीं है।

संजार –– वजीरोंके वजीर, अस्सलाम अलेकुम, आपको रसूलकी सलामती मिले।

मुराद –– अलफज्ल इब्ने सावी, अस्सलाम अलेक।

इब्ने सावी –– व अस्सलाम, मेरे कोतवाल, तुम इधर कैसे? शहरका काम है कुछ?

मुराद –– वजीर, मेरे मेहरबान, मैं अपने शाही मालिकके सामने वजीर अलमुईन-की शिकायत करूंगा।

इब्ने सावी –– तुम नादानी करोगे। अलमुईनका मन काला और खतरनाक है। लेकिन उसमें ऐसी खूबियां भी हैं जिनकी वजहसे वह नियामतों का हकदार है। वह इन नियामतोंको बड़े गुरूर और बदनीयतीके साथ इस्तेमाल करता है। लेकिनं मुराद, सुलतानके आगे उसकी शिकायत न करना। वे तुम्हारी शिकायतोंको उसकी खूबियोंके साथ तौलेंगे और वे तुम्हारी शिकायतोंको अदना कीनें से भरा और उसकी खूबियोंको आलातरीन मानेंगे। अन्तमें तुम्हारे लिये उनके मनमें एक खामोश नाराजगी पैदा हो जायगी।

मुराद –– मैं आपकी सलाहके मुताबिक चलूँगा, जनाब।

इब्ने सावी –– मेरे ईमानदार तुर्क, यही ठीक होगा।

संजार –– तशरीफ ला रहे हैं।

(अलमुईनका प्रवेश)

मुराद –– अस्सलाम अलेकुम इब्ने खाकान।

अलमुईन –– कप्तान साहब, आप बड़ी संगदिलीसे हुकूमत करते हैं। कप्तान, अपने

तौर-तरीके बदलिये और अपनी चाल-ढाल भी। मैं जानता हूँ, आप तुर्क हैं।

मुराद -- आप सारी सल्तनतपर जैसे राज करते हैं, मैं उससे ज्यादा ईमानदारीके साथ बसरेपर हुकूमत करता हूँ।

अलमुईन -- सिपाही! बदतमीज तुर्कमान!

इब्ने सावी -- नहीं, बिरादर अलमुईन! इतनी नाराजगी क्यों?

अलमुईन -- वह गलत तरीके से हुकूमत करता है।

इब्ने सावी -- कौनसी खास बात हो गयी?

अलमुईन -- लीजिये, सुनिये। अभी उस दिनकी बात है। शहरके लुच्चोंने मेरे छोटे नर्म दिल फरीदपर बुरी तरह लाठियां और डंडे बरसाये। इस आदमी-की घूँसखोर पुलिसने इसके हुकुमसे उस बेइज्जतीके वक्त बेहयाईसे मोमबत्ती दिखायी थी। जब वे बदमाश पकड़े गये तो उन्हें एक बेवकूफ काजीके सामने झूठ बोलकर छुड़ा दिया गया।

मुराद -- सारा शहर गवाह है कि वजीर साहबका बेटा, एक ऐसा रत्न है जिसकी नस-नसमें बदी भरी हुई है। वह अपने अब्बाके भारी भरकम नामकी छायामें सारे शहरमें उत्पात करता फिरता है। और जो उसपर हाथ उठाते हैं वे कोई गुनाह नहीं करते, औरोंकी हिफाजत करते हैं।

इब्ने सावी -- सुनो, सुनो, एक प्यारे भाईके नाते मेरी बात सुनो। मुराद जो कहता है ठीक कहता है। तुम्हारा फरीद तुम्हारे सामने कितना भी फरिश्ता बनकर आंखें झपकता रहे पर बाहर जाते ही आधे शैतानकी तरह दहाड़ता है। वजीर साहब, मुसलमानोंके किसी शहरमें आजतक ऐसी फजीहत नहीं हो पायी। ऐसी शर्मनाक हरकते सिर्फ ईसाई शहरोंमें बेझिझक हो सकती है, बसरामें या संस्कृतिके किसी भी स्थानपर ऐसा नहीं हो सकता। उसे जल्द ही दुरुस्त करना चाहिये।

अलमुईन -- लेकिन बिरादरम, आपका नूरुद्दीन भी दूधका धुला नहीं है। उसने भी नाम कमाया है।

इब्ने सावी -- ये सब एक दिलेर और खुले दिलवाले मिजाजकी पहली तूफानी निशानियाँ हैं। जीवट घोड़े काबूमें आते हैं तो सवारीके लिये सबसे अच्छे होते हैं। मेरा बेटा भी वैसा ही होगा। आपके फरीदकी पाशविक दिशा भी अगर इतनी आसानीसे सोनेमें बदल जाय तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

अलमुईन -- वह चाहे जैसा रहा हो, है तो वजीरका बेटा। यह तुर्क इस बातको भूल गया।

इब्ने सावी -- भाईसाहब, ये उसूल हमारी मुस्लिम हुकूमतकी शानके खिलाफ हैं। इनमें बर्बर यूरोपकी बू आती है। इस्लाममें सुलतानके नीचे सब इंसान बराबर हैं।

अलमुईन -- अच्छा भाई तुर्क, तुम्हें माफ करता हूँ।

मुराद -- माफ ! वजीर साहब, सलाम अलेक।

इब्ने सावी -- मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहा हूँ।

अलमुईन -- तुर्क, व अस्सलाम।

इब्ने सावी -- सलाम, भई, जरा निगाह रखना।

(मुरादके साथ जाता है)

अलमुईन -- व अस्सलाम बिरादरम। क्या मैं खुशी-खुशी तुम्हारे नाक-कान न ऐंठूँगा और प्यारे बिरादरानीकी मिठासके साथ तुम्हारी बिरादराना दाढ़ीके एक-एक बालको न नोच डालूँगा ? लानत है बेकार नेकियोंकी बकवास करनेवाले, किसी दिन मैं तुम्हारे तलवोंपर डण्डे लगवाकर तुम्हारी नसीहतें सुनूँगा। तब तुम चीख-पुकार करोगे, बावेला बजाओगे, वह एक अनूठा वाज होगा । (संजारको देखकर) तुम ! तुम ! तुम यहां जासूसी कर रहे हो ! तू चोरी-चोरी सुन रहा था और अब मुझे इसके लिये झिड़कियां खानी पड़ेंगी। खैर, मैं भी तुझे देख लूँगा।

संजार -- सरकार, मैं हाथ जोड़ता हूँ, मेरा मतलब आपको नाराज करनेका जरा भी न था।

अलमुईन -- कुत्ते ! मैं तुझे पहचानता हूँ। जब मैं पीठ फेर लेता हूँ तो तू भोंकता है और मेरे सामने दुम हिलाता है। तुझे याद रखूँगा।

(जाता है)

संजार -- लो अलमुईन, इब्ने खाकन चला। कुत्तेका बेटा, कुत्तेका बाप और अपने-आप कुत्ता ! तू घूरेपर जनमा था, तेरा अन्त भी घूरेपर होगा।

(जाता है)

दृश्य २

(अलमुईनके मकानका एक कमरा)

अलमुईन, खातून

खातून — तुमने लाड़-प्यार करके लड़केको इतना बिगाड़ दिया है उसने इन्सानकी शकल-सूरततक गंवा दी है। अल्लाहकी बड़ी मुहर और आसमानी तसवीर इस सिक्केपरसे मिट-सी गयी है। अब सर्फ निकम्मी धातु बच रही है जो उनके फंरिश्तोंमें कभी टकसाल न होगी।

अलमुईन — ओह, हमेशा बकझक, बकझक! तुम्हारी जगह बांदी होती तो मैं ज्यादा खुशनसीब होता। जब वह बढ़-बढ़कर बोलती तो मारपीटकर उसकी अक्ल ठिकाने ला सकता।

खातून — ओह, मैं जानती हूँ अगर मेरी पीठपर बड़े रिश्तेदार न होते और मेरी हिफाजतके लिये तलवारें न होतीं तो तुम मेरे साथ भी कुछ उठा न रखते। हालांकि मेरा दरजा तुमसे इतना ही ऊंचा है जितना किसी गंदे-से-गंदे अस्तबल-के कीचड़से उसपर झांकता हुआ सफेद तारा।

अलमुईन — बदमिजाज, फिसादी औरत, अगर तूने शराफत न सीखी तो किसी दिन बेपरदा करके तेरी अपनी बांदियोंसे बेंत लगवाऊंगा।

खातून — किसी दिन तुममें इतनी हिम्मत देखकर मुझे खुशी होगी।

(कूदता फांदता फरीद आता है)

फरीद — ओह अब्बा, अब्बा, अब्बा, अब्बा!

खातून — अहमककी तरह यूँ बलबलानेका क्या मतलब है? बेवकूफ बच्चे, क्या तू इन्सानकी तरह नहीं रह सकता या उसकी तरह बोल भी नहीं सकता?

अलमुईन — बेगम, मेरे बांके बेटेको और एक बार झिड़ककर देखो। अपनी डांट-फटकारसे उसकी कुदरती जवांमरदीको ठेस लगानेकी कोशिश करो। फिर तुम खातून हो या गैर खातून, मैं तुम्हारे दांत तोड़कर रख दूंगा।

फरीद — हां, अब्बा, उसके दांत तोड़ दो। वह हमेशा डांटती रहती है। जब तुम

घरपर नहीं होते तो मुझे कभी-कभी मारती भी है। हां, उसके दांत जरूर तोड़ दो। मैं बहुत खुश होऊंगा।

अलमुईन — मेरा हंसमुख शैतान।

खातून — तुम उसे अपनी मांसे नफरत करना सिखाते हो? हम सभीमें दोजख-की आग छिपी है, लेकिन वह इंसानी शर्मो-हया और अल्लाहकी मेहरबानीसे मुहरबन्द है। लेकिन तुम! तुम उस ताले और मुहरको तोड़कर नरककी भरपूर लपटोंको उठाना चाहते हो, आम इंसानोंमें पाये जानेवाले धुँएके बादलों-से तुम्हारा जी नहीं भरता। यह न समझना कि यह शैतानकी पुड़िया सिर्फ अपनी मांसे गैर कुदरती बगावत करके रुक जायगा! तुम्हें इसके लिये पछताना पड़ेगा।

(जाती है)

फरीद — अब्बाजान, लड़की, उफ, क्या लड़की है! लड़कियोंमें बस एक है! मुझे वह लड़की खरीद दो।

अलमुईन — अरे फांदते उल्लू! कौनसी लड़की?

फरीद — गुलामके बाजारमें दस हजार दीनारमें मिलती है। क्या हाथ हैं! क्या आंखें हैं! कैसे पुट्ठे और कैसे पांव हैं! मेरे बाजू उसके गिर्द घूम जानेके लिये बेचैन हैं।

अलमुईन — मुहब्बतमें मदहोश परिंदे मेरे दिलफेंक सलोने, तुमने भी तो हमारे वजीरके नूरे नजर शेख नूरुद्दीनसे कम लड़कियोंको नहीं जीता है। मेरे डाकू तुमने मुहरें तोड़ी हैं और ताले चटकाएं हैं।

फरीद — यह आपकी ही तो देन है और आपने और मांने मेरे ऊपर इतना खराब कूबड़ लाद दिया है कि लड़कियां मुझे देखकर ताने मारती हैं। मुझे सिर्फ अन्धी लड़कियोंमें ही मौका मिल सकता है। छिः शर्मकी बात है।

अलमुईन — कुबड़े, अपनी बांदीसे कैसे मुहब्बत वसूल करेगा?

फरीद — वह मेरी बांदी होगी इसलिये मुझसे प्यार करना ही पड़ेगा।

अलमुईन — कुबड़े, चल बाजी लगा लें। तू उससे निकाह करेगा? क्या सुलतान-की बेटी पर आंख लगी हैं?

अलमुईन — क्या, वजीरकी, मेरे खास दुश्मनकी भतीजी! अरे मसखरे, वहां तेरी शादी नहीं हो सकती।

फरीद — मैं भी उनसे नफरत करता हूँ और कुछ हदतक इस कारणसे भी उससे शादी करूंगा। शादी करके उसे दिनमें दो बार पीटा करूंगा और उनको खबर भेजता

रहूँगा। इससे वजीरका दिल टूट जायगा।

अलमुईन -- तू मेरा अपना लड़का है।

फरीद -- और वह इतनी अच्छी भोली-भाली नाजुक-सी चीज है कि भले सिसकती, कांपती जाय लेकिन मेरे हुकुमपर बोसे जरूर देगी। मेरी मांकी तरह नहीं कि बस दिनभर भौंहें सिकुड़ी रहें, और डांट-फटकार चलती रहे। लेकिन अब्बा, मेरी लड़की, मेरी लड़की खरीद दो न!

अलमुईन -- दूर हो, मसखरे! दस हजार दीनार! हद हो गयी। बस दो हजार, एक दीनार भी ज्यादा नहीं। बेचनेवाला समभदार होगा तो ले लेगा। उसे खुश होना चाहिये कि लड़कीके लिये एक धेला भी मिल रहा है। फरीद, गुलामोंको बुला ला।

फरीद -- हुर्रे......! हुप! क्या मजा आयगा! गफूर!

(बुलाता हुआ जाता है)

अलमुईन -- लड़केकी परवरिश इस तरह होनी चाहिये। यह नहीं कि बात-बातपर रोकथाम करें, और सजा दें ताकि उसके अन्दरका इंसान मर जाय और कुदरतके बनाये शोख नमूनेकी जगह एक पालतू सीधा-सादा भोंदू बिठा दिया जाय। जिस इंसानके लहूमें ऐब न हो, जिसने कभी जवानीमें हूरोंके होठोंसे महसूल न लिया हो, या अपनी रातोंको शराबकी हरारतसे न सेंका हो ऐसे इंसानकी कीमत मैं पीतलके धेलेके बराबर भी नहीं समभता। तुम्हारे मुल्ला एक बात सिखाते हैं, कुदरत एकदम उल्टी। इनमेंसे कौन सच होगा? हां, शौकसे बनाओ-संवारो, लेकिन कुदरती नक्शेके मुताबिक। जवानीके खौलते लहूको आजादी दो तो तुम्हें एक इंसान मिलेगा, न कि बोदा अखलाकी मूर्ख और बीमार! वह दूसरों पर हुकूमत करनेवाला इन्सान होगा। वह मजबूत बदनवाला जबरदस्त, सिपाही या वजीर या फिर साहसी व्यापारी बनेगा। अपनी फौजें ऐसे जवानोंके हाथमें दो। ऐसे ही शाही मिजाज सारी दुनियापर अपने घोड़े दौड़ाते हैं और हुकूमत करते हैं। उनके कदम तबतक नहीं रुकते जबतक सारे जहानमें एक जबान और एक हुकूमत नहीं हो जाती। हां, कुदरत बादशाहोंका बादशाह है, कोई नसीहतें करनेवाला सदाचारी मुल्ला नहीं है। मजबूत सख्त पौधे ही दूसरी जगहोंपर पनपते और फलते-फूलते हैं। वही तूफानोंसे, गरमी-सरदीसे बच निकलते हैं। दुबले-पतले सावधानीसे पले या गरम शीशेके मकानमें हिफाजतसे पाले गये पौधे उनके आगे क्या करेंगे? इस्लामके लिये सारे जहानको किसने जीता? चोरी-डाकेमें माहिर अरबोंने,

जो जिस्म और ख़ाहिशमें मजबूत थे। मैं फरीदके लिये उस बांदीको मंगा दूंगा ताकि उसकी तालीम अच्छी तरह हो सके। हां बेटे, खूब ऐश इशरत करो और मेरे लिये खानदानका नाम करनेवाले अपने जैसे पोते पैदा करो।

(जाता है)

दृश्य ३

(गुलामोंका बाजार)

मुअज्जम और उसका आदमी, बिलकीस और मैमूना,

अजीब, अजीज, अब्दुल्ला और दूसरे व्यापारी।

मुअज्जम —— हां, मेहरबान, बोली शुरू कीजिये। जनाब, मिसालके तौरपर आप ही शुरू करेंगे?

बिलकीस —— उस कीमती पोशाकमें वह जवान कौन है?

मुअज्जम —— वह अजीब है, वजीरका भतीजा। आदमी तो अच्छा है पर उसका चचा बदजात है।

बिलकीस —— उनके सामने शायरी भरी जबानमें मेरी तारीफ करो दलाल।

मुअज्जम —— शायरों जैसी जबानके लिये वादा करता हूँ। चलिये बोली बोलिये जनाब।

एक व्यापारी —— उस हसीनाके लिये तीन हजार।

मुअज्जम —— यह क्या, साहब, मैं विरोध करता हूँ। सिर्फ तीन हजार! उसकी तरफ देखिये! माशाल्ला उसकी जोड़की चीज आपको चीनसे फिरंगीस्तान-तक कहीं न मिलेगी। चलिये मैं कहता हूँ, सात हजार।

अजीज —— माल अच्छा है दलाल, लेकिन कीमत बहुत ज्यादा है।

मुअज्जम —— तुम इसे महंगा कहते हो? लाहौलवला, सौदागर, यह महंगी है?

बिलकीस —— (अजीबसे) क्या आप मेरे लिये बोली नहीं बोलेंगे? मेरा आईना कहता है कि मैं हसीन हूँ। मैं कहती हूँ, मैं जानती हूँ कि बांसुरीपर मेरा हाथ पड़ जाय तो हवाको मदहोश कर दे। आपने बसरामें जितनी आवाजें सुनी हैं उन सबसे मेरी आवाज ज्यादा मीठी और सुरीली है। आप मेरे लिये बोली

न बोलेंगे ?

अजीब — बच्ची, इन सब व्यापारियोंमेंसे तूने मुझे ही क्यों चुना ?

बिलकीस — मैं यह तो नहीं कह सकती कि मुझे आपसे प्यार हो गया है। आपकी अम्मा जान बहुत रहमदिल और खूबसूरत हैं। मैं आपके चेहरेमें उनकी झलक देखती हूँ। मैं उनकी खिदमत करूंगी।

अजीब — मुअज्जम, मैं इस छोटीसी बेगमके लिये पांच हजार बोलता हूँ।

मुअज्जम — बस पांच ! और तुर्रा यह कि खुद उसने आपको चुना है ! सात बोलिये या फिर कुछ नहीं।

अजीब — अच्छा, अच्छा, छः हजार, एक दीनार भी ज्यादा नहीं।

मुअज्जम — है कोई और बोलनेवाला ?

व्यापारी — जरा देखूँ, जरा देख लूँ।

अब्दुल्ला — छिः छोड़ो भी यार ! उसकी मंशाके खिलाफ उसके साथ तुम्हें खुश-नसीबी न मिलेगी।

व्यापारी — अच्छा जाने दो, जाने भी दो।

मुअज्जम — लीजिये साहब, यह आपकी हो गयी।

बिलकीस — अगर आप मुझे लेंगे तो मेरी बहनको भी ले लीजिये। हम दोनोंमें एक ही दिल धड़कता है।

अजीब — वह हसीन है पर तुम्हारे बराबर नहीं।

बिलकीस — अगर हम अलग हुए तो मैं उसकी जुदाईमें बीमार होकर मर जाऊंगी तब आपके छः हजार बेकार जायेंगे।

मुअज्जम — दोनों मिलाकर बेची जा रही हैं।

अजीब — तो दो हजार और दूँगा। इतनेमें देना हो तो दो वरना सौदा रद्द समझो।

मुअज्जम — वाह, यह तो उसे मुफ्तमें देना होगा। खैर, ले जाइये, ले जाइये।

अजीब — मैं पैसा भेज दूंगा। (बिलकीस और मैमूनाके साथ चला जाता है)

अब्दुल्ला — क्यों दलाल, सौदा अच्छा हुआ न ?

मुअज्जम — बहुत नहीं, खास कुछ नहीं। मालिकको थोड़ा फायदा होगा।

अजीज — अरे वजीर............

(इब्ने सावीका प्रवेश)

अब्दुल्ला — नवाब अलफज्ल ! आज बाजारमें अच्छा सौदा होगा। नवाबके कदम जो आये हैं।

व्यापारी लोग — आइये, तशरीफ लाइये, जनाबे आली।

इब्ने सावी -- अस्सलाम अलैकुम। शुक्रिया। क्यों मियां अब्दुल्ला, घरपर खैरियत है न ?

अब्दुल्ला -- मेरा भाई दिवालिया बन गया।

इब्ने सावी -- मुझे अपना खजांची बना लो। मुझे शर्म आती है कि अच्छे आदमी मोहताज रहें जब कि मैं ऐश करता हूँ। अच्छा दलाल, बाजार कैसा चल रहा है ? क्या मेरे लायक कोई गुलाम है ?

मुअज्जम -- वजीरे आला, आपकी नजरोंके लायक कुछ भी नहीं है फिर भी आप बतलाइये आपको क्या चाहिये। मैं अच्छा माल असली दाममें ठीक कर दूंगा। दूसरे दलाल लुटेरे हैं लेकिन मुझे तो आप जानते हैं।

इब्ने सावी -- मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि अगर कोई अनोखा ईमानदार दलाल है तो वह तुम हो। अब मेरे लिये लड़कियोंमेंसे सबसे खूबसूरत को चुन दो। वह निहायत हसीन, शेबाकी बिलकीस-सी अक्लमन्द और यूनानकी हेलेनसे भी ज्यादा जादूवाली हो, फिरतुम अपने दाम कहना।

मुअज्जम -- ऐसी अनोखी एक चीज मेरे पास है। सौ सालमें भी उसकी बराबरी-का कोई न मिलेगा, उसे कुरान और शरीयत जबानी याद है, गाना, बजाना, नाचना और नस्तालीक तो वह मांके पेटसे सीखकर आयी है। उसके दिमाग-के एक कोनेमें सारा विज्ञान भरा हुआ है। फिर भी उसमें तालीमसे ज्यादा समझ है और ये दोनों भी उसके हुस्न और जबानकी मिठासमें खो जाते हैं। ऐसी चीज आपको पन्द्रह हजारसे कममें मिलनी मुश्किल है। वह लाजवाब है।

इब्ने सावी -- कीमत तो बहुत है।

मुअज्जम -- नहीं, आप उसे देखिये तो। खालिद, लड़कीको ले आओ।

(खालिद जाता है)

मुझे पूछना तो नहीं चाहिये लेकिन हुजूरने अपने बेटेको खरीदनेका हक दे रखा है क्या ? उन्होंने मुझसे एक गुलूबन्दका वचन लिया है।

इब्ने सावी -- एक गुलूबन्द !

मुअज्जम -- एक कीमती छोटा खिलौना। "उसे फलाने घर भेज देना," वे मुझे शाहजादेकी तरह कहते हैं, "और कीमतके लिये मेरे अब्बासे तकाजा करना। पुराने ठग, मैं मानता हूँ तुम अलबुजकी तरह खूब ऊंची कीमत रखोगे। उनकी अच्छी तरह हजामत करना !" बड़ा खुशमिजाज लड़का है, साहब।

इब्ने सावी -- मेरी हजामत करना ! पाजी ! खूबसूरत आवारा कहींका ! इसके लिये मैं उसकी जुल्फें खींचूँगा। कौन-सा मकान ? गुलूबन्द किसे दिया था ?

मुअज्जम — हुजूर, एक लड़कीको, एक नफीस ईसाई लड़कीको। मुझे खौफ है कि लड़केने जो कीमत अदा ही है उससे कहीं ज्यादा कीमती चीज लड़कीने उसे दी होगी।

इब्ने सावी — बेशक, बेशक, आवारा! निरा बेईमान है। अच्छा हुआ तुमने मुझे बता दिया। मुझसे तकाजा करना! चलो एक आराम तो है, वह बदमाश काफी साफ दिल है। उसमें तेजमिजाजीके सिवा डर या झूठ बोलनेकी बुरी आदतें नहीं हैं। उसकी रगोंमें शराफतका लहू है न, आखिर उसे संभाल लेगा। उसके लिये काफी उम्मीद है। मुअज्जम, मैं अभी आया।

(जाता है)

मुअज्जम — बेटा बापकी पूरी नकल है। सिर्फ लहूमें तेजी और हरारत ज्यादा है। यह रहा खालिद, फारसकी लड़कीको ले आया।

(खालिद अनीस अलजलीसके साथ आता है)

खालिद, दौड़कर वजीर साहबको बुला ला। अभी यहीं थे।

(खालिद जाता है। अलमुईन, फरीद और गुलामोंका प्रवेश)

फरीद — अब्बा, वह रही, वह वह, वहाँ!

अलमुईन — जनाब, आप दलाली करते हैं? हम तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं। आज और दिनोंसे ज्यादा ईमानदारीसे काम लेना। इस लड़कीपर बोली हो चुकी?

मुअज्जम — (स्वगत) सीधे दोजखसे शैतान और शैतानका बच्चा! (प्रकट) हुजूर, हम अच्छे वजीर साहबका इन्तजार कर रहे हैं। वे इस लड़कीके लिये बोली बोलनेवाले हैं।

अलमुईन — अभी यहां एक वजीर है और बोली बोलेगा। चलो, लड़कीके लिये दो हजार। देखें, मेरे बाद कौन बोलता है?

मुअज्जम — वजीर अलमुईन, आप इतने बड़े हैं कि कोई आपका सामना नहीं करेगा और आप यह जानते हैं। मैं आपसे अर्ज करता हूँ कि अपने बड़प्पनके मुताबिक बड़ी बोली बोलियेगा। इसकी कम-से-कम कीमत दस हजार है।

अलमुईन — अरे ठग! दस हजार! तू खुले बाजारमें ठगनेकी हिम्मत करता है? दो हजार इसके लिये बहुत ज्यादा है। यह दुबली-पतली मामूली-सी छोकरी! दलाल, मान जाओ, या फिर बोली बुलवाओ। अगर मना किया तो खतरेसे खबरदार रहना।

मुअज्जम — इस नीलाममें ऐसा नियम नहीं है। साहबान, मैं आप लोगोंसे अपील

करता हूँ। अरे यह क्या ? मेरे आसपासके सबके सब भागे जाते हैं ? वजीर साहब, इसके लिये आपके बुजुर्ग इब्ने सावी बोली बोल चुके हैं।

अलमुईन — अरे, हम तुम्हारे दलालीके हथकंडे जानते हैं, अबे पाजी, नीलामपर चढ़ा, चल, बोली बुलवा। फरेबी !

मुअज्जम — अलमुईन बिन खाकान ! गालियां मत दो। बसरामें अभी इन्साफ है और अच्छे वजीर इब्ने सावी हम दोनोंका फैसला करेंगे।

अलमुईन — हम ! हम दोनोंके बीच ! अरे गंदे दगाबाज दलाल, तू मेरी बराबरी करता है ? हब्शी, उसकी तरफ पैसे फेंक दो, अगर वह आनाकानी करे तो उठाकर पटक दो और अपने डंडेके जोरसे समझा दो। हसीना, इधर आओ। क्यों, हरजाई, तू पीछे हटती है ?

फरीद — अब्बा, मुझे घोड़ेका चाबुक लेकर उसके पीछे जाने दो। पलक मारते वह दुलकी चालसे हमारे घरकी तरफ चलने लगेगी।

मुअज्जम — यह सीधा जुल्म है। मैं अच्छे वजीर साहब और रहमदिल सुलतान-से शिकायत करूंगा।

अलमुईन — बेशर्म चोर ! पहले अपनी सजा पा ले, फिर थप्पड़ोंके बीच अपनी अर्ज भूँकते रहना। पकड़ लो इसे।

(खालिद और इब्ने सावी आते हैं)

मुअज्जम — वजीर साहब, इस नाइंसाफ इन्सानसे, इस जालिमसे मुझे बचाइये।

इब्ने सावी — क्या मामला है ?

मुअज्जम — हुजूरके लिये जो खास बांदी रखी गयी है उसे यह जबरदस्ती मुझसे छीन रहा है और वह भी कंजूस भिखारी जैसी कीमतपर। मैं रसोईघरकी काली कलूटी नौकरानीके लिये भी इस कीमतको न छुऊंगा। जब मैंने हुजूर-का नाम लिया तो ये बड़े ही खफा हुए और अपने गुलामोंको मुझे पीटनेका हुकुम दे दिया।

इब्ने सावी — वजीर साहब, क्या यह सच है ?

अलमुईन — किसीने मेरे धुँधले दिमागका कचूमर निकाल दिया था क्या ? मैंने तो इसे दलालकी चालाकी समझा था। अच्छा, आपने लड़कीपर कीमत रखी है ? आप जानते हैं मेरी जबान या मेरा हाथ आपको तकलीफ पहुँचाये इससे पहले मैं उन्हें काटकर रख दूंगा। अच्छा, खैर , चलिये बोली बोलिये।

इब्ने सावी — पहले एक बात बता दूं। वजीर साहब यह खरीद मैं अपने लिये नहीं, सुलतानके लिये कर रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि आप इतने वफादार हैं कि अपने

मालिकके मुकाबलेमें बोली बोलनेके लिये तैयार न होंगे और उनके खजानेपर ज्यादा भार न डालेंगे। फिर भी अगर आप चाहें तो बिसमिल्लाह। इंसाफ और कानूनके मुताबिक यहां छोटे-से-छोटा भी होड़ लगा सकता है। क्या आप बोली बोलेंगे?

अलमुईन -- (स्वगत) यह हर जगह धत्ता बताता है। (प्रकट) ओह, यह कमाल-का हुस्न! नहीं, मैं बोली नहीं बोलता। फिर भी यह बड़ी बदकिस्मती है क्योंकि मेरे बेटेने इसी लौंडीसे दिल लगाया है। इब्ने सावी क्या उसे लेने न दोगे?

इब्ने सावी -- मुझे अफसोस है कि उसे नाउम्मीद करना पड़ेगा लेकिन लाचार हूँ। मेरा अपना बेटा इस बांदीके प्यारमें मर रहा होता तो भी मैं उसका शौक पूरा न करता। सुलतान सबसे पहले हैं।

अलमुईन -- हां, सबसे पहले। खैर, क्या आपसे घरपर मुलाकात हो सकेगी?

इब्ने सावी -- क्यों, बिरादरम, कोई सरकारी काम है?

अलमुईन -- हमारी अपनी सरकारों और उन्हें और भी गहरी मुहब्बतमें बांधनेके बारेमें बात करनी है। मुझे अपने फरीद और आपकी अनाथ भतीजीके बारे-में ख्याल आया है।

इब्ने सावी -- मैं आपकी बात समझ गया। हम उस बारेमें बातचीत करेंगे। भाई-जान, आप अपने लड़केके बारेमें मेरी राय जानते हैं। वह बहुत ही ज्यादा सिरफिरा और गुस्ताख है। जबतक वह तेजीसे हैरत अंगेज तरीके पर बदल न जाय मैं ईमानदारीके साथ अपनी नाजुक लड़कीको ऐसे खतरनाक हाथोंमें कैसे सौंप सकता हूँ?

अलमुईन -- अजी साहब, यह लड़कपनके जंगली चोंचले हैं। उसे एक अच्छी बीबी ला दो और बहुत जल्द उसके बल निकल जायेंगे और वह सीधा हो जायगा। इन तूफानी नालोंको शांत बांधोंमें जकड़ देना चाहिये और भाईजान, तब वे सारी सल्तनतको उपजाऊ बनायेंगे।

इब्ने सावी -- उम्मीद तो है। अच्छा बातचीत कर देखेंगे।

अलमुईन -- फरीद, चलो मेरे साथ।

फरीद -- मैं अपनी लड़की लेकर रहूंगा। मैं सबको पीटकर उसे ले जाऊंगा।

अलमुईन -- मस्खरे, तेरे चाचा उसे ले रहे हैं।

फरीद -- तो उनका सिर तोड़ डालो। इस घमंडी दलालको सारे चौकमें चाबुक लगाते हुए ले चलो और लड़कीकी कीमत चुकाये बगैर उसे ले चलो। अगर

आप अपनी मरजी-मुताबिक नहीं कर सकते तो वजीर क्यों बने हैं?

अलमुईन -- पगले, वह तो सुलतानके लिये है। चुप रह।

फरीद -- ओह!

अलमुईन -- चल, मैं तुम्हें उससे भी खूबसूरत मनों लड़कियां खरीद दूंगा।

फरीद -- आह, क्या बाल हैं उसके! कैसे पांव हैं! सुलतान, वजीर और तुम सबपर खुदाकी मार! लेकिन अब भी मैं उसे लेके रहूंगा।

(गुस्सेमें चला जाता है। उसके पीछे-पीछे अलमुईन और गुलाम जाते हैं)

मुअज्जम -- देखिये यह हमारे वजीरकी कोंपल है! हुजूर, जरा लड़कीको देखिये, क्या मैंने सिर्फ दलालकी तरह तारीफ की थी?

इब्ने सावी -- बेगम! क्या जमीनपर ऐसा हुस्न भी है?

मुअज्जम -- मैंने हुजूरसे क्या अर्ज किया था?

इब्ने सावी -- ताज्जुब है। और अगर उसका दिमाग भी जिस्मकी बराबरी कर सकता है तब तो वह शाहनशाहोंके लायक चीज है। तेरा नाम क्या है परी-जादी?

अनीस अलजलीस -- मुझे अनीस अलजलीस कहते हैं।

इब्ने सावी -- तुम्हारी क्या कहानी है?

अनीस अलजलीस -- मेरे मां-बापने मुझे बड़े अकालके समय बेच दिया था।

इब्ने सावी -- क्या, तुम सचमुच मिट्टीकी बनी हो? परी, जन्नतसे भेस बदलकर अपनी प्यारी-प्यारी मुस्कानोंसे हमें फंसाने तो नहीं आयीं? हैरत है!

अनीस अलजली -- मैं एक गुलाम इंसान हूँ।

इब्ने सावी -- इसका सुबूत देना होगा।

अनीस अलजलीस -- हुजूर, परीके पंख होते हैं मेरे कुछ भी नहीं हैं।

इब्ने सावी -- मुझे तो सिर्फ यही फर्क दीखता है। खैर, अब इसकी कीमत?

मुअज्जम -- वजीर साहब, वह आपके लिये तोहफा है।

इब्ने सावी -- तकल्लुफ? मैं उसकी कीमत दस हजार आंकता हूँ।

मुअज्जम -- आपसे उसी कीमतकी उम्मीद है। किसी गैर सरकारी थैलीसे हम उसकी पूरी कीमत वसूल करते। उसे दस दिन अपने यहां रखिये। उसकी खूबसूरती सफर और थकानके मारे मुरझा गयी है। उसे आराम करने दीजिये, नहलाइये, अच्छा खाना खिलाइये, फिर आंखोंकी आड़करके उसको देखे जाइये।

इब्ने सावी -- तुमने अच्छी सलाह दी है। मेरे यहां एक पाजी शिकारी है लेकिन

मैं इसे मुहरबन्द रखकर उसके पंजेसे बचाऊंगा। मुअज्जम, सलाम अलेकुम!

मुअज्जम —— वालेकम सलाम, अच्छे वजीर साहब, हमारी दुआओंके ढेर लगे रहें आपपर।

दृश्य ४

(इब्ने सावीके मकानमें जनानखानेका एक कमरा)

आमिना, दुनिया

आमिना —— दुनिया, फिरसे हिजड़ेको बुलाकर पूछ कि क्या नूरुद्दीन आया है।

दुनिया —— अम्मा, क्या फायदा? तुम जानती तो हो कि वह नहीं आया। प्यारी अम्मा, उसके लिये दिलको क्यों परेशान करती हो? खोटे सिक्के कभी गुम नहीं हुआ करते।

आमिना —— छिः दुनिया! खोटा? वह खोटा तो नहीं है, बेलगाम, हां कुछ बेलगाम जरूर है और यह छोटी-सी बुराई तो उसकी सुनहरी अच्छाइयोंमें एक छोटी-सी घुँघराली लट है। वह उसे कुरूप बनानेकी जगह उसकी शोभा बढ़ाती है। खोटा सिक्का! ओह, दुनिया, खालिस सोनेमें भी कुछ मिलावट होती है, इसलिये उसे खराब न कहो।

दुनिया —— प्यारी, दीवानी अम्मा! अरे मैंने उसको बुरा-भला इसीलिये कहा कि तुम उसकी सफाई दो और मुझे सुननेका मौका मिले।

आमिना —— तू मुझपर हंसती है —— ओह, तुम सब मुझपर हंसते हो। फिर भी मैं यही कहूंगी कि मेरा नूरुद्दीन सारे बसरामें सबसे प्यारा लड़का है —— जो इस बातको गलत साबित करना चाहे वह कोशिश कर देखे —— सारी सल्तनतमें सबसे खूबसूरत और सबसे रहमदिल है मेरा नूर।

दुनिया —— हमारे शहरकी सब लड़कियां भी यही सोचती हैं। ओह, मैं तुमपर भी हंसती हूँ और अपने-आपपर भी। मुझे यकीन है कि उसके लिये मैं उतनी ही बुरी बहन हूँ जितनी कि तुम बुरी अम्मा हो।

आमिना —— दुनिया, मैं एक बुरी अम्मा हूँ?

दुनिया —— हां, मां जितनी बुरी हो सकती है उतनी बुरी। तुम उसे बिगाड़ती हो, मैं भी, और अब्बातक उसे बिगाड़ते हैं। हम ही नहीं सारा बसरा उसे बिगाड़ता

है —— खासकर यहांकी लड़कियां।

आमिना —— उसके साथ बेरहम कौन बन सकता है? उसकी हंसती आंखोंको पछतावेमें दु:खी होते कौन देख सकेगा?

दुनिया —— क्या वही आ रहा है? (बाहर जाकर लौटती है) मेरे चचा हैं, अम्मा, और उनके साथ एक लड़की है,——मैं समझती हूँ नूरुद्दीनकी ही सफेद और लाल नकल है। अरे, मैंने जैसे ही नीचे देखा वह ऊपर मुझे देखकर मुस्करायी। और उस मुस्कानके साथ मेरे दिलको जिस्मसे बाहर खींच लिया। बेचारी अम्मा, इस उमरमें तुम्हें एक हरीफसे मुकाबला करना होगा? अब चचाकी इश्कबाजीकी उम्र नहीं रही।

आमिना —— एक हरीफ! अरे दीवानी लड़की!

(इब्ने सावी और अनीस अलजलीस आते हैं)

इब्ने सावी —— बेटी, आगे आओ। आमिना, यह एक लौंडी मैंने सुलताने आजमके लिये खरीदी है। इसे अपने आवारा लड़केसे बचाये रखना। बेगम! मेरी जिन्दगीका सवाल है। अगर उसने इसे छुआ भी तो मैं बरबाद हो जाऊंगा।

आमिना —— मैं इसका ख्याल रखूँगी।

इब्ने सावी —— एक मजबूत हिजड़ेको नंगी तलवार लिये इसके दरवाजेपर खड़ा कर देना। इसे नहलाना, धुलाना और अच्छी तरह खाना खिलाना। तुम्हारा बेटा! देखना, कहीं वह तुम्हें फुसला न ले। ऐ नाजुक, नासमझ दिलवाली, तुमने उसे इतना बिगाड़ा है कि तुमपर भी यकीन नहीं होता।

आमिना —— खाविंद, मैं बिगाड़ती हूँ?

इब्ने सावी —— एकदम बुरी तरहसे। जब-जब मैं उसके भलेके लिये उसपर जरा सख्ती करता हूँ तो तुम बीचमें आकर मेरे गुस्सेको ठंडा कर देती हो इसीलिये वह बिगड़ गया है।

दुनिया —— ओह, चचा, आप सख्ती करते हैं तो सारा जहान आपकी घुड़कीसे स्याह हो जाता है। देखिये, मैं कैसी कांप रही हूँ!

इब्ने सावी —— अच्छा, छोटी-सी तानेबाज, तू भी यहीं है? आखिरी बार तुझे कोड़े कब लगे थे?

दुनिया —— जब आपने आखिरी बार सख्ती की थी।

इब्ने सावी —— तेरा निकाह करवा दूंगा। मैं तुझे अपने जैसे बुजुर्ग और काबिले अदब आदमीका मजाक न उड़ाने दूंगा। चुलबुली, नाजुक-बदन! शादी किससे

करेगी तू ?

दुनिया —— एक बूढ़े बुजुर्गसे, आप जैसे मुस्कराते सख्त दिल बुजुर्गसे। और किसीसे नहीं।

इब्ने सावी —— और फरीद जैसे लड़केसे नहीं ? उसके अब्बा चाहते हैं। शायद वह भी चाहता है।

दुनिया —— इस ऊंची खिड़कीसे मुझे नीचे सहनमें फेंक दो न, या फिर उस दिनसे पहले मुझे ही खबर दे देना और मैं खुद छलांग मार लूँगी।

इब्ने सावी —— क्या वह इतना बुरा है ? मैं भी यही सोचता था। ना, मेरी भतीजी, और कोई नौशा न मिले तो भी तेरी शादी खाकानके बदकार घरानेमें कभी न होगी। आमिना, अब मैं चलता हूँ। अनीस, मेरा एक खूबसूरत और बेलगाम बेटा है। सम्भलकर रहना, कहीं तुमपर उसकी नजर न पड़ने पाये। तुम अपनी उमरसे कहीं ज्यादा अकलमन्द और जिन्दादिल हो। अंपनी जातिसे बहुत ऊंची हो। मैं तुम्हारी तमीजपर भरोसा करता हूँ।

अनीस अलजलीस —— हुजूर, युँ तो मैं होशियार रहूँगी। फिर भी आप सींखचों और दरवाजोंपर विश्वास रखिये, मुझपर नहीं। अगर वे मुझे ढूँढ़ निकालेंगे तो मैं तो उनकी कनीज हूँ, उनकी ख्वाहिश पूरी करनेके लिये पैदा हुई हूँ।

इब्ने सावी —— बेगम, होशियार रहना।

(जाता है)

आमिना —— छोटी बेगम ! तू कितनी खूबसूरत है ! वाकई बेहतर है कि वह तुम्हें न देखे। दुनिया, इसे सम्भालकर रखना। मेरे हीरे, मैं आगे चलकर तुम्हें बन्द रखनेके लिये सन्दूकची तैयार करवा लूँगी। दुनिया, उसे मेरे पीछे ले आना।

(जाती है)

दुनिया —— (अनीसपर उछलती हुई) तेरा नाम क्या है, मुस्कराते जादू, क्या नाम है तेरा ? नाम बता नाम।

अनीस अलजलीस —— तुम मुझे सांस तो लेने दो तब बताऊं।

दुनिया —— सांस लिये बगैर ही बता।

अनीस अलजलीस —— बहुत लम्बा है।

दुनिया —— सुनें भी सही।

अनीस अलजलीस —— अनीस अलजलीम।

दुनिया —— अनीस, तुम्हारे जिस्ममें हंसीका समन्दर है। इस शान्तिके नीचे मैं

उसे ठाठें मारते देख सकती हूँ और वही तुम्हारी मुस्कानोंमें हिलोरे लेता है। अरी हसीना! मुझे हंसनेवाले बड़े प्यारे लगते हैं। तू सुलतानके लिये क्यों है? मेरे लिये क्यों नहीं? क्या सुलतान भी कभी हंसते होंगे? कौन जाने?

(वह भाग जाती है)

अनीस अलजलीस —— मेरा सुलतान यहीं है। पर वे मुझे किसी घनी दाढ़ीवाले काले कलूटे और खूसट सुलतानके सुपुर्द करेंगे जो मुझे सप्ताहमें एक बार मिलेगा। वह मुझे खुशी और मुहब्बतके लिये नहीं, सिर्फ अपनी खिदमतके लिये बाड़ेमें डाल रखेगा। मेरा शाहजादा फारसके लड़कों-सा है। वह हसीन खुशमिजाज चेहरा जो दुनियाका हंसते मुँह, और खुली नजरोंसे सामना कर सकता है, जिसे देखकर दिल बाग-बाग हो जाता है। दस दिन! दस दिन तो बहुत हैं, इतनेमें सल्तनतें उलट-पुलट जाती हैं।

(दुनिया वापस आती है)

दुनिया —— चलो अनीस, काश, मेरा भाँई नूरुद्दीन आ जाता और तुम्हें यहीं पकड़ लेता। कैसा मजा आता!

(जाते हैं)

अंक २

दृश्य १

(इब्ने सावीका मकान। जनानखानेका ऊपरी कमरा)

दुनिया और अनीस अलजलीस

दुनिया —— अरी जीती-जागती प्रेम-गाथा, तू फारससे आयी है। मेरा ख्याल है वहाँ लोग पहली नजरमें मुहब्बत करने लगते हैं।

अनीस अलजलीस —— लेकिन तू मेरी मदद करेगी न, दुनिया, तू मेरी मदद करेगी ? मुझे उन्हींको, सिर्फ उन्हींको दो, उस बूढ़े खूँसट मुलतानको नहीं ! हाय, मैं जन्नतके करीब हूँ और साथ-ही-साथ जहन्नुम भी मेरा इन्तजार कर रहा है।

दुनिया —— मैं जानती हूँ, समझ सकती हूँ, बच्ची ! अगर मुझसे कहा जाता कि दस दिनमें तेरे चाचाके बेरहम, जालिम लड़केके साथ तेरा निकाह होगा तो उस वक्त मुझे जैसा लगता, ठीक वैसा ही तुझे लग रहा होगा। मैं तेरी मदद करूंगी। लेकिन अजीब बात है। उसे सिर्फ जाते हुए देखा और मुहब्बत शुरू हो गयी ? उसने पीछे मुड़कर तुझे देखा था क्या ?

अनीस अलजलीस —— जबतक देख सके देखते रहे।

दुनिया —— हां, वह नूरुद्दीन ही था।

अनीस अलजलीस —— तू मेरी मदद करेगी न ?

दुनिया —— हां, अपने दिल, दिमाग, जिस्म और रूह सबसे मदद करूंगी। लेकिन कैसे ? मेरे चचाने इतना सख्त हुकुम दिया है !

अनीस अलजलीस —— आहा, वफादार भतीजी, तुम अपने चचाके हुकुम हमेशा मानती हो न ?

दुनिया —— बड़ी सख्तीसे, जब वे मुझे जंच जायें। लेकिन यह तो जरूर होगा, चाहे इसकी सजामें मुझे फरीदसे शादी क्यों न करनी पड़े। लेकिन कौन जाने वह कब घर आयेगा ?

अनीस अलजलीस —— तो क्या वह रोज घर नहीं आते ?

दुनिया —— जब वह शिकार नहीं करता। बच्ची, जब वह कबूतरोंकी, सफेद कबूतरों-

की तलाशमें नहीं होता।

अनीस अलजलीस — जब वे मेरे होंगे तब मैं यह सब बन्द कर दूंगी।

दुनिया — करोगी ? मेरा ख्याल है तुम कर सकोगी और तुम्हें यह काम मुश्किल भी न लगेगा। तुम कर सकोगी न ?

अनीस अलजलीस — जरूर करूंगी।

दुनिया — आह, तुमने मेरे जमीरको हल्का कर दिया। कौन दोष दे सकता है ? मैं अपने भाईको सुधारनेके लिये बड़ी नेकनीयतीके साथ हुकुम टाल रही हूँ। बड़ी जिम्मेदारीके साथ, बड़ी संजीदगीके साथ और बड़ी समझदारीके साथ यह काम कर रही हूँ। यहांतक कि मुझे अपने चेहरेपर सफेद दाढ़ी लहराती हुई मालूम हो रही है। (अपनी काल्पनिक दाढ़ीपर हाथ फेरते हुए बाहर चली जाती है)

अनीस अलजलीस — मेरा दिल बड़े इतमीनानके साथ धड़क रहा है। मेरी तकदीर-का शाहजादा आयेगा और सारे जादू-टोने टूट जायेंगे। तब ऐ बहिश्तके फरिश्तो ! जो हम औरतोंकी मीठी हया और शर्मकी हिफाजत करते हो, अपनी तेज नजरें चमकते पंखोंतले छिपा लेना। यह बदकारोंकी शोखी नहीं है, (हालांकि हम कनीजोंके लिये उसकी इजाजत है) जो मुझे आगे धकेल रही है। आह, आज रातको अपने कलमोंको सुला देना। अपने रिसालोंमें यह सब न लिखना। मैं खाईपर खड़ी हूँ, भयंकरताका कुत्ता मेरे पांवके आसपास भोंक रहा है। मैं यह सोचनेके लिये नहीं रुक सकती कि मैं शर्मो-हयाकी कैसी आगमें भागी जा रही हूँ या ठंडी सुरक्षित आंखें किस तरह मेरी फजीहत करेंगी। मैं जल भी जाऊं तो भी इसी रास्ते जाऊंगी। तुम इस वक्त मुझे फूंक-फूँककर पांव रखनेके लिये नहीं कह सकते ! ना, ना, खतरा बहुत करीब आ गया है और मेरे भागनेके लिये सिर्फ एक रास्ता बच गया है। मैं उसीपर सरपट भागी जाती हूँ। भागकर खुद मुहब्बतके बाजुओंमें जा रही हूँ।

(परदा गिरता है)

दृश्य २

(इब्ने सावीका मकान। जनानखानेका एक कमरा)

आमिना, दुनिया

आमिना — वह आ गया ?

दुनिया — हां, आया तो है।

आमिना — पूरे तीन दिनोंके बाद ! मैं उसे डांटूंगी — दुनिया, उसे मेरे पास

दुनिया — यह ठीक है। होंठ थोड़े और दबाइये ! और भौंहें सिकोड़नेकी पूरी कोशिश कीजिये। हुँ, अब थोड़ी बहुत सख्त लग रही हैं। यह देखकर उसे लाना। मैं सख्ती करूंगी।

कांपना चाहिये। अरे, आपने हंसकर सब काम बिगाड़ दिया।

आमिना — चल भाग, पगली। उसे बुला यहां।

दुनिया — बिन बुलाये ही मुजरिम हाजिर हैं।

(नूरुद्दीन आता है)

नूरुद्दीद — (दरवाजेसे) अय्यूब, अय्यूब ! मेरे कमरेमें शरबतका एक प्याला। (अन्दर आते हुए) खैर, अम्मा, देखो मैं वापस आ गया। तुम्हारा घुमक्कड़ अवारा बेटा, तुम्हारा अभागा सैलानी, अवारागर्दीसे तंग आकर अपनी अम्माके प्यारका भूखा, वापस आ गया है। तुम्हें मुस्कुराते देखना कितना अच्छा लगता है।

आमिना — मेरे चहेते बेटे !

नूरुद्दीन — अरे दुनिया, यह कैसी अजीब शकल बनायी है ?

दुनिया — मेरी त्यौरी चढ़ी हुई है, मेरे माथे पर बल पड़े हैं। तुम देखकर कांपते नहीं ? ना ? सीधी-सीधी बात यह है मेरे भटकते भाई, कि हम दोनों सख्ती करनेकी आजमाइश कर रहे थे और चाहते थे कि सांप जैसी जहरीली आंखोंसे निकली आगकी लपटोंसे तुम्हें झुलसा दें। तलवारोंसे भी तेज जबानसे तुम्हें भला-बुरा कहना था। हम तुम्हें जलाकर राख कर देनेवाले थे। आह, हमारा यह

काम खतम होते-होते तुम्हारी हालत बड़ी दर्दनाक हो जाती। और बातें इनसे पूछ देखो।

आमिना —— नूरुद्दीन ! उसकी बातें मत सुन, लेकिन बोल, बेटा, अपनी मांको खलबली और परेशानियोंमें डालकर इस तरह आवारागर्दी करना ठीक है क्या ? ओह, हमें तेरे लिये कुछ करना पड़ेगा।

दुनिया —— ओह, अब देखो, हम संगदिल हैं।

नूरुद्दीन —— अम्मा, बाहर इसलिये घूमता हूँ कि मैं रस्म-रिवाज सीखूँ और आदमियोंको पहचानूँ और इस तरह आनेवाले वक्तके लिये तैयार हो सकूँ।

दुनिया —— बिलकुल सच, और तरह-तरहकी शराबोंको चखूँ और लड़कियोंके रंग-ढंग देखूँ। दमिश्कसे कैसी आंखें आती हैं और काहिरासे कैसी, बगदादके लाल होंठ और यमनके छरहरे जिस्म, सारे बसरामें किसकी कमर पतली-से-पतली है या किसके घुँघरू-तले चांद-सा खूबसूरत छोटा-सा पांव है —— ये भी तो तालीमके हिस्से हैं और पढ़े-लिखे संजीदा जवान आलिमोंको सीखने ही चाहियें, है न बिरादर ?

नूरुद्दीन —— दुनिया, ये चीजें भी दुनियादार इन्सानको भूलनी न चाहियें। और अम्मा, तुम सोचती हो कि यहां जनानखानेमें तेरी गोदमें बैठा-बैठा ही मैं बाहरकी दुनियाके चाल-ढाल सीख सकूँगा ?

आमिना —— ना, बेटा, हरगिज नहीं। देखा दुनिया, यह मटरगश्ती इतनी बुरी नहीं है। मुझे यकीन है कि लोग इसकी बुराइयां खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया करते हैं।

दुनिया – ओह, यह बड़ी सख्त बात है !

आमिना —— तुम्हें इतना बेलगाम न होना चाहिये। लेकिन देखो, नूरुद्दीन, अगर अभीसे एहतियात करना न सीखा तो जब हम न रहेंगे तब क्या करोगे ? हमसे मिली हुई जायदादको फूँककर फिर क्या करोगे ?

नूरुद्दीन —— तब, अम्मी, जिन्दगी तो तभी शुरू होती है। मैं परदेश चला जाऊंगा, एक बांका खुदाई फौजदार बनकर अपने सच्चे देश परिस्तानमें जा पहुँचूँगा, मूरोंके बीच फिरूंगा, तिलस्मी पत्थरोंसे बना नाजुक शहर गरनाता देखूँगा। काहिरा, तंजा, तबरेज देखूँगा या फिर पूरबकी तरफ चला जाऊंगा जहां अब भी पुराना जादू मौजूद है। लकड़ीकी इमारतोंवाला पीकिंग ढूँढ़ निकालूँगा, बुतपरस्तोंकी दिल्लीके पीतलके खम्भे, और तरह-तरहकी नक्काशीवाले बड़े सात मंजिले मंदिरोंको देखूँगा, और एकदम अजाने रूमानी देशोंमें जाकर

तलवार हाथमें लिये इस्लामका उपदेश दूंगा, मसालोंकी बोरियां बसरासे जावा और जापानतक बेचता फिरूंगा और आगे बढ़ता हुआ अनजाने जजीरों तक पहुँचूँगा, समन्दरों और सागरोंको, जिन्हें अभीतक नाम भी नहीं दिये गये हैं, छान मारूंगा, और खतरेको जहां पाऊंगा गलेसे पकड़कर दबोच लूँगा।

दुनिया — और अपनी तलवारसे खून उगलते अजदहों को कत्ल करूंगा, राक्षसोंको काट डालूँगा, दैत्योंके टुकड़े कर दूंगा और पनकौओंको गुदगुदाऊंगा......

नूरुद्दीन — फिर किसी देशमें मैंने अभी तक ठीक नहीं किया है कहां......

दुनिया — उसे कमकचिया कह लो न, या बेहूदिस्तान कहो।

नूरुद्दीन — वहां एक सुलतानकी बेटीसे निकाह करूंगा जिसकी प्यारी-प्यारी आंखें होंगी, सिरपर घुंघराले-घुंघराले बाल होंगे। उसे अनोखे पराक्रम करके पाऊंगा। उसके दुश्मनोंके सामने उसके लश्करोंकी रहनुमाई करूंगा। लड़ाई-के शोरगुलमें लोहेकी दीवारोंसे घिरे शहरोंमें कूद पड़ूँगा, खतरोंसे घिरी सल-तनतोंको बचाऊंगा। जलते, धुँआ उगलते नाउम्मीद शहरोंमें फतहका झंडा फहरानेवाले राजाओंको कत्ल करूंगा। और इस तरह अपनी मलिकाकी सल्तनत दूर-दूरतक.........

दुनिया — बसरासे काफी दूर चांदतक।

नूरुद्दीन — वहां लाल बिल्लौर, संगमरमर और जस्परका बड़ा महल होगा, उसकी मीनार मूँगेकी बनी होगी, उसकी दीवारोंपर नीलम और लालसे कुरानकी आयतें चमकती रहेंगी। मैं बैठा-बैठा सोनेके प्यालोंमेंसे बढ़िया शराब पीता रहूँगा और हल्का-हल्का नाच देखता जाऊंगा, तब संगीतके अमर सुर धीरे-धीरे अपने खामोश घरकी ओर चलते रहेंगे। आसमानके अनगिनत तारोंकी तरह मेरा खूबसूरत महल कनीजों और बांदियोंके हसीन चेहरोंसे जगमगायेगा। मेरी दौलत ऐसी बेशुमार होगी कि हर रोज लाखों खर्च करूंगा फिर भी कमी न होगी। मैं इतनी खैरात करूंगा कि मेरी सल्तनतमें गरीब न होंगे और न रहेंगे दुखियारे क्योंकि मैं हर रात बड़े रहम-दिल खलीफा हारुन-अल-रशीद-की तरह भेस बदलकर जाफर और मसरूरके साथ घूमता फिरूंगा और जहां नाइसाफी होगी उसे दूर करूंगा, अलमुईनोंको दबाकर रखूँगा और अपने प्यारे अब्बा जैसे शानदार इंसानोंको बड़े ओहदे और कीमती तोहफे दूंगा। सभी इंसानोंके लिये परवरदिगार बनूँगा।

दुनिया — प्यारे नूरुद्दीन, तुम मेरा निकाह अपने बड़े वजीर जाफरसे करना ताकि हम कभी अलग न हों। हर मुबारक रातको हम तुम्हारे दीवानखानेमें बैठकर

पिया करेंगे और मजे लेंगे। जबतक पूनमका चांद चमका करेगा, दिमाग बिगड़ा करेंगे और शराब पी जाया करेगी, तबतक हम ऐश किया करेंगे। परिस्तानके खलीफा, मैं अभीसे अपनी अरजी पेश कर रही हूँ।

नूरुद्दीन — तुम्हारी अरजी मंजूर हो गयी। इस बीच, मैं आसपासकी सल्तनतोंमें मरियमकी घुँघराली जुल्फों और शजरतु अल-दुर्रकी मीठी स्वरलहरीमें अपना दिल बहलाता हूँ।

दुनिया — नहीं भाई साहब, जबतक तुम्हारी सल्तनत मिले हम संगदिल, निहायत संगदिल बने रहेंगे।

आमिना — तुम्हारे अब्बा बहुत नाराज हैं। मैंने उनको इतना खफा होते कभी नहीं देखा। मेरे बच्चे, हमें सजा देनेके लिये मजबूर न करो।

नूरुद्दीन — बोसा देकर? दुनिया, देख तो जरा इन दो प्यारे मक्कारोंको। ये अपनी हल्की शहद-सी मीठी धमकियोंसे और वे अपनी दहाड़ोंसे डराते हैं। ऊंह! मुझे तुम्हारी परवाह नहीं।

आमिना — परवाह नहीं!

नूरुद्दीन — ना, आपके या उनके लिये जरा भी नहीं मेरी छोटी अम्माजान, या फिर उतनी ही परवाह है जितनी एक बोसेके लायक हो।

आमिना — दुनिया, मैं तुझसे कहती थी न, यह सारी खुदाईमें सबसे प्यारा लड़का है, सबसे अच्छा, सबसे रहमदिल!

दुनिया — हां, आपने यही फरमाया था। और क्या सारे जहांका सबसे प्यारा लड़का सबसे प्यारी लड़कीको हर जगह ढूँढता-फिरता रहा, जब कि प्रशंसक बने सूर्यने नाचते-नाचते आसमानके तीन चक्कर लगा लिये?

नूरुद्दीन — दुनिया, मैंने उसे ढूँढ लिया है।

दुनिया — आहा, यह पीछे नजर क्यों?

आमिना — तुम्हारे अब्बा!

(इब्ने सावीका प्रवेश)

इब्ने सावी — आमिना, मुझे महलसे बुलावा आया है, कुछ दालमें काला है। अरे, अरे पाजी, अरे शैतान शोहदे! तू आ गया?

नूरुद्दीन — जी हां, जनाब मैं कबका आया हूँ।

इब्ने सावी — अरे बदमाश, ठग! तेरा मतलब क्या है? बेईमान, क्या मेरा मकान तेरी कारवां सराय है कि जब तेरी मरजी हो तू आ जाय?

नूरुद्दीन — यह बसरामें सबसे खुशहाल घर है जहां सारी खुदाईमें सबसे प्यारे मां-

बाप अपने आवारा बेटेको माफी बख्शते हैं।

इब्ने सावी —— एं ! अच्छा ! क्यों बे, तू छोटे-मोटे गहने खरीदेगा और मेरे पास तकाजे आते रहेंगे ? मेरी हजामत करवा देगा क्या ?

नूरुद्दीन —— उसने आपसे तकाजे किये ? उम्मीद है उसने वाजिब दाम मांगे होंगे। मैंने उससे यही कहा था।

इब्ने सावी —— साहब, यह कैसा तमाशा है जिसमें आप अपनी रखैलोंके लिये गहने खरीदते फिरें और अब्बाके पास बिल भेजते रहें ? यह चाल-चलन किसने सिखाया आपको ?

नूरुद्दीन —— साहब, आपने ही।

इब्ने सावी —— पाजी, मैंने ?

नूरुद्दीन —— जी, आपने फरमाया था कि कर्जसे गुनाहकी तरह बचना चाहिये। जनाब, और रास्ता ही कौन-सा था कि मैं जेवर भी पा लेता और गुनाहसे भी बच जाता ?

इब्ने सावी —— बदतमीजी भरी दलीलें ! अरे शराबी, घुँघराली बलखाती जुल्फों-वाले शराबी अरस्तू, यह बता, मैंने तुझे रखैलें रखनेको कहा था ? उनके लिये गहने खरीदनेको कहा था ?

नूरुद्दीन —— इतने सारे लफजोंमें तो नहीं।

इब्ने सावी —— इतने सारे, शैतान !

नूरुद्दीन —— जब आपने मेरी शादी नहीं करवायी और घरमें मौज उड़ानेके लिये हसीन बांदी तक नहीं खरीदी तो मैंने सोचा आप चाहते हैं कि मैं बाहर भाग-दौड़ करके मौज लूटूँ और दुनियाकी हलचलसे वाकिफ होता रहूँ। अगर यह गलती थी तो उसे ठीक किया जा सकता है।

इब्ने सावी —— आह, मैं बेजबान हो गया !

नूरुद्दीन —— मुअज्जम एक फारसकी लड़की बेच रहा है। आप उसे मेरे लिये खरीद दें —— उसका दाम दस हजार मुहरें हैं......

इब्ने सावी —— फारसकी लड़की ! मुअज्जम बेच रहा है। दस हजार मुहरें ! (स्वगत) यह जाल कहांतक फैलेगा ? मुझे डर लग रहा है।

नूरुद्दीन —— आप उसे मेरे लिये खरीद दें —— मैं वचन देता हूँ, सातमेंसे चार दिन घर-पर ही रहा करूंगा।

इब्ने सावी —— सुन शोहदे ! मुझे महलसे बुलावा आया है, मैं लौटकर आऊं तब डण्डोंकी मारके लिये तैयार रहना, उबलते पानीमें पकाये जानेकी राह देखना। (स्वगत) मुझे उसे अंधेरेमें रखना चाहिये। दस दिनतक काममें डूबा रहूँगा

उसके बाद ही बांदीकी बात सोची जायगी। दलालसे कहूँगा कि लड़कीको अपने पास रखे रहे। (प्रकट) आह, मैं भूल ही गया था! मैंने कसम खायी थी कि तुम्हारे अपराधोंके लिये तुम्हारी जुल्फें खींचूँगा।

नूरुद्दीन —— नहीं साहब, मैं यह न करने दूँगा। मैं उनका मालिक नहीं हूँ। मेरा एक भी बाल ऐसा नहीं है जो यादगारके तौरपर मांगा न जा चुका हो।

इब्ने सावी —— क्या ! क्या ! बे-अदब शोहदे ! (स्वगत – आह, हंसता खूबसूरत शैतान !) आमिना, सुन, दुनिया अनीसके साथ हर रात सोया करे। नहीं, जरा इधर आ, और कुछ सुनती जा।

(आमिनाके साथ जाता है)

नूरुद्दीन —— ओ दुनिया, लंबी दुनिया, प्यारी हंसती हुई दुनिया ! मैं इश्कमें बेकरार हूँ। मैं डूब गया हूँ, मेरा गला घोंटा जा रहा है।

दुनिया —— सारी खुदाईमें सिर्फ एक फारसी लड़कीके लिये ? लेकिन वह तो अबतक बिक चुकी होगी।

नूरुद्दीन —— मैंने मुअज्जमसे पूछा था।

दुनिया —— वह परले दर्जेका झूठा है।

नूरुद्दीन —— अगर वह बेच दी गयी तो मैं सब कुछ छोड़कर इस खाली खुदाईमें उसीको ढूँढता फिरूंगा।

दुनिया —— क्या, पीछे घूमती एक नजर तुम्हें आगे धकेल सकती है ?

नूरुद्दीन —— क्या मतलब, दुनिया ?

दुनिया —— भाईजान, मैं एक-दो बातें जानती हूँ जो तुम्हें नहीं मालूम। ऊपरके कमरेमें एक प्यारी चिड़ियाने मुझे गाकर बताया है।

नूरुद्दीन —— दुनिया, तू कुछ छिपाये बैठी है और मुझे वही सुनना है।

दुनिया —— बतानेसे क्या दोगे भाई मेरे ? तुम्हारे उठाईगीर बोसे नहीं चाहियें लेकिन एक नरम हल्का-फुल्का बिरादराना तोहफा मैं नामंजूर न करूंगी।

नूरुद्दीन —— तू सारी खुदाईमें सबसे शैतान और सबसे प्यारी लड़की है। एक आह भरते मजनूँके लिये तू सबसे पगली, सबसे मीठी बहन है। चल, अब बता।

दुनिया —— और, और ज्यादा ! मेरी खुशामद होनी चाहिये।

नूरुद्दीन —— बस, और नहीं, चल, शैतानकी मार, तू मुझे लटकाये रखेगी ? (कान खींचता है)

दुनिया —— बस, बस, काफी है ! फारसी लड़की —— अरे मजनूँ ! सुन और समझ ! मैं अपनी अनोखी कहानी सुनाती हूँ —— कान खोलकर सुन —— एक लंबी,

लच्छेदार और इशारेवाली दास्तान — या खुदा! मैं दास्ताको काटे देती हूँ। फारसी लड़की तुम्हारे लिये खरीदी जा चुकी है और ऊपरके कमरेमें है।

नूरुद्दीन — दुनिया, दुनिया! लेकिन वे दो प्यारे फरेबी.........

दुनिया — वह सब तुम्हें हैरतमें डालनेके लिये था।

नूरुद्दीन — मुझे हैरतोंसे हैरतमें न डाल। मुझमें आग लग गयी, दुनिया, मैं जल रहा हूँ। ऊपरवाले कमरेमें ?

दुनिया — ठहरो, रुको! तुम्हें पता नहीं एक राक्षस उसके दरवाजेपर पहरा दे रहा है। काला, सफेद हाथीदांतसे दांतोंवाला, डरावना, दांत निपोरता एक देव है। एक बड़ा ही बदमिजाज तगड़े बदनका भयंकर हब्शी जिसका नाम हरकूस है।

नूरुद्दीन — ओह, वह हिजड़ा!

दुनिया — रुको, ठहरो, सुनो। उसके पास तलवार है — एक डरावनी, तेज, खौफनाक तलवार।

नूरुद्दीन — देखा है तुम्हारा हिजड़ा और उसकी तलवार! मैं जन्नतकी तरफ चढ़ रहा हूँ, देखें कौन रोकता है ?

(जाता है)

दुनिया — ठहरो, ठहरो, सुनो भी! धनुषमेंसे तीरकी तरह वह निकल भागा। अब खेल शुरू हो गया और बसराके सुलतान, मुहम्मल अल जैनी, अपनी कनीजके लिये सीटियां बजाते रहें। मैं किस्मत हूँ, मैं वजीरों और सुलतानों-के मनसूबें उलट-पुलट देती हूँ।

(जाती है)

दृश्य ३

इब्ने सावीका मकान। जनानखानेमें ऊपरके कमरे)

दुनिया एक पलंगपर सो रही है। नूरुद्दीन और अनीसका प्रवेश

नूरुद्दीन — मैंने कहा था न, सवेरा हो गया।

अनीस अलजलीस — सवेरा, इतनी जल्दी ? अभी-अभी तो शामका सितारा चमक रहा था। क्या यह सवेरेकी रोशनी है ?

नूरुद्दीन — देख, चांदके करीब एक तारिका पहरा दे रही है। आसमानसे रुखसत होनेसे पहले तुम्हें देखनेका इन्तजार है। परी, वह तुम्हारी बहन है क्या ?

अनीस अलजलीस — यह हमारा सितारा है और हम दोनोंकी हिफाजत करता है।

नूरुद्दीन —यह अनीसका सितारा है, अनीस अलजलीसका सितारा, जो फारससे इसकी रुपहली किरणोंमें रास्ता देखती हुई आवारा नूरुद्दीनकी उन बाहोंमें समा गयी जो उसे हमेशाके लिये पकड़े रहेंगी। प्यारी, तू मेरी है ! मैं अभी-तक पूरा-पूरा यकीन ही न कर सकता था। अजीब बात है, ताज्जुब है कि मैं, जो किसी चीजके लायक नहीं, उसे वह चीज मिले जिसपर सबकी आंखें हों ! हम बेवकूफ हैं जो कांचके टुकड़ोंको सितारे समझकर उनके पीछे भागते हैं। ओ अक्लमन्द औरत, तू सीधी जन्नत आ पहुँची, लेकिन मैं रास्तेमें भटकता रहा और मसर्रत की ताजगीको आवारागर्दी और ऐयाशीसे पामाल कर दिया। मैं बदमजा, खट्टे और यूँ ही आ टपकनेवाले बेरोंसे मुहब्बतके पक्के फलकी आशा करता रहा। ओ अहमक ! काश, मुझे मालूम होता ! अब और ज्यादा क्या कह सकता हूँ, बस यही कि मैं तेरे लायक नहीं हूँ फिर भी, अपनी नालायकी जानते हुए भी तुझे लूँगा और जो होना होगा होता रहेगा।

अनीस अलजलीस — घरमें हलचल हो रही है।

नूरुद्दीन — यहां कौन सोया पड़ा है ? मेरी बहन दुनिया !

दुनिया — (जागती हुई) सवेरा हो चुका ? बच्चो, मेरी दुआएं लो। प्यारो, अच्छे और दयालु बनो, दुलारो, एक दूसरेसे मुहब्बत करते रहना।

नूरुद्दीन — शुक्रिया शरारत बानू। शुक्रिया, बावली बेगम अम्मा।

दुनिया — अब किधर ?

नूरुद्दीन — जन्नतसे जमीनपर।

दुनिया — ठहरो, ठहरो ! तुम अपना पार्ट पूरा किये बगैर स्टेजसे नहीं जा सकते। अब आंख खोलकर वह नजारा देखो। हाथ उठेंगे और फटकार पड़ेगी। अनीस, तुमपर कोड़े बरसेंगे, नूरुद्दीनको पछताते हुए कदमोंपर मक्का भेज दिया जायगा और मेरी शादी कर दी जायगी। (दरवाजा खोलकर) ओह, हमारा डरावना हब्शी यहां झपकियां ले रहा है ? शरीफ आदमखोर ! खर्राटे लेता जा, कुदरतको भी मात करनेवाले खौफनाक खुर्राटे लेता जा। तेरी चमड़ी-पर जो बेभावकी पड़ेगी उससे अपने-आपको बचानेके लिये खुर्राटे लेता जा। नूरुद्दीन, मेरा इन्तजार करना।

(जाती है)

अनीस अलजलीस —— वे नाराज न होंगे ?

नूरुद्दीन —— ओह, मैं दो मुस्कानोंमें सस्ती माफी खरीद लूँगा।

अनीस अलजलीस —— अब कुछ भी हो, हम एक दूसरेके हो चुके।

नूरुद्दीन —— हमारे लिये हंसी-खुशीके दिनोंको छोड़कर और कुछ न आयेगा। मेरे बेहतरीन जौहर, तू मेरे गलेमें, मेरे दिलकी धड़कनोंसे भी ज्यादा नजदीक रहेगी।

अनीस अलजलीस —— हां, बोसोंसे भी नजदीक, मसर्रतसे भी ज्यादा करीब। उस मुहब्बतकी तरह जिसे खुशी और गम कम नहीं कर सकते, लम्बी जुदाई बदल नहीं सकती, और न हर रोज खुशीकी शाहखर्ची ही उसे खतम कर सकती है।

नूरुद्दीन —— तेरे अन्दर मुहब्बत है।

(दुनिया वापस आती है)

दुनिया —— मैंने नुजादसे कहा है कि अम्माको यहीं भेज दे। देखना, कैसा शराफत भरा तूफान आयेगा।

(अमीना दरवाजे पर आती है)

आमिना —— हरकूस ! सो रहा है !

हरकूस —— घें, खूँ............घें, खूँ.........

दुनिया —— आहा कैसा अच्छा दैत्य है ? कुदरती ढंगसे घुरघुराया।

आमिना —— हरकूस, क्यों, सोता है क्या ?

हरकूस —— सोना ! मैं ! बेगम, मैं आंखें बन्द किये हुए कुरानकी आयात गुनगुना रहा था। आप लोग हम गुलामोंको मजहबी इबादतोंके लिये समय देते ही कहां है, लेकिन उस दुनियामें सब हिसाब साफ हो जायगा।

आमिना —— और क्या चाबुक खाते-खाते भी ध्यान कर सकेगा ? क्योंकि तेरे ऊपर चाबुक पड़नेको हैं।

हरकूस —— लाठी या चमड़ा, हरकूसके लिये सब बराबर हैं। मुझे कोई जन्नतकी सीधी राहसे मारपीट कर हटा न सकेगा।

आमिना —— मेरे दिलमें अंदेशा पैदा हो रहा है। (कमरेमें आती है) मेरे बच्चे, यह तूने अच्छा किया क्या ?

नूरुद्दीन —— मेरी जान, समझ लो डांट पिला दी गयी। अपनी भवें सिकोड़कर पेशानी न दुखाओ।

आमिना —— और दुनिया, तेरा भी इसमें हाथ था ?

दुनिया —— मेरा हाथ, तुम मेरी नामवरीको घटा न सकोगी। मैं ही कारीगर, मदद-गार और किस्मतको पूरा करनेवाली हूँ।

आमिना — दुनिया, नाफरमानी और बेअदबीमें भी एकदम बेहया हो क्या ? तुम्हारे अब्बाका नजला हम सबपर गिरेगा।

नूरुद्दीन — होगा यही, पहले डांट-डपट फिर मुस्कान और उसके बाद आलिंगन। इससे बदतर कुछ न होगा। हमारा कुसूर बस इसी लायक है। आप लोगोंके प्यारे हाथोंमें मेरे लिये एक तोहफा छिपा था। आपको पता चलनेसे पहले ही मैंने उसे हथिया लिया।

आमिना — तेरे लिये, मेरे बेटे ? वह तेरे लिये नहीं, सुलतानके लिये थी। बच्चे, यह तेरी सबसे बड़ी गलती थी। इसके आगे और सब गलतियां काबिले माफी हैं।

नूरुद्दीन — सुलतानके लिये ! दुनिया, तूने कहा था कि इसे मेरे लिये ही खरीदा गया था, मेरे लिये मुहब्बत और हैरतसे भरा तोहफा।

दुनिया — हां, मैंने यही कहा था।

आमिना — इतना झूठ, दुनिया !

दुनिया — झूठ, नहीं, जरा भी नहीं। वह इसीके लिये खरीदी गयी थी क्योंकि आखिर अब इसीको मिली है। और हैरत ! अच्छा, अम्मा, क्या आपको हैरत नहीं हुई ? और चाचा तो और भी बुरी तरह चौंकेंगे। मेरा भाई और अनीस भी गफलतमें पड़ गये — इस दुनिया-ए-आजमको छोड़कर सबकी यही हालत है। मां, यह झूठ नहीं बेहद सचाई है। नसीब के बारेमें एक दिलेर अटकल है।

नूरुद्दीन — मुझे इसका पता न था, फिर भी दुनियाको न कोसो। क्योंकि अगर मुझे मालूम भी होता तब भी मैं नसीबसे अपनी चीज मांगने भागता-हांफता पहुँच ही जाता।

आमिना — तुम्हारे अब्बा क्या सोचेंगे ? मुझे डर लग रहा है। वे आदतसे बहुत ज्यादा ताकीद कर गये थे। तू कुछ देरके लिये यहांसे गैन हो जा। मुझे उनके गुस्सेकी पहली सांस झेल लेने दे।

नूरुद्दीन — सुलतान ! अरे सारे जहान्का खलीफा होता तो भी उसे मेरी महबूबा न मिलती। गुनाहके साथी, चलो, चलें !

(दुनियाके साथ जाता है)

आमिना — हरकूस, जाकर अपने मालिकको यहां बुला ला। लापरवाह नौकर ! अपनी कमरके पट्ठे कड़े बना ले।

हरकूस — हरकूसके लिये सब समान है। लकड़ी हो या चमड़ा ! चमड़ा हो या

लकड़ी ! इस बदजात थकी मांदी दुनियांकी यही रस्म है।

(जाता है)

आमिना –– अनीस, अब भी बता, क्या बहुत देर हो गयी है ? तेरे गुलाबी गाल और नीची निगाहें गलतीकी गवाह हैं। बच्ची, मुझे शक है कि तेरी तबीयत और तालीम तेरे चेहरे जैसी हसीन नहीं है। क्या तू मना न कर सकती थी ?

अनीस अलजलीस –– बेगम, मेरी हालत तो देखिये। क्या एक गुलाम मना कर सकती या हुकुम दे सकती है ? हमें चुपचाप और झटपट हुकुमकी तामील करना सिखाया जाता है। जो बात आजाद लोगोंमें नेकी है वही हमारे अन्दर गुनाह बन जाती है। आप अपने आवेशोंको काबूमें रखिये। यह खिदमत हमारे ऊपर न लादिये। यह हमारे बसकी बात नहीं है।

आमिना –– तेरा दिमाग चुस्त और जबान तेज है फिर भी तेरी बातें गुलामों जैसी नहीं है। मैं तुझे दोष नहीं दूंगी।

अनीस अलजलीस –– बेगम, मैं इन्कार नहीं करती। मेरे दिलने इस कसूरको मंजूर किया था।

आमिना –– मैं जानती हूँ, तुझे किसने मजबूर किया था। तेरे दिलके सामने हथियार डालनेके सिवाय और कोई चारा न था। अन्दर चली जा।

(अनीस अन्दर जाती है। हरकूस और इब्ने सावीका प्रवेश)

इब्ने सावी – मुझे उम्मीद है, मैं उम्मीद करता हूँ कि मैंने जिस बातको रोकनेकी कोशिश की थी वह हो नहीं गयी। यह गुलाम सिर्फ खीसें निपोरता है और मेरे सवालोंके उत्तरमें अण्ट-सण्ट बड़बड़ाता है।

आमिना –– बुरे-से-बुरी खबर है।

इब्ने सावी –– ऐसा क्यों हुआ ! मेरी बेवकूफी थी और उसकी सजा मुझे ही भुगतनी होगी। साहब, जो कुछ हुआ है उसके लिये तुम्हें इनाम जरूर मिलेगा।

हरकूस –– दुनियाकी यही रिवाज है किसीके कील-कांटे ढीले हुए तो बस हरकूस-को पीटो। चूँकि छोटे साहब गलत खिड़कीसे चढ़ आये और रस्सीको ही सीढ़ी समझ बैठे इसलिये मेरी कमरकी मुसीबत आनी चाहिये। सरकार, क्या खिड़कीकी सिलपर मेरा पहरा लगा था ? क्या हवामें खड़े रहनेके लिये मेरे पंख हैं या लकड़ीके आरपार देखनेके लिये जिन्नातकी आंखें हैं ? हाय, ना-इन्साफी कितनी कड़वी है।

इब्ने सावी –– अरे नालायक, तुझे झूठ भी नहीं आता। इसीलिये तेरे ऊपर कोड़े बरसेंगे।

आमिना —— किसीको न कोसो। यह किस्मतका अटल खेल है।

इब्ने सावी —— ओह, उसी बहाने हम अल्लाहपर अपने गुनाह लादते रहते हैं फिर भी बचा नहीं जा सकता। हमारी नरमीने उसे इतना बिगाड़ दिया है कि अब जुल्म किये बगैर सजा देना नामुमकिन है। जब कुसूर दूसरोंके दरवाजेपर होते थे तो हम तरह दे जाते थे, अब वही हमारा दरवाजा खटखटा रहे हैं।

आमिना —— क्या करेंगे आप ?

इब्ने सावी —— इस कुसूरकी सजा है मौत, पर कुसूरवारकी नहीं। आसान तरकीब तो यही होगी कि कुसूरकी मौत हो जाय और कुसूरवारको जिन्दा छोड़ दिया जाय।

आमिना —— वजीर साहब, आप बौखला गये हैं इसलिये एक जरा-सी चीज टूटनेपर ऐसी बात करते हैं।और ज्यादा न तोड़िये। नूरुद्दीनको अनीस अलजलीस दे दो। किस्मतका यही इरादा है। महान् अल्जैनीके बिस्तरके लिये इससे भी हसीन लौंडी खरीद लो। उनका पैसा खजानेमें वापस रख दो और इस कुसूर-को रफा-दफा कर दो।

इब्ने सावी —— झूठ बोलकर ?

आमिना —— चुप्पी साधकर।

इब्ने सावी —— क्या खुदा चुप रहेगा ? मेरे दुश्मन चुपचाप रहेंगे ? इब्ने खाकान चुप रहेगा ? आमिना, मेरे बच्चोंने मेरी बेइज्जती और मौतके लिये साजिश की है।

आमिना —— इस तरह मातमी चेहरा बनाकर इस मामलेका सामना न कीजिये। वजीर साहब, दरबारमें आपको एक औरतके दिमागकी जरूरत है। मुईन बोल सकता है तो क्या आप गूँगे बने रहेंगे। तब सुलतान किसकी बातपर यकीन करेंगे ? अपने दिमागको जरा चुस्त-चौबन्द रखिये, बहादुर बनिये, होशियार बनिये,अपने-आपको भी बचाइये और बच्चेकी भी हिफाजत कीजिये।

इब्ने सावी —— तुम मुझे उस राहपर चलानेकी कोशिश करती हो जिसे मेरा कमजोर दिल चुन रहा है लेकिन दिमाग नहीं मानता। लेकिन सोचो तो बेगम, अगर हम अपने ही घरमें ऐसी बड़ी और जबरदस्त गलतीको माफ कर दें तो फिर अपने लड़केको बचानेकी क्या उम्मीद हो सकती है। आह, उसका जिस्म नहीं, उसकी रूह बचानेकी ? वह गुनाहोंमें पथरा जायगा और उसपर कोढ़की तरह पापकी पपड़ियां जम जायेंगी।

आमिना —— ऐसा करो —— खौफनाक गुस्सा दिखाओ, उसके गलेपर एक तेज चाकू

रखो, उसे खूब डराओ, धमकाओ। तब मैं रोती हुई आकर उसकी तरफसे अच्छे चाल चलनकी जमानत देकर उसे छुड़ानेका ढोंग रचूँगी।

इब्ने सावी -- इसमें कुछ उम्मीद है। मुझे एक चाकू देती जाओ, मैं खौफनाक शक्ल बनानेकी कोशिश करूंगा।

आमिना -- हरकूस, एक कटार ले आ!

(हरकूस उन्हें कटार देता है)

इब्ने सावी -- लेकिन देखो, तुम घबराहटके मारे जल्दबाजी न करना। वरना सारा खेल बिगड़ जायगा।

आमिना -- मुझपर यकीन रखो।

इब्ने सावी -- हरकूस, जा, मेरे बेटेको बुला। खबरदार, उसे न बताना कि मैं यहां मौजूद हूँ। (हरकूस जाता है) आमिना, चली जा। (आमिना जाती है) कभी-कभी देखते हैं कि खेलोंका बड़ा संजीदा असर होता है फिर इस बार क्यों न हो? कम-से-कम परखने लायक तो है ही? कामयाबी मिले या नाकामयाबी, खलीफाके कामपर महान् रूम जानेसे पहले मुझे जल्द ही कुछ करना चाहिये। उसके कदम सुनायी देते हैं।

(नूरुद्दीन और हरकूस आते हैं)

नूरुद्दीन -- तुम्हें पूरा यकीन है? इस मेहरबानी भरी बेवफाईके लिये तुम्हें खूब सोना मिलेगा।

हरकूस -- हरकूसपर भरोसा रखिये। अगर वे मुझे मारें भी तो क्या? आखिर छड़ी छड़ी है और चमड़ा चमड़ा।

नूरुद्दीन -- अब्बा!

इब्ने सावी -- आ, बदमाश, नमकहराम, पाजी, शैतान! (पलंगपर गिराता है और उसपर कटार तौलता है) अब मैं तुझे मजा चखाता हूँ। अपनी रूहको तैयार कर ले, होशियार हो जा, अपनी काली और पापोंकी पपड़ीमें जकड़ी हुई रूहको जहन्नुमके लिये तैयार कर। मैं तेरा अब्बा नहीं, मौत हूँ मौत!

नूरुद्दीन -- अम्मा, जल्दी! बचाओ अम्मा!

(आमिना जल्दी-जल्दी आती है)

बेचारा बूढ़ा एकदम पगला गया है।

इब्ने सावी -- आह, औरत, तू इतनी जल्दी क्यों आ गयी?

नूरुद्दीन -- उनकी आंखें कैसी घूम रही हैं? शैतान, उन्हें छोड़ दे। उन्हें जल्दी उठा ले।

इब्ने सावी —— अरे बदमाश, मुझे उठा ले, क्या मतलब है तेरा ?

नूरुद्दीन —— उन्हें पसलीमें गुदगुदाओ। यही सबसे अच्छा तरीका है।

इब्ने सावी —— मेरी पसली गुदगुदाना ! बेहया कमबख्त ! तेरा गला काट लूँगा।

आमिना —— (सहमकर) खाविंद, यह क्या कर रहे हैं ? सोचिये तो, आपका इकलौता बेटा है।

इब्ने सावी —— न होता तो अच्छा होता। बुरे बेटेसे बिना बेटेके रहना बेहतर है।

नूरुद्दीन —— तो क्या बचनेकी कोई सूरत नहीं है ?

इब्ने सावी —— नहीं, चल तैयार हो जा।

नूरुद्दीन —— खैर, यूँ ही सही। लेकिन पहले मुझे आरामसे लेटने दीजिये।

इब्ने सावी —— आरामसे लेटना ! पाजी, मुझे तेरी बेहयाईपर ताज्जुब होता है। अब सीधा दोजखके दहकते कोयलोंपर लेटना।

आमिना —— बस, हद हो गयी।

अनीस अलजलीस —— (अन्दर झांकती हुई) वे गुस्सेमें बोल रहे हैं। ओह, बेहतर है मुझे मार डालें।

नूरुद्दीन —— दिलरुबा, नाहक अपने-आपको न डराओ। हम एक पुराना स्वांग रच रहे हैं, "जुल्मी अब्बा और उनका बेहया बेटा" की मश्क कर रहे हैं। मूर्ख बूढ़ा !

इब्ने सावी —— क्या ! क्या !

नूरुद्दीन —— देखो अपने दिलेर खूबसूरत और ईमानदार बेटेके खिलाफ जिद्दी मनचले मिजाज और सरकश गुस्सेको बेतहाशा बेलगाम करनेका क्या नतीजा आता है हालांकि मैंने आपको आगाह कर दिया था। और अब उनके मारे आपका दिमाग भी बिगड़ गया है। बेहूदा नाजबरदारी, तेरा फल कितना कड़वा-कसैला है ! सम्भल जाओ, अपने गुस्सेको थूक दो, इंसानके इस दुश्मनको काबूमें रखो। हाय, सब गुस्सेवाले, गजबनाक वालिदोंके लिये तुम कितनी बुरी मिसाल बने हो !

इब्ने सावी —— किसीने तुझे बता दिया है क्या (हरकूससे) खीसें निपोरते कमबखत !

हरकूस —— हां, हुजूर, मैं ही कुसूरवार हूँ। आपके कील-कांटे ढीले हुए तो बस हरकूसको पीट डालिये।

इब्ने सावी —— मेरे कील-कांटे, अरे कम्बख्त ! मैं अभी तेरे कील-कांटे ढीले किये देता हूँ।

नूरुद्दीन —— ना, अब्बा, छोड़िये भी उसे, मेरी बात सुनिये। मैं कसम खाकर कहता

हूँ कि मैंने आपके ऊंचे मनसब और कीमती जिन्दगी, अपने लहूसे भी ज्यादा प्यारी जिन्दगीका मजाक उड़ानेके लिये आपकी हुकुम उदूली नहीं की। मैं जानता न था कि मेरी अनीस सुलतानके लिये थी। मैं समझा था कि वह मेरे लिये ही खरीदी गयी थी और मुझे यही बताया गया था, और अब भी दिलो-जानसे मैं यही मानता हूँ कि किस्मत मेरे लिये उसे बसरा लायी थी।

इब्ने सावी -- मेरे बच्चे यह गलती थी।

नूरुद्दीन -- इसके लिये मैं पछता नहीं सकता।

इब्ने सावी -- तुम मेरे बेटे हो। खुले दिल, सच्चे और बहादुर! हालांकि कुछ ऐब भी है। अच्छा तो इस लौंड़ीको अपने पास रख लो लेकिन कसम खाओ कि इसके सिवा कोई रखैल, दाश्ता बांदी या जोरू तुम्हारे बाजुओंमें न समायेगी। और जबतक वह खुद न चाहे, तुम उसे बेच भी न सकोगे। यह कसम खाओ और अपनी मेहबूबाको रख लो।

नूरुद्दीन -- मैं कसम खाता हूँ।

इब्ने सावी -- हमें अकेला छोड़ दो। (नूरुद्दीन जाता है) अनीस, तेरे लिये ही मैंने उससे यह कसम ली है, शायद वह उसे निभा भी ले। तुम भी ऐसा ही बरताव करना। अजीज बीबीसे जरा भी कम न रहना।

अनीस अलजलीस -- आपका मिजाज कितना शरीफाना है जो कुसूरवारोंकी सबसे प्यारी ख्वाहिश पूरी करनेके लिये आमादा करता है!

इब्ने सावी -- अन्दर जाओ, मेरी बेटी, जाओ, अनीस! (अनीस जाती है) रूम जानेसे पहले मेरी आखिरी रात है। मैंने कहा था न, हारून रशीदकी जानिबसे यूनानियोंसे बातचीत करनी है। गैरहाजिरीका यह साल.........

आमिना -- बेजारीका वक्त है।

इब्ने सावी -- और इस बीच बहुत कुछ बिगड़ सकता है। इसलिये मैं इंशा अल्ला, बच्चोंको ज्यादा-से-ज्यादा सलामतीमें छोड़ूँगा। दुनियाका निकाह हो जाना चाहिये। इब्ने खाकान उसे अपने बेतमीज पिल्लेके लिये चाहता है लेकिन उसे वह न पा सकेगा। उसका निकाह उसीके साथ हो सकता है जिसके पास उसकी हिफाजतके लिये दिल और मजबूत बाजू हैं।

आमिना -- वह कौन है खाविंद?

इब्ने सावी -- मुराद, शहरका कोतवाल। वह रोज-ब-रोज अलजैनीकी नजरोंमें उठता जा रहा है।

आमिना -- वह तुर्क है। उस जँगली पौधेपर हमारी उमदा अरब कलम कुछ जंचेगी

नहीं।

इब्ने सावी — यह तास्सुब है। पैगम्बरके सिवा इस्लाममें कोई घराना नहीं है। रही बात नूरुद्दीनकी, मैं अपनी मिल्कियत दो हिस्सोंमें बाट दूंगा। एक नूरुद्दीन-के लिये, और दूसरा जबतक तुम रिश्तेदारोंके साथ रहो या रहती हुई दिखायी दो तबतक तुम्हारे लिये मुरादके पास रहेगा।

आमिना — ओह, यह सब किसलिये ?

इब्ने सावी — मुमकिन है कि लड़का इतनी दौलत अपने हाथोंमें पाकर उसे बरबाद करे और मुसीबतमें फंस जाय। अगर वह संजीदा रहा तो ठीक है वरना जब वह चट्टान-सा नगा हो जाय और यारलोग उसे छोड़ दें, सब उसे दुत्कार दें तब, हो सकता है कि इस तेज मदरसेमें बेभावकी मार खाकर उसका बेलगाम लहू संजीदगी और शराफत सीखे। उस वक्त उसे बचा लेना और उसके अच्छे मिजाजकी मदद करना। हम भी देखेंगे कि फारसी लड़कीके साथ उसका इश्क कैसा निभता है और लड़की उसकी बेलगाम खाहिशोंपर हुकूमत करने लायक है या नहीं। और है तो उसे निभा सकती है या नहीं।

आमिना — लेकिन, प्यारे खाविंद, क्या मैं पूरे एक सालतक अपने लड़केको न देख पाऊंगी ?

इब्ने सावी — आंसू-वांसू नहीं। यही समझो कि हमारे बेहद भोले प्यारकी यह सजा है, — मुझे भरोसा है कि आखीरमें सब अच्छा ही होगा, और मैं बसरामें खुशी-खुशी वापस आकर, एक सुधरे हुए बेटेको गले लगाऊंगा। एक खुशहाल भतीजी-को अपने बच्चेको दूध पिलाते देखूँगा और तुम, इस प्यारी, रहमदिल जमीनकी तरह होगी जिसका सब्र और प्यार हमारी गलतियों और हमारे कुसूरोंको भी छातीसे लगाता है। या अल्लाह, तुझे मंजूर हो तो हमारी यह दुआ कबूल कर।

(जाता है)

दृश्य ४

अजीबके मकानमें एक कमरा

अजीब — बिलकीस, इधर आना तो जानेमन।

(बिलकीसका प्रवेश)

बिलकीस — हुकुम ?

अजीब — मेरा हुकुम ! ए संगदिल तानाशाह, जबसे तू आयी है, मेरा हुकुम चलता ही कहां है ?

बिलकीस — तो क्या मुझे गालियां देनेके लिये बुलाया है ?

अजीब — अपनी सारंगी ले आ और मुझे सुना।

बिलकीस — ऊँहुँ, अभी रंग नहीं जमेगा।

अजीब — गाओ, मैं हाथ जोड़ता हूँ। मैं तुम्हारी पाक मसर्रतभरी आवाजका भूखा हूँ।

बिलकीस — न मैं कबाब हूँ और न मेरी आवाज सालन है। आप भूखे हैं, वाह वाह !

(जाती है)

अजीब — ओ बिलकीस, बिलकीस ! बात सुन !

(मैमूना आती है)

मैमूना — बुलाना बेकार है। वह अपने रंगमें नहीं है और उधर तुम्हारे वजीर साहब घोड़ेसे उतरकर ड्योढ़ीमें घुस रहे हैं।

अजीब — मैं नीचे जाकर लिवा लाता हूँ। मैमूना, मेरी खातिर उसे मना लेना, मनाओगी न, बानू ?

(जाता है)

मैमूना — तुम्हारे इस चचासे मिलना खुजलीके बीमार कुत्तेसे मिलनेके बराबर है। कभी-कदास ही आते हैं।

(अपने-आपको परदेके पीछे छिपाती है। अजीब अलमुईनके साथ वापस आता है)

अलमुईन — अच्छा, तो वह कल जा रहा है ? बहुत अच्छा, और नूरुद्दीन उसकी सारी दौलत अपने हाथोंमें रखेगा ? यह और भी अच्छा है। मैं हमेशा कहता था कि वह बेवकूफ है। (स्वगत) मैं आसानीसे उसे इस लौंडीके बारेमें संगीन इलजाममें फंसा सकता था। लेकिन ठहरो, ठहरो ! वह जायगा, उसकी याद सुलतानके दिमागमें कमजोर हो जायगी, उसकी दौलत उड़ जायगी, तब मैं उसके बेटेको बरबाद करूंगा, मेरे फरीदके बदले जिस बदतमीज तुर्कको चुना है उसे भी तब बरबाद करूंगा। उसकी दुनिया और अनीस मेरे मर्द लड़केकी बांदियां बनायी जायेंगी, उसकी औरत भी न बच निकलेगी। यही काफी है कि वह दोनों एक गमगीन मकानमें लौटें। ओह, जिन्दगीकी खिजां में उनकी लाचार झुर्रियां भले खोखले घोंसलेको गले लगायें ! इसी बीच सुलतानके दिलके एक-एक कमरेपर मैं अपनी मुहर लगा दूंगा। जब वह वापस आयगा

तो उसे कहीं कोई कमरा खाली नहीं मिलेगा।

अजीब —— चचाजान, आप किस संगीन ख्यालमें पड़े हैं ?

अलमुईन —— नहीं तो, अजीब, बेकार-सी छोटी-छोटी बातें। मेरा ख्याल है, तुम इब्ने सावीके लड़केके दोस्त हो ?

अजीब —— हम साथ बैठकर पिया करते हैं।

अलमुईन —— अच्छा, अच्छा। क्या तुम ताकत, शान शौकत, मर्तबा और सोना पाना चाहते हो या तुम्हारी नन्हीं रूह अपने आराममें ही खुश है ?

अजीब —— चचाजान, यह क्या ?

अलमुईन —— तुम मौतसे डरते हो ? खौफनाक बेइज्जतीसे ? या गरीबीसे जो इन दोनोंसे भी गयी-बीती है ? बोलो, डरते हो क्या ?

अजीब —— सब आदमी उन नियामतोंको चाहते हैं, इन मुसीबतोंसे डरते हैं।

अलमुईन —— दोनों ही चीजें तुम्हें बेतहाशा मिल सकती हैं, अगर तुम मेरा काम कर दो तो नियामतें और मना करो तो मुसीबतें।

अजीब —— कैसा काम ?

अलमुईन —— आवारा नूरुद्दीनको बरबाद कर दो। रंगरेलियां और बेहद शराब-कवाबसे उसके मनको ठूँस दो। दोस्तीके लिबासमें उसे लूट लो। उसे इतना खर्च करनेपर मजबूर करो कि वह भिखारी बन जाय। उसे दगा देकर शर्मनाक बदमस्तीकी हदतक पहुँचा दो जिसे वह महसूस तो करे पर रोकनेके काबिल न हो। कमीनी ऐयाशीमें उसके होश-हवास गुम कर दो। छोटी-छोटी बदचलनी नहीं, एकदम नालेकी गन्दगीमें डुबा दो। तुम्हें उसमें भाग लेना पड़े तो भी यह काम करो। इतना कर दो और तुम बन जाओगे, लेकिन यह न हुआ तो अपनेको तबाह पाओगे। तुम्हें आठ महीनोंकी मुहलत देता हूँ,। ना, मेरे पीछे मत आओ।

(जाता है)

अजीब —— मैमूना ! बानू ! तू कहां है ?

मैमूना —— यहीं, यहींपर, तुम्हारे पीछे।

अजीब – शैतान जहन्नुमसे निकलकर सीधा मेरे पास आया था।

मैमूना —— सचमुच एक शैतान और वह तुम्हें भी सबसे गहरे जहन्नुममें फेंककर एक शैतान बना देगा।

अजीब —— मुझे क्या करना चाहिये ?

मैमूना —— कम-से-कम वह नहीं जो उसने कहा है।

अजीब — और अगर नहीं करता तो मुझे खतम समझो। बसरामें एक भी इंसान उसके खौफनाक गुस्सेको बरदाश्त न कर सकेगा। दूसरी तरफ......

मैमूना — छोड़ो भी दूसरी तरफको। सच है, वह कुत्ता अपनी बुराइयोंकी बात जरूर निभायेगा, और अच्छाई तो भुरभुरी, बेलोच भुरभुरी है। फिर भी तुम यह नहीं कर सकते। हमारी बिलकीस उसकी अनीसको दिलोजानसे प्यार करती है।

अजीब — अरी लड़की, मेरे जान-माल दांवपर हैं।

मैमूना — एक चीज करो।

अजीब — जो हुकुम दोगी वही करूंगा।

मैमूना — उसके कई बदमाश साथी हैं, हैं न?

अजीब — गफूर और अय्यूब और ऐसे ही और कई खुशकिस्मत हैं जिनके न दिल है न दिमाग।

मैमूना — उनके कानोंमें यह बात फुसफुसा दो, खुद कुछ भी न करो। बीच-बीचमें उसे रोकते रहना। और जो कुछ करो उससे तोहफे कभी न लेना क्योंकि वे शर्मकी कीमत होंगे। मुमकिन है कि उनके भड़काये बिना ही वह बरबाद हो जाय, अगर वह बरबाद हो गया तो शैतान खुश हो जायगा। अगर न हुआ तो कोई तरकीब न पाकर हम बसरासे भाग निकलेंगे।

अजीब — तेरे अन्दर दिमाग है फिर भी अगर मुझे बदमाश ही बनना है तो ज्यादा बाहिम्मत बदमाशी ही मर्दकी शानके शायां है।

मैमूना — और बिलकीस?

अजीब — सच।

मैमूना — सही सलामत रहो, अपने-आपको महफूज रखो, बाकी सब कुछ शककी हालतमें है। अफसोस, सिर्फ यही बात सच्ची है कि मरा हुआ इंसान मुहब्बत नहीं कर सकता।

अजीब — मैं सोच लूँगा। मैमूना, जाओ, अपनी बहनको यहां भेजो। (मैमूना जाती है) सारा मामला बड़ा गन्दा है! और फिर भी खिताब और ऊंचे मंसब। और सल्तनतकी ऊंचाईपर बिलकीसको बिठाना जहांसे वह अपने छोटे-छोटे हाथोंसे इंसानोंको तोड़-जोड़ सकेगी — छोटे हाथ, जिनके लिये सारंगी बहुत बड़ी है! लेकिन सारा तरीका घिनौना है।

(बिलकीसका प्रवेश)

बिलकीस — क्या हुकुम है?

अजीब — सारंगी यहां ले आओ और कुछ गाओ। मैं दुखी और परेशान हूँ। मेरे साथ बदमिजाजी न करो, मेरी छोकरी, मैं परेशां-हाल हूँ।

बिलकीस — ओ धमकियां ?

अजीब — याद रख तू अब भी एक गुलाम है, मेरी मुहब्बतने तुम्हें चाहे कितना ही दुलारा हो। कभी-कभी कोड़ोंकी याद भी कर लिया कर।

बिलकीस — मारो, मारो ! हां, मुझें मारो ! या सिर्फ मार ही क्यों ? मुझे मार ही डालो जैसे आपने कड़े लफजोंसे मेरे दिलको खतम कर दिया है, उसी तरह मुझे भी मार डालो। मुझे मालूम था, हां, मैं जानती थी कि आपका प्यार कहां जाकर खतम होगा। ओह ! ओह ! ओह ! (रोती है)

अजीब — मुझे माफ कर दे। ओ दिलरुबा मेरी, मैं कसम खाता हूँ, मेरा यह मतलब न था।

बिलकीस — क्योंकि मैं कभी-कभी खेल-खेलमें थोड़ा बोल पड़ती हूँ — हां, लगाओ चाबुक, मार डालो मुझे !

अजीब — वह तो एक मजाक था, निरी दिल्लगी ! सिसकियोंसे मेरे दिलको न तोड़ो। देख, बिलकीस, प्यारी, तुझे हजारोंके हार मिलेंगे, मोती मिलेंगे, लाल मिलेंगे। बस रोना बन्द कर दे।

बिलकीस — मैं तो बस गुलाम हूँ, चाबुक खाने लायक, मोती और लाल मेरी किस्मत-में कहां ? मैमूना, ओ मैमूना ! उनको एक कोड़ा ला दे और मुझे जहरका प्याला।

(जाती है)

अजीब — वह मुझे भी अपनी सारंगीकी तरह बजाती है। मैं भी उसीकी तरह बेजान, मजबूर और उसके रंग बदलते मिजाजका बन्दा हूँ। उसके हल्के-फुल्के हाथों-से अछूती सारंगीकी तरह मैं भी खुशीसे महरूम और गूँगा बन जाता हूँ। उसे उसे कैसे मनाऊं ? मैमूना, ओ मैमूना !

अंक ३

दृश्य १

(बसरा। महफिलके लिये सजाये गये मकानका एक कमरा)

दुनिया, अनीस अलजलीस, बिलकीस

दुनिया —— या खुदा! वे कैसे लूट मचाते हैं! इन जिनोंसे असबाब भी नहीं बच पाता। वह राक्षस गनीम उस कीमती जंजीरको दांतोंमें दबाये अपने किलेकी ओर भागा जाता है। दानव अय्यूब अपनी जेबमें पच्चीकारीवाला फलक डाल देता है। जेब तूफानी हवाकी तरह आकर गलीचे और कोच उठा ले जाता है। ऐसे बुरे बरतावको कौनसे कारून की थैली सह सकती है?

बिलकीस —— इसकी रोकथाम होनी चाहिये।

दुनिया —— यही बहुत है कि वह मेरे चचाको दिये कौलको निभा रहा है। वह अपने-आप माकूल ही है। ये बदमाश उसे बिगाड़ते हैं। अनीस, इलजाम तेरा है। तू चाहे जितनी शिकायत कर ले, है तू भी वैसी ही लापरवाह।

अनीस —— मैं?

दुनिया —— हां, तू। कोई ऐसा बेकार चमकीला जेवर है जिसे तूने देखा हो और फिर भी खरीदा न हो? कोई ऐसा लिबास है जो तुझे भा गया हो और उसी दम तेरा न बन गया हो? जबसे तू उसके साथ है तूने कभी छोटा-सा, हंसी-खुशीका, गाने-बजानेका या पीनेका मौका हाथसे जाने दिया है?

अनीस अलजलीस —— कुछ अंगूठियां और हार, और कभी-कदास कुछ रेशमी और सूती कपड़े खरीदे हैं।

दुनिया —— और इन छोटी-मोटी चीजोंकी कीमत क्या थी?

अनीस अलजलीस —— मुझे नहीं मालूम।

दुनिया —— बेशक तुझे नहीं मालूम। लेकिन, देख, बात बहुत बढ़ गयी है। उसे रोक, खुदपर लगाम लगा।

बिलकीस —— अगली बार जब वह तुझे अपने जंगली दोस्तोंके सामने गानेके लिये बुलाये तो इंकार कर देना।

अनीस अलजलीस — और हंसी दिल्लगीको, उस सोहबतको तोड़नेके लिये प्यारे दोस्तोंको खौफ दिखाना, इस हंसती, चमकती दुनियामें भौंहें सिकोड़ना और रंगमें भंग डालना। ओह, सारी दुनियाके इंसान जिन गुनाहोंको देखकर भौंहें सिकोड़ते और सिकोड़कर झुर्रीदार बना लेते हैं वे सब मिलकर इस गुनाहकी बराबरी नहीं कर सकते !

दुनिया — और अगर आसमानमें अंधेरा छा जाय ?

अनीस अलजलीस — तो क्या ! एक वक्त तो दुनिया चमकती हुई और हंसमुख थी। उनको खुश व खुर्रम, मगन और दयालु देखनेकी मेरी मंशा थी। मेरी हद वहीं तक थी। लेकिन अगर आसमान सचमुच काला हो जाय तो ! दुनिया, आज ही यह सब बन्द होगा।

(अजीम आता है)

अनीस अलजलीस — क्यों अजीम !

अजीम — बेगम, आधे कर्जखाह और उसका मतलब बसराके आधे दुकानदार हमारे आंगनमें धरना दिये बैठे हैं। उन्होंने कसम खा रखी है कि जबतक पैसे न मिलेंगे धरना चलता रहेगा।

अनीस अलजलीस — तुम्हारे मालिक कहां है ? उन्हें यहां बुलाओ। एक मिनट ठहरो ! तुम्हारे पास बिल हैं ?

अजीम — जी, सबके सब, खम्भों जैसे लम्बे और दैत्याकार, सिरसे पैरतक हिसाबों-से ठुँसे हुए।

अनीस अलजलीस — उन्हें बुलाओ।

अजीब — यह रहे।

(नूरुद्दीनका प्रवेश)

नूरुद्दीन — कहो बहन दुनिया ! क्या तुम छिपकर नीचेकी सजावट देख आयीं ? है न उम्दा ?

दुनिया — एक रंगीन, नक्शों-निगारवाले, तरह-तरहके बेल-बूटोंसे सजे हुए कब्रके पत्थरकी तरह है लेकिन अन्दर मौत बैठी है और हड्डियां भरी हैं, भाईजान हड्डियां।

नूरुद्दीन — और इस खुशनुमा जाहिरी सूरतके पीछे जिसे हम प्यारी दुनिया कहते हैं उसमें भी तो हड्डियां हैं। लेकिन हम सिर्फ गुलाबी गाल, प्यारी-प्यारी आंखें और हंसते होठोंका ही ख्याल करते हैं।

दुनिया — तुमने मेरे उदाहरणकी इतनी खाल खींची और हड्डियां तोड़ीं कि अब उसमें

कुछ ठोस रहा ही नहीं। सब पिलपिला हो गया।

अनीस अलजलीस — नूरुद्दीन, तुम्हें कर्जखाह घेरे हुए हैं। उन्हें दे दो।

नूरुद्दीन — संजीदा, अनीस ?

अनीस अलजलीस — जबतक बेबाक न होगे मैं मुस्कराऊंगी ही नहीं। अजीम, बिल ला।

नूरुद्दीन — दुनिया, यह तेरी कारगुजारी है ?

दुनिया — तुम्हारी भाईजान, तुम्हारी अपनी।

नूरुद्दीन — ऐसी बात है ? अनीस ?

अनीस अलजलीस — मैंने कह तो दिया।

नूरुद्दीन — मुझे सब बिल दिखाओ। तुम तीनों अन्दर चली जाओ।

अनीस — ओह, वे गम और गुस्सेमें हैं। उनकी आंखोंमें परेशानी है। मुझे उनसे दो बातें कर लेने दो।

बिलकीस — अब तू सारा किया कराया-चौपट कर देगी। दुनिया, उसे खींच ले।

दुनिया — चल।

(अनीसको खींच ले जाती है)

नूरुद्दीन — अच्छा, साहब सब बिल कहां हैं ?

अजीम — आप देखेंगे क्या ?

नूरुद्दीन – अरे हिसाब, हिसाब !

अजीम — मरदूक दरजीको चौबीस हजार, इन चीजोंके लिये — खफतानें, लबादें, शालें, दस्तानें, दमिश्कका रेशम......

नूरुद्दीन — फेहरिस्त छोड़ दे।

अजीम — लबकन दरजीको भी चौबीस हजार देने हैं। नानबाईको दो हजार, हलवाईको भी उतना ही। बगदादकी नादिर चीजोंकी दुकानको चौबीस हजार। इस्फहानके उन्हीं चीजोंके सौदागरको सोलह हजार। जौहरीको हारों, बाजूबन्दों, कमरबन्दों, पाजेबों, अंगूठियों, झुमकों और उस गुलाम लड़की अनीस अलजलीसके लिये खरीदे गये छोटे-मोटे जेवरोंको मिलाकर सिर्फ नब्बे हजार। कालीनवालेको......

नूरुद्दीन — ठहर जा, रुक भी ! यह क्या मोहमल वहशियाना हिसाब है ? अबे, बेअन्दाज इंसान, तेरे पेटमें हजारोंको छोड़कर कोई हिंदसा ही नहीं है ?

अजीम — नहीं सरकार, ये सब बिलोंमें लिखे हैं, मेरा पेट तो काफी खाली है।

नूरुद्दीन — हजारोंके सिवा कुछ नहीं !

अजीम — यहां एक सात सौ, बारह दीनार और कुछ कसर हुसैन बावर्चीके हैं।

नूरुद्दीन — कमीन चिकट बदमाश! सिर्फ सात सौके लिये इतने वहशियाना ढंगसे तकाजे?

अजीम — फलवाला......

नूरुद्दीन — जाओ थैलियां लाओ।

अजीम — थैलियां हुजूर?

नूरुद्दीन — सिक्कोंकी थैलियां, बेवकूफ। हरकूस और सब गुलामोंको बुला। मेरा आधा खजाना ले आ। (अजीम जाता है) वह मेरे सामने त्योरियां चढ़ाती है! बेरुखीसे देखती है! हिसाबोंकी वजहसे, कर्जोंके लिये! पैसोंके लिये! उस अदना हकीर चीजके लिये जिसे हम बेलचोंसे कीचड़मेंसे निकालते हैं। क्या इश्क इतना कंगाल हो गया है कि उसे छदामोंके बारेमें सोचना पड़े? ओ मेरे दिल! (अजीम, हरकूस और दूसरे गुलाम सिक्कोंकी थैलियां लेकर आते हैं) कमरेमें उनका ढेर लगा दो अजीम, जा उन भूखे भेड़ियोंको बुला ला। ठूँस-ठूँसकर उनका पेट भरा जायगा। (अजीम जाता है) हरकूस उन दो थैलियोंको खोल। मुहर तोड़ दी न? (कर्जखाहोंको लेकर अजीम आता है) पैसे कौन मांग रहा है?

बावर्ची — मैं, हुजूर सात सौ दीनार, बारह छदाम और एक छदामका तीन-चौथाई।

नूरुद्दीन — चिकट दिल, बदमाश, ले अपनी रकम। (उसकी ओर एक थैली फेंकता है) ऐं तुम, अपना अपना हिस्सा लेते चलो।

जौहरी — हुजूर, यह तो आपके कर्जका सौवां हिस्सा भी नहीं है।

नूरुद्दीन — उसे दो, सौ थैलियां दे दो।

हरकूस — थैलियां, हुजूर?

नूरुद्दीन — खीसे निपोरता है बदमाश, आवारा, ले। (उसे मारता है)

हरकूस — बिलकुल ठीक। तुम्हारे कीले-कांटे ढीले हो गये हैं तो बस पीटो हरकूसको, बूढ़े मालिक हों या जवान, हरकूसके लिये सब एक ही है। लाठी हो या चमड़ा! घूँसे या लातें। सब मेरे जाइचे के खानेके ही तो हैं।

नूरुद्दीन — मुझे अफसोस है कि मैंने तुझे पीटा। यह सोना है उन्हें सारा पैसा दे दो। मैं कहता हूँ। साराका सारा। ले जाओ घसीटकर, कम्बख्तो, और बैठे-बैठे गिना करना। जो बचे उसे अपने हलकमें ठूँस देना या जी चाहे तो नालीमें फेंक देना।

कर्जखाह — (थैलियोंके लिये छीनाझपटी करते, लड़ते-झगड़ते हैं) वह मेरी है!

वह मेरी है! नहीं, मेरी! छोड़ दे, चोर उचक्के। अबे लुटेरे, किसे चोर कहता है?

नूरुद्दीन — इन्हें इस कमरेसे डण्डे मारकर निकाल दो।

(कर्जखाह थैलियोंके लिये छीना-झपटी करते जाते हैं, और पीछेसे गुलाम उन्हें खदेड़ते जाते हैं)

अजीम — हुजूर, यह पागलपन है।

(नूरुद्दीन उसे जानेका इशारा करता है। अजीम जाता है)

नूरुद्दीन — अगर वह फटे हाल होती और गदागरी ही उसकी कीमत होती तो भी मैं उसके पीछे-पीछे यहांसे चीनतक चला जाता। और वह पैसोंके लिये त्योरियां दिखाए।

(अनीसका प्रवेश)

अनीस अलजलीस — नूरुद्दीन, तुमने क्या किया?

नूरुद्दीन — तूने उनके पैसे चुकानेका हुकुम दिया था। मैंने चुका दिये।

अनीस अलजलीस — तुम मुझसे नाराज हो गये? मैं न जानती थी कि तुम इतनी छोटी-सी बातपर मुझसे रूठ जाओगे।

नूरुद्दीन — मैं भी न जानता था कि पैसेके लिये तुम्हारे तेवर कड़े हो जायेंगे। छिः, पैसोंके लिये।

अनीस अलजलीस — तुम यह मानते हो? बस इतना ही पहचानते हो मुझे। प्यारे, जब तुम मेरी खातिर खुदको बरबाद करते जाओ तो मुझे बस मुस्कराते हुए देखते रहना चाहिये क्या? तो फिर करो अपने-आपको बरबाद, मेरी भी आजमाइश हो जाय।

नूरुद्दीन — प्यारी अनीस, मैं खुदपर नाराज था लेकिन मेरे अन्दर बैठा नामर्द अपने दर्दका बदला लेनेके लिये तुमपर बरस पड़ा। चलो, हम सब कुछ भूल जायें और बस तुम्हारी और इश्ककी ही बात सोचें।

अनीस अलजलीस — तुम्हें गाना सुनाऊं?

नूरुद्दीन — हां अनीस।

अनीस अलजलीस — एक गाना है।

इश्क कब गमके पास रहता है मिस्ले जूए बहार बहता है
देरतक इश्क दर्दमन्द नहीं आहो जारी इसे पसन्द नहीं
इसका तर्जे रबिश निराला है इसके साएमें भी उजाला है
मिस्ले बादे सबा तरंग इसकी बुलबुलेकी तरह उमंग इसकी

पर जो आंखोंसे अश्क उतरते हैं
रहगुजर इसकी फाश करते हैं।

नूरुद्दीन — क्या क्या ? आंसू अनीस? मेरी महबूबा, जो इन आंसुओंका बाइस है उसके लिये ये कौनसी नयी मुसीबतोंके फाल हैं ?

अनीस अलजलीस — एक भी नहीं, कोई भी नहीं, ये सिर्फ बारिशकी झड़ियां हैं जिन्हें धूप भगा देती है। गम दूर हो। आखिर दौलत चली जाय तो क्या ? भिखारी ज्यादा खुशहाल होते हैं, हैं न मेरे आका ?

नूरुद्दीन — बहुत खुशहाल, अनीस।

अनीस अलजलीस — चलो, हम भिखारी बन जायं। ओह, हम चीथड़ोंमे लिपटे हुए मसर्रतसे इधर-उधर भटका करेंगे। मैं अपनी सारंगी उठाऊंगी, अपनी आवाजसे तुम्हारे लिये मीठे गान खरीदूँगी। क्यों मेरे मालिक, मेरी आवाज मीठी है न ?

नूरुद्दीन — जिबरईल जैसी मीठी। जब वह अल्लाहतालाके आगे गाता है और सारी जन्नत सुनती है।

अनीस अलजलीस — एक दिन हम बगदाद पहुँचेंगे और रास्तेमें खलीफासे मिलेंगें। महान् खलीफा हारून अल् रशीद भी भिखारीके लिबासमें होंगे और हम उन्हें अपनी रोटीके टुकड़े देंगे और अचानक देखेंगे कि हम दुनियाके मालिकके दोस्त बन गये हैं। है न खुदाबन्द ?

नूरुद्दीन — जरूर बनेंगे, अनीस।

अनीस अलजलीस — चलो हम भिखारी बन जायें। सारी दुनियामें गाते फिरनेवाले तवंगर , खुशहाल कंगाल। ओह, लेकिन तुम्हारे तो अब्बा भी है और अम्मा भी ! आओ, वहां बैठ जाओ मैं तुम्हारे सामने खड़ी होकर एक दास्तां सुनाऊंगी।

नूरुद्दीन — मेरे पास बैठ और फिर सुना।

अनीस अलजलीस — नहीं, नहीं मैं खड़ी रहूँगी।

नूरुद्दीन — खैर, जिद्दी, चल अब किस्सा हो जाय। सुना।

अनीस अलजलीस — मैं भूल गयी। किस्सा एक ऐसे इंसानके बारेमें था जिसके पास एक ऐसा जौहर था जिसे सारी जमीन भी न खरीद सके।

नूरुद्दीन — जैसे मेरे पास तुम हो।

अनीस अलजलीस — जरा खामोश रहिये साहब, वह उसे मामूली जवाहिरातके साथ रखता था और रोज उनमेंसे निकाल-निकालकर रास्तेपर फेंकता और कहताः मैं दुनियाको दिखा दूंगा कि उसके सारे जवाहिर मेरे इस एक जौहरकी

बराबरी नहीं कर सकते। जिसे मैं अपने ही पास रखूँगा।

नूरुद्दीन –– जैसे मैं तुझे अपने पास रखूँगा।

अनीस अलजलीस –– आह, लेकिन उसे मालूम न था कि नायाब जौहर कितने नाजुक धागेसे एक मामूली जौहरसे बंधा था। जब उसने मोतीको फेंका तो अफसोस! जौहर भी चला गया! बादमें सारी जमीन छान मारी पर वह जौहर वापस न मिलना था न मिला।

नूरुद्दीन –– (कुछ देर बाद) कल इस खोखली जिन्दगीका खातिमा कर दूंगा। सारे खर्च कम करके सिर्फ तेरे लिये जियूँगा। लेकिन आज रात महफिल है। वह तो करनी ही पड़ेगी, मैं कौल जो दे चुका हूँ। अजीम! (अजीम आता है) खजानेमें और क्या बचा है? अभी और कितने कर्ज बाकी हैं?

अजीम –– आप अदा कर सकें उससे कहीं ज्यादा। अगर आजकी हिमाकत न होती तो सब कुछ ठीक हो सकता था। उफ, आपकी नवाबी हिमाकत! वल्ला, मुझे मार लीजिये पर मैं बोलनेके लिये मजबूर हूँ।

नूरुद्दीन –– सारी जायदाद बेच डालो, सिर्फ मकान रहने दो। कर्जखाहोंका कर्ज चुका दो। जो बाकी रहे उसके लिये मुहलत मांग लेना।

अजीम –– वे मुहलत न देंगे। उन्हें सड़े गोश्तकी बू आ गयी है और वे चोंच पंजे झाड़-कर उड़े चले आ रहे हैं।

नूरुद्दीन –– सचमुच मुर्दा और बदबूदार! अल्लाहने अपनी बेहतरीन मखलूक को अक्ल क्यों दी अगर उस अक्लमन्द, और पुरसुकून वजीरे कामिलपर इस बागी खूनका गलबा पाने देता है? खैर, तुम जो कर सकते हो करो। जरूरतके वक्त मदद करनेवाले मेरे कई अच्छे दोस्त भी हैं।

(जाता है)

अजीम –– अच्छे दोस्त? अच्छी जोंकें, अच्छे चोर! बड़ी मदद मिलेगी इनसे जरूरतके वक्त।

अनीस अलजलीस –– अजीब तो है ही।

अजीम –– तुम उसपर यकीन करोगी? वह आखिर वजीरका भतीजा है।

(जाता है)

दृश्य २

(वही जगह)

अनीस अलजलीस, नूरुद्दीन

अनीस अलजलीस —— और वे सब चले गये।

नूरुद्दीन —— काफूर चुपकेसे नीचे उतरा और उसने हो-हल्ला करते कर्जखाहोंकी आवाज सुनी और सबके सब चलते बने। गनीमकी मां बीमार है। मेरी मुहब्बतके मारे ही वह उनका गमगीन बिस्तर छोड़कर आया था। दोस्त अय्यूबके चचा आज ही मक्का जानेवाले हैं। काफूरके घरमें कब्रस्तान है। जेबके अब्बा, उमरका भाई, हुसेनकी बीबी, सब बुरी तरह बीमार हैं। बसरामें अचानक ऐसी जबरदस्त वबा कभी नहीं देखी गयी और लुत्फ यह कि सब अलग-अलग बीमारियोंकी।

अनीस अलजलीस —— यह है उनकी दोस्ती।

नूरुद्दीन —— हमें इतनी सख्तीसे फैसला न करना चाहिये। मुमकिन है कि सखावत और रहमभरी शर्म या कुछ नदामत उन्हें चुभ रही हो। मैंने हरकूसको हर एकके पास कर्ज और इमदादके लिये भेजा है। देखें क्या होता है। यहां कौन है?

(अजीबका प्रवेश)

तुम वापस आ गये, बस तुम ही? हां, तुम मेरे दोस्त थे और मुझे हमेशा टोका करते थे। इंसान कमीना नहीं है, फरिश्तोंकी तरह उड़ान लेता है, भले ही दोजखी शैतान उसे नीचे खींचता रहे? हमारी रूहें अब भी बाकी हैं और जिस इब्तिदाई और बे-ऐब मनसूबेको आदमने बिगाड़ दिया था उसका सांचा बिलकुल टूटा नहीं है।

अजीब —— तुम्हारी बरबादीका बाइस मैं ही हूँ। अगर अब भी तुम्हारे पास तलवार बची हो तो मुझपर इस्तेमाल करो।

नूरुद्दीन —— क्या कहा?

अजीब — वजीरके भड़कानेपर और अजमत के वादे पाकर मैंने अपनी तरफसे इन सबको भड़का दिया ताकि तुम्हें बरबादीकी तरफ धकेल सकें। तुम मुझे कत्ल करोगे ?

नूरुद्दीन — (कुछ देर चुप रहकर) वापस चले जाओ और वजीरसे कह दो कि काम पूरा हो गया। उसकी नजरोंमें बड़े बनो।

अजीब — क्या तुम पूरी तरह बरबाद हो गये ?

नूरुद्दीन — जरा भी शक न करो, तुम्हारा काम अच्छी तरह हो गया है। अपने चचा-को यकीन दिला सकते हो। तुम इसीलिये आये थे ?

अजीब — अगर मेरे पास जो कुछ है......

नूरुद्दीन — बस, खामोश, जिन्दा वापिस चले जाओ।

अजीब — तुम अपने ही घरको सजा दे रहे हो।

(जाता है)

नूरुद्दीन — खाजासरा कहीं भटक रहा है।

(हरकूसका प्रवेश)

क्यों जनाब, कहीं कामयाबी हुई ?

हरकूस — पहले मैं अय्यूबके पास गया। उसे अचानक बहुत नुकसान हुआ है। बड़ा अफसोस कर रहा था कि आपकी मदद न कर पाया।

नूरुद्दीन — गनीम ?

हरकूस — अभी-अभी उसकी टांग टूट गयी है और दो हफ्तेतक किसीसे मिल नहीं सकता।

नूरुद्दीन — काफूर ?

हरकूस — कहीं देहातमें गया हुआ था — दोमंजिलेपर।

नूरुद्दीन — जेब ?

हरकूस — सिसकियां ले-लेकर रोया। जब-जब मैंने पैसेकी बात उठायी, उसने आंसुओंमें डुबा दी। शायद मैं तैरकर उसकी थैलीतक पहुँच भी जाता लेकिन मुझे तैरना नहीं आता।

नूरुद्दीन — उमर ?

हरकूस — वह आपको पैसे उधार देनेसे पहले अपना बही-खाता जला देगा।

नूरुद्दीन — तो क्या सबने मुझे जवाब दे दिया ?

हरकूस — कुछकी आंखें सूखी थीं, कुछकी गीली लेकिन थैली किसीके पास न थी।

नूरुद्दीन — जा। (हरकूस जाता है) अब क्या करूं ? उस एथेंसवासीकी तरह

क्या मैं भी अपनी नस्लके लोगोंसे नफरत करू ? या फिर अपने-आपसे नफरत करूं ? अगर मेरे गुनाह गैर फितरी कुत्तोंकी तरह पीछा करके उनकी फितरत-के छिपे हुए और बदीसे मेरे हिस्सोंतक न पहुँचाते तो मैं उनकी बदखस्लतों को कभी न पहचान पाता। उन्हें भी खुदाने बनाया है और जिसे उसने बनाया है वह बेशक अच्छा है।

अनीस अलजलीस –– अभी तो मैं हूँ तुम्हारे पास।

नूरुद्दीन –– वही बहुत है।

अनीस अलजलीस –– बहुत नहीं, सब कुछ है।

नूरुद्दीन –– सच है और मैं जल्द ही इसे महसूस करूंगा।

अनीस अलजलीस –– मेरे जेवरों और कपड़ोंसे आधा गढ़ा तो भर जायगा।

नूरुद्दीन –– क्या कहा, मैं अपने तोहफे वापस ले लूँ ?

अनीस अलजलीस –– अगर वे मेरे हैं, तो मुझे बेचनेका भी हक है।

नूरुद्दीन –– अच्छा ऐसा ही कर। मैं भूल ही गया था। काफूरको वह मर्तबान दे देना जिसके लिये मैंने वादा किया था। चल अनीस ! मैं मुरादसे मदद मांगूँगा।

(जाते हैं)

दृश्य ३

अजीबके घरका एक कमरा

बिलकीस और मैमूना

बिलकीस –– उन्होंने मेरी खबरतक न ली ? मैं बीमार हूँ, मैमूना।

मैमूना –– बीमार ? मैं सोचती हूँ तुम दोनों ही तपेदिकसे मर रहे हो। गालोंका यह रंग अच्छी निशानी नहीं है।

बिलकीस –– उनसे कहना कि मैं बहुत, बहुत बीमार हूँ, मैं मर रही हूँ। मेहरबानी करके बड़े दर्दभरे लहजेमें बोलना।

मैमूना –– अपने गालोंपर जाफरान मलकर अच्छी तरह पीली बन जा। वह एकदम पिघल जायँगे।

बिलकीस –– शायद मेरा दिल टूटनेवाला है।

मैमूना — हां, जल्दी टूटने दे, जल्दी जुड़ भी जायगा।

बिलकीस — (रोती हुई) मैमूना, तू मेरे साथ इतनी संगदिल कैसे हो सकती है ?

मैमूना — अरे बेवकूफ बच्ची ! अपने अखत्यार पर इतना जोर क्यों देती है कि टूटनेकी नौबत आ जाय। एक ऐसी लय होती है जो कड़े-से-कड़े पत्थरको भी चूर कर दे। कुदरतमें हर चीजका एक ऐसा नुक्ता होता है जिससे आगे वह बरदाश्त नहीं कर सकती और टूटने लगती है। उस नुक्तेसे नीचे बजाती जाओ, तानको उससे ऊंचा न उठाओ। लो, वे आ रहे हैं।

बिलकीस — मैं चलती हूँ।

मैमूना — (उसे पकड़कर) तू नहीं जा सकती।

(अजीबका प्रवेश)

अजीब — मैंने सोचा तू अकेली होगी मैमूना। मैं इतना सस्ता नहीं हूँ कि जहां मेरी जरूरत न हो वहां भी दखल देता फिरूं।

बिलकीस — मैमूना, मैं सचमुच चली जाती लेकिन मैंने सोचा कि नाइन आ रही है इसलिये रुक गयी।

अजीब — मैमूना, ऐसे भी दिल होते हैं जिन्हें कद्रभरी मुहब्बतकी परवाह नहीं होती। वे उसे अपने गुरूरकी कुरसी समझते हैं, अपने खुद पसन्द जुल्मोंके लिये चाबुक समझते हैं।

बिलकीस — मैमूना, ऐसे भी लोग होते हैं जिनकी मुहब्बत निहायत कमजोर होती है। वे गधेसे ज्यादा वजन नहीं बरदाश्त कर सकते। उनकी खुदबीनी इतनी बढ़ी-चढ़ी होती है कि मुहब्बत-भरी और रहमदिल डांट भी उनकी सारी मिठास-को खट्टा कर देती हैं।

अजीब — मैमूना, कइयोंके मुहब्बतभरे तौर भी अजीब होते हैं।

बिलकीस — मैमूना, कई हर किस्मकी रोकथामको जुल्म मान बैठते हैं।

मैमूना — अरे बच्चो ! चलो तुम दोनों इसे खतम भी करो। लाओ अपना हाथ दो मुझे।

अजीब — मेरा हाथ ! मेरा हाथ किसलिये ?

मैमूना — लाओ दो। मैं दो हाथोंको मिलाती हूँ जो मिलनेके लिये बेताब हैं, उनके मालिक दखल न देते तो वे कबके मिल चुके होते। लेकिन मालिकोंमें अक्ल उनसे कम ही है।

बिलकीस — वह मुझसे ज्यादा ताकतवर है वरना मैं तुम्हें हाथ न लगाती।

अजीब — मैं मैमूनाका दिल दुखाना नहीं चाहता इसलिये तुम्हारे हाथको लिये लेता

हूँ।

मैमूना -- ओ, ऐसी बात है ? तुम्हें अपनी नादान गर्दनोंकी कसम ! चलो, उसकी कमरको बाजुओंमें ले लो।

अजीब -- सिर्फ तुम्हारे इत्मीनानकी खातिर, मुझे बस तुम्हारी ही परवाह है।

मैमूना -- और तुम अपनी बाँहें उसकी गर्दनपर......।

बिलकीस -- मैं तो जंभाई लेनेवाली थी इसलिये मैंने उन्हें ऊपर उठाया था।

मैमूना -- मैं बेंत लेने जा रही हूँ। देखना, मैं आऊं तबतक अच्छे दोस्त बन जाना। अगर तुमने समझौता न किया तो तुम्हारी हड्डियां पछताकर हमदर्दी दिखायेंगी। (जाती है)

अजीब -- मेरी इतनी ज्यादा मुहब्बतके आगे तुम ऐसी संगदिल कैसे बन सकीं ?

बिलकीस -- तुम इतने बेरहम और इतने कमीने कैसे बन गये ?

अजीब -- मैं बोसा तो देता हूँ लेकिन फकत तुम्हारे लाल होठोंको जो निहायत मुलायम है, तुम्हें नहीं। तुम तो पत्थरसे भी ज्यादा सख्त हो।

बिलकीस -- मैं तुम्हें बदलेमें बोसा देती हूँ लेकिन सिर्फ इसलिये कि मुझे कर्जसे नफरत है।

अजीब -- आइन्दा तू ज्यादा मेहरबान रहेगी ?

बिलकीस -- और तुम ज्यादा फर्मांबरदार रहोगे ? अपने उस घिनौने चाचाको छोड़ दोगे ?

अजीब -- अरे तुम्हारी मुस्कानके लिये उन्हें और उनके सारे काम-काजको छोड़ दूंगा।

बिलकीस -- मैं घोड़ेकी तरह हंसूंगी। नहीं, मैं हथियार डाले देती हूँ। मुझे बाहों-में कस लो। मैं तुम्हारी गुलाम हूँ।

अजीब -- मेरी मुहब्बतकी रानी।

बिलकीस -- दोनों, दोनों।

अजीब -- तू इतनी जिद्दी और सरकश बनी रहेगी।

बिलकीस -- तुम्हें याद है खुले बाजार मुझे तुम्हारे साथ इश्कबाजी करनी पड़ी थी ? तुम घड़ीभरके लिये कैसे पसोपेशमें पड़ गये थे ?

अजीब -- बदला लेनेवाली लड़ाकी !

बिलकीस -- क्या इस बार नाराजगीके लिये वजह न थी ?

अजीब -- वजह, अरे बहुत जबरदस्त वजह थी ! जबतक इस चाचाके दागको धो डालनेका कोई नुस्खा न मिले, मैं खुदको निहायत जलील समझूँगा।

(मैमूनाका प्रवेश)

मैमूना — यह अच्छा है। अब हमे नूरुद्दीनके यहां जाना चाहिये। वह इतनी तंगी-में है कि अपनी अनीसको बेच देगा।

बिलकीस — कभी नहीं।

मैमूना — बेचना तो पड़ेगा ही।

अजीब — मैं उसे तिगुने दाम उधार दे दूंगा।

मैमूना — खबरदार! यह तजबीज न करना। तुमने जो जखम किया है वह अभी ताजा है।

बिलकीस — तो मुझे अनीसको एक प्यारी अमानतके तौरपर रख लेने दो। जब-तक नूरुद्दीन अजीबका कर्ज न चुका दे, वह मेरे पास रहन रहेगी।

मैमूना — वह किसी तरहकी इनायत कबूल न करेगा। न, खुले आम अनीसको बेचने दो। अजीब सबसे ऊंची बोली बोलेगा। जबतक नूर कोई वसीला न पा जाय तबतक वह हमारे पास महफूज रहकर उसका इन्तजार करेगी।

बिलकीस — चलो, एकदम चलें।

मैमूना — अच्छा मैं डोली मंगाती हूँ।

(जाती है)

अजीब — हमेशा ऐसी ही अच्छी बनी रहोगी न?

बिलकीस — तुम अच्छे रहोगे तो मैं भी जरूर अच्छी रहूँगी, वरना मैं जैंटिप को भी मात कर दूंगी।

अजीब — ऐसी जन्नत और ऐसा जहन्नुम सामने हो तो मैं फरिश्ता बनूँगा।

बिलकीस — किस रंगके?

अजीब — तुम्हारे मुकाबले काला, लेकिन मैं जो था उसके मुकाबलेमें फरिश्ते-सा गोरा।

(जाता है)

दृश्य ४

इब्ने सावीका मकान

अकेली अनीस

अनीस अलजलीस — मुराद भी उसे नामुराद कर दे तो बचा ही क्या रहेगा ? उनके पास मेरे सिवा बेचनेके लिये कुछ नहीं है। दहशतनाक ख्याल ! तो क्या मेरी मुहब्बत सिर्फ खुशियोंके लिये मजबूत है, सिर्फ उनकी जन्नतमें हिस्सा बंटानेके लिये ? वह उस अजीजकी खातिर जहन्नुममें नहीं जा सकती ? मौतके बाद जन्नतने उन्हें दुत्कार दिया तो मैं उनके पीछे कैसे जा सकूँगी ? क्योंकि रास्ता इतना तंग है, अल्लाहके इंसाफकी तलवार इतनी पतली धारवाली है कि पांव आसानीसे फिसल सकता है। या खुदा, ऐसी जरूरतको दूर कर।

(नूरुद्दीनका प्रवेश)

तो क्या मुरादने जवाब दे दिया ?

नूरुद्दीन — मुराद इन्कार करता है। कर्जका बोझ तो एक मुसीबत है।

अनीस अलजलीस — तुमने मुझे जो लिबास और जेवरात रखनेके लिये......

नूरुद्दीन — उन्हें रखे रहो। वे तुम्हारे हैं।

अनीस अलजलीस — मैं तुम्हारी गुलाम हूँ। मेरा जिस्म और उसकी जेबाइश, मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ मेरा है वह सब तुम्हारे इस्तेमालके लिये ही तो है।

नूरुद्दीन — लड़की, क्या तू चाहती है कि मैं तुझे बिलकुल खाली कर दूं ?

अनीस अलजलीस — हर्ज ही क्या है ? तुम्हारी मुहब्बत मिलती रहे तो दस दिरहमका मोटा कपड़ा भी काफी होगा।

नूरुद्दीन — लेकिन इनसे तो मेरा आधा कर्ज भी न चुकेगा।

अनीस अलजलीस — मालिक, तुमने मुझे दस हजारमें खरीदा था।

नूरुद्दीन — खामोश।

अनीस अलजलीस — क्या तबसे मेरी कीमत गिर गयी है ?

नूरुद्दीन — ज्यादा न बोल। तू मुझसे अपने साथ नफरत कराके छोड़ेगी।

अनीस अलजलीस —— ओह, तुमने नफरत की तो और भी अच्छा। मेरे दिलको टूटने-में मदद मिलेगी।

नूरुद्दीन —— तेरा दिल ऐसी बातें कैसे गवारा करता है ?

अनीस अलजलीस —— अगर मेरा दिल छोटा होता या मुहब्बत कम होती तो ऐसी बातें न करती।

नूरुद्दीन —— मैंने अब्बाके सामने कसम खाई थी कि तुझे न बेचूँगा।

अनीस अलजलीस —— लेकिन साथ ही एक शर्त भी थी।

नूरुद्दीन —— अगर तू चाहे तो !

अनीस अलजलीस —— तो क्या मैं तुमसे नहीं कह रही ?

नूरुद्दीन —— सच बोल ! क्या तू चाहती है ? उस खुदाके नामपर बता जो तेरे दिल-में देख रहा है। उफ, तू चुप है।

अनीस अलजलीस —— (रोती हुई) मैं यह भला कैसे चाह सकती हूँ ? अजीब यहीं है। प्यारे मेहबूब, उससे दोस्ती कर लो। उसकी गलती माफ करो।

नूरुद्दीन —— अनीस, मेरे अपने गुनाह इतने भारी हैं कि अगर उसके कम कमीनेपनको माफ न करूं तो मेरे लिये खुदाई माफीकी कोई उम्मीद ही न रहेगी।

अनीस अलजलीस —— तो मैं उसे बुलाती हूँ।

(जाती है)

नूरुद्दीन —— बस कर्जसे बरी हो लेने दो, फिर अनीसको लेकर सीधा बगदाद, शानदार बगदाद जाऊंगा। वही दिलों, दिमागों और हाथोंका मोजूँ घर है। यह छोटा-सा मुकाम नहीं। बगदाद, इस्लामका दिल है, वह सैलाब है जिसमें छोटे-छोटे नदी-नाले आ मिलते हैं।

(अनीस अजीब, बिलकीस और मैमूनाको लेकर आती है)

अजीब —— मुझे माफी मिल गयी ?

नूरुद्दीन —— अजीब, समझ लो कि माजी कभी हुआ ही नहीं।

अजीब —— तुम सचमुच इब्ने सावीके बेटे हो।

नूरुद्दीन —— सलाह दो अजीब। मेरे पास सिर्फ मकान ही बचा है और वह बेचा नहीं जा सकता। मेरे अब्बा वापस आयें तो अपने-आपको बसरामें बेघर-बार न पायें।

मैमूना —— और कुछ नहीं है ?

अनीस अलजलीस —— बाकी मैं हूँ, और मुझे वे बेचना नहीं चाहते।

मैमूना —— बेचना ही चाहिये।

नूरुद्दीन — कभी नहीं, मैमूना।

मैमूना — इस बिक्रीसे डरो मत। यह सिर्फ नामके लिये होगी। सच बात तो यह है कि बिलकीस तुमसे अनीसको उधार लेती है और तुम उसकी कीमत लेकर उसे रहन रखते हो। वह मेरे पास तूफानोंसे महफूज रहेगी और हमारी बिलकीसकी खिदमत करेगी। अगर पूछो कि तब यह बाजार और नीलाम क्यों? तो हमारे पास चचाके सवालोंका जवाब देनेके लिये एलानिया नीलामका सबूत भी तो होना चाहिये।

अनीस अलजलीस — ओह, अब आंखोंमें रोशनी आयी। जीती रहो, मैमूना!

नूरुद्दीन — नहीं, नीलाम नहीं हो सकता। मेरी कसम जो है!

अनीस अलजलीस — लेकिन अब मैं चाहती हूँ, हां, जरूर चाहती हूँ।

नूरुद्दीन — क्या मेरा फख्रो-गुमान कुछ भी नहीं है? मैं उसे गुलामोंकी गुलाम बननेके लिये बेचूँगा? माफ करना, बिलकीस।

मैमूना — बहुत बारीकीमें जा रहे हैं आप, बहुत ज्यादा!

अनीस अलजलीस — थोड़े दिनोंके लिये अपनी बहनकी खिदमत करनेके लिये! क्योंकि वह दिलोंजानसे मेरी बहन ही है।

बिलकीस — खिदमत भी बस नामके लिये।

मैमूना — तुम फिरसे खुशहाल और दौलतमन्द बन जाओ तबतक वह महफूज रहेगी।

नूरुद्दीन — मुझे पसन्द नहीं।

मैमूना — अपने-आपमें तो यह बात किसीको पसन्द नहीं है लेकिन बदतर बुराइयोंसे बचनेके लिये बस यही रास्ता है।

नूरुद्दीन — ओह, तुम गलतीपर हो मैमूना, मेरी कसमसे यह खिलवाड़! इससे भला न होगा। सीधा बरताव ही सबसे अच्छा रहता है!।

मैमूना — तुम बहुत बारीकीमें जाते हो।

नूरुद्दीन — अच्छा तो कर लो अपनी मनमानी।

मैमूना — दलालको यहीं बुला लो। गुपचुप बिक्री हो! चचाको पता न लगने पाये।

अजीब — वरना एक बवाल हो जायगा।

नूरुद्दीन — मुझे दहशत है कि इससे भला न होगा।

(जाता है)

दृश्य ५

गुलामोंका बाजार

मुअज्जम अनीस अलजलीसको बेचनेके लिये खड़ा है।

अजीब, अजीज, अब्दुल्ला और दूसरे व्यापारी

मुअज्जम —— कौन बोली बोलता है !?

अजीज —— चार हजार।

मुअज्जम —— पहली बार यह दस हजारमें बिकी थी। क्या आप उसके आसपासकी कीमत नहीं लगा सकते ?

अजीज —— तब वह नयी थी, अछूती थी। दलाल, हर सामानका यही दस्तूर है कि इस्तेमाल होने और मैला होनेपर, खरीदे जाने और वक्त गुजरनेपर उसकी कीमत कम हो जाती है।

मुअज्जम —— साहब, चूमे हुए होंठोंमें हमेशा शहद होता है लेकिन यह तो परी है, इसके लाफानी होठोंमें दवामी मिठास होती है।

अजीब —— उस बोलीके ऊपर पांच सौ और।

(अलमुईन गुलामोंके साथ आता है)

अलमुईन —— (स्वगत) आहा, तो बात सच है! किस्मतका चक्कर पूरा करके सभी चीजें दुरुस्त हो जाती है। अब मेरा मौका है। फरीदको वह जरूर मिलेगी। उसकी देखभाल अच्छी तरह होगी ताकि उसके आशिकका दिल मरनेसे पहले खूब तड़प ले। (प्रकट) दलाल, इस लड़कीको कौन बेच रहा है, और क्या कीमत है ?

अजीब —— हाय, सब गया।

मुअज्जम —— नूरुद्दीन बिन अलफज्ल बिन सावी उसे बेच रहा है और आपके भतीजेने चार हजार पांच सौकी बोली बोली है।

अलमुईन —— मेरा भतीजा मेरे लिये बोल रहा था। मेरे सामने कौन बोलता है ?

अजीब — चचा......

अलमुईन — जा, दूसरी बांदियोंको ढूँढ़, अजीब। अंततक निभा ले। (अजीब जाता है) मेरे सामने कौन बोलता है? तो लड़की मेरी हुई, चल।

अनीस अलजलीस — मैं तुम्हारे हाथ न बिकूँगी।

अलमुईन — क्या, तू जबान खोलनेकी हिम्मत करती है, जवान फाहिशा ? चाबुकसे डर।

अनीस अलजलीस — वजीर, मैं आपसे नहीं डरती। इस्लाममें कानून है। मेरे मालिक फरोख्त करनेसे इन्कार करेंगे।

अलमुईन — तेरा मालिक बावरचीखानेका हब्शी होगा जो तुझे अच्छी तरह इस्तेमाल करेगा।

अनीस अलजलीस — मेरे पास चाबुक होता तो आप ऐसी बात दोबारा जबानपर न लाते।

मुअज्जम — वजीर, वजीर साहब। कानूनके मुताबिक मालिककी मंजूरीसे ही आखिरी फैसला हो सकता है।

अलमुईन — यह तो सिर्फ रस्म है फिर भी मंजूरी ले आओ। इस कसबीपर कब्जा करनेके लिये मैं बेचैन हूँ।

मुअज्जम — लीजिये, वे आ रहे हैं।

(नूरुद्दीन और अजीबका प्रवेश)

एक व्यापारी — तो हम लोग चलें क्या ?

अब्दुल्ला — दिल मजबूत रखो। रईसजादा इब्ने सावीका बेटा है। अपने-आपको खतरेमें डालकर भी हमें उसकी मदद करनी चाहिये।

मुअज्जम — साहब, लड़की कौड़ियोंके मोल जा रही है और वे भी आपको नसीब न होंगी। उनके घरके चक्कर लगाते-लगाते आपके पांव दुखने लगेंगे और उनके कमीने लोग आपको टरकाते रहेंगे। अगर आपने बहुत शोरगुल किया तो आपसे हुकुमनामा मांगेंगे और आपकी आंखोंके सामने फाड़ डालेंगे। यही आपका भुगतान होगा।

नूरुद्दीन — वह सब नहीं। भेड़ियेका पिल्ला। कुबड़ा फरीद! बिक्री बन्द हो गयी।

मुअज्जम — (धीरेसे) मेरी सुनो। लड़कीकी चोटी पकड़कर उसे अच्छी तरह पीटो और जहांतक तुम्हारा दिल बरदाश्त कर सके उसे सख्त-से-सख्त गालियां सुनाते जाओ। और जल्दीसे घर ले जाओ गोया गुस्सेमें आकर तुमने जो कसम खायी थी उसे पूरा करनेके लिये ही इसे बाजारमें लाये थे। इस तरह लड़कीसे

उनका हक जाता रहेगा।

नूरुद्दीन —— मैं झूठ बोलूँगा ! लेकिन एक अच्छा-खासा, साफ-सुथरा झूठ भी घुस आये तो उसके सारे नंगे और कोढ़ी खानदानके लिये दरवाजा खुल जाता है। अन्दर ही अन्दर वे बढ़ते रहते हैं, सारे घरपर छा जाते हैं।

मुअज्जम —— वजीर इसे लेना चाहते हैं। वे चार हजार पांच सौ की बोली बोल चुके हैं।

नूरुद्दीन —— बेकार बात है। छोकरी, मैने अपनी बात रख ली। चल, यही बहुत है कि खुले बाजार तेरी कीमत लगायी गयी और नीलाम हुआ। घर चल ! अबसे कम नजाकत जताना। जबान संभालकर रखना वरना इससे ज्यादा दिलसोज सजा मिलेगी। मुझे तुमको बेचनेकी जरूरत है क्या ? चल घर चल, मेरी कसम पूरी हुई।

अलमुईन —— यह कानूनको दगा देनेकी तरकीब है। अरे शोहदे ! निकम्मे, आवारा ! तेरे पास शहवत की गन्दगी और इस शराबी जिस्मको छोड़कर बेचनेके बचा ही क्या है —— काश, कोई रहम करके थोड़े दीनार खर्च करे और चाबुकसे तेरा सुधार कर सके। खुश अख्लाक मक्कारके बदमाश बच्चे !

(सिरोही खींचता है)

अब्दुल्ला —— वजीर साहब, रुकिये।

अजीज —— नूरुद्दीन सब्र करो।

अलमुईन —— मैं अभी उसे मार डालूँगा। चल फाहिशा, मेरे बावरचीखानेकी तरफ कदम बढ़ा।

अनीस अलजलीस —— मेरे आका, इन सौदागरोंके सामने उसने मुझे बहुत फहश गालियां दीं।

अलमुईन —— फटीचर, तुझे गालियां दी ? तेरा कोई फायदा भी है ? गालियां ही तेरा इस्तेमाल है। तेरा इस्तेमाल होगा और सब करेंगे।

नूरुद्दीन —— सौदागर साहबान, देखते रहिये, कोई दखल न दे वरना खतरा मोल लेगा। अरे बदजबान जालिम, उसी दलदल और गंदगीमें जा जहां तू पैदा हुआ था।

अलमुईन —— बचाओ, बचाओ। उसके टुकड़े-टुकड़े कर दो।

(गुलाम आगे बढ़ते हैं)

अब्दुल्ला —— अरे मियां, तुम लोग क्या करते हो ? वह वजीर और यह वजीरका बेटा। मामूली इन्सान बीचमें क्यों पड़ें ? शुक्रियेकी जगह तुम्हें सिर्फ मार मिलेगी।

अलमुईन —— अरे, अरे ! क्या तुम मुझे मार डालोगे ?

नूरुद्दीन —— अगर जीना है तो इस सितारेसे माफी मांग जिसपर तूने थूका है। मैं तुझसे उसके पांव चटवाता लेकिन तेरे गंदे होठोंसे उसके पाकीजा पैर मैले हो जायेंगे।

अलमुईन —— माफ कर, ओ, माफ कर।

नूरुद्दीन —— (उसे फेंकता हुआ) जा अपने गन्दे नालेमें जिन्दा रह।

(अनीसके साथ जाता है)

अब्दुल्ला —— गुलामो, जाओ, अपने मालिकको उठाओ और यहांसे चलता करो।

(अलमुईनके साथ गुलाम जाते हैं)

अच्छी सजा मिली।

अजीज —— लेकिन इसका नतीजा क्या होगा ?

अब्दुल्ला —— नूरुद्दीनके लिये अच्छा न होगा। चलो, हम उसे आगाह कर दें। वह बहादुर और मगरूर है शायद सामना करनेकी सोचेगा लेकिन उसका मतलब होगा महज मौतका इन्तजार।

अजीज —— मैं दुआ करता हूँ कि यह हमारे ऊपर न बरसे।

(व्यापारी जाते हैं। नूरुद्दीनका प्रवेश)

नूरुद्दीन —— बदकिस्मती थी यह !

अजीब —— और यहीं खतम न होगी। मैं उनके बच निकलनेके लिये एक बड़े पतवार-वाले और सामानसे भरे जहाजको तैयार करवाऊंगा। अब वे बसरामें न समा सकेंगे।

दृश्य ६

अलजैनी, सालार

अलजैनी —— लीजिये यहां लिखा है हमारे खलीफा और दिलेर रूमियोंमें गरमा-गरमी बातचीत हुई और अलानियां सरकशी शुरू हो गयी है। यूरोप और एशिया फिरसे एक-दूसरेकी गिरिफ्तमें है। दकनकी तरफ जानेवाली फौजों-का अचानक छिपे-छिपे मुआइना करनेके लिये हारून खुद तशरीफ ला रहे हैं।

सालार —— तब तो अलफज्ल हमारे यहां वापिस आ जायगा, हां अगर फिरंगी अपने जंगली ढंगसे उसे गिरफ्तार न कर ले।

अलजैनी — हैरत है, मैंने मिस्रमें जो तहरीक की है उसकी कोई खबर ही नहीं भेजी।

सालार — उस बारेमें लिखना निहायत खतरनाक है, यह तहरीक भी बहुत ठीक न थी।

अलजैनी — बडे खतरे छोटे खतरोंको ठीक साबित करते हैं। खलीफा अल् रशीद छोटी-छोटी बातोंको लेकर मुझसे गुमसुम नाराजगी रखते हैं। वह नाराजगी किसी दिन भी रंग ला सकती है। बगदादमें यह बात चल रही है कि मिस्रके वजीर अल् कासिबी भी यही हालत है। सालार, यह तो हिकमत है कि मुश्तरिक खतरेका सामना करनेके लिये मुश्तरिक सलामतीकी तैयारी की जाय।

सालार — हारून अल् रशीद अपना दायां हाथ बसराकी तरफ और बायां हाथ मिस्रकी जानिब बढ़ाकर तुम दोनोंको अपनी चुटकीमें मसल सकता है। सुलतान, क्या आप जहानके वाहिद देवको सामना कर सकेंगे?

अलजैनी — मेरे दोस्त, देव भी फानी है, हमारी तलवारें जितनी तेज हैं उतनी बहादुर भी हों। मुरादको मेरे पास बुलाना तो जरा। (सालार जाता है) अगर हारून जिन्दा रहा तो मेरी हालत निहायत खतरनाक और मायूसकुन होगी। जब उसका गुस्सा फूट पड़ता है तो वह बिजली-सा तेज और जहरीला होता है। लेकिन मुझे उससे भी ज्यादा तेज और मुहलिक बनाना होगा। (मुरादका प्रवेश) मुराद, वक्त आ रहा है। खलीफा बसरा आ रहे हैं। देखना वापस न जाने पायें।

मुराद — मेरी तलवारकी धार तेज है और मैं जो करता हूँ बिजलीकी तेजीसे अचानक कर डालता हूँ।

अलजैनी — मेरे सूरमा तुर्क! तुम तरक्की करोगे, मुझे तुम जैसोंकी जरूरत है।

मुराद — (स्वगत) लेकिन इस जमीनको तेरे जैसे सुलतानोंकी जरूरत नहीं। (बाहरसे आवाज) इन्साफ! इन्साफ! सुलतान, इन्साफ! सुलताने-जमां, मेरे साथ ज्यादती की गयी है।

अलजैनी — मेरी खिड़कीके नीचे कौन चिल्ला रहा है? मीर मुँशी!

(संजारका प्रवेश)

संजार — धूल और कीचड़से सना हुआ एक अरब। मार पीटकर उसका कचूमर निकाल दिया गया है, उसे पहचानना नामुमकिन है, फटे होठोंसे वह इन्साफके लिये चिल्ला रहा है।

अलजैनी — उसे यहां ले आओ। (संजार जाता है) कोई झगड़ा-फसाद मालूम

होता है।

(अलमुईनके साथ संजारका प्रवेश)

वजीर, तुम ! तुम्हारा यह हाल किसने किया ?

अलमुईन -- मोहम्मद बिन सुलेमान ! सुलतान अलजैनी अब्बासी ! आपके दोस्त कितने दिन रह पायेंगे, अगर यहां बसरामें दिन दहाड़े सुलतानके दुश्मन आपके जिगरी दोस्तोंका कत्ल कर सकें, और वह भी क्यों ? क्योंकि वे आपपर जान देते हैं।

अलजैनी -- उनके नाम फौरन बतलाओ और सजा भी चुन दो।

अलमुईन -- अलफज्लके बेटे, आवारा, बहशी नूरुद्दीनने यह सब किया है।

मुराद -- नूरुद्दीन !

अलजैनी -- लेकिन झगड़ा क्या था ?

अलमुईन -- एक साल पहले अलफज्लने सुलतानके पैसोंसे सुलतानके लिये एक बांदी खरीदी थी। हुस्नमें हीरा, पढ़ी-लिखी, और दिमाग तो बस खलीफाके लिये मौजूँ। लेकिन उस खिले हुए फूलको देख उसने सोचा कि आपकी शाही नाक उसे सूंघने लायक न थी। इसलिये उसने शाहसे भी ज्यादा शाही, अपने प्यारे लड़केको उसे गन्दा करने और कुचलनेके लिये दे दिया। आपको उस आदमीपर इतना यकीन था कि ऐसा दो सिरवाला कौन था जो उसकी शिकायत जबानपर लाता।

नेलजैनी -- अच्छा, यह बात है ? हमारा अजीज और मौतबर इब्ने सावी।

अलमुईन -- इस कमबख्त आवाराने अपनी पूरी दौलत पानीमें बहानेके बाद लड़कीको बाजारमें खड़ा किया। मैंने उसे वहां देखा और वाजिब बोली लगायी। वह नापाक जबानसे मुझपर बरस पड़ा फिर भी मैंने नरमीसे जवाब दिया बेटे, मुझे अपने लिये नहीं सुलतानकी खिदमतके लिये उसकी जरूरत है। उसने बेहयाईसे गुस्सेमें भरकर देखा "कुत्ते, कुत्तेके वजीर, मैं तुझे और तेरे सुलतानको बरतरफ करता हूँ।" ऐसी बेअदबीकी बातें बकते हुए उसने मुझे पकड़ लिया, कीचड़में घसीटा, घूँसे मारे, लातें रसीद कीं, दाढ़ी खींची, फिर घसीटकर अपनी बांदीके पाँवपर फेंक दिया और वह अपने बेशर्म मेहबूबसे शह पाकर बार-बार मेरे सुफीद सिरको लातें मारती और हंसती रही। वह कहती जाती थी "यह तेरे सुलतानके लिये, तेरे मैले कंजूस सुलतानके लिये जो इतने कम दामोंमें सारे जहानकी एकमात्र बांदीको खरीदना चाहता है।"

संजार -- महान हाशिमकी नसें सुलतानके माथेपर उभर आयी हैं।

मुराद — कुत्तेने दोनोंको अपने भूठ और फरेब से मार दिया।

अलजैनी — मेरे बुजुर्ग पैगम्बरकी कसम, जा मुराद ! उस छोकरेको और उसकी बांदीको यहां घसीट ला। उसकी लहू लुहान एड़ियोंको रस्सीसे बांधकर घसीटते हुए लाना। उनके चेहरोंपर कीचड़ लपेटकर, मुश्कें बांधकर मेरे सामने हाजिर करो। सावीके मकानमें लूटमार करो, उसे गारत कर दो। क्या, मैं इतना गया बीता हूँ कि गलीके कुत्ते इस तरह मुभपर भोंकें ? वे मारे जायँगे।

मुराद — सुलतान......

अलजैनी — जो उनके लिये एक लफ्ज भी बोलेगा उसकी शामत।

(जाता है)

अलमुईन — साले मुराद, अपने खूबसूरत भाईको ले आ। जरा जल्दी करना, कही सुलतान सुन न लें !

मुराद — वजीर साहब, मैं अपना फर्ज जानता हूँ। आप भी अपना फर्ज जान लीजिये और उसे अदा कीजिये।

अलमुईन — तो मैं गुसल कर लूँ और फिर ईदके कपड़े पहनकर तफरीहके लिये आऊंगा।

(जाता है)

संजार — तुम क्या करोगे ?

मुराद — संजार, जल्द ही जानपर खेलकर कुछ करना होगा। मैं उन्हें मरने न दूंगा।

संजार — दौड़कर खतरेके मुँह न जाओ। मैं एक तेज दौड़नेवालेको उनके मकानतक भेजकर उन्हें आगाह किये देता हूँ।

(संजार जाता है)

मुराद — यही करो, यह सुनकर दुनिया क्या कहेगी ? उसकी हंसती आंखें कैसी उदास होकर छलक आयेंगी, जबतक हारून आये......

(जाता है)

दृश्य ७

इब्ने सावीका मकान

नूरुद्दीन, अनीस

नूरुद्दीन —— संजारने खतरेसे आगाह किया है। वह हमारे अब्बासे हमेशा प्यार करता रहा है।

अनीस —— ओह, मेरे मालिक, जल्दी करो और भागो।

नूरुद्दीन —— कहां और कैसे? लेकिन चलो।

(अजीबका प्रवेश)

अजीब —— नूरुद्दीन, जल्दी कर। मेरा एक जहाज बगदाद जानेके लिये तैयार खड़ा है। पालें हवासे फूली हुई हैं, मल्लाहका हाथ पहियेपर है, कप्तान जहाजकी छतपर है, सिर्फ तुम्हारी कसर है। बगदाद भाग जाओ और महान हारूनके हाथों इन जालिमोंके लिये इन्साफकी मांग करो। ओह, देर न करो।

नूरुद्दीन —— ऐ दोस्त! मेरा एक और काम कर दे। अजीब, थोड़ेसे असंतुष्ट लेन-दारोंका पैसा चुका देना। मेरे अब्बा जब आयेंगे तो सारा कर्ज साफ कर देंगे।

अजीब —— वह तो हो भी चुका। और यह थैली लेते जाओ। टालमटोल न चलेगी। मैं इन्कार न सुनूँगा।

नूरुद्दीन —— बगदाद! (हंसता हुआ) क्यों, अनीस, हमारा ख्वाब सच निकल रहा है। हम खलीफाके साथ बेतकल्लुफ हो सकेंगे।

(जाता है)

अंक ४

दृश्य १

खलीफाके महलके बागमें, ऐशगाहके बाहर

अनीस, नूरुद्दीन

अनीस — यह बगदाद है !

नूरुद्दीन — बगदाद, खूबसूरत बगदाद, खुशियोंका शहर। ये बाग कितने हरे-भरे हैं ! दरख्तोंमें कैसी मीठी चहल-पहल हो रही है।

अनीस — और फूल ! क्या बहार है फूलोंकी ! इन बनफशोंको देखो, एकदम गहरे नीले, गोया जलता गंधक हो ! ओह गुलोलाला, यह हिना, रजिकाबन्धु और आमोहन। लहूसे लाल ये पवन-पुष्प ! बहार अपने जोबनमें फूलोंके बीच चहल-कदमी करते हुए इस दिलकश जमीनपर फूल बिखेरती जाती है।

नूरुद्दीन — फल देख रही हो ? कपूर और बादाम जैसी जूबानियां, हरे, सफेद और जामनी अंजीर और ये दीवारों और छतोंपर चढ़े हुए, ये बड़े बड़े गोल लाल, जामनी-काले अंगूर ! तेरे दमिश्कके बालों जैसे चिकने आलूबुखारे, और अनीस, जानती है ये सुनहरी गेंद नीबू हैं। देख, यह शाहदाने, और नारंगीकी इन सफेद और गुलाबी बलियोंमेंसे फलोंकी नायाब झांकी।

अनीस — वह कस्तूरककी सीटी थी। फाख्ता कैसे कराहती हैं। यह घुमरियोंकी गटर गूँ हवामें भर गयी है। ओह, देखो, भूरे बुलबुल कैसी मीठी आवाजें करती हुई उडती हैं ! लाल पूंछ कैसी फड़फड़ा रही है। अगर अंधेरा होता तो हजार-हजार बुलबुलें एक साथ गा उठतीं। मैं बहुत खुश हूँ कि हमें बसरासे निकाल दिया गया !

नूरुद्दीन — खिड़कियोंसे भरी यह इशरतगाह ? खिड़कियां सौसे कम न होंगी !

अनीस — और इसमें झूलते हुए झाड़को देख रहे हो ? सोनेकी लौको देखो !

नूरुद्दीन — हर खिड़कीके पास चिराग है। इस बगीचेमें रात भी दिन जैसी रोशन होती होगी। अब मालिकको ढूँढ़ना होगा ! यहां जरा आराम करके खलीफा आजमके महलका रास्ता पूछते हुए आगे जा सकते हैं, अनीस।

(पीछेसे शेख इब्राहीमका प्रवेश)

इब्राहीम — अच्छा, यह बात है, ओ हो नवाबजादे, अपनी खुश-पोश महबूबाके साथ ! तो क्या तुम नहीं जानते कि खलीफाने अपने बगीचेमें घुसनेकी मुमानिअत की है। नहीं, तो मैं एक बेंतसे तुम्हारे खुशनुमा पुट्ठोंपर उसका ऐलान करूंगा ! मैं करूंगा, क्यों न करूंगा भला ? हो, हो !

(लकड़ी उठाये चुपके-चुपके आगे बढ़ता है। नूरुद्दीन और अनीस उसकी ओर मुड़ते हैं। लकड़ी हाथसे गिर जाती है और वह उसी तरह हाथ उठाये खड़ा रहता है।)

नूरुद्दीन — लो, बागके शेख आ गये। दोस्त, ये बाग किसका है ?

अनीस — क्या बेचारेकी अक्ल मारी गयी है ? बस मुँह बाये घूरता जा रहा है।

इब्राहीम — अलहम्दुलिल्लाह, तारीफ उस खुदाकी जिसने तुम्हें बनाया ! और तारीफ है उस फरिश्तेकी जो तुम्हें इस जमीनपर लाया ! तारीफ है खुद मेरी जिसे तुम्हें देखनेका मौका मिला ! ऐ जन्नतके लोगो ! क्या हुस्न है सुबहान अल्लाह !

नूरुद्दीन — (मुस्कराते हुए) मियां, खुदाकी हम्द करो जिसने तुम्हें इतनी लम्बी उम्र बख्शी, और यह लम्बी चांदी जैसी सुफीद दाढ़ी अता की। लेकिन क्या हमें बागमें आनेकी इजाजत है ? फाटककी चटकनी बन्द तो न थी।

इब्राहीम — यह बाग ? मेरा यह बाग ? हां, बरखुरदार, हां मेरी बेटी। तुम्हारे कदमोंसे यह और भी सुहावना बन गया है। यहां पहले कभी ऐसे फूल न खिले थे।

नूरुद्दीन — क्या यह तेरा है ? और यह इशरतगाह ?

इब्राहीम — बरखुरदार, यह सब मेरा ही है। अल्लाहने इस गरीब गुनहगार बूढ़े-पर करम किया है। यह उन्हींकी पाक मेहरबानीकी वजहसे और कुछ मेरे नमाज, रोजे, सिजदे, वजूकी बदौलत जिनमें कभी नागा नहीं होता — न सुबह न दोपहरको, न शामको न किसी बीचके वक्त जब नमाज जरूरी है।

नूरुद्दीन — बूढ़े अब्बा, आपने इसे कब खरीदा या बनवाया था ?

इब्राहीम — मेरी एक पड़-चाची मुझे दे गयी थी। हैरत न करो, क्योंकि वह चाचीकी पड़दादी लगती थी जो खलीफाकी भाभीके भतीजेकी पड़दादी थी।

नूरुद्दीन — ओह, तब तो ठीक ही है ! उसे दौलतमन्द होनेका खुदादाद हक था। लेकिन मुझे यकीन है कि इस विरासतके लिये तुम्हारे पास शरीयतका हुक्म है ?

इब्राहीम — और किसी तरहसे मैं खिलाफत भी मंजूर न करूंगा। बरखुरदार गैर

शरई तरीकेसे दुनिया जहानकी फानी चीजोंकी तमन्ना न करो। वे यकीनन जाल हैं और जन्नतके सीधे मगर नाहमवार रास्तेपर मुश्किलसे चलनेवाली रूहके पैरोंको जकड़ लेते हैं।

अनीस — लेकिन, बूढ़े बाबा, आप इतने अमीर हैं तो फिर इतने फटे हाल क्यों? अगर मैं ऐसे बगीचेकी मालिकिन होती तो मैं दमिश्कके बेल-बूटोंवाले रेशम, बानात और मखमलमें उड़ा करती। रेशम और साटन तो मेरे मामूली कपड़े होते।

इब्राहीम — इसकी आवाज तो मैनाके जैसी है! या जिब्रईल! बस, इसे मेरे लिये बढ़ाते चलो। अगर तमाम हूरें मेरे बागीचेपर टूट पड़ें तो भी मैं तेरे साथ झगड़ा न करूंगा क्योंकि तूने इसके फाटक जरासे खोल दिये हैं। (प्रकट) छिः मेरी बेटी! मैं अल्लाहके कदमोंमें रहता हूँ। मैं कब्रके किनारे बैठा एक गरीब गुनाहगार बूढ़ा हूँ। मुझे खिलअत और रंगीन लिबासोंसे क्या वास्ता? लेकिन वे तेरे बदनपर अच्छी तरह सजेंगे। अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाहने तुझे कैसे चांदसे पुट्ठे दिये हैं। वल्लाह क्या कमर है! पतली, मुट्ठीभर कमर!

अनीस — हम थके-मांदे हैं, बूढ़े बाबा। हम भूखे-प्यासे हैं।

इब्राहीम — ओह, मेरे बेटे! ओ मेरी बेटी! तुम मुझे शर्मिन्दा करते हो। आओ, अन्दर आ जाओ, यह मेरी इशरतगाह तुम्हारी ही है और उसमें खाने-पीनेकी इफरात है — शरबतके जैसी बेजरर चीजें या सादा अच्छा पानी। जहांतक शराबका सवाल है, उसके लिये आं-हजरत रसूल अस्सलामने मना किया है, उसे हराम बतलाया है। आओ, अन्दर आ जाओ, जो मेहमान और अजनबी-को नहीं देता उसपर खुदाकी फटकार!

नूरुद्दीन — यह सचमुच तुम्हारा है? हम अन्दर आ सकते हैं?

इब्राहीम — अल्लाह, अल्लाह, उसका फर्श तेरी खूबसूरती और तेरी बहनके प्यारे कदमोंके लिये तरस रहा है। अगर मुझ गरीब सिन-रसीदाकी जगह कोई जवान होता तो क्या वह मरमरको बोसे न देता जिसे इसके छोटे-छोटे पांव छू रहे हैं। लेकिन शुक्र है अल्लाहका कि मैं एक ऐसा बूढ़ा हूँ जिसके खयालात-पाकदामनी और पारसाईकी तरफ लगे रहते हैं।

नूरुद्दीन — चल अनीस।

इब्राहीम — (उनके पीछे चलता हुआ) अल्लाह! अल्लाह! वह चौकड़ी भरती हुई हिरनी है। अल्लाह! अल्लाह! मेरे तालाबका हंस उससे कम ही इठलाता है। हवाके झोंकोंमें झूमती बेल है। अल्लाह! अल्लाह!

(इशरतगाहकी ओर जाते हैं)

दृश्य २

खुशियोंसे भरी ऐशगाह

अनीस अलजलीस, नूरुद्दीन, शेख इब्राहीम कोचपर। पास ही मेजपर तश्तरियां लगी हुई हैं।

नूरुद्दीन —— कबाब सचमुच बड़े अच्छे हैं, मुरब्बे पुरजायका हैं और फल भी चिकने और चमकदार हैं। लेकिन क्या तुम बैठे ही रहोगे, कुछ भी न खाओगे ?

इब्राहीम —— वाकई, बरखुर्दार, मैं दोपहरको खा चुका हूँ। पेटूपनसे अल्लाह बचाये !

अनीस अलजलीस —— बूढ़े बाबा, तुम हमारी भूखको भी मार रहे हो। तुम मेरे हाथसे एक लुकमा जरूर खाओ वरना मैं समझूँगी कि तुम मुझसे नाराज हो।

इब्राहीम —— ना, ना, ना, ना, खैर, तुम्हारे हाथसे तुम्हारी छोटी नाजुक गुलाबी उंगलियोंसे ले लूँगा। या अल्लाह ! बस थोड़ा-सा ही, एक ही लुकमा। वाकई, वल्लाह ! तेरी उंगलियां शहदसे भी मीठी हैं। मैं उन्हें बोसोंसे खा सकता हूँ।

अनीस अलजलीस —— बूढ़े बाबा जवान हो रहे हैं ?

इब्राहीम —— ओह, खैर जाने दो, यह मेरे सफेद बालोंके लिये एकदम नामुनासिब और बेवकूफी भरा मजाक था। एक बेकारका मजाक। हां मजाक।

नूरुद्दीन —— लेकिन मेरे बूढ़े मेजबान, शराबके बगैर खाना सूखा है। क्या सारे महलमें कहीं भी शराबकी सुराही नहीं है ? यह तो उसकी खूबसूरतीपर एक दाग है।

इब्राहीम —— खुदाकी पनाह ! शराब ! मैंने सोलह सालसे इस हराम चीजको हाथ नहीं लगाया। जब मैं जवान था, तब तो खैर ! अलबत्ता तब मैं जवान था। लेकिन उसके लिये मनाही है। इब्ने बाताता क्या कहते हैं ? उनका कहना है कि शराबमें ऐसा जादू है जो सब कुछ बदल देता है। और बसराके हजरत इब्राहीम अलहश्शाश बिन फुजफुज बिन बेरबलून अल्-सन्दिलानी, वे शराबको बड़ी बुरी निगाहसे देखते हैं और दावेसे कहते हैं कि उसकी लाल चमक जहन्नुमके लाल अंगारोंकी चमक है, उसकी मिठास लानतको चूमती है और गलेमें उसकी ठंडक शिर्कका बाइस होती है। हां, वाकई, बुजुर्ग अल-

हश्शाशने यही कहा है।

अनीस अलजलीस — बूढ़े बाबा, जिनकी बात कर रहे हो वे सारे उलमा कौन हैं ? मैंने सब किताबें पढ़ डाली हैं लेकिन इनका नामतक नहीं सुना।

इब्राहीम — अच्छा, तूने पढ़ी हैं ? ये बहुत पुराने गैबदां सूफी थे, ऐसे आलिम कम ही मिलते हैं। उनकी किताबोंको सिर्फ बड़े-बड़े दाना ही जानते हैं।

अनीस अलजलीस — शेख इब्राहीम ! तुम कितने जबर्दस्त आलिम हो ! उस बुजुर्ग अलहश्शाशकी रूहको खुदा मगफरत करे !

इब्राहीम — हूँ! ऐसा ही है। शराब ! सचमुच, पैगम्बरने उगानेवाले, और रस निकालनेवाले खरीदार और बेचनेवाले, ढोनेवाले और पीनेवाले सबपर लानत की है। पैगम्बरकी लानतसे बचनेके लिये मैं अल्लाहकी पनाहमें जाता हूँ।

नूरुद्दीन — तेरे सामानमें एक बूढ़ा गधा नहीं है क्या ? और अगर एक बूढ़े गधेपर लानत की जाय तो क्या तुमपर लानत होगी ?

इब्राहीम — हूँ ! मेरे बेटे, यह क्या किस्सा है ?

नूरुद्दीन — शैतानको धोखा देनेकी एक तरकीब बतलाऊंगा। पड़ोसीके नौकरको मेरी तरफसे तीन दीनार दे दो, उसके मेहनतानेके लिये तीन दिरहम भी दे दो। वह शराब खरीदकर बूढ़े गधेपर लाद देगा और गधा उसे यहां ले आयगा। इस तरह तुम न उगानेवाले हुए, न रस निचोड़नेवाले, न बेचनेवाले, न खरीदार, न लानेवाले और न पीनेवाले, अगर किसीपर लानत होगी तो बूढ़े गधेपर। अजीम अलहश्शाश क्या फरमाते हैं ?

इब्राहीम — हुँ ! खैर, मैं कर दूंगा ? (स्वगत) इन्हें बतानेकी जरूरत नहीं कि मेरी अल्मारियां शराबसे भरी पड़ी हैं। अल्लाह मुझे माफी बख्शे !

(जाता है)

नूरुद्दीन — बूढ़ा रियाकारों और मक्कारोंमें हीरा है।

अनीस अलजलीस — तब तो मजाकके लिये और भी अच्छा ! मेरे प्यारे आका। आज रात खुश रहो, भले फिक्रें कलका इन्तजार करती रहें।

नूरुद्दीन — अनीस, तू खुश है ?

अनीस अलजलीस — मैं महसूस करती हूँ कि हंसनेके सिवा सारी जिन्दगी कुछ न कर सकूँगी। तुम सलामत हो, तुम सलामत हो और वह बेरहम शैतान मात खा गया। आहा, तुम सही सलामत हो !

नूरुद्दीन — दरियाका सफर दम ले लेनेवाला था। मेरा ख्याल है कि मेरे सिरपर कीमत लग चुकी है। शायद हमारे मददगार मुसीबतमें पड़े हैं।

अनीस अलजलीस —— लेकिन तुम तो सलामत हो, मेरी मसर्रत, मेरी जां।

(वह उसके पास जाती, बोसे लेती और उससे लिपट जाती है)

नूरुद्दीन —— अनीस, तेरी आंखें आंसुओंसे भरी हैं! तू बहुत ज्यादा परेशान है।

अनीस अलजलीस —— बस तुम सही सलामत रहो और बाकी सारा जहान तबाह हो जाय। मेरे महबूब! मेरे आका!

(उसे बार-बार चूमती है और बाँहोंमें भर लेती है। शेख इब्राहीम एक कश्तीमें शराब और जाम लेकर वापस आता है)

इब्राहीम —— अल्लाह! अल्लाह! या अल्लाह!

अनीस अलजलीस —— वह बूढ़ा संजीदा आलिम कहां है? मैं नाचना चाहती हूँ, हंसना चाहती हूँ और रंगरेलियोंको भी मात करना चाहती हूँ। ओह, वह रहा।

नूरुद्दीन —— शेख इब्राहीम! क्या तेज गधा था!

इब्राहीम —— नहीं, नहीं, शराबकी दुकान करीब ही है, बहुत करीब। अल्लाह हमें माफी बख्शे, बगदाद, हमारा यह शहर बड़ा ही गुनाहगार शहर है। उसमें शराबी, पेटू और झूठे भरे हैं।

नूरुद्दीन —— शेख इब्राहीम, तुम कभी झूठ बोलते हो?

इब्राहीम —— खुदा न खास्ता! मैं सब गुनाहोंसे ज्यादा झूठ और झूठोंसे नफरत करता हूँ। बरखुरदार, अपने जवान होठोंको बेकारकी बकझक और गैर-जरूरी झूठसे बचाये रखना। यह ऐसा गुनाह है जिसे बख्शा नहीं जाता। सीधा जहन्नुमका रास्ता है। लेकिन, मेरे बेटे, यह तो बताओ यह बेगम तुम्हारी क्या लगती है?

नूरुद्दीन —— मेरी कनीज है।

इब्राहीम —— आह, आह! तेरी कनीज? आहा, आहा! एक बांदी! वाह खूब!

अनीस अलजलीस —— पीओ मेरे मालिक!

नूरुद्दीन —— (पीते हुए) खुदकी कसम, मुझे नींद आ रही है। मैं कुछ देर तेरी प्यारी गोदमें सिर रखकर आराम करूंगा। (वह लेट जाता है)

इब्राहीम —— अल्लाह, अल्लाह, क्या वह सो रहा है?

अनीस अलजलीस —— गहरी नींदमें। वह मेरे साथ हमेशा यह चालाकी करते हैं। पहले जामके साथ ही सो जाते हैं और मुझे एकदम उदास और अकेले छोड़ देते हैं।

इब्राहीम —— क्यों, क्यों, क्यों, छोटी बेगम? तुम अकेली नहीं, फिर उदास और

दु:खी क्यों होती हो ? मैं तो मौजूद हूँ – बूढ़ा शेख इब्राहीम। मैं हाजिर हूँ।

अनीस अलजलीस –– अगर तुम मेरे साथ पीयोगे तो मैं उदास न रहूँगी।

इब्राहीम –– तुफ, तुफ।

अनीस अलजलीस –– मेरे सिर और आंखोंकी कसम।

इब्राहीम –– खैर, अच्छा खैर ! उफ, यह गुनाह है। गुनाह है, गुनाह है। (पीता है) यकीनन, यकीनन।

अनीस अलजलीस –– और एक।

इब्राहीम –– नहीं, नहीं, नहीं।

अनीस अलजलीस –– मेरे सिर आंखोंकी कसम।!

इब्राहीम –– खैर, खैर, अच्छा, अच्छा ! यह बड़ा भारी गुनाह है। अल्लाह माफ करे ! (पीता है)

अनीस अलजलीस –– बस एक और।

इब्राहीम –– क्या वह सो रहा है ? काश, छोटी बेगम, अगर अब तेरे होठोंकी शराब होती।

अनीस अलजलीस –– बूढ़े बाबा, बूढ़े बाबा ! क्या यही तुम्हारी बुजुर्गी और पाकदामनी है और यही है तुम्हारा बेहूदगी और बनावटी मुहब्बतसे मुँह मोड़ना ? मेरे जैसी जवान हरजाई लड़कीके साथ नाजो अन्दाज ! तुम्हारी हकपरस्ती कहां गयी ? तुम्हारी तकदीरका क्या हुआ ? ऐ सूफी, तुम्हारे अन्दर यह बुरी तकसीम हो गयी है। अफसोस है अजीम अलहश्शाशके लिये।

इब्राहीम –– ना, ना, ना,।

अनीस अलजलीस –– क्या तुम ऐसे मक्कार हो ? शेख इब्राहीम ! शेख इब्राहीम !

इब्राहीम –– नहीं, नहीं ! यह एक पिदराना मजाक था। एक छोटा-सा मजाक ! (पीता है)

नूरुद्दीन –– (उठता हुआ) शेख इब्राहीम, तुम पीते हो ?

इब्राहीम –– ओह, आह ! तुम्हारी कनीजने जबरदस्ती पिला दी, वाकई, यकीन मानो।

नूरुद्दीन –– अनीस, अनीस, ! उन्हें क्यों तंग किया करती हो ? क्या तू जन्नतसे उनकी रूहको नोच लायेगी ? तुफ, तुफ ! शराब मेजकी इस जानिब ले आ। मैं जान निसार करता हूँ।

अनीस अलजलीस –– यह आपका जामे सेहत है प्यारे, मेरे प्यारे !

नूरुद्दीन —— तूने आधा जाम ही पिया है; फिरसे एक बार शेख इब्राहीम और उनके इल्म और संजीदगीके लिये।

अनीस अलजलीस —— अजीम अलहश्शाशके सायेको !

इब्राहीम —— लानत है तुमपर। यह हमसायोंके खिलाफ कैसी बदतमीजी ! मेरे सामने पी रहे हो फिर भी जाम इस तरफ नहीं भेजते।

अनीस अलजलीस और नूरुद्दीन —— शेख इब्राहीम ! शेख इब्राहीम ! शेख इब्राहीम !

इब्राहीम —— मेरे सामने चिल्लाओ नहीं। तुम एक गिलमान हो और यह हूर। तुम मेरी रूहको फांसनेके लिये जन्नतसे नीचे उतरे हो। फंसने भी दो उसे ! वह तुम्हारी आंखोंसे निकलती एक किरणके बराबर भी नहीं है। गिलमां, मैं तुझे गले लगाऊंगा, तुझे बोसे दूंगा।

नूरुद्दीन —— नहीं शेख इब्राहीम, न तो गले लगाओ और न बोसे दो, क्योंकि तुम्हारे मुँहसे उस हराम चीज, शराबकी बू आ रही है। मुझे उस सूफी अलहश्शाशो लिये बहुत अफसोस हो रहा है।

अनीस अलजलीस —— ओ सूफी, क्या तुम्हारी काया पलट हो गयी ? ओ दाना, ओ इब्ने बातातके मुरीद ?

इब्राहीम —— हंसो, हंसो ! तुम्हारे हसीन चेहरोंपर हंसी ऐसी लगती है जैसे खूब-सूरत माजन्दरानके मीनारोंपर चमकते हुए सूरजकी रोशनी। मुझे भी एक जाम दो (पीता है) तुम लोग गुनाहगार हो, मैं भी तुम्हारे साथ गुनाह करूंगा। ऐ हसीनो , मैं बड़े जोरोंसे गुनाह करूंगा। (पीता है)

अनीस अलजलीस —— आओ, मुझे एक सारंगी ला दो तो मैं तुम्हें एक गाना सुनाऊं। शेख इब्राहीम, मेरे जैसे गानेवाले नायाब हैं।

इब्राहीम —— (पीता है) उस कोनेमें एक सारंगी है। गाओ, गाओ और शायद मैं भी गानेका जवाब दूं। (पीता है)।

अनीस अलजलीस —— लेकिन ठहरो, रुको। इतनी धीमी हल्की रोशनीमें कैसा गाना ! मोमबत्तियां, मोमबत्तियां।

(झाड़की अस्सी मोमबत्तियां जलाती है)

इब्राहीम —— (पीता है) या अल्लाह ! रोशनी तुझे चमका रही है, मेरी कनीज, मेरे हीरे।

नूरुद्दीन —— इतनी तेजीसे न पीओ, शेख इब्राहीम। चलो, उठो, खिड़कियोंके चिराग जला दो।

इब्राहीम —— (पीता है) मेरे हलकमें शराबकी ठंडकको तंग करनेका गुनाह न करो।

जला दो, तुम ही चिराग जला दो, लेकिन खबरदार दोसे ज्यादा न जलाना।

(नूरुद्दीन एक-एक करके चिराग जलाता जाता है और उसी रास्ते वापस आता है। शेख इब्राहीम पीता ही रहता है)

इब्राहीम — या अल्लाह ! क्या तुमने सब चिराग जला दिये ?

अनीस अलजलीस — शेख इब्राहीम, मदहोश सिर्फ दोगुना देखता है और तुम क्या चौरसी चिराग देख रहे हो ? ओ दाना, तुम बादाकशी में बहुत आगे बढ़ गये हो, मरहवा इब्न बाताताके मुरीद।

इब्राहीम — मैं इतना ज्यादा मदहोश नहीं हूँ। सारे चिराग जलानेवालो, तुम बहुत शोख हो।

नूरुद्दीन — तुम्हें डर किसका ? क्या ऐशगाह तुम्हारी अपनी नहीं है ?

इब्राहीम — बेशक, बेशक, मेरी है। लेकिन खलीफा पास ही रहते हैं और इतनी तेज रोशनी देखकर नाराज हो सकते हैं।

नूरुद्दीन — हकीकतमें वे बहुत बड़े खलीफा हैं।

इब्राहीम — काफी बड़े, काफी बड़े। अगर किस्मतने साथ दिया होता तो उनसे भी बेहतर खलीफा होते। लेकिन अल्लाहका हुक्म यही है। किसीको खलीफा बनाता है और किसीको बागबान। (पीता है)

अनीस अलजलीस — मुझे एक सारंगी मिल गयी।

नूरुद्दीन — मुझे दे। बूढ़ी संजीदगी ले, मेरा बनाया हुआ गाना सुन (गाता है)

देखा तुमने इब्राहीम, बुड्ढा संजीदा इंसान,
अल्लाह, अल्लाह, पीता था वह,
करता क्या था नाचके वक्त ?
बैठा-बैठा पलक मारता, पलक मारता।

इब्राहीम — तुफ ! क्या चमारोंका गाना निकाला है ? लेकिन तेरे गलेमें चाशनी है। अपना गाना सुना।

अनीस अलजलीस — मेरे पास तुम्हारे लिये एक गाना है। (गाती है)

डाढ़ी मेरी सुफीद है, चेहरे पै झुर्रियां फिर भी शराबे नाब पिये जा रहा हूँ मैं।
दोजखका खौफ है न कयामतका डर मुझे शीरीं लबोंके बोसे लिये जा रहा हूँ मैं।
पहलूमें एक साकी-ए-महवश हो इब्राहीम
मेरी बलासे जलती रहे आतिशे जहीम।

इब्राहीम — अल्लाह ! अल्लाह ! बुलबुल है ! बुलबुल है !

(परदा गिरता है)

दृश्य ३

इशरतगाहके बाहरका एक बगीचा

(हारून-अल्-रशीद, मसरूर)

हारून-अल्-रशीद —— देख, मसरूर, सारी इशरतगाह रोशन है, जैसा मैंने कहा था वैसा ही निकला। बारमकी कहां है ?

मसरूर —— मेरे मलिक, वजीर तशरीफ ला रहे हैं।

(जाफरका प्रवेश)

जाफर —— अस्सलाम अलेक, अमीरुलमौमिनीन।

हारून-अल्-रशीद —— नमकहराम हड़पनेवाले वजीर, सलामती है कहां ? अरे गद्दार, तूने मेरे हाथोंसे बगदाद छीन लिया और मुझसे कुछ कहा भी नहीं ?

जाफर —— या खलीफा, ये कैसी बातें हैं ?

हारून-अल्-रशीद —— तब इन चिरागोंका मतलब क्या है ? मेरी इशरतगाहमें कोई दूसरा खलीफा ऐश कर रहा है ? जब कि हारून जिन्दा है और उसके हाथमें तलवार भी है।

जाफर —— यह कौन-सा जिन मेरे साथ शरारत कर रहा है ?

हारून-अल्-रशीद —— वजीर, मैं इन्तजार कर रहा हूँ।

जाफर —— मेरे मलिक, शेख इब्राहीमने अपने बेटेकी सुन्नतके लिये इशरतगाहकी मांग की थी। हुजूर, यह बात मेरी याददाश्तसे निकल गयी थी, अभी याद आयी।

हारून-अल्-रशीद —— जाफर, तुमने दोतरफा गलती की। तुमने न तो उसे पैसे दिये जो उसकी मांगका मतलब था, और न ममुझे ही अपने नौकरकी मदद करने करने दी। वजीर, हम वहां जायेंगे और मुकद्दस बातोंपर संजीदा फकीरों-की बातचीत सुनेंगे। शेख बड़ा भक्त है और उन लोगोंकी पाक सोहबतमें आता-जाता रहता है। हम भी उन मुकद्दस बातोंसे फायदा उठायेंगे जो हमें गुनाहका सामना करनेके लिये तैयार करती हैं और जन्नतको जानेमें मदद देती हैं।

जाफर -- (स्वगत) जहन्नुममें जाय ऐसी मदद ! (प्रकट) अमीरुल मौमिनीन, आपकी जबरदस्त हस्तीसे उनके अमनमें खलल पड़ेगा, उनकी आजाद तबीयत आपके रौबसे पस्त हो जायगी।

हारून-अल-रशीद -- कम-से-कम मैं उन्हें देख तो लूँ।

मसरूर -- मेरे मालिक, इस मीनारसे हम पूरी इशरतगाहको देख सकेंगे।

हारून-अल्-रशीद -- अच्छा ख्याल है मसरूर।

जाफर -- (मसरूरसे एक ओर) तेरी जबानपर फोड़े हों !

मसरूर -- (जाफरसे एक ओर) जाफर, मैं तेरे आगे रहूँगा।

हारून-अल्-रशीद -- (सुनता हुआ) यह सारंगी नहीं है क्या ? ऐसे संजीदा और मुकद्दस जलसेमें सारंगी ?

(अन्दर शेख इब्राहीम गाता है)

हम प्यार करेंगे गुलफाम पियेंगे दो रोज मुहब्बतके मजे ले के जियेंगे
हर चाक सियेंगे

शर्माते हैं होंटों से तेरे लाले बदख्शां और चेहरा तेरा सूरते खुर्शीदे दरख्शां
ऐ यूसुफे किनआं
चल सूए गुलिस्तां

हारून-अल्-रशीद -- वल्लाह, कसम पैगम्बरकी ! मेरे आबाओ-अजदाद की कसम !

(मीनारमें भाग जाता है पीछे-पीछे मसरूर)

जाफर -- काश ! शैतान शेख इब्राहीमको लेकर उड़ जाता और उसे गंधककी जलती पहाड़ीपर गिरा देता !

(वह खलीफाके पीछे जाता है। खलीफा अब मीनारके चबूतरेपर मसरूर-के साथ दिखायी देते हैं)

हारून-अल्-रशीद -- लो, देख लो, जाफर, इस मुकद्दस रस्मको देखो जिसके लिये तुमने इजाजत दी थी और इन हसीन फकीरोंको भी देखो।

जाफर -- शेख इब्राहीमने बहुत धोखा दिया।

हारून-अल्-रशीद -- मक्कार बूढ़ा ! ये परी चेहरा लोग कौन हैं ? मेरे बगदादमें ऐसी खूबसूरती थी फिर भी हारूनकी आंखें उसे देखनेसे महरूम रहीं ?

जाफर -- लड़की फिरसे सारंगी उठा रही है।

सारून-अल्-रशीद -- जाफर, बहिश्ती गाना गाये और बजाये तो अपने जुर्मके लिये सिर्फ तुम्हें ही फांसी लगेगी। मगर बुरी तरह गाया बजाया तो तुम चारों साथ-साथ झूलोगे।

जाफर — उम्मीद करता हूँ बुरी तरह गाये, बजायेगी।

हारून-अल्-रशीद — यह क्यों जाफर ?

जाफर — मेरे मलिक, मुझे लोगोंका साथ हमेशा पसन्द रहा है और अपनी आखिरी राहपर अकेला न जाऊंगा।

हारून-अल्-रशीद — नहीं, मेरे वफादार खादिम, तुम जब उस राहपर चलोगे तो मैं उम्मीद करता हूँ हम दोनों एक साथ होंगे।

अनीस अलजलीस —

ओ मेरे अन्तरके स्वामी
कहो करोगे मेरा अर्चन
मुझे कहोगे अपनी देवी
मुझे कहोगे 'तुम हो मेरी'

मंदिरमें पूजा-बाती-सी
मैं नत-मस्तक हूँगी तेरे
सम्मुख तेरी बनकर चेरी,

(चलते जायें तबतक दोनों)
इक-दूजेकी भक्ति लिये हम
धरतीको जो करे पराजित
वह पावन अनुरक्ति लिये हम
जब तक दिव्य नहीं हो जाती
सचमुच काया मेरी-तेरी !

हारून-अल्-रशीद — इस हसीन पुतलीमें उस्तादे-अकबरने अपनी पुरी चातुरी दिखा दी है। इस अनूठे जोड़ेके साथ मैं बातचीत करूंगा।

जाफर — लेकिन अपनी रौबदार हस्तीमें नहीं, वरना वे डरसे गूँगे हो जायेंगे।

हारून-अल्-रशीद — मैं भेस बदलकर जाऊंगा। जाफर, क्या नदीके किनारेसे आवाजें नहीं आ रहीं ? मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ ये मछियारे हैं। ओ वजीर मेरे, बगदादमें मेरे हुकुमको अच्छी तरह माना जाता है। खैर, मैं बहुत ज्यादा खूबसूरती देख चुका हूँ इसलिये गुस्सा याद नहीं आता। चलो, उतरो।

(वे जैसे ही उतरते हैं, करीम आता है)

करीम — आहा, आज कितना अच्छा मोटा फायदा हुआ ! आहा, मेरे कूदनेवाले !

मेरी छोटी हसीन मछलियो ! आहा, तुम्हारा सुफीद पेट कैसा खूबसूरत है ! यह भी क्या मजाक है कि खलीफाकी मछलियां पकड़कर उन्हींको तिगुने दाममें बेची जायें।

हारून-अल्-रशीद — कौन है तू ?

करीम — या खुदा, खुद खलीफा हैं ! बस मैं मारा गया। (जमीनपर गिरकर) या अमीरुलमौमिनीन ! हाय, मैं एक ईमानदार मछियारा हूँ।

हारून-अल्-रशीद — अपनी ईमानदारीपर रोता है क्या ? कैसी मछलियां हैं ?

करीम — कुछ तो काफूरी हैं और एक-दो छोटी-छोटी और मछलियां। सब-की-सब दुबली-पतली पाजी ! खलीफाके शानदार पेटके लिये सब बेकार !

हारून-अल्-रशीद — अमां, अपनी टोकरी दिखला। आः, ये हैं तेरी काफूरी और दो पतली-सी मछलियां ?

करीम — आह, हुजूर......क्योंकि मैं ईमानदार हूँ।

हारून-अल्-रशीद — ला, अपनी मछलियां मुझे दे दे।

करीम — मेरे मालिक, ये रहीं, लीजिये।

हारून-अल्-रशीद — धत, उल्लू कहींका, सारी टोकरी दे दे। क्या मैं जिन्दा मछलियां खाता हूँ कि यूँ मेरे मुँहपर ला रहा है ? और चल, अपना लिबादा भी मेरे साथ बदल ले।

करीम — मेरा लिबादा ? खैर, आप ले सकते हैं। मैं सखी भी हूँ, और ईमानदार भी। देखिये, यह अच्छा लिबादा है, संभालकर रखियेगा।

हारून-अल्-रशीद — अमां, लानत है तुझपर ! यह क्या गन्दगी है जिसे तू कपड़ा कहता है ?

करीम — अजी हुजूर, सरकार उसे दस दिन पहने रहेंगे तो गन्दगी बरदाश्त करना आसान हो जायगा या यूँ कहें वह आपके लिये एकदम फितरी चीज हो जायगी। और यह ईमानदार गन्दगी आपको सरदियोंमें गरम रखेगी।

हारून-अल्-रशीद — क्या कहा ? मैं तेरा लिबादा तबतक पहने रहूँगा ?

करीम — अमीरुल मौमिनीन ! चूँकि आप सलतनत छोड़कर अपनी रूहकी भलाईके लिये, रोटी कमानेके लिये एक ईमानदार पेशा अख्यार करनेवाले हैं इसलिये मुमकिन है कि आपको मछियारेके लबादेसे भी गया बीता कपड़ा पहनना पड़े। यह अच्छा पेशा है और बाइज्जत भी है।

हारून-अल्-रशीद — चल भाग यहांसे। मेरे कपड़ेमें तुझे एक सोनेसे भरी थैली मिलेगी। वह तेरी है।

करीम —— सुबहानल्लाह ! देखो, ईमानदारीका नतीजा !

(जाता है)

जाफर —— (आगे बढ़ता हुआ) कौन है ? ऐ करीम ! तू आज रातको यहां किस-लिये ? खलीफा बगीचेमें हैं। मछियारे, तुझपर मार पड़ेगी नेऔर बेभावकी।

हारून-अल्-रशीद —— जाफर मैं हूँ।

जाफर —— खलीफा ?

हारून-अल्-रशीद —— अब रहा इन मछलियोंको तलना और जाना।

जाफर —— मुझे दीजिये। मैं हैरत अंगेज बावर्ची हूँ।

हारून-अल्-रशीद —— नहीं, पैगम्बरकी कसम ! आज रातको मेरे हसीन दोस्त खलीफाके हाथका पकाया हुआ खायेंगे !

(जाते हैं)

दृश्य ४

इशरतगाहमें

नूरुद्दीन, अनीस अलजलीस, शेख इब्राहीम

नूरुद्दीन —— शेख इब्राहीम, सचमुच तुम मदहोश हो।

इब्राहीम —— हाय, हाय, मेरे प्यारे बेटे, मेरे कमसिन दोस्त ! मैं बरबाद हो गया, सचमुच, सचमुच, मैं बरबाद हो गया। आह, मेरे प्यारे सहीन कमसिन अब्बा ! आह, मेरी पाक आलिम सुफीद दाढ़ीवाली अम्माजान ! काश, वे अपने बेटे-को इस वक्त देख पाते, उनका छोटा सा हसीन बेटा ! लेकिन वे अपनी कब्रमें सोये पड़े हैं। वे अपनी ठंडी-ठंडी कब्रोंमें हैं।

नूरुद्दीन —— ओह, तुम निहायत गमगीन और मदहोश हो। गा, अनीस।

(बाहरसे)

मछली, मछली ! मीठी तली हुई मछली !

अनीस अलजलीस —— मछली ! शेख इब्राहीम, शेख इब्राहीम ! हो हो हो ? हमें मछलीकी खाहिश है।

इब्राहीम —— तेरे छोटे-से पेटमें शैतान मीठी मछलीके लिये भूखोंकी तरह चीख रहा

है। चुप रह बेहूदा शैतान !

अनीस अलजलीस -- छिः देख, क्या मेरा पेट मेरे बाहर खिड़कीके नीचे खड़ा है ? उसे अन्दर बुला लो न।

इब्राहीम -- अबे ओ शैतान, अन्दर आ जा। अन्दर आ गंधकवाले मछियारे। हमे अपनी लम्बी पूंछ दिखा जा।

(हारूनका प्रवेश)

अनीस अलजलीस -- अच्छे मछियारे, तेरे पास कैसी मछलियां हैं ?

हारून-अल्-रशीद -- मेरी अच्छी बेगम, मेरे पास ईमानदार अच्छी मछलियां हैं और मैंने उन्हें आपके लिये अपने हाथोंसे तला है। ये मछलियां -- खैर, उनके बारेमें इतना ही कह सकता हूँ कि ये मछलियां हैं। लेकिन बड़ी अच्छी तरह तली हुई हैं।

नूरुद्दीन -- तो रिकाबी रख दो। उनके लिये क्या लोगे ?

हारून-अल्-रशीद -- साहब, ईमानसे, मैं आप जैसे चेहरोंसे कुछ न लूँगा।

नूरुद्दीन -- इसका मतलब यह है कि बेईमानीसे उनके दामसे कुछ ज्यादा ही ले लोगे। चलो, इन दीनारोंको हड़प लो।

हारून-अल्-रशीद -- माशा अल्ला, तुझे अल्लाहका नूर नसीब हो। क्योंकि तू सखी नौजवान है।

अनीस अलजलीस -- छिः मछियारे, यह कैसी दुआ ! जिस चीजके लिये दुआ करते हो उसीको मारे डालते हो। अगर अल्लाहने उसे दाढ़ी दी तो वह जवान न रहेगा और फिर सारी सखावत तो अल्लाहकी होगी।

हारून-अल्रशीद -- क्या तुम जितनी खूबसूरत हो उतनी अक्लमन्द भी हो ?

अनीस अलजलीस -- वल्लाह, वैसी तो मैं हूँ ही। मैं बड़े इनकिसार से कह सकती हूँ कि चीनसे फिरँगिस्तानतक मेरी बराबरीका कोई नहीं है।

हारून-अल्-रशीद -- तुम सचसे ज्यादा एक लफ्ज भी नहीं बोलीं !

नूरुद्दीन -- मछियारे, तुम्हारा नाम क्या है।

हारून-अल्-रशीद -- मैं इस नाचीजको करीम कहता हूँ। पूरे ईमानसे कहता हूँ कि जब कभी मैं पछली पकड़ता हूँ तो सिर्फ खलीफाके लिये।

इब्राहीम -- यहां खलीफाकी बात ही कौन करता है ? तुम खलीफा हारूनकी बात करते हो या खलीफा इब्राहीमकी ?

हारून-अल्-रशीद -- मैं उच्चे खलीफाकी बात कर रहा हूँ। इंसाफमंद महान् हारून-की, वे एक ही तो खलीफा हैं।

इब्राहीम -- ओह, हारून ? वह तो बस बागबान बनेनेके लिये लायक है। एक गरीब बेअक्ल इंसान जिसमें जरा भी शऊर नहीं है फिर भी अल्लाहने उसे खलीफा बना दिया है। जब कि दूसरे हैं -- लेकिन इस बारेमें बोलना बेकार है। यह हारून बड़ा बदकार जालिम है ! उसने बगदादकी आधी औरतोंको खराब कर रखा है और अगर उसे जिन्दा रहने दिया गया तो बाकीको भी खराब करके छोड़ेगा। और फिर उसे किसी इन्साफकी नाक नापसन्द हो तो वह सिर ही उतार लेता है। बड़ी मुसीबतकी बीमारी है यह, जालिम कहींका !

हारून-अल्-रशीद -- अब उसका खुदा ही हाफिज हो !

इब्राहीम -- नहीं, अगर उसकी रूह बचाने लायक हो और अल्लाह चाहे तो बचा ले। लेकिन मुझे डर है कि यह काम अल्लाहके लिये भी मुश्किल ही होगा। अगर मेरी दिन-रातकी डांट-फटकार, लानत-मलामत, सख्ती, समझाने, बकबक-झकझक...उफ, क्या मुसीबत है सिर खपाई,...जफाई, वफाई उह और थोड़े चांटे और तमाचे न होते, तो, सुनिये साहब, मैं अर्ज करता हूँ जरा धीरे बोलिये, तो उसकी हालत और बदतर होती। खैर, खैर, कभी-कभी अल्लाह मियां भी गलती कर बैठते हैं, वाकई, वाकई !

अनीस अलजलीस -- शेख इब्राहीम, तुम खलीफा बनोगे ?

इब्राहीम -- हां मेरी जान, और तुम मेरी जुबैदा बनोगी। और हम जामपर जाम चढ़ायेंगे, हसीना हम खूब पियेंगे।

हारून-अल्-रशीद -- और हारून ?

इब्राहीम -- मैं बहुत बड़े दिलवाला बनूँगा और उसे अपनी तरकारीके बगीचेके बागबानके मददगारके नायबका दूसरा मददगार बना दूंगा। मैं बड़ी खुशीसे उसे ज्यादा ऊंची नौकरी दे देता, लेकिन, सचमुच, वह उसके लायक नहीं है।

हारून-अल्-रशीद -- (हंसता हुआ) तुम कैसे बेवफा गद्दार हो शेख इब्राहीम !

इब्राहीम -- क्या ? कौन ? तू शैतान तो नहीं है ? सचमुच मछियारा करीम ही तो है न ? बे आबरू घरोंमें माल पहुँचानेवाले, क्या तूने कहा कि मैं मदहोश हूँ ? वाकई, मैं तेरी दांढ़ी नोचूँगा क्योंकि तू झूठ बोलता है। वाकई, वाकई !

नूरुद्दीन -- शेख इब्राहीम ! शेख इब्राहीम !

इब्राहीम -- नहीं, अगर तू फरिश्ता जिब्रईल है और मुझे मना करता है, तो छोडे देता हूँ लेकिन मुझे झूठ और झूठोंसे सख्त नफरत है !

नूरुद्दीन -- मछियारे, तेरा यहांका काम हो चुका न ?

हारून-अल्-रशीद —— मैं अर्ज करता हूँ कि मुझे इन छोटी बेगमका गाना सुनवा दीजिये क्योंकि सच तो यह है कि उनकी मीठी आवाजने ही मुझसे आपके लिये मछली तलवाई है।

नूरुद्दीन —— अनीस, इस भले आदमीकी खाहिश पूरी कर दो। मछियारा होते हुए भी उसका चेहरा शाही है।

इब्राहीम —— गाना! मैं गाऊंगा। सारे बगदादमें मेरे जैसी आवाज किसीकी नहीं। (गाता है)

अन्दाज जवानीके थे ऐ दोस्त निराले, माशूक नजर आते थे गोरे हों कि काले
दिल चाहता हर एकको गोदीमें बिठा ले
जुल्फोंके घने सायेमें बोसोंका मजा ले
अब शाम बुढ़ापेकी है वीरान हैं राहें, नौखेज हसीनोंकी हैं अब सर्द निगाहें
दिल साजे शिकस्ता है निकलती हैं बस आहें
औरोंके मुकद्दर में हैं अब मरमरी बाहें।

बड़ा मीठा गाना है! बड़ा पुरदर्द गाना! हमारे मीठे-से-मीठे गीत वही हैं जो हमारे गमगीन-से-गमगीन ख्यालोंकी बात कहते हैं। हां, ठीक ऐसा ही है। यूँ ही होता है, बेचारा मैं! अफसोस, सद अफसोस, वाकई!

अनीस अलजलीस —— शेख इब्राहीम, मैं कहती हूँ चुप रहो। अब मैं गाऊंगी।

इब्राहीम —— गा मेरी जान, गा, मेरे गजाल, गा मेरे बोसोंकी बेगम। सचमुच अगर मुझे अपने पांव मिल जाते तो मैं उठकर अभी तेरे बोसे लेता, खुदा जाने मेरे पैर मुझसे क्यों ले लिये गये हैं।

अनीस अलजलीस —— (गाती है)

मेरे दिल जरा तो रुक जा, क्यों सब्र खो रहा है, बेताब हो रहा है
किस्मत में बस लिखा है तेरी इन्तजार करना, और अश्कबार होना
क्यों शोर कर रहा है तुझे कह दिया कि सो जा, खामोश होके रह जा
तू जिन्दगी से इतना राजी हुआ था क्योंकर
तुझको खबर नहीं थी, रंजो महन है आलम

हारून-अल्-रशीद —— ओह क्या फरिश्तों-सी आवाज है! नौजवान, तुम कौन हो और यह मीठी आवाजवाली करामत कौन है? मुझे सुनाओ। अपनी दास्तां सुनाओ!

नूरुद्दीन —— मैं एक ऐसा इन्सान हूँ जिसे अपनी गलतियोंके लिये सजा मिल रही है फिर भी नाइनसाफीके साथ। मैं यहां इन्साफ मांगने आया हूँ, खलीफा-ए-

आजमसे। मछियारे तुम हमें अपने हालपर छोड़ दो।

हारून-अल्-रशीद -- नहीं, अपना किस्सा मुझे सुना दो और मेरे साथ थोड़ी दूरतक इस तरफ चलो मुमकिन है मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ।

नूरुद्दीन -- मैं कहता हूँ हमें न छेड़ो। तुम, एक गरीब मछियारे ठहरे।

हारून-अल्-रशीद -- वल्लाह मैं तुम्हारी मदद करूंगा।

नूरुद्दीन -- तुम ही खलीफा हो क्या ?

हारून-अल्-रशीद -- और अगर हूँ तो ?

नूरुद्दीन -- मेरे साथ जितना जोर करते हो उतना मछलियोंके साथ कर पाते तो बड़े अच्छे बंसीबाज कहलाते।

(हारूनके साथ जाता है)

अनीस अलजलीस -- शेख इब्राहीम क्या थोड़ीसी मछली न खाओगे ? बड़ी मीठी हैं।

इब्राहीम -- हां, सचमुच, तुम मीठी मछली हो, लेकिन जरा ज्यादा पकी हुई। तेरे चार प्यारी प्यारी आंखें हैं और दो निहायत उम्दा नाजुक गजबकी गोलाईवा नाकें हैं। यह नाक नहीं मेरे दिलको टांगनेके लिये हुक है। लेकिन वाकई एक नहीं दो हैं और समझमें नहीं आता दूसरी हुक्का क्या करूँ क्योंकि ऐ प्यारी, मेरे एक ही दिल है। या अल्लाह तूने शराबसे मेरे दिमागको तारीक कर दिया है और क्या इसके बाद मुझपर लानत भेजोगे ?

अनीस अलजलीस -- नहीं, अगर तुम मेरी नाकको हुक बनाकर ज्यादती करोगे तो मैं तुमसे बाज आयी। मेरे दिलमें एक अजीब-सा अंदेशा पैदा हो रहा है।

(नूरुद्दीनका प्रवेश)

नूरुद्दीन -- वह एक खत लिख रहा है।

अनीस अलजलीस -- मेरे मालिक, यह कोई मामूली मछियारा नहीं है। कहीं खलीफा ही हो तो ?

नूरुद्दीन -- बूढ़ा शराबी उसे करीम और मछियारेके नामसे पहचानता था। प्यारी अनीस, सपनोंके धोखेमें न पड़ो। जिन्दगी निहायत सख्त और बे-रंग है। हमारे अरमानों जैसी खुशगवार और रहम दिल है न उनसे आधी खूबसूरत।

(हारूनका प्रवेश)

हारून-अल्-रशीद -- वह सुलतान बनने लायक नहीं है।

नूरुद्दीन -- न कभी था ही, लेकिन अब देर हो चुकी है।

हारून-अल्-रशीद -- जाते हुए कोई तोहफा न दोगे ?

नूरुद्दीन — तू मछियारा ही तो है। (थैली खोलता है)

हारून-अल्-रशीद — इससे ज्यादा कीमती कुछ नहीं ?

अनीस अलजलीस — यह अंगूठी लोगे ?

हारून-अल्-रशीद — नहीं, मैं जो मांगूँ वही दे दो।

नूरुद्दीन — कसम रसूल अल्लाहकी, क्योंकि तेरे चेहरेसे शराफत टपकती है।

हारून-अल्-रशीन — मुझे अपनी कनीज दे दे।

(चुप्पी)

नूरुद्दीन — मछियारे, तूने मुझे जालमें फंसा लिया।

अनीस कलजलीस — यह मजाक है क्या ?

हारून-अल्-रशीद — नौजवान, तूने पैगम्बरकी कसम खायी थी।

नूरुद्दीन — अच्छा बतला यह तावान है क्या ? इसे और इन चन्द टुकड़ोंको छोड़ मेरे पास कुछ भी नहीं है।

हारून-अल्-रशीद — वह मुझे पसन्द है।

अनीस अलजलीस — हाय, कमबख्त !

नूरुद्दीन — और कोई वक्त होता तो मैं तुझे कत्ल कर डालता। लेकिन इस वक्त मुझे महसूस होता है कि खुद खुदाने मेरे पैरोंमें आफतों और मुसीबतोंके जाल डाल दिये हैं। और अब हिम्मत नहीं होती।

हारून-अल्-रशीद — तो फिर तू मुझे कनीज दे रहा है न ?

नूरुद्दीन — ले ले, अगर खुदाको यही मंजूर है तो ले ले। ऐ खुदाके फरिश्ते, बदला लेनेवाले फरिश्ते क्या तू मेरे लिये बगदादमें घात लगाये बैठा था ?

अनीस अलजलीस — मुझे न छोड़ो, खुदाके लिये मुझे न छोड़ो। यह सिर्फ मजाक है, मजाक ही होगा और मजाक ही बनकर रहेगा। अल्लाह ताला इसे बरदाश्त न करेगा।

हारून-अल्-रशीद — मैं तेरा भला चाहता हूँ।

अनीस अलजलीस — लानत हो तेरी करतूतोंपर। ओ इन्सान, तू इन्सान है या सीधा जहन्नुमसे आया हुआ शैतान, या फिर हमें सतानेके लिये अलमुईनका औजार ? मेरे मालिक, क्या तुम मुझे छोड़ दोगे और फिर कभी न चूमोगे ?

नूरुद्दीन — तू उसकी हो चुकी। मैं तुझे छू भी नहीं सकता।

हारून-अल्-रशीद — उसे एक बोसा देते जाओ।

नूरुद्दीन — मुझे मत ललचा, मेरे होठ उसके होठोंतक पहुँच गये तो तू जिन्दा न बचेगा। अलविदा !

हारून-अल्-रशीद — जा कहां रहे हो ?

नूरुद्दीन — बसरा।

हारून-अल्-रशीद — यानी मौतके मुँहमें ?

नूरुद्दीन — यही सही।

हारून-अल्-रशीद — सुलतानके लिये यह खत लेते जाओ।

नूरुद्दीन — ऐ इन्सान, मुझे तेरे या तेरे खतोंसे क्या वास्ता ?

हारून-अल्-रशीद — नौजवान सुनो, तेरी महबूबा मेरे लिये मुकद्दस है और यहां वैसे ही सही सलामत रहेगी जैसे अपने अब्बाके साथ रहती हो। तू यह खत लेता जा। गो मैं मछियारा दीखता हूँ लेकिन मैं खलीफाका दोस्त और मदरसेका साथी हूँ, उसके बसरावाले भाईसे भी रिश्ता है। यह खत शायद तेरी मदद कर सकेगा।

नूरुद्दीन — मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो, नहीं जानता कि इस कागजके टुकड़ोंमें वह ताकत है या नहीं जिसके बारेमें तुम इतनी बकवास कर रहे हो, और न मुझे जाननेकी परवाह है। उसके बगैर जिन्दगीका ख्यालतक नहीं आ सकता। फिर भी तुम एक ऐसी चीज दे रहे हो जिसे मैं एक बार उम्मीदका नाम दे सकता था। यह सही सलामत तो रहेगी न ?

हारून-अल्-रशीद — मेरी अपनी या खलीफाकी बेटीकी तरह।

(जाता है)

नूरुद्दीन — तो मैं बसरा जाकर मौतके साथ जूआ खेलूँगा।

इब्राहीम — करीम, अबे गन्दे मछियारे, ना इंसाफ बेचनेवाले, बेईमान जुआरी, जनपरस्त हैवान! तूने मुझे एक दिरहमभरकी सड़ी बदबूदार मछली दी है और अब मेरी कनीजको उड़ानेकी सोच रहा है वाकई, मैं उसकी खातिर तेरी दाढ़ी नोच लूँगा।

(वह हारूनकी दाढ़ी पकड़ता है)

हारून-अल्-रशीद — (उसे दूर फेंकते हुए) चल भाग! वजीर जाफर, आना तो जरा। (जाफरका प्रवेश) मेरा लिबास है तुम्हारे पास ?

(अपनावेशबदलता है)

ज़ाफर — क्या हाल है शेख इब्राहीम ? छिः, तुम्हारे अन्दरसे उस बुरी चीजकी बदबू आ रही है। उफ, उसी मरदूद चीजकी बू।

इब्राहीम — ओ शैतान, इबलीस, क्या तू मेरे सामने फारसी, शीया जाफरका भेस बनाकर आया है ? वही कुफ्र और शिर्कका दिलदादा, बदकार और पियक्कड़

वजीर बनकर आया है ? चल, रफा दफा हो जा, और वापस आये तो जरा कम घिनौना चेहरा लेकर आना। ऐ मरदूद इबलीस ?

हारून-अल्-रशीद — हसीना, जरा सिर उठाओ। मैं खलीफा हूँ।

अनीस अलजलीस — तुम कौन हो मुझे इससे मतलब ? ऐ मेरे दिल, मेरे कलेजे !

हारून-अल्-रशीद — तुम चकरा गयी हो। उठो ! मैं ही खलीफा हूँ जिसे लोग इन्साफ-पसन्द कहते हैं। तुम मेरे साथ उतनी ही सही सलामत हो जितनी मेरी अपनी बेटी। मैंने तेरे मालिकको बसराका सुलतान बननेके लिये भेजा है और तुझे भी उसके पास बेश कीमती कपड़ों, खूबरू बांदियों और उम्दा तोहफोंके साथ भेजूँगा। अपने दिलको संभाल और खुश रह।

अनीस अलजलीस — ऐ मुँसिफ और अजीम खलीफा !

हारून-अल्रशीद — शेख इब्राहीम।

इब्राहीम — वाकई, मेरा ख्याल है तुम खलीफा ही हो, और वाकई, शायद मैं पिये हुए हूँ।

हारून-अल्-रशीद — वाकई, तूने सच्ची बात कही है। और वह भी दो बार ! हैरत है ! लेकिन, वाकई, वाकई, वाकई तुझे सजा मिलेगी ! तूने उस नौजवान और उसकी महबूबासे नेक सुलूक किया है इसलिये मैं तुझसे तेरी जान या इस बागकी नौकरी न छीनूँगा औंर खुदाके नाइबकी दाढ़ी खींचनेका इलजाम भी माफ करता हूँ। लेकिन तेरी मक्कारी और तेरा कुफ्र माफीके लिये बहुत ज्यादा भारी हैं। जाफर, इसके सामने एक आदमी रखो और हर वक्त शराब इसके सामने बनी रहे लेकिन, लेकिन, अगर यह एक कतरा भर पीले तो सारी शराबके पीपे इसके हलकमें उंडेले जायें। हर वक्त खूबसूरत औरतें इसके सामने रहें लेकिन अगर एक बार भी इसने पायलसे ऊपर नजर उठायी तो इसकी पूरी हजामत करके बगदादके सबसे कट्टर घरानेमें बेच दिया जायगा। नहीं, बूढ़े, मैं तुझे सुधारके छोड़ूँगा।

इब्राहीम — ओह, उसके होठ ! उसके प्यारे-प्यारे होंठ।

जाफर — हुजूर, आप एक मदहोश आदमीसे बात कर रहे हैं।

हारून-अल्-रशीद — कल जब इसके होश ठिकाने आ जायें तो इसे मेरे पास लाना ! (जाता है)

अंक ५

दृश्य १

(अलमुईनके मकानका एक कमरा)

अलमुईन, फरीद

फरीद — अब्बा, तुम मुझे पैसे दोगे न ?

अलमुईन — तुम बहुत ज्यादा खर्च करते हो। इस बारेमें फिर कभी बात करेंगे। इस वक्त मुझे छोड़ दो।

फरीद — तो मुझे पैसे दोगे ?

अलमुईन — जा, मैं तैशमें हूँ।

फरीद — (उसके चारों तरफ नाचते हुए) .पैसे दो, पैसे, पैसे, पैसे, मुझे पैसे दो।

अलमुईन — अरे फोड़े, क्या तू भी मुझपर ही बढ़ रहा है ? ले।

(उसे मारता है)

फरीद — मुझे पीटा तुमने ?

अलमुईन — मिल जायेंगे बाबा, जाओ, तुम्हें पैसे मिल जायेंगे।

फरीद — कितने ?

अलमुईन — तुमने मांगे हैं उसके आधे। मेरे लिये एक गिलास पानी भेजते जाना

(जाता है)

अलमुईन — नौजवान नूरुद्दीनका बच निकलना मेरे दिलको खरोंचता रहता है। उसे हटा नहीं पाता। इधर मुराद सुलतानके करीब होता जा रहा है और हर वक्त उनके कानोंमें फुसफुसाता रहता है। न जाने क्या-क्या कानाफूसी करता है। शायद मुरी बर्बादीकी बातें करता है ? नहीं, सुलतानको अभीतक मेरी जरूरत है। और इब्ने सावी जल्द आ रहा है। लेकिन वहां तो मेरी जीत है। रूममें अरसेतक काम करनेसे उसे कम ही फायदा होगा — मिलेगी जल्लादकी कुल्हाड़ी।

(पानीका गिलास लिये गुलाम आता है)

उसे यहां रख दे और ठहर। आखिर इतनी बुरी हालत नहीं है। अब भी उसकी

दुनियाको अपने फरीदके लिये ले सकूँगा।

(खातून फरीदको घसीटती हुई आती है)

खातून — उन्होंने अभीतक उसे पिया नहीं है।

फरीद — शैतान औरत, मुझे क्यों घसीटती है? मैं तेरी उंगलियां काट लूँगा।

खातून — दोजखी शैतान, वजीर, उस पानीको न छूना।

अलमुईन — क्या माजरा है आखिर?

खातून — यह छोकरा जिसकी रूहको तुमने एकदमसे बिगाड़ दिया है, अब तुम्हारे ऊपर झपट रहा है। उस गिलासमें जहर है।

अलमुईन — नाहंजार मां, यह कैसी नफरत है कि तू अपने पेटकी औलादको बदनाम करती है।

फरीद — अब्बा, वह मुझसे नफरत करती है। पी जाओ यह प्याला, दिखा दो उसे कि तुम्हें मुझसे कितनी मुहब्बत है।

खातून — क्या, जिन्दगीसे ऊब गये हो? किसी कुत्तेको पानी पिला देखो।

अलमुईन — गुलाम जा, किसी हब्शीको पिला दे। (गुलाम जाता है) औरत, जिस चीजका मैंने वादा किया था, वह तुझे जरूर मिलेगी, यानी कोड़ोंकी मार।

खातून — तुम जैसेकी जिन्दगी बचानेके लिये वही मेरा सही इनाम होगा। हाय, खुदा मुझे इसके लिये जरूर सजा देगा।

अलमुईन — जबां दराज ! मैं चपत रसीद करूंगा।

(वह मारनेके लिये हाथ उठाता ही है कि गुलाम वापस आता हे)

गुलाम — ओह, हुजूर, उसके गलेतक पहुँचते-न-पहुँचते उसका सारा जिस्म ऐंठने लगा और वह मर गया।

अलमुईन — फरीद !

फरीद — तुम मुझे पीटोगे, और पीटो न? तुम मेरे मांगनेपर मुझे आधा हिस्सा ही दोगे, क्यों? काश, तुम उसे पी जाते, तब मैं बेतहाशा खर्च करता !

(भाग जाता है)

अलमुईन — या खुदा !

खातून — मुझे कोड़े न लगाओगे?

अलमुईन — मुझे अकेला छोड़ दे। (खातून जाती है) यह कैसी नागहानी मुसीबत है जिसके एक धक्केसे मैं लड़खड़ा रहा हूँ? क्या मेरा वक्त आन पहुँचा? लेकिन अगर मेरी पिटाई होती तो मैं भी यही करता। उसका जवांमर्द दिल, उसका खौलता खून उस चपतको बरदाश्त न कर सका। मुझे उसे समझा-

बुझाकर ठंडा करना चाहिये। खूब ! मेरा ही खून और मुझे खतम करे ! उसे पैसे मिलेंगे, जितने मांग सकता है उतने मिलेंगे।

(जाता है)

दृश्य २

(बसराका महल)

अलजैनी, मुराद, अलमुईन, अजीब

अलजैनी –– तुम्हारा भतीजा मुझे पसन्द है और मैं उसे आगे बढ़ाऊंगा। तुम्हारे और मुरादके बीच जो बात है उसे चुपचाप सोने दो। तुम दोनों ही मेरे वफादार सलाहकार हो।

अलमुईन –– एक बेकार-सी बात है। मुझे अफसोस है कि मैंने उसपर जोर दिया। शरीफ मुराद, उसे भूल जाओ।

मुराद –– जो मर्जी।

अलमुईन –– आओ, तुम भी मेरे भतीजे हो।

(बाहरसे आवाज)

या मुहम्मद अलजैनी, सुलतान !

अलजैनी –– यह अरब कौन है।

अलमुईन –– (खिड़कीके पास) या अल्लाह ! नूरुद्दीन है क्या ? नामुमकिन !

अलजैनी –– या फिर दिलेरीसे बौखला गया है।

अलमुईन –– है तो वही।

मुराद –– देखो तो इस शैतान और उसकी नापाक खुशीको।

अलजैनी –– उसे मेरे पास घसीट लाओ ! नहीं, उसे चुपचाप ले आओ, अजीब।

(अजीब जाता है)

हैरत है वह किस बिरतेपर यहां आ रहा है !

अलमुईन –– दीवानगीके बूतेपर।

मुराद –– या फिर जन्नतके बलपर जिसका कहर हमारी अपनी खाहिशोंके जरिये हमें सजा देता है।

(अजीब नूरुद्दीनके साथ आता है)

नूरुद्दीन — बसराके सुलतान, अलजैनी अस्सलाम अलेक। प्यारे चाचा अस्सलाम। आपकी नाक सीधी हो गयी न? अजीब और मुराद व-अस्सलाम, भाइयो, लीजिये मैं हाजिर हूँ!

अलजैनी — तूने आनेकी हिम्मत कैसे की? और फिर ऐसी बदतमीजीके साथ? तुझे अपना फैसला मालूम है?

नूरुद्दीन — खैर, मैं भी एक फैसला लेकर आया हूँ, एक मछली-सी लिखावट। लो यह रही। उसे संभाल कर लो। यह मेरा वह पांसा है जिसपर मैंने जिन्दगी या मौतसे भी बढ़कर किसी चीजका दांव लगा दिया है।

अलजैनी — खत, और मुझे?

नूरुद्दीन — सुलताने आजम, तुम्हारे दोस्त मछियारेने दिया है। वही गन्दी अबा-वाला जो बगदाद जैसे शहरमें चोरीकी मछलीपर जीता है।

अलजैनी — तेरा ख्याल है कि तू इस तरह बबरके साथ बदतमीजी कर सकेगा?

नूरुद्दीन — कहीं उसका अयाल देख पाता तो पकड़ लेता। सिर्फ दुम झटकना काफी नहीं है। ऐसी दुम तो शेरके भी होती है और बहुतेरे मामूली जानवरोंके भी होती है। खैर, खत पढ़ो।

अलजैनी — अलमुईन, पढ़ो तो।

अलमुईन — खलीफाका मालूम होता है। यह नाम निहाद खत कहता है हारून-अल्-रशीद अमीरुल मौमिनीन जिनका नाम पूरबकी नदियों और प्रशांत महा-सागरतक गूँजता है, तीनों बर्रे आजम जिनका हुकुम बजा लाते हैं, मुहम्मद बिन सुलेमान अब्बासी जिसे लोग अलजैनी कहते हैं, जो हमारी मेहरबानीसे बसरामें हमारा मातहत सुलतान बना है, उसे हमारी तरफसे अस्सलाम। हमारा यह खत पढ़ते ही अपनी शाही पोशाक उतार दो, हीरों जड़ी पगड़ी उतार दो और शाही असा और उसका दबदबा भी छोड़ दो और यह सब चीजें खतके लानेवाले, वजीरके बेटे नूरुद्दीनको पहना दो, जो तुम्हारी जगह बसरामें सुलतान बनेगा और फिर अपने बहुतेरे बड़े-बड़े गुनाहोंका जवाब देनेके लिये हमारे पास बगदाद चले आओ। हां, अगर जिन्दा रहनेकी उम्मीद है तो बस यही रास्ता है।

नूरुद्दीन — खलीफा ही थे!

अलजैनी — अपने अजीमुश्शान चचेरे भाईका हुकुम मानना ही होगा। तू उसे रोशनीकी तरफ क्यों घुमाता है?

अलमुईन — उसे अच्छी तरह जांचनेके लिये। सुलतान, यह जालसाजी है! मुहर

कहां है, शाही तहरीर कहां है ? क्या ऐसे फटे कागजपर खलीफा आजम लिख सकते हैं ? इस शख्सने कहींसे खलीफाका लापरवाहीमें लिखा हुआ खत हासिल कर लिया है और उसपर अपना नाम जोड़कर बेहयाईके साथ गड़बड़ करनेके लिये यहां आ धमका है।

अजीब — वह खत पूरा था, मैंने देखा था।

अलमुईन — चुप रह छोकरे।

अजीब — नहीं, मैं चुप न रहूँगा। तुमने ही उसे फाड़ा है।

अलमुईन — तो टुकड़े कहां गये ? ढूँढ़ सके तो ढूँढ़।

अलजैनी — हे, इधर आओ। (पहरेदार आते हैं) यहांसे अजीबको जेलमें ले जाओ। उसका फैसला बादमें होगा।

(पहरेदारोंके बीच अजीब बाहर जाता है)

ए मरदूद, क्या बेशर्म चेहरा बनाये, जबानसे बदतमीजी करता हुआ, जेबमें जालसाजी भरे हुए यहां आता है ? यहांसे घसीट ले जाओ। इसे दर्दनाक तकलीफें देनेके बाद सूली पर चढ़ा दो।

मुराद — सुलतान, मेरी अर्ज भी सुनिये।

अलजैनी — तू उसकी बहनका खाविंद है।

मुराद — फिर भी खुद अपनी खातिर मेरी बात सुनिये। सुलतान आपने सोचा भी है कि अगर यह बात सच हुई तो जब हारूनको इसकी खबर मिलेगी तो आपका क्या हश्र होगा ? सुलतान शक न रखो, आपके बहुत सारे दुश्मन यह खबर जल्द ही उसके पास पहुँचा देंगे।

अलजैनी — हरकारे दौड़ाओ और इस खतकी जांच कराओ।

अलमुईन — तबतक मैं अपनी भतीजेको अपनी खानंगी नजरोंके सामने सही-सलामत रखूँगा।

मुराद — तुम उसके दुश्मन हो।

अलमुईन — और तुम उसके दोस्त। वह फिरसे तुम्हारे पाससे भाग निकलेगा।

अलजैनी — वजीर, तुम ही उसे रखो, उसे अच्छी तरह इस्तेमाल करना।

अलमुईन — हो, ! पहरेदार, उसे ले जाओ।

(पहरेदार आते हैं)

नूरुद्दीन — मैं सिक्केकी उछालमें हार गया। यह तो पट निकला।

(पहरेके बीच चला जाता है)

अलजैनी — सब लोग यहांसे चले जायं। वजीर तुम ठहरो। (मुराद जाता है)

अलमुईन, अब ?

अलमुईन — उसे मार डालो और आराम करो।

अलजैनी — अगर, कहीं सचमुच खलीफाकी तहरीर हुई तो ? वजीर, अचानक मेरी हिम्मत नहीं होती।

अलमुईन — हिम्मत नहीं होती। अच्छा तो हारूनके हुकुमसे अपना ताज उतार दो। वह तुम्हें बगदादमें दरबान बना देगा। और खलीफा ? यह शराबी अजूबा कबतक शाही दिलो-दिमागपर हावी रहेगा ? सुलतान अलजैनी, आप तुर्ककी छिपी धमकियोंसे डर तो नहीं गये ?

अलजैनी — उसे तो मैं चुप कर लूँगा। लड़केको दस दिन रखे रहो, फिर अगर सब कुछ ठीक-ठीक चला तो उसका सिर कलम कर देना।

(जाता है)

अलमुईन — तुम आगा-पीछा करते रहते हो। ताज रखनेका यह तरीका नहीं है। वजीर कहता है उसे पकड़ लो और अपना तख्त बनाये रखो। सेनापति कहता है उसे बांधा तो तुम्हारा तख्त भी तहस-नहस हो जायगा। अपनी पकड़ ढीली करोगे ? अपने हाथको कांपने दोगे ? इसी तरह सुलतान बे-ताज हुआ करते हैं। कम-से-कम दस दिन तो मेरे ही हैं। अगर खलीफा उसके दोस्त बन बैठे हैं तो भी मेरे पास उसे सतानेके लिये दस दिन तो हैं ही। इसके बाद क्या खुदा उसका दोस्त बनेगा ? खुदा मेरे मजबूत हाथोंमें मेरे दुश्मनोंको सौंप देता है। मुराद गया और दुनियाको मैं अपनी पकड़में रखे हुए हूँ। सुना है आमिना भी लुक-छिपकर अपनी भतीजीके साथ ही रहती है। लेकिन वह कनीज कहां है ? खुदा उस आखिरी मीठे लुकमेको मेरे लिये सही सलामत रखे हुए है, मुझे इस बातका यकीन है। फरीदको बड़ी खुशी होगी। लेकिन हारून भी तो है ! पर उसके जिन्दा रहनेकी जरूरत ही क्या है जब तलवारे भी हैं और जहर भी।

(जाता है)

दृश्य ३

(अलमुईनके मकानका एक तहखाना)

अकेला नूरुद्दीन

नूरुद्दीन — हम चटपटे गुनाह करते रहते हैं और फिर उनसे मुँह मोड़कर मान लेते हैं कि खुदा धोखा खा गया। लेकिन वह अपने वक्तका इन्तजार करता है और जब हम साफ-सुथरे लिपे-पुते रास्तेपर चलते हैं तो वह हमारे जूतोंसे लगे कीचड़से हमें ठोकर मारकर गिराता है — उसी चटपटी कीचड़में जिसमें हम पहले चल चुके थे। खैर, मैं सब दुःख खामोशीसे सह लूँगा। बेहतर यही है कि जो होना है, आखिरत में होनेकी जगह यहीं हो ले। कौन आ रहा है? खातून? मेरी अच्छी खाला जान!

(खातून और एक गुलामका प्रवेश)

खातून — मेरे नूरुद्दीन!

नूरुद्दीन — मेरी अच्छी खाला, मेरे लिये न रोओ।

खातून — तू मेरी बहनका बच्चा है, लेकिन ज्यादा तो मेरा ही है। मेरे और कोई नहीं है। अली, इसके खानेका ख्याल रखना और इससे अच्छा सुलूक करना। वजीरके गुस्सेसे न डरना, मैं तेरी हिफाजत करूंगी।

गुलाम — मैं बड़े शौकसे करूंगा।

खातून — यह दौड़ते हुए कदमोंकी आवाज कैसी? (अलमुईन और गुलाम आते हैं)

अलमुईन — उसे पकड़ लो, बांध डालो। बदमाश, खतरनाक बदमाश कहींका। हाय मेरे गलेके हार! पकड़ो उसे, पीट-पीटकर कचूमर निकाल दो। गरम-गरम लोहेकी सलाखें तैयार रखो। बेगम तुम यहां क्या कर रही हो? तुम मुझे रोकोगी क्या?

खातून — खबरदार, सुलतानके कैदीको कोई हाथ न लगाये। यह गुस्सा क्यों?

अलमुईन — मेरा बेटा, हाय मेरा बेटा! इसने मेरा दिल जला दिया। मैं इसका

जिस्म भी न जलाऊं क्या ?

खातून — है क्या आखिर ? मुझे जल्दी बताओ।

अलमुईन — फरीद कत्ल हो गया।

खातून — खुदाकी पनाह ! किसने किया ?

अलमुईन — इस बदमाशकी बहनने।

खातून — दुनियाने ? तुम बौरा गये हो। गुलाम तू बोल।

एक गुलाम — छोटे मालिक बहुत सारे लोगोंके साथ दुनियाको उड़ा लानेके लिये मुरादके मकानपर गये थे। वे उस समय अजीबकी कनीज बिलकीस और मैमूनाके साथ बैठी सारंगी सुन रही थी। हम लोगोंने मकानपर हमला किया लेकिन बेगमको न ले पाये क्योंकि मैमूनाने कई मिनटोंतक हमें तलवारके बलपर दूर ही दूर रखा। इसी बीच शहरमें अफवाहें उड़ने लगीं और मुराद तूफानकी तरह घोड़ा उड़ाता हुआ हमपर चढ़ आया। इधर हिफाजत करनेवाली लड़की जख्मी हो गयी और आखिर दुनिया फरीदके बाजुओंकी जकड़में आ गयी। फरीद उस गोरे वजनको अपनी ढाल बनाये हुए था। उसी वक्त बिलकीस दौड़ी आयी और उसे ठोकर मारकर गिरा दिया, आग बरसाती आंखोंवाले गुस्सेसे पागल तुर्कने अपनी तलवार उसके जिस्मके आरपार कर दी। वह खत्म हो गया।

खातून — हाय मेरे बेटे !

अलमुईन — अब तो तुम मुझे इस पाजी लड़केको ठोक-पीटकर ठीक करनेकी इजाजत दोगी न ? इस पाजीका मलीदा बनाने दोगी न ?

खातून — उसका क्या कसूर है ? उसे जरा हाथ लगाकर देखो और मैं सुलतानको बता दूंगी। वजीर, तुम्हींने फरीदका कत्ल किया। मेरा खूबरु हंसता नन्हा, अपने नन्हें-नन्हें हाथोंसे मुझसे लिपट जाता था, मेरा दूध पीता था ! वजीर, तुम्हींने उसे मार डाला। तुमने उसके जिस्म और रूह दोनोंको खत्म कर दिया। मैं जाऊंगी और अपने कत्ल किये हुए बच्चेका बदला लेनेके लिये खुदासे अर्ज करूंगी। (जाती है)

अलमुईन — उसने मेरे कहरको बांध लिया है। ना, तेरे लिये मैं इन्तजार करूंगा। पहले तू सुनेगा कि मैंने दुनिया और तेरी नाजुक मांके जिस्मकी क्या हालत की। मुराद ! मुराद ! तेरे बेटा नहीं। काश, तेरे भी बेटा होता ! (जाता है)

नूरुद्दीन —— दूसरोंपर जो बेगुनाह हैं, अपना भारी कोड़ा न बरसा। ओ दुनिया, ओ मेरी अम्मा, तुम उस बौखलाये जालिमके हाथों बड़े खतरेमें पड़ी हो।

(परदा गिरता है)

दृश्य ४

(बसरामें एक मकान)

दुनिया, आमिना

दुनिया —— सब्र करो, अच्छी अम्मी, सब्र करो।

आमिना —— आह कैसा सब्र ? मेरा नूरुद्दीन बर्बाद हो चुका, मुराद जेलमें पड़ा है। हम भी इस जाबिर सुलतानके कयामत लानेवाले हुक्मसे लुक-छिपकर यहां पड़े हैं।

दुनिया —— मुझे मालूम न था कि खुदा हमारी छोटी गलतियोंको इतनी बारीकीसे देखता है जब कि बड़े-बड़े जुर्म और बुरे गुनाहगार मजेमें मुस्कराते रहते हैं। लेकिन फिर भी कुछ तस्कीन की बात है अम्मा। मेरे खाविंदने जेलसे लिखा है। सुनो (पढ़ती है) दुनिया, मैं यह खत खुफिया तदबीर से लिख रहा हूँ। इतमीनान रख, अपनी अम्माके आंसू पोंछती रह, हमारे लिये उम्मीद है। खलीफाकी सवारी बसरामें आ रही है और सुलतानको अपनी खानगी कामके लिये मुझे रिहा करना ही होगा। मेरे पास तेरे अब्बाकी खबर आयी है, वे बसरासे फकत दो दिनके सफरकी दूरीपर हैं और मैंने उन्हें फौरन बुलानेके लिये खतरेकी घंटी बजा दी है। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं कहलवायी जिससे उनका दिल टूट जाय। हमारे भी दोस्त हैं। दुनिया, मेरी अजीज दुनिया......। बाकी सिर्फ मेरे लिये है।

आमिना —— मैं भी सुनूँ जरा।

दुनिया —— एकदम बकवास है —— बस ऐसी बातें जो एक जंगली तुर्क ही लिख सकता है।

आमिना —— ओ, इसलिये तूने उसे चूमा था ?

दुनिया —— आहा, तुम्हें इत्मीनान हो गया ? तुम्हारे आंसुओंके पीछे मुस्कान आ गयी।

आमिना — मेरे खाविंद आ रहे हैं। वे सबको बचा लेंगे। मुझे कभी यकीन न आता था कि खुदा उनकी कीमतको इतनी जल्दी भुला देगा।

दुनिया — (स्वगत) वे तो आ रहे हैं, लेकिन कैसा नसीब लेकर? (प्रकट) वाकई अम्माजान, वे सबको बचा लेंगे।

आमिना — मैमूनाका क्या हाल है?

दुनिया — अब अच्छी है। उसे हमारी बेतहाशा दौड़में चोट आ गयी। बिलकीस उसके पास है। चलो, हम भी उनके पास जायें।

आमिना — मेरा बेटा अब भी बच जायगा।

(जाती हैं)

दृश्य ५

(बगदाद। खलीफाके हरमका एक कमरा)

बांदियोंसे घिरी अनीस अलजलीस

अनीस अलजलीस — लड़यिों, क्या वे इधरसे गुजर रहे हैं?

एक बांदी — हां, वे जा रहे हैं।

अनीस अलजलीस — जल्दी, मेरी सारंगी ला! (गाना)

खलीफा रूमतुलकिबरा का वाली खलीफा सलतनत में सब से आली
मेरा माबूद है अल्लाह ताला जो हर फरियाद को है सुनने वाला
यही है उसकी शाने किब्रियाई कि हर जर्रे की है उस तक रसाई
मैं एक नाला-कशो बनूँगी मुद्दई मैं रोजे महशर
मिलेगा मुझसे जब वह शाहे आलम
जिरह उसकी करूंगी मिस्ले मुलजिम

लड़कियो, क्या वे ऊपर आ रहे हैं?

एक बांदी — खलीफा तशरीफ ला रहे हैं।

(हारून और जाफरका प्रवेश)

हारून-अल्-रशीद — तू ही बांदी अनीस अलजलीस है न? तूने यह गाना क्यों चुना?

अनीस अलजलीस — खलीफा, आपके लिये। मेरे मालिक कहां है?

हारून-अल्-रशीद -- वह बसरामें सुलतान है।

अनीस अलजलीस -- आपको किसने बताया?

हारून-अल्-रशीद -- होना तो यही चाहिये।

अनीस अलजलीस -- कोई खबर आयी?

हारून-अल्-रशीद -- नहीं, अजीब बात है! सात दिन गुजर गये और कोई खत नहीं आया!

अनीस अलजलीस -- खलीफा, हुजूरे आला, आजम हारून-अल्-रशीद, लोग तुझे मुँसिफ कहते हैं, महान् अब्बासी ! मैं एक गरीब और मोहताज कनीज हूँ लेकिन मेरा गम एक सुलतानसे भी बढ़कर है। सरकार, मैं आपसे अपनी रूह-का प्यारा खाविंद वापस मांगती हूँ। आपने उसे अकेले ही किसी निगहबान दोस्त या मददगारके बगैर यूँ ही, उसके जानी दुश्मन, एक जालिम सुलतान और उससे भी ज्यादा जाबिर वजीरके पास भेज दिया है। ओह, उन्होंने उसे मार डाला! मेरे खाविंदको सही सालिम मेरे बाजुओंमें वापस ला दो वरना हारून-अल्-रशीद, कयामतके दिन मैं तुम्हारे खिलाफ खड़ी हो जाऊंगी और उस तख्ते-अबदी के सामने तुमसे अपने खाविंदकी मांग करूंगी। वहां न नामकी परवाह है और न दुनिया जहान्का दबदबा देखा जाता है। तब मेरी पतली और जनाना आवाज तुम्हारे शाही कानोंमें इस्राफील के सूरसे भी ज्यादा खतर-नाक बनकर गूँजेगी। मेरी मांगका जवाब दो।

हारून-अल्-रशीद -- अनीस, मुझे यकीन है तेरा मालिक अच्छी तरह है और फिर भी --ना, मेरे बुजुर्गोंकी कसम, न! मेरी मुहर और मेरे दस्तखत उस खतपर थे और ये चीजें हजार लश्करोंसे भी ज्यादा ताकतवार हैं। अगर उसने हुकुम उदूली की है -- तो बेहतर है कि वह हारूनका रिश्तेदार होनेकी जगह किसी भिखमंगेका दुत्कारा हुआ बच्चा होता। -- अरबकी सुमूम मेरे इताब से कम विनाशकारी होगी। जाओ, जाफर बसराकी तरफ चल पड़ो, तुम्हारे पीछे-पीछे पूरा-पूरा मोर्चाबन्द लश्कर हो, न रात और न तूफान तुम्हारी कूच-को रोक सकें। मैं बस तुम्हारे पीछे-पीछे ही आया। इस बेगमको और इन पचास बांदियोंको भी साथ लेते चलो। बसराके नौजवान बादशाहके लिये खिलअत और नजराना भी साथ ले लो। मैं तुम्हें बादशाही और शाहनशाहों-को धमकाने, हराने और गिरफ्तार करनेका अख्त्यार देता हूँ। दोस्त, चल पड़ो मैं तुम्हारे पीछे ऐसे आता हूँ जैसे बिजलीकी चमकके पीछे उसकी कड़क।

जाफर -- (कनीजोंसे) तैयार हो जाओ, हम घंटे भरके अन्दर-अन्दर कूच करेंगे।

(परदा)

दृश्य ६

(बसराके चौकमें)

अलजैनी चबूतरेपर बैठा है। नूरुद्दीन सामने ही फांसीके मचानपर खड़ा है। जल्लाद, मुराद वगैरा हाजिर हैं। अलमुईन चबूतरे और मचानके बीच बीच चक्कर काट रहा है। चौकमें भीड़ लगी है।

जल्लाद — सुनो, सुनो मौमिनो, नूरुद्दीन बिन -अल-फज्ल बिन सावी यहां फांसीके नमदे पर खड़ा है। इसने बड़े-बड़े वजीरोंको मारा और जालसाजी करके जबर्दस्त बादशाहोंको तख्तसे उतारनेकी कोशिश की। शाह अलजैनीके दुश्मनो, इसकी तबाहीको देखो और थर्राओ (आहिस्तासे नूरुद्दीनकी तरफ) मालिक, मुझे माफ कीजिये। मुझे अपनी मरजीके खिलाफ आपके अब्बाके एहसानों-को भुलाकर यह करना पड़ रहा है।

नूरुद्दीन — पानी दो, मैं प्यासा हूँ।

मुराद — पानी दे दो, जल्लाद, बादशाह इशारा करें तो जरा रुक जाना, फांसी देने-में जल्दबाजी न करना।

जल्लाद — कप्तान, मैं आपके इशारेका इंतजार करूंगा। लीजिये पानी।

अलमुईन — (आगे बढ़कर) गद्दार तलवारिये, तू बादशाहके दुश्मनोंको पानी पिलाता है! (भीड़मेंसे आवाज) शैतान वजीर, खुदा तेरी राह देख रहा है।

अलमुईन— कौन बोला?

मुराद — एक आवाज, कत्ल कर डालो उसे।

अलमुईन — बादशाह सलामत, बस हुकुम हो जाय।

अलजैनी — भीड़में कुछ हलचल हो रही है और आवाजें आ रही हैं, जरा ठहर जाओ।

अलमुईन — ओ, इब्ने सावी। आह क्या अच्छी बात है!

आवाजें — वजीरके लिये रास्ता छोड़ो, हमारे अच्छे वजीर, बच गया, बच गया।

(इब्ने सावीका प्रवेश। पहले भावभीनी आंखोंसे नूरुद्दीनको देखता है फिर बादशाहकी ओर मुड़ता है)

इब्ने सावी — तस्लीमात, अर्ज है मेरे मालिक, मेरा रूमका काम पूरा हो गया।

अलजैनी -- नेक सीरत अलफज्ल, तुम्हारे साथ बातचीत करना हमें बहुत पसन्द है। हम तुम्हारे साथ बादमें बातचीत करेंगे। पहले एक खूबसूरत जिस्मको शर्मिन्दा करनेवाली, उसमें बसी हुई एक मैली रूहको उससे जुदा हो लेने दो। हां, उसकी जिन्दगी जरा जल्द ही खत्म हो रही है। देखो, वह रहा गुनाहगार।

इब्ने सावी -- गुनाहगार ! सुलताने आजम, माफ कीजिये कुदरतकी आवाज दबी न रहेगी। आप मेरे बेटेको किसलिये कत्ल करते हैं ?

अलजैनी -- नहीं, उसीने जिद करके अपनी तबाहीको बुलाया है। उसने अपने सुलतानको भला बुरा कहा, मेरे वजीरको पीट-पीट कर उसकी शक्ल खराब कर दी। हारूने आजमके जाली दस्तखत लेकर बसरामें मेरा ताज पहनने आया था। ये उसकी खास खताएं हैं।

इब्ने सावी -- अगर यह बातें सच हैं। तो बगदादसे पूछताछ......

अलजैनी -- ना, अपने फराइज इतनी जल्दी वापिस न ले लो। जरा सफरसे सुस्ता लो, अपने नूरेनजर को दफन कर लो और बादमें वफादारीके साथ अपने फर्ज सिरपर लेना।

इब्ने सावी -- मैं अपने प्यारे बच्चेका कत्ल न देखूँगा। मुझे जानेकी इजाजत दीजिये, मैं अपने उजड़े मकानमें उसकी गमगीन मां और रिश्तेदारोंके आंसू पोंछूँगा।

अलजैनी -- शायद तुम्हारे भी मकानका एकाध पत्थर ही वहां खड़ा हो। उसकी माँ और तेरी भतीजी ? मुझे अफसोस है वे भी मुजरिम हैं और उन्हें भी सजा दी जाचुकी है।

इब्ने सावी -- या खुदा !

अलजैनी -- गुलामों ! मेरे वफादार वजीरकी मदद करो। वे बेहोश हुए जाते हैं।

इब्ने सावी -- छोड़ दो मुझे। खुदाने मुझे दु:ख सहनेके लिये मजबूत बनाया है। वे सब भी मर चुके ?

अलजैनी -- नहीं, बहुत हल्की सजा दी है। क्या हुकुम था मेरा ? बसराके रास्तों-पर सिर्फ कमीज पहने गलेमें तस्मा डाले घुमाया जाय उन्हें, और सबकी आंखों-के आगे नंगा करके बेहोश होनेतक कोड़े लगाये जायं। बादमें गुलामोंकी तरह बेच दिया जाय, अगर हो सके तो कम दामोंमें ही सही, मगर बेचना गरीब ईसाई या यहूदीके हाथों। अलमुईन, क्यों यही हुकुम था न।

इब्ने सावी -- या अल्लाह, या रहीम ! क्या यह सब हो चुका ?

अलजैनी -- मुझे इसमें शक नहीं कि यह हो चुका है।

इब्ने सावी -- उनकी खता ?

अलजैनी — खूनके लिये साजिश, उन्होंने अलमुईनके लड़केका खून कर डाला। अच्छे इब्ने सावी, खुदा बड़ा रहमदिल है जिसने तेरी इस उम्रको घरवालोंके सारे बोझसे आजाद कर दिया। इस तरह वह तुम्हारे ख्यालातको अपने नाकाबिले बयान, सादा सुकून और इत्मीनानकी तरफ मोड़ रहा है।

इब्ने सावी — खुदाया, तू ताकतवर है और तेरी मरजी इंसाफभरी है। सुलतान मुहम्मद अलजैनी, मैं एक बदले हुए आलममें आया हूँ जहां मेरी कोई जरूरत नहीं। मैं अलविदा कहता हूँ।

अलजैनी — नहीं वजीर, अपने बेटेको गले लगा लो, फिर हमारी इजाजतके लिये यहीं कहीं करीब ही इन्तजार करो।

इब्ने सावी — मेरे नूरुद्दीन, मेरे बच्चे!

नूरुद्दीन — अल्लाहके इन्साफ, तू मुझे जरा भी माफ नहीं करता। अब्बा! अब्बा! अब्बा!

इब्ने सावी — मेरे बेटे, अल्लाहकी मर्जीके आगे झुक जा। अगर तुझे झूठे और नफरतभरे, ऐसे इलजामकी वजहसे मरना भी पड़े, जो तेरे लिये नामुमकिन है तो भी यही समझ कि यह अल्लाह तालाका इन्साफ ही है।

नूरुद्दीन — मैं अच्छी तरह मानता हूँ।

इब्ने सावी — बेटे, मुझे शक नहीं कि मैं भी जल्द ही तुझसे आ मिलूँगा। उस तंग रास्तेपर हम दोनों एक-दूसरेका हाथ पकड़कर चलेंगे।

अलजैनी — मिल चुके, अलफज्ल?

इब्ने सावी — सुलतान, अपनी मर्जीके मुताबिक करो।

अलजैनी — वार करो।

(बाहर बिगुलकी आवाज)

ये नाज भरे सुर कैसे? उत्तरसे हमारी तरफ झपटते मिट्टीके बादलका क्या मतलब? जमीन घोड़ोंकी टापोंसे कांप रही है।

अलमुईन — इस कम्बख्तका सिर कलम कर दो। तब हमें बड़ी बातोंके लिये फुरसत मिलेगी।

अलजैनी — ठहरो, रुक जाओ! जंगलकी रेतकी तरह भीड़को तितर-बितर करता एक घुड़सवार सरपट भागा आ रहा है। देखो, वह घोड़ेसे उतर रहा है।

(एक सिपाहीका प्रवेश)

सिपाही — मोहम्मद अलजैनी तस्लीम, अपनेसे ज्यादा ताकतवरकी तरफसे सलाम लो।

अलजैनी — अरब, तू कौन है ?

सिपाही — सारी जमीनके मालिक, खलीफा हारूनके मशहूरे आलम, वजीरे दाना, जाफर बिन बरमक यहां तशरीफ ला रहे हैं। उनका फरमान है: सुलतान, अगर तुम्हारे वजीरका बेटा नूरुद्दीन अभीतक जिन्दा है तो उसे अपनी जानकी तरह सम्भाले रहो, अगर वह मरा तो तुम भी जिन्दा न रहोगे।

अलजैनी — मेरे पहरेदारो, मेरे सिपाहियो, इस तरफ, मेरे पास !

सिपाही — खबरदार, अलजैनी। उनके साथ जो लश्कर आ रहा है वह एक घण्टेके अन्दर बसराकी ईंट से ईंट बजा सकता है। और तुम्हारे घरको खण्डहर बना सकता है। और उनके पीछे उनसे भी पुर-जलाल खुद खलीफा तशरीफ ला रहे हैं।

अलजैनी — ठीक है। मैंने ही गलती की है। मेरे मुराद, मेरे मजदीक आ। मुराद, तुझे सोना, मकान, जायदाद, शानदार अमीर घरोंकी औरतें मिलेंगी, वे तेरी बीबियां होंगी। मुराद !

मुराद — सुलतान, आपने एक सिपाहीको जल्लाद समझकर गलती की। सुलतान, मैंने अपने हीरेको बचा लिया है, मुझे और किसीकी जरूरत नहीं। वह चली जाती तो आप इस वक्त जिन्दा न होते।

अलजैनी — क्या मुझसे दगा हुआ है ?

मुराद — सुलतान, जो मरजी कह लें।

अलजैनी — मेरा तख्त गिरता जा रहा है। भीड़ रास्ता दे रही है, घुड़सवार हमारी ओर बढ़ते आ रहे हैं।

अलमुईन — सुलतान अलजैनी, अपने दुश्मनोंको खतम करो, फिर मर जाओ। क्या आप बेड़ियां पहने, गिरते-पड़ते जमीन नापते बगदाद जायेंगे ?

अलजैनी — लो वे आ पहुँचे।

(जाफर और सिपाहयोंका प्रवेश)

जाफर — मोहम्मद अलजैनी, यह दृश्य ही तुम्हारा फैसला है। अल्लाहने तुम्हें तबाह करनेके लिये पहले तुम्हारी अक्लको गुम कर दिया तभी तुमने अपने पागलपनमें आकर अपने आका की हुक्म-उदूली की।

अलमुईन — वजीरेआला, एक गलती हो गयी। हमने सोचा कि यह जालसाजी थी।

जाफर — इब्ने खाकान ने तुम्हारे जैसे बहुतेरे वजीर देखे हैं लेकिन एक भी ऐसा न था जो चैनसे मरा हो। सुलतान नूरुद्दीन ! मरहबा , बसराके मालिक, मैं आपको मुबारकवाद देता हूँ।

नूरुद्दीन — अब दूसरे पांसेकी बारी है। पहला पांसा गलत पड़ा था। या अल्लाह तेरा लाख-लाख शुक्र है ! तूने सिर्फ सजा देनेवाली तलवारकी धार ही दिखायी और फिर माफी बख्श दी। अब्बा, मुझे गले लगा लो।

इब्ने सावी — आह, बच्चे, तेरी मां, और तेरी बहन !

मुराद — वे सही सलामत हैं और मेरी निगरानीमें हैं।

इब्ने सावी — नहीं, खुदा रहमान और रहीम है। इस दुनियापर बड़ी नरमीसे हुकूमत होती है।

जाफर — सुलतान अलजैनी, और वजीर अलमुईन, होशियार, मैं खलीफाके सौंपे-अधिकारसे तुम दोनोंको खलीफाके कैदी बनाता हूँ। पहरेदारों, उन्हें ले जाओ। नूरुद्दीन, मैं तुम्हारे लिये एक कनीज लाया हूँ, वह खलीफाका तोहफा है।

नूरुद्दीन — अगर मुझे जंच गयी तो रखूँगा। जिन्दगी अब फिरसे मेरी है और वह सब जिससे मैं प्यार करता हूँ। ऐ कादिरे मुतलक, तेरा करम है, तेरा करम है।

(परदा)

दृश्य ७

(बसराका महल)

इब्ने सावी, आमिना, नूरुद्दीन, अनीस अलजलीस दुनिया, अजीब

इब्ने सावी — बन्द करो अब गले मिलना, बन्द करो। यह तो सारी जिन्दगी चलता ही रहेगा। हमारी सारी मुसीबतोंका प्यारा कारण और साथ-ही-साथ प्यारे ढंगसे उन्हें खतम करनेवाली ! नूरुद्दीन, जिसने तेरी रूहको और तेरे जिस्म-को बचाया उसे आखोंकी पुतली बनाके रखना।

नूरुद्दीन — बेशक, मैं आँखोंमें बिठाये रखूँगा। मेरे दिलकी मलिका !

अनीस अलजलीस — सिर्फ तुम्हारा कनीज।

दुनिया — अरी, खुशनसीब बच्ची ! तुझे एक सुलतान मिल गया और मुझे एक हंगामा खेज, बहादुर, खलीफाका खून करनेवाला तुर्क मिला जो मुझे बेवकूफी भरे खत लिखा करता है, और जब मेरे आशिक मुझे ले भागना चाहते हैं तो जख्मी कर डालता है। इस तरह अपने-आप भी एक नागवार तुर्क हंगामा

बन जाता है । बड़ी मुश्किल है, बसराके सुलतानेआजम, सुलतान, संजीदा और पुर-जलाल ताकतवर नूरुद्दीन ! तेरी बहन और रिआया......

नूरुद्दीन — दुनिया, यह परिस्तान नहीं है ।

दुनिया — है, जरूर है और यह अनीस उसकी मलिका है, परीनुमा बसराके परीजाद सुलतान, मेरे वबाले जानको जरूर जनरल बनाओ । मैं परिस्तानकी बेगम-जनरल बननेके लिये मर रही हूँ । और फिर हम सवारी करते हुए इधर-उधर भागा करेंगे । और कांटों और गोखरुओंपर अपनी जादुई छड़ीसे हमला बोलेंगे । बिलकीस और मैमूना मेरी कप्तान बनेंगी — सुलतान, वे बड़ी दिलेर हैं, बहादुर, छपाछप तलवार चलानेवाली लड़ाकिनें !

नूरुद्दीन — अजीब हमारा खजानची होगा ।

अजीब — आपको फिरसे बरबाद करनेके लिये ?

नूरुद्दीन — और हम शेख इब्राहीमको सारे परिस्तानका नवाब रंगा-सियार बनायेंगे । क्यों न अनीस ?

आमिना — बच्चो, क्या वाहियात बातें हैं ये ! बेटा, तू और सुलतान !

नूरुद्दीन — तेरे लिये तो मैं हमेशा सुलतान ही रहा हूँ, अब भी वैसा ही रहूँगा ।

इब्ने सावी — मुस्कानोंमें खुशी बरसती रहे । हमारे गम गलत हो चुके और हम अपने सुलतानके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो रहे हैं । खलीफा !

(हारून, जाफर, मुराद, संजार, पहरेदारोंके साथ अलजैनी और अल-मुईनका प्रवेश)

अस्सलाम अलेक या अमीरुल मौमिनीन !

हारून-अल्-रशीद — नवाब अलफज्ल, बैठो । तुम सब लोग भी बैठ जाओ । इन इन प्यार भरे खुश चेहरोंको देखकर और यह जानकर कि मैं खुद इन सबका सबब हूँ मेरा दिल बाग-बाग हो रहा है । मैं इसीलिये अल्लाहका खलीफा बन कर तख्तपर बैठा हूँ कि बदीको दबा दूँ और नेक लोगोंको खतरेकी बांहोंमेंसे उठा सकूँ । यही बादशाहोंकी शानके शायां काम है । सिर्फ ऊंचा ताज और कूच करते हुए लश्कर और ऐश आराम ही नहीं । संजार, मुराद और अजीब तुमलोगोंको तुम्हारा कमसिन सुलतान ही अच्छी तरह इनाम दे सकेगा लेकिन अजीब, अपने मकानमें, जहां तुम खुद सुलतान हो, जो इनामके लायक हैं उन्हें अच्छी तरह इनाम देना ।

अजीब — वे मेरे घरकी मलिकाएं होंगी । मेरे एक-एक हाथपर तख्तनशीन रहेंगी ।

हारून-अल्-रशीद — अच्छी बात है । सुलतान अलजैनी, मेरे मुल्कमें तुम्हारे जैसे

सुलतान हुकूमत न कर सकेंगे। तेरे इलजाम बड़े-बड़े हैं फिर भी मैं तेरी नकल करके, मामलेको सुने बगैर तुझे कत्ल करके तुझे इज्जत न बख्शूँगा। सुलतान, तुम्हें अदालतका फैसला मिलेगा लेकिन तुम्हारे जुर्म खुले हुए हैं और जोर-शोर-से अपान ऐलान कर रहे हैं।

अलमुईन —— मुझे बख्श दें मेरे आका।

हारून-अल-रशीद —— तेरे कई जुर्मोंके लिये अल्लाह तुझे सजा दे चुका है तब क्या मैं, उसका खलीफा आजम, तुझे छोड़ दूंगा? बसराके कमसिन सुलतान, मैं तुम्हारे दुश्मनको तुम्हारे हवाले करता हूँ।

अलमुईन —— मैंने अपने खून और अपनी तालीमके मुताबिक काम किया, तुम भी कम-अज-कम ऐसा ही करो।

नूरुद्दीन —— खलीफा, उसने मुझे बांध दिया। अब मैं उसकी बरबादीका फैसला न दे सकूँगा।

हारून-अल्-रशीद —— तब मैं ही फैसला करूंगा। इसी वक्त मौत! और उसके मकान और दौलतपर तुम्हारे अब्बाका हक है। इसे ले जाओ, सिर कलम कर दो।

(अलमुईनके साथ पहरेदार जाते हैं)

उसकी अचानक बरबादीके भंवरमें उसकी दुःखी और बे-खता बीबीको मत फंसने देना। नेक अलफज्ल......

इब्ने सावी —— वह मेरी बीबीकी प्यारी बहन है, मेरा घर उनका घर है, मेरे बच्चे उनके बेटेकी जगह लेंगे।

हारून-अल्-रशीद —— तो सब कुछ ठीक ठाक है, अनीस, तुझे इत्मीनान हो गया। सारी जिन्दगीमें मुझे ऐसा डर कभी नहीं लगा जैसा उस वक्त लगा था जब तू मेरे खिलाफ उठ खड़ी हुई थी।

अनीस अलजलीस —— मुझे माफ कीजिये।

हारून-अल्-रशीद —— एक दूसरेकी मुहब्बत और हुस्नके लायक, प्यारे बच्चो! जबतक जुदा करनेवाली मोत —— जो हर शादी शुदा जोड़ेको अलग करती है —— आ न जाय तबतक इस दुनियामें खुशियां मनाओ, और उसके बाद जन्नत-में खुशीसे रहो। इसी बीच याद रखो कि तुम्हारी मुस्कानोंके नीचे जिन्दगी संजीदा और मतानतसे भरी है। हमें भी जिन्दगीकी राहोंपर एहतियातके साथ जिन्दादिलीसे कदम रखने चाहियें और यह दुआ करनी चाहिये कि अगर हम ठोकर खायें तो खुदावन्द रहीम अपने मजबूत हाथोंसे हमारे पैरोंको संभाल

लें और हमें अपाना वालिदाना रुख दिखायें, संगदिल और खौफनाक मुँसिफका नहीं। अलविदा। मैं रूमकी लड़ाईके लिये जाता हूँ। अस्सलाम।

इब्ने सावी —– व अलेकुम अस्सलाम, खलीफा आजम ! अस्सलाम !

(परदा)

उर्दू-हिन्दी शब्दावली

अ

अख्त्यार - अधिकार
अजदह - अजगर
अजमत - बढ़प्पन
अजीम - महान्
अजीमुश्शान - शानदार
अता की - प्रदान की।
अबा - चोगा
अमां - अरे मियां
अमीरुलमोमिनीन - मुसलमानोंके राजा
अयाल - बाल (केसर)
अलानिया सरकशी - खुला विद्रोह
अश्क - आंसू
अश्कबार होना - रोना
असां - राजदण्ड
अहमक - मूर्ख

आ

आका - स्वामी
आखिरत - परलोक
आतिश - आग
आबा ओ-अजदाद - पूर्वज
आलातरीन - ऊंचे से ऊंचा
आयत - कुरानकी पंक्ति
आयात - कुरानके वाक्य
आलम - दुनिया

इ

इताब - कोप
इनकिसार - नम्रता
इनायत - कृपा
इफरात - बहुतायत
इबलीस - शैतानका दूसरा नाम
इब्तिदाई - प्रारंभिक
इमदाद - सहायता
इशरतगाह - ऐश का मकान
इश्क - प्रेम
इस्राफील - एक फरिश्ता जो सृष्टिका अन्त करनेका शंख बजाता है।

ए

एलान - घोषणा
एहतियात - सावधानी

क

कनीज - बांदी
कमसिन - कम उम्र
करम - कृपा
कसबी - वेश्या
कहर - गुस्सा
कारून - एक बहुत बड़ा धनवान्।
किब्रियाई - बढ़प्पन
कीनेसे - द्वेषसे

ख

खाजासरा - हिजड़ा
खादिम - नौकर
खिजां - पतझड़
खुदबीनी - घमंड
खुर्रम - प्रसन्न
खुर्शीदे दरख्शां - चमकता सूर्य
खूबरु - सुन्दर

ग

गजाल - हिरण
गदागरी - भिखारीपन
गिलमां - जन्नतके सुन्दर लड़के।
गुलफाम - मद

गुसल - स्नान
गैन - गायब
गैबदां - रहस्य जाननेवाले ।

च

चाक - फटा हुआ ।

ज

जजीरा - टापू
जबां दराज - दुर्मुख
जमीर - मनका उच्चतर भाग ।
जस्पर - एक प्रकारका पत्थर ।
जहीम - नरक
जाइचा - जन्मकुण्डली
जानिबसे - ओरसे
जाफरान - केसर
जाबिर - अत्याचारी
जिबरईल - एक फरिश्ता
जेबाइश - शृंगार
जूए - छोटी नदी

त

तकसीम - विभाजन
तख्ते अबदी - अमर सिंहासन
तदबीर - युक्ति
तफरीह - मनोरंजन
तरह - उपेक्षा
तवगर - पैसेवाला
तस्कीन - ढाढस
तस्लीम - सलाम
तस्लीमात - सलाम (बहुवचन)
तहरीक - प्रस्ताव
तारीक - अंधेरा
तावान - जुर्माना
तास्सुब - पक्षपात
तोहफा -उपहार

द

दवामी - स्थायी
दहशतनाक - भयंकर
दाना - बुद्धिमान्
दिलकश - आकर्षक
दिलरुबा - दिलको आकर्षित करनेवाली सुंदरी ।

न

नजला उतारना - क्रोध करना
नदामत - शर्मिन्दगी
नसीब - भाग्य
नसीहत - उपदेश
नस्तालीक - सुन्दर लिपि
नाइब (नायब) - प्रतिनिधि, सहायक
नागवार - असह्य
नागहानी - आकस्मिक
नाजबरदारी -चोंचले सहना
नायाब - दुर्लभ
नाला-कश - रोनेवाला
नाहंजार - बदचलन
नियामत - दुर्लभ पदार्थ
निहाद - नाममात्रका
नूर - भगवान्‌की ज्योति, दाढ़ी
नूरे नजर - आंखोंकी ज्योति (पुत्र)
नेक सरित - अच्छे स्वभाववाला
नौखेज - नयी नयी
नौशा - दूल्हा

प

परिंद -पक्षी

पाकदामनी - पवित्रता
पाकरसाई - पवित्रता
पाकीजा - पवित्र
पामाल - बरबाद
पुर-जलाल - भव्य महान्
पेशानी - माथा

फ

फख्रोगुमान - गर्व
फजीहत - बदनामी
फर्मोबरदार - आज्ञा मानने वाले।
फहश - अश्लील
फाख्ता - कबूतरके जैसी एक चिड़िया।
फानी - नाशवान्
फाल - शुभ-अशुभ बतानेकी क्रिया।
फाश - स्पष्ट
फाहिशा -बुरे चरित्रवाली
फितरत - प्रकृति
फितरी - स्वभाविक
फेहरिस्त - सूची

ब

बदकार - बदचलन
बदखस्लत - बुरा स्वभाव, नीचता
बरखुरदार - बेटा
बरी -मुक्त
बर्र - भूखण्ड
बादाकशीमें - शराब पीनेमें
बेजरर - निर्दोष
बेजारी - उबानेवाला
बेबाक - उऋर्ण

म

मंसब - पद
मखलूक - सृष्टि
मगफरत - क्षमा
मतानत - गंभीरता
मरदूद - नीच, निकम्मी, रद्दी चीज।
मरमर - संगमरमर
मरहवा - शाबाश
मलिका - रानी
मश्क - अभ्यास
मसर्रत - खुशी
महफूज - सुरक्षित
महबूबा - प्रिया
महरूम - वंचित
महशर - प्रलयका दिन
माकूल - उचित
माजन्दरान् - एक स्थान
माजी - भूतकाल
माबूद - जिसकी पूजा की जाय।
माहिर - कुशल
मिस्ल - जैसा
मुकद्दस - पवित्र
मुतलक - सर्वशक्तिमान्
मुमानियत - मनाही
मुरीद - शिष्य
मुश्तरिक - मिला-जुला
मुहलिक - घातक
मोहमल - निरर्थक
मौजूँ - उचित
मौतबर - विश्वासपात्र

य

यूसुफे किनआं - एक सुन्दर पैगम्बर

र

रबिश - चाल-ढाल
रसाई - पहुंच
रहगुजर - राजमार्ग
रहनुमाई - नेतृत्व
रहमान - दयालु
रहीम - दयालु
रियाकार - पाखण्डी
रिसाला - रजिस्टर
रूमतुलकिबरा - महान् रूमका

ल

लब - होंठ
लाफानी - अमर
लाले बदख्शां - एक प्रकारका लाल।

व

वबा - महामारी
वबाल - मुसीबत
वसीला - साधन
वहशियाना - जंगली
वाइस - कारण
वाज - सीख
वालिदाना - पिता सदृश
वाहिद - एक (एकमात्र)

श

शऊर - समझ
शरई - शास्त्रीय
शरीयत - इस्लामका धार्मिक विधान।
शहवत - कामुकता
शाया - अनुसार
शिर्क - इस्लामके अनुसार एक बहुत बड़ा पाप।
शिर्क दिलदादा - इस्लामके विरोधका प्रेमी।
शीरीं - मधुर

स

संगदिल - पत्थर-दिल
सखावत - दानशीलता, उदारता
सखी - उदार
समूम - लू
सरकश - विद्रोही
सरकशी - विद्रोह
साकी-ए-महवश - शराब पिलानेवाली
साजे शिकस्तां - टूटा हुआ वादय यंत्र।
सालिम - पूरा-का-पूरा
सिन-रसीदा - वयः प्राप्त
सिरोही - एक प्रकारकी तलवार
सुकून - शांति
सूए गुलिस्तां - बागकी ओर

ह

हंगामा खेज - गड़बड़ करनेवाला
हम्द - भगवान्की प्रशंसा
हरीफ - प्रतिस्पर्धी
हश्र - परिणाम
हिकमत - युक्ति
हिमाकत - बेवकूफी
हुक्म उदूली - आज्ञाका उल्लंघन
हूर - जन्नतकी स्त्री
हैरत अंगेज - आश्चर्यजनक

ईडरका राजकुमार

नाटक के पात्र

राणा करण –– ईडरका राठोड़वंशी राजा ।

वीसल देव –– उनका मंत्री, ब्राह्मण । पहले ईडरके गेहलोतवंशी राजाकी सेवामें था ।

हरिपाल –– एक राजपूत सामंत, ईडरका सेनापति । पहले गेहलोत राजाकी सेवामें था ।

बाप्पा –– ईडरके मृत गेहलोत नरेशका पुत्र, भीलोंके बीच ।

संग्राम, पृथ्वीराज –– युवक राजपूत शरणार्थी, बाप्पाके साथी ।

कोदल –– एक भील युवक, बाप्पाका दूध-भाई और सहायक ।

तोरमाण –– कश्मीरका राजा ।

कनक –– कश्मीरके राजाका विदूषक ।

प्रताप –– इच्छलगढ़का राव, एक चौहान सामन्त ।

रतन –– उसका भाई ।

राजपूत भाला बरदारोंका कप्तान ।

मेनादेवी –– करणकी पत्नी, एक चौहान राजकुमारी, अजमेर नरेशकी बहन ।

कमल कुमारी –– राणा करण और मेनादेवीकी पुत्री ।

कुमुद कुमारी –– राणा करणकी रखैलसे हुई पुत्री ।

निर्मल कुमारी –– हरिपालकी पुत्री, कमल कुमारीकी सहेली ।

ईशानी –– कमल कुमारीकी सेवामें एक राजपूत लड़की ।

अंक १

दृश्य १

ईडरका राजमहल। दोनगढ़के आसपासका जंगल

राजा करण, वीसल देव

करण — तो वे देलसामें हैं ?

वीसलदेव — उन्होंने लिखा तो यही है।

करण — एक ऐसा सैनिक दल उन्हें लिवा लानेके लिये भेज दो उनके उच्च कुलके अनुकूल मान-मर्यादा दे सके। वे महावीरोंमें शिरोमणि हैं, उनका डेरा भी उनके अनुकूल होना चाहिये।

वीसलदेव — तो आपने चुन लिया ? महाराज, आप अपनी पुत्री इस कश्मीरीको देंगे ?

करण — अजमेरसे मेरे भाईका पत्र आया है, वह मना करता है क्योंकि यह सीथियन है और इस नाते जंगली। एक सीथियन ? वह कश्मीरका स्वामी है जो उन गर्वीले पहाड़ोंसे सारे उत्तरका आलिंगन करनेके लिये अपने हाथ फैला रहा है।

वीसलदेव — फिर भी है तो सीथियन ही।

करण — हां, वह अपना भाला जरा-सा हिला दे तो उसे प्रसन्न करनेके लिये बहुत-से आर्य महाराजा उसके आगे नाक रगड़ते हैं। एक योद्धा और विजेता — धरतीके पास इनसे ज्यादा भव्य क्या है ? और वह महान् कुशान वंशका है जो सदियोंसे पहाड़ोंपर आततायियोंके विरुद्ध डटा है। विश्वविख्यात अशोक जिसका आधे पूर्वपर आधिपत्य था वर्णसंकर ही तो था।

वीसलदेव — राणाजी, आप अपनी बेटीका विवाह राजा तोरमाणसे करेंगे ?

करण — मैं अजमेर-नरेशकी हठसे परेशान हूँ। वे हमारे राजपूत जगत्‌को मुट्ठीमें लिये हैं और उन्हें नाराज करना पागलपन होगा।

वीसलदेव — उसे आसानीसे टाला जा सकता है। अपनी बेटीको वन पर्वतोंमें छिपे अपने मजबूत किले दोनगढ़में भेज दीजिये। जब कुमारी वहां वृक्षों तले टहलती हो तब वह कश्मीरी पुराने राजवंशी ढंगसे उसे अपने घोड़ेपर ले जाय।

आपकी इच्छा भी पूरी हो जायगी और हठी चौहानको भी उत्तर मिल जायगा।

करण —— वीसलदेव, तुम सच्चे सलाहकार हो ! रानीको यहां बुला लाओ, मैं उनसे बात करूंगा।

(वीसलदेव जाते हैं)

क्या अच्छी सलाह मिली है ? बेटी आखिर है क्या ? एक लड़की ही तो और बदलेमें एक सम्राट मेरा मित्र बन जायगा। यह करना ही होगा।

(मेनादेवी और वीसलदेवका प्रवेश)

मेनादेवी —— आर्यपुत्र, आपने मुझे बुलाया था ?

करण —— मेना, हमारी बेटीने कितने ग्रीष्म काटे हैं ?

मेनादेवी —— सोलह, स्वामी।

करण —— वह तेजीसे खिलती जा रही है और खिले गुलाबकी तरह शरमाती पंखुड़ियोंसे हवाकी प्रतीक्षा कर रही है। हम उसके विवाहोत्सवमें देर नहीं कर सकते।

मेनादेवी —— इच्छंलगढ़के रावने उसके लिये इच्छा प्रकट की है। वे एक वीर योद्धा और साथ ही चौहान हैं।

करण —— वह छोटा-सा-ठाकुर ! ओ प्रिय भामिनी, अपनी संतानकी कीमत इतनी कम न आंको। उसके सौन्दर्यकी ख्यातिने उत्तरके एक सम्राटको प्रेम-याचना करनेके लिये यहांतक खींचा है।

मेनादेवी —— मुझे बस कुलीन राजपूत वंश चाहिये, उससे अधिक कुछ नहीं मांगती।

करण —— कश्मीर-नरेशका पुत्र हमारी पुत्रीके लिये ईडर आ रहा है।

मेनादेवी —— मैं और वह आपकी राज-सत्ताके अधीन हैं। फिर भी मेरे स्वामी इतना जरूर कहूँगी कि राजपूत राजाकी संतानके लिये ज्यादा अच्छी जोड़ी मिल सकती है।

करण —— तुम अपने भाईकी बहन हो। वे कहते हैं कि एक सीथियनके साथ उसका विवाह न होने देंगे।

मेनादेवी —— उनमें उच्चकुलके चौहानोंका आत्मगौरव है। मेरे प्रभु, आप जानते हैं कि हम एक भूमिहीन, धनहीन राजपूत सैनिकको मुकुटधारी बर्बरकी अपेक्षा रानीके अधिक योग्य मानते हैं।

करण —— तुम सब जिस संकरी घाटीमें जन्मे थे उसीकी तरह संकरे हो और उसीमें कैद रहते हो। जिन्होंने अपनी छोटी पहाड़ियां छोड़कर बाहरकी विविध दुनिया नहीं देखी ऐसी पहाड़ी लोगोंके फटेहाल गर्वका मुकाबला और किसीका घमंड न कर सकेगा। तुम्हारा छोटासा जमींदार जिसे बिरासतमें तीन

पहाड़ियोंकी हुकूमत मिली है, अपने-आपको उन महाराजाओंसे भी ऊंचा समझता है जिनके विशाल राज्यमें उसकी जमीन दीमकके ढेरसे ज्यादा बड़ी नहीं दिखती। फिर भी वह अपने तुच्छ वंशको उनके उच्च कुलसे अधिक पसन्द करता है। —— मानो एक पहाड़ी तलैया अपने-आपको उस समुद्रसे भी महान् समझे जिसमें कितनी ही विशाल नदियां आकर मिलती हैं।

मेनादेवी —— हमारी तलैया कम-से-कम स्वच्छ तो हैं; वे छोटी भले हों पर उनमें मीठा पानी है और आपके समुद्र खारे हैं।

करण —— अच्छा, अच्छा; कल अपनी नन्हीं राजकुमारीको दोनगढ़ भेज देना जब-तक हम यह न ठीक कर लें कि कश्मीर-नरेश उसे पायेगा या नहीं तबतक उसे वहीं रहना होगा। वीसलदेव, उसकी रक्षाके लिये दस अच्छे भाला बरदार उसके साथ कर देना।

मेनादेवी —— केवल दस! इतने तो काफी नहीं हैं।

वीसलदेव —— राणा, महारानी ठीक कहती हैं। पहाड़ियोंमें भील भरे पड़े हैं। उनका एक नया साहसिक नेता है। वे रास्ता चलते धनपर सनसनाते बाणोंकी वर्षा करते हैं।

करण —— ईडरके महाराणाको ऐसे छोटे-मोटे गंवार डाकुओंसे डरनेकी जरूरत नहीं है। जब हमारी पताकाओंको पहाड़ियोंपर बढ़ते हुए देखेंगे तो अपने-आप ही उस खतरेसे दूर रहेंगे। अगर संकटकी आशंका है तो पहाड़ियोंके किनारेका रास्ता ले लेना। दस भाले बरदार काफी हैं, वीसलदेव!

(चले जाते हैं)

मेनादेवी —— मेरा रक्त सीथियन रक्तसे कभी नहीं मिलेगा। पहले मैं चौहान घरानेकी कुमारी हूँ और पीछे आपकी पत्नी, ईडर नरेश! दोनगढ़की इस चालका क्या अर्थ है, वीसलदेव?

वीसलदेव —— (मानो स्वगत) कुमारीकी रक्षामें दस भाले! एक कश्मीरीके लिये लिये भी उनके बीचसे कुमारीको उड़ा लेना आसान होगा।

मेनादेवी —— मैं समझ गयी। हमारे प्राचीन रक्तको दूषित करनेवाला यह विवाह खुल्लम-खुल्लां किया जाय तो सारा राजस्थान ईडरपर फटकार बरसायेगा। इस अपमानको रोकनेका कोई उपाय है?

वीसलदेव —— देवी, मैं राणाका वफादार नौकर हूँ।

मेनादेवी —— अच्छा, बने रहो। मैं इसी क्षण इच्छलगढ़की ओर एक घुड़सवार भेजूँगी। सीथियनसे भी ज्यादा तेज अपहरण करनेवाले हो सकते हैं।

(जाती है)

वीसलदेव -- या कोई इच्छलगढ़वालोंसे भी तेज हो सकता है। मुझे भी झटपट खबर भेजनी है।

(जाता है)

दृश्य २

ईडरके राजमहलका अन्तःपुर

कमल कुमारी, कुमुद कुमारी

कमल कुमारी -- कुमुद, कल वसन्तोत्सव है।

कुमुद कुमारी -- प्यारी, चाहती हूँ कि कल इच्छानौमीका उत्सव होता। मुझे मालूम है कि तुम्हारे लिये क्या वर मांगती।

कमल कुमारी -- क्या कुमुद ?

कुमुद कुमारी -- तुम्हारे पिता जो दूल्हा दे रहे हैं उससे ज्यादा अच्छा दूल्हा।

कमल कुमारी -- तुम्हारा मतलब सीथियनसे है ? मैं मान ही नहीं सकती कि ऐसा हो सकता है। मेरे पिताका हृदय प्रतापी हृदय है और उसमें राजपूत माताओं-की शिराओंका रक्त धड़क रहा है।

कुमुद कुमारी -- लेकिन दिमाग कूटनीतिसे भरा है। दुर्भाग्यवश उनकी शाही खोपड़ीमें एक व्यापारीका मन घुस पड़ा है और वह तुम्हें अवश्य बेच देगा भले राजसी हृदय कुछ भी क्यों न कहता रहे।

कमल कुमारी -- वे हमारे पिता हैं, इसलिये उन्हें दोष न दे।

कुमुद कुमारी -- मैं उनके दिमागको दोष देती हूँ, उन्हें नहीं। प्यारी, याद रखो तुम जिस किसीसे विवाह करो मैं तुम्हारे पतिमें आधा साझा करूंगी।

कमल कुमारी -- वह अगर सीथियन हुआ तो तुम इस घाटेके सौदेमें कश्मीर सहित पूरे गंवारू बर्बरको ले सकती हो।

कुमुद कुमारी -- हम उसे तुम्हारे पास फटकने न देंगे। हम एक मन्त्र खोज निकालेंगे जिसके बलसे अर्जुनको स्वर्गसे तुम्हारे साथ शादी करनेके लिये उतरना होगा। ओ मनोहर जादूगरनी ! तुमने ये बड़ी-बड़ी आंखें हिरनोंसे चुरायी हैं ताकि पुरुषोंके हृदयोंको ताककर उन्हें शरीरसे जुदा कर सको। तुम्हारी इन आंखों-

के लिये महान् दुष्यन्त शकुन्तलाको छोड़ देंगे। या फिर, ईडरकी वासवदत्ता! हम भागते रथमें उदयनके द्वारा तुम्हारा अपहरण करवायेंगे। प्यारी, हम यहां भूतकालकी प्रणय-कथाओंके नायकोंका जमघट लगा देंगे ताकि तुम उनकी अद्‌भुत पंक्तियोंमेंसे किसीको चुन सको, उनमें एक भी सीथियन न होगा।

कमल कुमारी — लेकिन मेरी बेचारी कुमुद, तुम्हारी प्रणय-कथाका नायक मेरे मृगनयनोंको बहुत सुन्दर पाकर तुम्हारी ओर देखेगा भी नहीं तब तुम क्या करोगी?

कुमुद कुमारी — मैं बड़े कौशलके साथ उससे शादी कर लूँगी और उसे पता भी न लगने पायेगा। जब विवाहकी अग्नि प्रज्वलित होगी और गठबन्धन हो रहा होगा तो मैं अपना पल्ला भी तुम्हारे कपड़ोंके साथ बांध दूंगी। जब सप्तपदीमें चलोगी तो मैं भी तुम्हारे साथ-साथ चलकर हमेशाके लिये अपना जीवन तुम्हारे जीवनमें गूँथ लूँगी।

(निर्मल कुमारीका प्रवेश)

निर्मल कुमारी — समाचार, राजकुमारी, समाचार! बोरे भर समाचारके लिये क्या दोगी?

कमल कुमारी — दो बेंत और एक भोजकी छड़ी। तुम्हारे बोरेभरके बदले कमर भर दर्द।

निर्मल कुमारी — पहले मैं अपना बोरा खाली कर दूं, इससे तुम अपनी अधम कृतघ्नताके लिये शर्मिन्दा होगी। सबसे पहले तुम यह सुनकर खुश हो जाओगी कि राजा तोरमाण आ गये हैं। सुनती हूँ जोखिम उठानेसे पहले तुम्हें देखने और पसन्द करने आ रहे हैं। यही सीथियन रिवाज है।

कमल कुमारी — यहां उसका सीथियन रिवाज न चलेगा। भारतमें चुननेका अधिकार लड़कियोंको है।

निर्मल कुमारी — वह सुनेगा थोड़े ही। ये सीथियन अपने रिवाजोंको अपनी चमड़ीकी तरह चिपकाये रखते हैं। वे आगरेकी भरी गरमियोंमें भी बकरीका चमड़ा ओढ़ते हैं।

कमल कुमारी — तो निर्मल, हम तुझे ही राजकुमारी कमल कुमारी कहकर दिखा देंगे और तेरा व्याह करके पहाड़ोंमें टाल देंगे। तुझे कश्मीरकी रानी बनना पसन्द नहीं?

निर्मल कुमारी — मुझे विशेष आपत्ति न होगी। कहते हैं वे हिमालयके सफेद भालूसे मोटे ताजे हैं और उनकी छोटीसी, प्यारी-सी चपटी नाक है और उनके

गाल दो मोटे थैलोंसे हैं। लोग यह भी कहते हैं कि वे अपने हाथमें एक कोड़ा रखते हैं जिसे वे विवाहके समय अपनी वधूको छुआते रहेंगे ताकि उसे यह अन्दाज हो जाय कि अपने भावी जीवनके लिये वह क्या आशा कर सकती है। यह भी सीथियन रिवाज है। ओह, राजकुमारी, मैं तुमसे ईर्ष्या करती हूँ।

कमल कुमारी —— निर्मल, एकदम गंभीरतासे कहती हूँ, तुझे पीटूँगी।

निर्मल कुमारी —— पीट लेना, लेकिन सुनो भी ! क्योंकि मेरे बोरेमें अभी और भी समाचार हैं। तुम्हें अपना सामान इकट्ठा करना चाहिये; हम एक घण्टेके अन्दर दोनगढ़की ओर रवाना होंगे। क्या, आखिर मैंने तुम्हारी आंखोंको हंसा दिया ?

कमल कुमारी —— दोनगढ़ ! सच, निर्मल।

निर्मल कुमारी —— अगर ऐसा न हो तो सचमुच मुझे पीट लेना। स्वयं वीसलदेवने मुझे बताया है।

कमल कुमारी —— दोनगढ़को ! वनमें ! मुझे वहां गये तीन साल हो चुके। सोचती हूँ क्या अब भी पहलेकी तरह सारा वन वसन्तके मधुर आगमनसे शरमाकर चन्द्रधवल असंख्य कलियोंको लाल करता होगा। कुमुद, हम फिरसे वृक्षहीन ऊंची पर्वतश्रेणियोंके शिखरपर खड़े होकर, अपने गालोंपर पहाड़ी हवाका चुँबन पायेंगी और नीचे तराइयोंके हरे धागोंका सूक्ष्म घूमना-फिरना देख सकेंगी।

कुमुद कुमारी —— वसन्तोत्सव आ रहा है। क्या हम हवासे घिरे शिखरोंपर नृत्य न करेंगी और मयूरपंख बालोंमें लगाकर यह न सोचेंगी कि हम हरे-भरे वृन्दा-वनमें हैं ?

निर्मल कुमारी —— एक चपटी नाक वाले सीथियन कृष्ण नाचके अगुआ होंगे। लेकिन कहते हैं कि कृष्ण न सीथियन थे न राजपूत बल्कि भील थे। खैर, उसी जातिका एक कृष्ण वहां रहता है और मेरी प्यारी सखियो, तुम लोग जंगलमें दूर-दूर नृत्य करती फिरीं तो वह तुम्हें आठवीं शताब्दीकी रुक्मिणियां बना देगा।

कुमुद कुमारी —— तुम्हारा मतलब उन डाकुओंके बाल नायकसे है जो हमारी छोटी दुनियामें खूब शोर मचाते हैं ? वे उसे बाप्पा कहते हैं, हैं न ?

निर्मल कुमारी —— अक्षरोंका कुछ ऐसा ही जमघट है। तो, आधुनिक अभिरुचि किस ढंगसे पतिका वरण करेगी ? कोयले-सा काला हट्टा-कट्टा जवान भील जिसका चेहरा राजस्थान-सा खुरदुरा हो या लाल और गौर चपटी नाकवाला सीथियन जिसके गाल दो भरपूर थैलियोंसे हों। कुमुद, यह तेरे लिये रस शास्त्र-

की एक पहेली है।

कमल कुमारी — एक बर्बर सम्राट हो या पहाड़ी लुटेरा, राजपूत कुमारीके लिये दोनों समान हैं। उस पहाड़का शिखर हो या उस गहरी तराईका ढेला, आकाशमें विचरते तारेके लिये दोनों एक-से क्षुद्र और तिरस्कार योग्य हैं।

निर्मल कुमारी — हां, लेकिन सम्राटके घरमें अपमान सुनहरी वस्त्रोंमें ढक जाता है और लुटेरेकी पहाड़ीपर वह अपनी आदिम वास्तविकतामें काला-कलूटा, नग्न और ऊबड़-खाबड़ रहता है। ज्यादातर स्त्रियोंके लिये यह बहुत बड़ा फर्क होगा।

कमल कुमारी — मेरे लिये नहीं। मुझे आश्चर्य है कि इस छोकरेकी धृष्टताको इतनी देरतक सहा जा रहा है।

निर्मल कुमारी — नहीं तो, कुछ समय पहले ही एक कप्तानको भेजा गया था, लेकिन वह एक सिर गंवाकर आया। खैर सखियो, मेरे समाचार कैसे लगे?

कमल कुमारी — क्या, बस तेरा बोरा खाली हो गया?

निर्मल कुमारी — अन्तमें तुम्हारे शाही पिता उसमेंसे निकलनेवाले थे। मैं आशा करती हूँ कि मेरी कहानी खतम करनेके लिये वे खुद यहां पधारेंगे।

(राणा करण, मेनादेवी और वीसलदेवका प्रवेश)

करण — कुमारी कमल, दोनगढ़ जानेके लिये तैयार हो गयीं?

कमल कुमारी — महाराज, मैंने यह बात इसी क्षण सुनी है।

करण — तैयार हो जाओ। राजा तोरमाण आ रहे हैं। मेरी कमलिनी, लजाती हो?

मेनादेवी — कुमारीमें एक सज्जाकी लाली होती है। लेकिन एक दूसरी अपमानकी लाली भी होती है जब किसी अति हीन विवाहार्थीके लिये तिरस्कारसे उसके कुलीन कपोलोंके गौर वर्णमें लाली आ जाती है।

करण — कुमारी कमल, तेरी लाली किस कारण थी?

कमल कुमारी — पिताजी, यह बात तो मैं आप ही की राजाज्ञासे जानूँगी। मैं अपनी झेंप और लालीकी स्वामिनी नहीं हूँ।

करण — उन्हें उसीके लिये रख, कमल, जिसके लिये उनका माधुर्य बना है। सुन मेरी नन्हीं बच्ची, तेरे भाग्यमें साम्राज्ञी बनना बदा है। नक्षत्र अपने शांत अटल चक्रोंमें घूमते हुए हमारे भाग्योंको गूँथते हैं। इसलिये अगर अपनी पालकीके चारों ओर पहाड़ोंको भरते हुए युद्धका शोर सुनायी दे तो पीछे मत भागना, और उस आकस्मिक घटनासे डरना मत बल्कि अपने वीर पतिका स्वागत करने-

के लिये कपोलोंको लालीसे ढक देना।

कमल कुमारी —— पिताजी !

करण ——ऐसा ही है। तू दोनगढ़की यात्रा नहीं कर रही, अपने विवाहके लिये जा रही है।

कमल कुमारी —— तोरमाणसे ?

करण —— उसके साथ जिसके भाग्यमें बड़ा साम्राज्य लिखा है। यह बात अपने हृदयमें मधुर रहस्यकी तरह धड़कती रखना। विदा। जब हम फिर मिलेंगे, तो मैं अपनी छोटी साम्राज्ञीका अभिनन्दन करनेकी आशा करता हूँ।

(प्रस्थान)

मेनादेवी —— कमल, उन्होंने तुमसे क्या कहा ?

कमल कुमारी —— मां, वही जो मैंने अनिच्छासे सुना। क्या मेरा विवाह बर्बर कुल-में होगा ?

मेनादेवी —— ना, बेटी। जब तू नरसिंघेका शोर या तलवारोंकी झनझनाहट सुने तो यह न मानना कि तोरमाण है। वह होगी तेरी प्यारी मांकी अपनी बेटी-को लज्जाजनक सम्बन्धसे बचानेकी कोशिश। प्यारी नन्हीं, जा। जब अगली बांर मिलूँगी तो तू राजस्थानके सर्वोत्तम मुकुटपर पुष्प बनकर चमकेगी, किसी सीथियनका भाग न होगी।

वीसलदेव, इसके जानेकी तैयारी जल्दी कीजिये।

(रानीका प्रस्थान)

कमल कुमारी —— कैसे कैसे षड्यन्त्र मुझे घेर रहे हैं ? निर्मल, मेरी तलवार देना जरा। अगर संसार उलट चले तो मेरी मददके लिये.एक सहेली तो रहेगी।

वीसलदेव —— देवी, हम स्वयं अपने सबसे अच्छे सहायक होते हैं।

कमल कुमारी —— यह मैं विश्वास करती हूँ। कौन सा रास्ता ठीक हुआ है ?

वीसलदेव —— तराईका रास्ता जो पहाड़ोंके नीचेसे जाता है ?

कमल कुमारी —— वह तो सबसे छोटा रास्ता नहीं है।

वीसल देव —— लेकिन कश्मीरीके लिये सबसे आसान है।

कमल कुमारी —— तो फिर दूसरा रास्ता दोनगढ़के लिये ज्यादा सुरक्षित है न ?

वीसलदेव —— कम-से-कम हरा-भरा और सुन्दर है और शायद वहां प्रेम बिना बाधा-विघ्नके ही चल सकता है।

(प्रस्थान)

कमल कुमारी —— तुम मेरे मित्र लगते हो किन्तु मैं सिर्फ अपने-आपपर विश्वास करूंगी

और किसीपर नहीं, सिवा इस तलवारके, जिसकी तेज धारपर मुझे विश्वास है वह मुझे धोखा न देगी। कलो, अपनी इस आयोजित विनाशकारी यात्राकी तैयारी करें।

कुमुद कुमारी — हमारी पालकियां साथ ही रहें। प्यारी हम दोनोंकी एक ही गति हो।

कमल कुमारी — कुमुद, अगर हमें तोरमाणसे ब्याह करना पड़ा तो उस अंधकारमय प्रदेशमें ही होगा।

निर्मल कुमारी — मैं आशा करती हूँ वहां न्याय उसकी नाक और कपोलोंके बीच संतुलन कर देगा। सखियो, हम इस घुड़दौड़में पुरस्कार रूप हैं और मैं यह देखनेके लिये उतावली हो रही हूँ कि कौनसे सवारकी जीत होती है।

(जाती है)

दृश्य ३

दोनगढ़के पासका जंगल

बाप्पा, संग्राम, पृथ्वीराज

बाप्पा — यह उसी मित्रकी ओरसे है जिससे मेरे विचारोंने बचपनसे ही गरुड़की तरह ऊंची उड़ान लेना सीखा था। मैं हस्ताक्षर पहचानता हूँ यद्यपि उनका नाम अभीतक मुझसे छिपा हुआ है।

संग्राम — सुनें तो, उन्हींके शब्द सुनें।

बाप्पा — "सूर्य-पुत्रको, ईडरसे। ईडरकी राजकुमारी, कमलकुमारी अपनी सुन्दर बहनको लेकर मुट्ठीभर भालाबरदारोंके साथ दोनगढ़ जा रही है। बाप्पा, पहाड़ोंके तरुण नरकेसरी अपने प्रदेशमें सिंह बनकर रहो। संसारके बड़े-बड़ोंपर भी टूट पड़ना। उसकी राजकुमारियोंको लूटका धन और अपनी दासियां समझना। ससारके राजाओंको अपनी प्रजा और भूमिको अपना आखेट मानना। बढ़कर साहस करो और तुम महान् बनोगे। प्रत्यक्ष मृत्युका तिरस्कार करो और लड़ाईका पूरा जोर लगाकर उसके उठे हुए डरावने हाथमेंसे अपनी राज-नियतियोंको चुन लो। वीरोंकी संतान, यही कार्य तुम्हारे पूर्वजोंने किया था जिनके महान् रक्तसे तुम जन्मे हो। ईडरमें तुम्हारा मित्र।"

संग्राम — यह लिखा है उसने ? राजाओंकी सन्तान ! तुम्हारे जन्मके विषयमें इतना स्पष्ट तो इससे पहले कभी न लिखा था।

पृथ्वीराज — हमारे रक्तमें आग सुलगानेके लिये चिन्गारी ! दो राजकुमारियां और रक्षाके लिये मुट्ठीभर तलवारियें ? देवोंने ही हमारे लिये यह व्यवस्था की है।

संग्राम — बाप्पा, तुमने यह खतरा मोल लेनेकी ठान ली है ?

पृथ्वीराज — तुम्हें शंका है ? सोचो तो इससे हमारे खजानेको कितना लाभ होगा। पालकियां ही टकसाल-सी होंगी और लड़किडोंके बहुमूल्य गहने आधा राजस्थान खरीद सकेंगे।

संग्राम — तत्कालीन लाभ तो शानदार होगा और उन्हें बन्दी बनाना भी खतरनाक न होगा। लेकिन बादमें ईडर-नरेशका कोप ससैन्य आंधी और बिजली बनकर हमारे ऊपर उतरेगा। उस आक्रमणको झेलनेकी शक्ति है हममें ?

पृथ्वीराज — क्यों, आने भी दो। आखिर युद्धके सच्चे भयानक दंशका आनन्द तो मिलेगा। मुझे सारे समय पहाड़ी लुटेरेका अभिनय, दुर्बल और डरपोक लोगोंपर आक्रमण करनेके लिये घात, या बाणोंसे दूरकी सेनाको छेद डालना नहीं सुहाता। मैं युद्धके खुले घात-प्रतिघात और गौरवमय हार-जीतको पसन्द करता हूँ जिसमें सारा संसार दर्शक हो।

बाप्पा — संग्राम, मैं यह कदम बिना सोचे-समझे नहीं, निश्चित नीतिके साथ उठा रहा हूँ। ईडर नरेशको हमारे लिये जो तिरस्कार है उसे जबतक हम अपनी छेड़-छाड़से तोड़ते नहीं तबतक उन्हें इन दुर्गम पहाड़ियोंमें कैसे लायँगे ? क्या हमें मैदानमें उतरना होगा जहां हमारे भील, राजपूतोंकी केंद्रित तलवारोंसे इधर-उधर बिखर जायेंगे और उनके आक्रमणकारी घुड़सवारोंका भी सामना न कर सकेंगे ? लेकिन अगर हमने उनकी राजकुमारीको पकड़ लिया तो वे क्रोधसे अन्धे होकर हमारे तीरोंके सामने अपनी शक्ति क्षीण करनेके लिये हमारे दुर्गोंके आगे दौड़े आयेंगे। तब उन्हें संख्यामें कम और थका हुआ देखकर मैं उचित समयपर छल-बलसे ईडरपर कब्जा कर लूँगा, और भले लडाकू दुनिया मेरे विरुद्ध खड़ी हो जाय, उसे अपने ही कब्जेमें रखूँगा।

संग्राम — भीलोंकी सहायतासे ?

बाप्पा — मैं राजस्थानमें स्वामीहीन, निर्वासित, और भाग्यसे हताश दुःसाहसी राजपूतोंको आमन्त्रण दूंगा। इस तरह एक नये साम्राज्यकी नींव डालनेके लिये फौलादी भुजाएं और साहसप्रिय हृदय हमसे आ मिलेंगे। उनमें संग्राम

जैसे दीर्घ दृष्टिवाले विचक्षण मन और कार्यकुशल वीर पुरुष और पृथ्वीराज जैसे शूरवीर होंगे जो डरको नहीं पहचानते, न ही अपने उड़ान भरते विचारों-के लिये मृत्यु या अविस्मरणीय गौरवके सिवा कोई सीमा स्वीकार करते हैं। यही एक राजपूतका चुनाव है। क्या हम काफी मजबूत नहीं हैं? हमारे पास एक हजार हट्टे-कट्टे भील हैं, जो पहाड़ी युद्धमें प्रवीण, तेज अचूक तीरंदाज हैं और हम खुद उनका नेतृत्व करेंगे जिसमें प्रत्येक हजारोंके समान है। शिव एकलिंग हमारे ऊपर होंगे और हमारे हाथोंमें होगी हमारी नियति और हमारी तलवारें।

संग्राम — काफी है।

(कोदलका प्रवेश)

कोदल — बाप्पा, हमारे भेदिये आ गये हैं। तुम्हारा शिकार जालमें आ चुका है।

बाप्पा — वे कितने हैं कोदल?

कोदल — बस दस बरछैत। नौकरों और स्त्रियोंको निचले रास्तेसे भेजा गया है। चार पालकियां अंगरक्षकोंको साथ-साथ पहाड़ोंसे आ रही हैं। उन्होंने अपने सिर फन्देमें डाल दिये हैं। हम फन्देको जोरसे खींचेंगे बाप्पा, और उनका गला घोंट देंगे।

बाप्पा — क्या उनके लिये बच निकलना सम्भव है?

संग्राम — बाप्पा, वे जिस दर्रेसे लौट सकते हैं उसे एक सौ भील घेरे हुए हैं। मैंने ही उन्हें तैनात किया है।

बाप्पा — संग्राम, उन्हें झरनेके पास घेर लो। कोदल, कोई भूला-भटका बाण भी भूलसे हमारे सुन्दर शिकारको खतरेमें न डालने पाये।

कोदल — बाप्पा, इसके लिये मुझपर विश्वास रखो। हम उनकी बीस पुतलियों-के बीच निशान लगायेंगे फिर भी उनकी आंखकी सफेदीको न छूएंगे। वे दस बरछैत हैं, दस तीर उन्हें सुला देंगे। बादमें जलानेके सिवा और कुछ करनेके लिये न बचेगा। यह न किया तो मैं भील नहीं, कोदल नहीं और बाप्पाका दूध-भाई नहीं।

बाप्पा — शक्तिका कम-से-कम खर्च करना। इस आसान-सी गिरफ्तारीके लिये मैं एक भी आदमी नहीं खोना चाहता। संग्राम, तुम सेनानायक हो।

(संग्राम और कोदल जाते हैं)

पृथ्वीराज, मेरे मित्र, आजसे हमारी महानताकी ओर कड़ी चढ़ाई शुरू हो रही है।

(जाता है)

दृश्य ४

दोनगढ़के पास जंगल। झरनेके पास।
कमल कुमारी, कुमुद कुमारी, निर्मल और ईशानीकी
पालकियोंके साथ-साथ सैनिक और उनके नायकका प्रवेश।

ईशानी –– (अपनी पालकीमेंसे) पालकियां उतार दो। नायक, इस स्थानको खाली कर दो। राजकुमारी इस कलकल करते झरनेके पास थोड़ी देर विश्राम करेगी और दोनगढ़की हवासे अपने हृदयको ताजा करेगी।

(नायक सैनिकों और कहारोंके साथ चला जाता है। लड़कियां पालकीमेंसे निकल आती हैं)

कमलकुमारी –– कुमुद, इसी झरनेके पास लेटे-लेटे हमें वीणापर अपने पूर्वजोंकी वीरगाथा सुनाना या फिर चुपचाप उस झरनेका निरन्तर मृदु गर्जन सुनना अच्छा लगता था। उस मोड़के बाद हम दोनगढ़ देखेंगे,––दोनगढ़, हमारे बचपनका आनन्द, कुमुद।

कुमुद कुमारी –– कमल, पहलेकी तरह ही हमारा पेड़ एकदम लाल हो चुका है, मानो उसपर किरमिजी आगकी वर्षा हुई हो।

कमल कुमारी –– आहा, वसन्त आ गया और यह दोनगढ़ है।

ईशानी –– लड़कियो, हमें बहुत देर न लगानी चाहिये। हमारा सीथियन हमें न पाकर शायद पहाड़ोंकी ओर चल पड़े।

निर्मल कुमारी –– थैलीसे गालवाला? ओह, उसने अभीतक नौकरानी मीराको अपनी जीनपर चढ़ा लिया होगा और गलेमें हार डालकर उसे कश्मीरकी रानी बना चुका होगा। काश, मैं वधूकी सहेली बननेके लिये वहां होती।

कमल कुमारी –– वह तुम्हारी अच्छी सूझ थी, निर्मल। लेकिन वह लड़की उस उन्नतिके लायक थी। उसने बड़ी तन्मयतासे मेरी सेवा की है। एक राजपूत राजकुमारीकी सेवाके लिये सीथियन सिंहासनका पारितोषिक बहुत अधिक नहीं है।

कुमुद कुमारी –– पहाड़ी तुम्हारी मीठी हंसीको आनन्दसे गुंजाते हुए कैसे लौटा रही है, मानो तुमसे प्रेम करनेके लिये उसमें एक आत्मा हो।

कमल कुमारी — पहाड़ोंमें मुड़कर हमने उन्हें अच्छा चकमा दिया। अफसोस ! मेरे राजपिता इस प्रवासमें अपनी छोटी साम्राज्ञीका अभिनन्दन न कर पायेंगे और न मेरी मातुश्री अपने फूलको किसी राजपूत मुकुटपर सूंघ सकेंगी। उन्हें अपनी पहले जैसी सीधी-सादी कमल कुमारीसे ही काम चलाना पड़ेगा। (स्वगत) और जबतक उसका हृदय अपना साथी न ढूँढ़ ले वह ऐसी ही रहेगी।

निर्मल कुमारी — मैं कहती हूँ कमल, यह पाप है, मैं सोचते ही पागल हो जाती हूँ। मैं यहां अपना हरण करवाने आयी थी, जंगलमें आरामसे टहलनेके लिये नहीं। फिर भी मुझे अपने भील लुटेरेसे, उलझे केशोंवाले पहाड़ी कृष्णसे आशा है। अवश्य ही, वह इतना नीरस न होगा कि अपने प्रदेशोंसे जाते हुए ऐसे मधुर शिकार-को अछूता छोड़ दे।

कमल कुमारी — मैं खुशीसे उस नौजवानसे आंखें मिलाना और बातचीत करना चाहूँगी जो अपने तीरन्दाज भीलोंको राजपूत तलवारोंसे भिड़ाता है। वह कम-से-क्रम पुरुष तो होगा। सीथियन तोरमाणकी तरह नहीं।

ईशानी — वह धृष्ट जंगली ! आखिर तो वह फांसी पायेगा ही। अगर मैं पुरुष होती तो इन बर्रोंको धुंआ देकर छत्तोंसे बाहर निकालती और हवामें भिन-भिनाते हुओंको लोहेके दस्तानोंमें पकड़-पकड़कर मसल डालती।

(बाहरसे चिल्लाहट — बाप्पा ! बाप्पा ! हो शिव एकलिंग !)

सेनापति — (अन्दरसे चिल्लाते हैं) राजपूतों, भाला बरदारों, भाला बरदारों ! कहारों, पालकीकी ओर !

कमल कुमारी — बाप्पा !

निर्मल कुमारी — (हंसती हुई) कमल, बाप्पाके सामने खड़े होकर बात करनेका मौका अब मिलेगा।

कुमुद कुमारी — ओह, चलो भाग चलें ! चारों ओरसे हमारी ओर उमड़े आ रहे हैं।

ईशानी — डटी रहो ! हमारे वीर सेनानी जल्दी ही इन साहसिक पहाड़ी लोमड़ि-योंको उनकी मांदमें छेद देंगे। बहादुरीसे डटी रहो ! भागकर हम जोखिमके मुँहमें जा गिरेंगी।

कमल कुमारी — (चट्टानपर चढ़कर) हे भगवान् ! हथियार चलानेसे पहले ही हमारे राजपूत मात हो गये। अब क्या होगा ईशानी ? कैदी बननेके लिये हाथ बांधे बैठी रहें ?

ईशानी — अपनी पालकीमें जल्दी बैठ जाओ। कहार इस ओर दौड़ रहे हैं। तराई-

के रास्तेकी ओर भागो ! शायद इच्छलगढ़की तलवारें वहां पहरा देने लगी हों।

कमल कुमारी — मैं अकेली भाग जाऊं ?

ईशानी — आह, ईडरके गौरवको जंगली व्यवहारके अपमानसे बचा लो।

(भागते हुए कहार आते हैं)

रुको ! भाइयो, अपनी राजकुमारीको लेकर तराईकी राह लो।

पहला कहार — तुम्हारी राजकुमारीके मुँहमें आग लगे ! हर एक अपनी-अपनी जान बचाये।

(अनेक कहारोंके साथ जाता है)

दूसरा कहार — ठहरो ! रुक जाओ ! हमने उनका नमक खाया है, क्या हम उसकी कीमत न चुकायेंगे ? हां, अपना रक्त देकर भी। अगर पहले ही हमारे टुकड़े न कर दिये गये तो हम चारों राजकुमारियोंको ले जायेंगे। देवी ! चलो पालकीमें।

निर्मल कुमारी — जल्दी कर, कमल ! क्या तू उलझे बालोंसे बकवास करनेके लिये ललचा रही है ?

(कमल पालकीमें बैठती है)

कुमुद कुमारी — हमारा क्या होगा ?

निर्मल कुमारी — हम भीलोंकी घरवाली बनेंगी। आखिर इससे तो सीथियन सिंहासन ज्यादा अच्छा था।

ईशानी — अब भी हमारे पास सहायताके लिये अपने हथियार मौजूद हैं। कुमुद, इतनी पीली न पड़।

निर्मल कुमारी — देख, देख, ईशानी। हमारे पिछाड़ी भील कूदकर आ रहे हैं।

ईशानी — जल्दी, कहार, कहार।

निर्मल कुमारी — अब बहुत देर हो चुकी। राजकुमारी पकड़ी गयी।

(कोदल और भीलोंका प्रवेश)

कोदल — जो खोपड़ी तीरसे छिदाना चाहता हो वही पैर हिलाये। औरतो, तुम मेरे भाई बाप्पाकी कैदी हो। हमें उसकी रसोईमें कुछ राजपूत गोलियोंकी जरूरत है। उन्हें पकड़ो, मेरे बच्चो, और बांध लो।

ईशानी — जो पास आये उसपर छुरा चला देना। इन मिट्टीके लौंदोंको अपने राजपूत शरीरको छूने न देना।

कोदल — राजपूतनी, मुँह बन्द रख, वरना एक तीरसे तेरी जीभको तालुपर जड़

दूंगा। उनके खंजर हाथसे गिरा दो।

(निर्मलकी कलाईपर हाथ रखता है। संग्रामका प्रवेश)

निर्मल कुमारी —— दूर जंगली ! मैं जीभ छेदनेवालेको पति नहीं बनाऊंगी।

संग्राम —— उसे छोड़ दे, कोदल। राजपूत कन्याको अपने भील हाथ मत लगा। ईडरकी राजकुमारी, किसी अत्याचारकी अपेक्षा न कर। जंगली पहाड़ ही हमारा डेरा है और इस बनैली भूमिकी तरह हमारा रूप और आचरण भी खुरदरा है, फिर भी हमारे अन्दर शिष्टाचारकी झलक है।

निर्मल कुमारी —— मैं माने लेती हूँ। अगर तुम इस घुड़दौड़के मुख्य घुड़सवार हो तो जीतनेवाले कोई ऐरे-गैरे न होंगे।

कोदल —— तू राजपूत है इसलिये मुझपर हुकुम चलायेगा ? मेरी सुनो, भीलो ! मुर्गियोंकी तरह इन रापूतनियोंके हाथ-पांव बांध लो। संग्रामकी बात मत सुनो।

संग्राम —— गद्दार ! (तलवार खींचता है)

ईशानी —— (जल्दीसे कहारोंके पास जाकर) जबतक वे झगड़ें तबतक चुपचाप खिसक चलो। दोड़ो, भागो ! राजकुमारीको बचाओ !

दूसरा कहार —— हम अपने बूते पूरी कोशिश करेंगे। चुपचाप, भाइयो, जल्दी।

कोदल —— राजपूत, मैं तुम्हारी तलवारके आगे नहीं हिचकिचाता। लो मेरे तीरोंका मजा चखो।

(पालकीमें कमलको लिये कहार चले जाते हैं। दूसरी ओरसे बाप्पा और पृथ्वीराजका प्रवेश)

बाप्पा —— क्यों, क्या हुआ कोदल ?

कोदल —— अरे, बाप्पा, ये तुम्हारी नयी गोलियां ठिकाने नहीं आतीं। बड़े रौबसे बोलती हैं। फिर भी संग्राम मुझे उन्ह सभ्यता नहीं सिखाने देता। शायद वे उसकी चाची या मौसी लगती हैं।

बाप्पा —— कोदल, वें आज्ञा मानेंगी। उन्हें मेरे हवाले कर दो। भाई, याद रखो, संग्राम तुम्हारा नायक है। क्या, तुम, सैनिक होकर अनुशासन तोड़ोगे।

कोदल —— बाप्पा, मैं तुम्हारा सैनिक हूँ। संग्राम, तुम्हें अपनी राजपूतनियां मिल जायेंगी। राजपूत, मैं सैनिक हूँ और अपना कर्तव्य जानता हूँ।

कुमुद कुमारी —— क्या यही वह भील है ? भोंड़ा, अनगढ़ लुटेरा ? लेकिन उसकी चाल-ढाल तो राजसी है। वह जरूर राजपूत है और वह भी कुलीन घरानेका।

बाप्पा —— तुममेंसे ईडरकी राजकुमारी कौन-सी है। वह मेरे सामने आये।

ईशानी —— लुटेरे, तुम ऐसे कौन हो जो इतने गर्वसे बोलते हो मानो एक राजपूत राजकुमारी तुम्हारी गोली हो।

बाप्पा —— मैं कोई भी क्यों न होऊं, तुम लोग मेरे हाथमें हो, मेरी लूटका माल और कैदी। बताओ, राजकुमारी कौन-सी है ?

कुमुद कुमारी —— वह तुम्हारे चंगुलके बाहर और तराईके रास्तेपर प्रायः सही सलामत है, नायक।

ईशानी —— कुमुद तूने अपनी बहनको अपनी मूर्खतासे धोखा दिया है और सबसे अधम शर्ममें फंसा दिया है।

कुमुद कुमारी —— कम-से-कम मैं भी उसमें हिस्सा बटाऊंगी।

(जाती है)

बाप्पा —— ओ, हां, ये लड़कियां तीन ही हैं। कोदल, तुमने कहा था कि रास्तेपर चार पालकियां थीं।

कोदल —— संग्राम, मेरे पेटमें अपनी तलवार घुमा दे। जब मैं तेरे साथ तू तू मैं मैं कर रहा था तब सबसे अच्छा शिकार सिरपर पांव रखकर भाग निकला।

बाप्पा —— नहीं सुधार लो,——भगोड़ेको रास्तेमें ही पकड़ लो।

(कोदल भीलोंके साथ जाता है)

दूसरी भी भाग खड़ी हुई ? खैर, वह पैदल है। संग्राम और पृथ्वीराज, इन सुन्दर कैदियोंको जेलमें ले जाओ। मैं जाकर भगोड़ोंको पकड़ लाऊंगा।

ईशानी —— पहाड़ी लुटेरे, जबतक मैं बीचमें खड़ी हूँ तबतक वे तेरी नहीं हैं।

पृथ्वीराज —— ओह, यह है राजपूत वीरता।

बाप्पा —— पागल लड़की, तूफानी हवाका सामना कपोतके सफेद पंखोंसे करेगी ?

(वह जाने लगता है, ईशानी अपनी कटारसे बाप्पापर वार करती हैं, बाप्पा उसकी कलाई पकड़कर एक ओर कर देता है और चला जाता है)

पृथ्वीराज —— कुमारी, तुम बहादुर लेकिन जिद्दी हो। तुम्हारे भाग्यने जिन लोगोंपर दया की है वे बर्बर नहीं, राजपूत रक्त और रीति-रिवाजवाले पुरुष हैं। मुझे अनुमति है ? (उसकी कलाईपर हाथ रखता है)

ईशानी —— (खिन्नतासे) लगता है तुम लोग इन पहाड़ोंमें पूछनेसे पहले ही मान लेते हो। (कटार फेंकती है) जा, बेकार सहायक।

पृथ्वीराज —— बिलकुल बेकार, कुमारी। जब सहायताकी जरूरत हो मेरी तलवारसे मांगिये।

ईशानी —— तुम बड़े शिष्ट डाकूका स्वांग रचते हो। दुष्टोंकी शिष्टताओंसे बचनेके

लिये मुझे किसी सहायताकी जरूरत न होगी।

पृथ्वीराज —— (उसे उठाते हुए) इतना आसान नहीं। क्या मुझे सिखाना पड़ेगा कि तुम कैदी हो? चलो, थोड़ा धीरज धरो। तुम कभी आजकी इस मधुर जबरदस्तीके लिये खुश होगी।

(उसे बाहर ले जाता है)

संग्राम —— क्या हमें भी इसी क्रममें जाना होगा?

निर्मल कुमारी —— आपकी अनुमति हो तो, ना। मेरा भार शायद दो मन या उसके आसपास होगा।

संग्राम —— मैं आसानीसे विश्वास नहीं कर सकता। मुझे वजन देखने दोगी।

निर्मल कुमारी —— मुझे डर लगता है कि तुम गलत तराजू बने रहोगे; इसलिये अगर तुम ऊबड़-खाबड़ स्थानपर मेरी सहायता करोगे तो मैं चलनेको तैयार हूँ। ऐसा लगता है कि आखिर तुम कृष्ण नहीं हो।

संग्राम —— तो क्या हुआ, मुझे भाई बलराम ही मान लो। क्या तुम्हारा नाम रेवती नहीं है?

निर्मल कुमारी —— प्रणय-याचनाके लिये अभी बहुत जल्दी है। मैं निश्चित रूपसे शामतक हां, ना न कहूँगी। चलो, बलराम! मैं पीछे चलती हूँ।

(जाते हैं)

दृश्य ५

दोनगढ़के पासका जंगल

कमल कुमारीको पालकीमें लिये कहार आते हैं

दूसरा कहार —— हिम्मत, भाइयो, हिम्मत! हम प्रायः जंगलसे बाहर हो गये।

(सामनेकी भाड़ीसे कोदल कूदकर सामने आता है)

कोदल —— लेकिन हो-हो करनेके लिये ज्यादा जल्दी ही है। रुको, मैदानके मेंढकों, वरना तुम अपनी आखिरी टर्टराहट टर्रा लो।

दूसरा कहार —— पालकी उतार दो; हम पकड़े गये। भीलोंके सम्राट्, हमपर दया करो।

कोदल —— दुष्टो, चुपचाप खड़े रहो। सबसे पहले भगोड़ी राजपूतनीको उसके कुत्ता-

घरसे निकालूँ।

(जैसे ही वह पालकीके पास जाता है, एक कहार उसपर अचानक वार करता है और उसके तीर-कमान पहाड़के नीचे फेंक देता है।)

दूसरा कहार —— जल्दी करो ! जबतक वह अचेत है, हम भाग निकलें।

(बाप्पा और कुमुदका प्रवेव। पीछे-पीछे भील आते हैं)

बाप्पा —— तुम्हारी बहन दर्रेको पार न कर सकेगी, वह घिरा हुआ है और वहां लोग घातमें छिपे बैठे हैं। हे, इधर, रुक जाओ ! पालकी नीचे उतारो। अकलके मारे मूर्खो, अपनी मौत मत बुलाओ।

(भील आकर कहारोंको घेर लेते हैं)

यह कौन ? कोदल पड़ा है ? कहीं चोट आयी ?

कोदल —— (उठता हुआ) बस अचेत हो गया था, बाप्पा। पहाड़ी जमीन मेरे सिरसे कुछ ज्यादा ही कठोर थी। मैदानके मेंढक, अच्छी हाथकी सफाई दिखायी। ला, यार हाथ दे।

बाप्पा —— इन आदमियोंको कैदी बना लो और सही सलामत रखो। अपने आदमियों-को हटाओ और कोदल, रास्तेकी रखवाली करना, और बच निकलनेके सब मार्ग बन्द कर देना। (कोदल और भील कहारोंको लेकर जाते हैं) राज-कुमारी, अपनी बहनको पालकीसे बाहर निकालो।

कुमुद कुमारी —— कमल, कमल। भाग्यकी कैदसे निकली हुई प्यारी भगोड़ी, तुम पकड़ी गयी। बाहर आओ।

कमल कुमारी —— यह कैसे हुआ ?

कुमुद कुमारी —— मैंने उन्हें तुम्हारे भागनेकी बात बता दी थी। मुझे एक भीलसे विवाह करनेके लिये अकेला छोड़ दोगी। अपना समझौता तोड़ोगी ? मैं तुम्हें फिरसे दासतामें घसीट लायी हूँ।

कमल कुमारी —— ना, अपने बन्दी बनानेवालेको देखने तो दे मुझे। क्योंकि मेरी कुमुद, जब तू इस तरह मुस्कुरा रही है तो अवश्य ही मैं दुर्भाग्यके चंगुलसे निकल गयी हूँ। (पालकीसे निकलते हुए)

प्यारी, पीछे हट। चल, वह पहाड़ी चोर कहां है जो राजाओंसे युद्ध करता है और ईडरकी राजकुमारियोंपर हाथ डालता है मानो उसका धड़ अमर हो और उसे फांसी लग ही न सकती हो ?

बाप्पा —— (आगे बढ़कर) मैं ही वह आदमी हूँ, डाकू बाप्पा।

कमल कुमारी —— यह बाप्पा ! यही है वह भील ?

(एक-दूसरेकी ओर ताकते हैं)

(मुस्कराती हुई) क्यों कुमुद, आखिर यह कृष्ण ही था। लुटेरोंके राजा, मैं हूँ ईडरकी राजकुमारी कमल कुमारी। तुमने मुझे किसलिये चाहा था ?

बाप्पा —— ओ तेजस्वी कुमारी, तुम्हें कौन न चाहेगा ? तुम राजस्थानका गुलाब और मैं तुम्हें अपने मुकुटमें लगाऊंगा।

कमल कुमारी —— मेरे बारेमें ऐसी ही भविष्यवाणी थी। लेकिन, चोरोंका राजा, गुलाबोंमें कांटे होते हैं और देखो, मेरे पास तलवार है।

बाप्पा —— (मुस्कराता हुआ) तुम्हारा ख्याल है कि यह खिलौना तुम्हें मुझसे बचा सकेगा ?

कमल कुमारी —— अपनी पूरी कोशिश करेगा। फिर भी तुमने पकड़ा तो तुम्हारे लिये संकट होगा। अधिकारमें रखनेके लिये मैं खतरनाक प्राणी हूँ।

बाप्पा —— संकट अगर तुम्हारे रूपमें आये तो मैं दुलहिनकी तरह उसका आलिंगन करूंगा।

कमल कुमारी —— कसम खाती हूँ, तुमपर दया आ रही है। तुम झपट तो रहे हो, लेकिन यह नहीं जानते कि किसपर। खैर, जाने दो, अगर तुम्हें एक कोमल सुशील दासी चाहिये तो यह रही मेरी बहन, कुमुद, अनुपम खाना पका सकती है। उसे ले लो और मुझे दोनगढ़की ओर बढ़ने दो। युवक, तुम्हें इस कदमपर पछताना पड़ेगा।

कुमुद कुमारी —— उसकी बातोंमें मत आना। वही द्रौपदी है और जो उसे प्राप्त करेगा वही पश्चिमका सम्राट् होगा।

बाप्पा —— ना, ना, हे ईडरके पुष्पो, तुम एक ही डण्डीपर खिले दो प्यारे जुड़वां गुलाब हो और मैं दोनोंको चुनूँगा।

कमल कुमारी —— पहाड़ी, तेरे आदमियोंने मुझे क्यों घेरा था ? तुमने क्या आशा की थी ?

बाप्पा —— शुरूमें एक नीति भर थी और साथ ही कुछ तुम्हें छुड़ानेके लिये मिलनेवाले रक्षाशुल्ककी इच्छा। अब मैंने तुम्हें देख लिया है और मैं तुम्हें कसकर पकड़े रखूँगा। तुम्हें किसी मूल्यपर नहीं छोड़ा जा सकता।

कमल कुमारी —— महाशय, जबतक लड़कर मुझे हरा नहीं देते, तबतक तुम मुझे प्राप्त न कर सकोगे। मैं यूँ ही सस्तेमें न मिलूँगी। भील कुमार, मैं बहुत दबंग हूँ और युद्ध कर सकती हूँ।

बाप्पा —— अद्भुत लड़की, तू लड़ सकेगी और आसानीसे जीत जायगी अगर तू अपनी

घरसे निकालूँ।

(जैसे ही वह पालकीके पास जाता है, एक कहार उसपर अचानक वार करता है और उसके तीर-कमान पहाड़के नीचे फेंक देता है।)

दूसरा कहार — जल्दी करो ! जबतक वह अचेत है, हम भाग निकलें।

(बाप्पा और कुमुदका प्रवेव। पीछे-पीछे भील आते हैं)

बाप्पा — तुम्हारी बहन दर्रेको पार न कर सकेगी, वह घिरा हुआ है और वहां लोग घातमें छिपे बैठे हैं। हे, इधर, रुक जाओ ! पालकी नीचे उतारो। अकलके मारे मूर्खो, अपनी मौत मत बुलाओ।

(भील आकर कहारोंको घेर लेते हैं)

यह कौन ? कोदल पड़ा है ? कहीं चोट आयी ?

कोदल — (उठता हुआ) बस अचेत हो गया था, बाप्पा। पहाड़ी जमीन मेरे सिरसे कुछ ज्यादा ही कठोर थी। मैदानके मेंढक, अच्छी हाथकी सफाई दिखायी। ला, यार हाथ दे।

बाप्पा — इन आदमियोंको कैदी बना लो और सही सलामत रखो। अपने आदमियों-को हटाओ और कोदल, रास्तेकी रखवाली करना, और बच निकलनेके सब मार्ग बन्द कर देना। (कोदल और भील कहारोंको लेकर जाते हैं) राज-कुमारी, अपनी बहनको पालकीसे बाहर निकालो।

कुमुद कुमारी — कमल, कमल। भाग्यकी कैदसे निकली हुई प्यारी भगोड़ी, तुम पकड़ी गयी। बाहर आओ।

कमल कुमारी — यह कैसे हुआ ?

कुमुद कुमारी — मैंने उन्हें तुम्हारे भागनेकी बात बता दी थी। मुझे एक भीलसे विवाह करनेके लिये अकेला छोड़ दोगी। अपना समझौता तोड़ोगी ? मैं तुम्हें फिरसे दासतामें घसीट लायी हूँ।

कमल कुमारी — ना, अपने बन्दी बनानेवालेको देखने तो दे मुझे। क्योंकि मेरी कुमुद, जब तू इस तरह मुस्कुरा रही है तो अवश्य ही मैं दुर्भाग्यके चंगुलसे निकल गयी हूँ। (पालकीसे निकलते हुए)

प्यारी, पीछे हट। चल, वह पहाड़ी चोर कहां है जो राजाओंसे युद्ध करता है और ईडरकी राजकुमारियोंपर हाथ डालता है मानो उसका धड़ अमर हो और उसे फांसी लग ही न सकती हो ?

बाप्पा — (आगे बढ़कर) मैं ही वह आदमी हूँ, डाकू बाप्पा।

कमल कुमारी — यह बाप्पा ! यही है वह भील ?

(एक-दूसरेकी ओर ताकते हैं)

(मुस्कराती हुई) क्यों कुमुद, आखिर यह कृष्ण ही था। लुटेरोंके राजा, मैं हूँ ईडरकी राजकुमारी कमल कुमारी। तुमने मुझे किसलिये चाहा था?

बाप्पा -- ओ तेजस्वी कुमारी, तुम्हें कौन न चाहेगा? तुम राजस्थानका गुलाब और मैं तुम्हें अपने मुकुटमें लगाऊंगा।

कमल कुमारी -- मेरे बारेमें ऐसी ही भविष्यवाणी थी। लेकिन, चोरोंका राजा, गुलाबोंमें कांटे होते हैं और देखो, मेरे पास तलवार है।

बाप्पा -- (मुस्कराता हुआ) तुम्हारा ख्याल है कि यह खिलौना तुम्हें मुझसे बचा सकेगा?

कमल कुमारी -- अपनी पूरी कोशिश करेगा। फिर भी तुमने पकड़ा तो तुम्हारे लिये संकट होगा। अधिकारमें रखनेके लिये मैं खतरनाक प्राणी हूँ।

बाप्पा -- संकट अगर तुम्हारे रूपमें आये तो मैं दुलहिनकी तरह उसका आलिंगन करूंगा।

कमल कुमारी -- कसम खाती हूँ, तुमपर दया आ रही है। तुम झपट तो रहे हो, लेकिन यह नहीं जानते कि किसपर। खैर, जाने दो, अगर तुम्हें एक कोमल सुशील दासी चाहिये तो यह रही मेरी बहन, कुमुद, अनुपम खाना पका सकती है। उसे ले लो और मुझे दोनगढ़की ओर बढ़ने दो। युवक, तुम्हें इस कदमपर पछताना पड़ेगा।

कुमुद कुमारी -- उसकी बातोंमें मत आना। वही द्रोपदी है और जो उसे प्राप्त करेगा वही पश्चिमका सम्राट् होगा।

बाप्पा -- ना, ना, हे ईडरके पुष्पो, तुम एक ही डण्डीपर खिले दो प्यारे जुड़वां गुलाब हो और मैं दोनोंको चुनूँगा।

कमल कुमारी -- पहाड़ी, तेरे आदमियोंने मुझे क्यों घेरा था? तुमने क्या आशा की थी?

बाप्पा -- शुरूमें एक नीति भर थी और साथ ही कुछ तुम्हें छुड़ानेके लिये मिलनेवाले रक्षाशुल्ककी इच्छा। अब मैंने तुम्हें देख लिया है और मैं तुम्हें कसकर पकड़े रखूँगा। तुम्हें किसी मूल्यपर नहीं छोड़ा जा सकता।

कमल कुमारी -- महाशय, जबतक लड़कर मुझे हरा नहीं देते, तबतक तुम मुझे प्राप्त न कर सकोगे। मैं यूँ ही सस्तेमें न मिलूँगी। भील कुमार, मैं बहुत दबंग हूँ और युद्ध कर सकती हूँ।

बाप्पा -- अद्भुत लड़की, तू लड़ सकेगी और आसानीसे जीत जायगी अगर तू अपनी

मृदु और चमकती आंखोंसे मुझे इतना चौंधियां दे कि मैं अपना बचाव भी न कर सकूँ।

कमल अमारी —— आओ, दो-दो तलवारें हो जायें। सावधान!

बाप्पा —— तो तू इस सुहावने पागलपनका आग्रह करती ही रहेगी?

कमल कुमारी —— ठहरो, रुक जाओ! मैं बिना शर्त्तके न लड़ूँगी। भील, जब मैं मैं तुम्हें अच्छी तरह पीट लूँ तो मेरे कैदी बनकर अपने-आपको मेरे हवाले करोगे और मेरी दासियोंको छोड़ दोगे?

बाप्पा —— अगर मैं जीतूँ तो तुम, ईडरकी राजकुमारी, अपना मधुर शरीर पूरी तरह मेरी भुजाओंमें सौंप दोगी?

कमल कुमारी —— ले सको तो ले लो।

बाप्पा —— तो मैं यूँ लेता हूँ (उसे निहत्था कर देता है) गुलाब, तेरा कांटा कहां गया? अब तो सचमुच समर्पण करना होगा।

कमल कुमारी —— धोखा! बेईमानी! मेरी तलवार छीन लेना न्यायसंगत न था। तुम इसे युद्ध कहते हो? मैं समर्पण न करूंगी।

बाप्पा —— तुम्हारे सामने और कोई चारा नहीं है। (उसे पकड़ लेता है)

कमल कुमारी —— मुझे ठीक ढंगसे नहीं जीता। धत्! यह सिर्फ लूटमार है। मैं न मानूँगी।

बाप्पा —— कुमारी, हाय, इसी क्षणके लिये तुम्हारा लावण्य पैदा हुआ था।

कमल कुमारी —— (मन्द स्वरमें) मेरे साथ क्या करोगे?

बाप्पा —— ओ मेरे गौरवमय शिकार, ईडरकी उज्जवल हिरनी! मैं एक भूखा शेर, तुझे बड़े पहाड़ोंमें छिपी हुई अपनी मांदमें ले जाऊंगा जहां तुझे बचानेके लिये कोई भी न आ पायेगा।

कुमुद कुमारी —— कमल, जवान शेरके साथ खेलकर उसे खिझा दोगी? अब तुम उसके भारी केसरके नीचे दबी हुई, उसके विशाल और गेंहुए वक्षके नीचे कांपती हुई चुपचाप पड़ी हो।

बाप्पा —— राजकुमारी......

कुमुद कुमारी —— क्या मैं दोनगढ़का रास्ता नाप सकती हूँ?

बाप्पा —— नहीं, तुम नहीं जा सकती। मेरे पीछे चलो। मेरा हाथ अच्छी तरह पकड़े रहो और, राजकुमारी, सीधे और हंफानेवाले स्थानोंपर अपना हल्का-फुलका भार मुझपर डालते समय हिचकिचाना मत क्योंकि हमारे गंवारू घरोंतक पहुँचने-के लिये बड़ी सीधी और ऊबड़-खाबड़ चढ़ाई है। कुमुद, अपनी हरी-भरी काराकी

ऊंचाईसे उतरना तुम्हारे छोटे पांवोंके लिये असम्भव है। वहां वसन्त ऋतु तुम्हें चारों ओरसे फूलोंसे घेर लेगी और जब भागना चाहोगी तो उसकी खिलती लताएं तुम्हारे सुकुमार अंगोंमें जंजीर बनकर सुकुमारतासे तुम्हें रोकेंगी।

कुमुद कुमारी –– कमल, कल वसन्तोत्सव है।

(जाते हैं)

अंक २

दृश्य १

दोनगढ़के पासका जंगल

जंगलमें बाप्पा, संग्राम, भीलोंसे घिरे सेनानायक और राजपूत सिपाही

बाप्पा —— सोचदेखो नायक। संग्राम, कहारोंको छुड़वा दो। लेकिन पहले इन नामर्दोंकी अच्छीतरह मरम्मत करवाओ जिन्होंने अपनी मालकिनकी आनसे अपनी जानको ज्यादा मूल्यवान् समझा। उन चार वफादार लोगोंको सोनेकी मोहरें दो और उन्हें एक खरीतेके साथ रवाना कर दो। ईडर नरेशको यह पता लगे कि बाप्पा उनकी चहेती बेटीको जकड़े हुए है और एक लाख मोहरोंका अपर्याप्त डांड पाये बिना उसे न छोड़ेगा। अगर वे इस बातसे नाराज हों तो अपने सैनिकोंसहित यहां आ जायें और राजकुमारीको मेरे हाथोंसे छुड़ा लें। यह बात ऐसे शब्दोंमें कहना कि उन्हें इतनी चोट लगे कि वे क्रोधमें पागल होकर पहाड़ोंपर चढ़ आये।

(संग्राम जाता है)

सैनिक, फिर एक बार सुन लो, अपने कैदियोंकी हत्या करना मेरे स्वभावके विरुद्ध है, मैं एक राजपूत हूँ। तुम्हें यहां पिंजरेमें बन्द सिंहोंकी तरह अपना हृदय खाने दूं तो जगत्को हानि होगी और मुझे कोई फायदा न होगा। अब चुनाव कर लो। या तो मेरा अनुसरण करो या सही सलामत ईडर लौट जाओ।

सेनापति —— युवक नायक, तुम उदार शत्रु हो किन्तु अपने वरदानको बदलो। मैं अपना उत्तरदायित्व निभानेमें लज्जास्पद रूपसे असफल रहा हूँ। अब यही विनती कर सकता हूँ कि मेरी आबरू रखनेके लिये मेरी ही तलवारके द्वारा धोखा देनेवालेसे बदला लिया जाय। मैं जिन्दा ईडर नहीं जा सकता।

बाप्पा —— सिपाही, तुम बहुत ज्यादा कर्तव्यनिष्ठ और धर्मभीरू हो। इन पहाड़ोंमें अचानक हमलेके द्वारा किसी सतर्कसे सतर्क सेनापतिका पकड़ा जाना भी लज्जाजनक नहीं माना जा सकता। राजपूत, अगर ईडर महाराज तुम्हारा स्वागत न करें तो मेरे भाग्यका अनुसरण करो। तुम जिस नरेशकी सेवा करते हो

मैं भी उन्हींके जैसा कुलीन हूँ। और जो बाप्पाके भाग्य-नक्षत्रके साथ लगा रहता है वह महाराजाओंसे अधिक भाग्यशाली हो सकता है।

सेनापति — नायक, मैं अपने पुराने स्वामीके वंशके सिवा, महान् ईडर-नरेशको छोड़कर और किसीको सेवा नहीं करता। (अचानक उत्तेजित होकर) किशोर, तुम्हारी तलवारकी मूठपर यह रत्न कैसा? यह हथियार तुम्हें कहांसे मिला?

बाप्पा — तुम इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हो? यह मेरे पिताकी तलवार है, हालांकि नियतिने मुझसे यह छिपा रखा है कि मेरे पिता कौन थे।

सेनापति — (भावावेशसे) राजकुमार, मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ। मैं तुम्हारा सैनिक हूँ और ये सब लोग तुम्हारे लिये ही जियेंगे और तुम्हारे लिये ही मरेंगे।

एक सैनिक — सेनापति, आप क्या कर रहे हैं?

सेनापति — मैंने गौरवभरी राजपूत नीतिसे कभी मुँह नहीं मोड़ा। मुझपर विश्वास रखो राजपूतो।

सैनिक — आप युद्धमें हमारे नायक थे और हमने आपको हमेशा साहसी, स्वाभिमानी और गौरवपूर्ण पाया। हमारा सन्देह दूर कर दीजिये ताकि हम केवल शत्रुके खूनसे ही रंगी तलवारोंको बेझिझक दूसरोंके काममें ला सकें। और तब हम आप हीका अनुसरण करेंगे।

सेनापति — मैं तुम्हें उचित समय आनेपर प्रमाण दूंगा।

बाप्पा — सैनिक, क्या तुम कुछ ऐसी बात जानते हो जो मुझसे छिपी है?

सेनापति — मौनके लिये मुझे क्षमा करो, नायक। सब बातोंके प्रकाशमें आनेका अपना-अपना समय होता है।

बाप्पा — तो मैं अपने समयकी प्रतीक्षा करूंगा और अपने-आपको कलसे दुगुना महान् मानूँगा। क्योंकि अब तुम्हारे मजबूत हाथ मेरी सेवा करते हैं। चलो, मित्रो, मेरे साथ चलो; बाप्पाकी सेवाके लिये अपनी तलवारोंको और भी गौरवपूर्ण उपयोगके लिये फिरसे उठा लो।

(जाते हैं)

दृश्य २

दोनगढ़की ओर जाता जंगलका रास्ता

तोरमाण, कंक, हुश्क और सीथियन

तोरमाण —— न जाने, अपने भुथरे शूकरदन्तोंसे मृत्युको परेशान करनेकी इन पहाड़ी सूअरोंको क्या सूझी ? पहले तो इस अपमानका बदला इसी ढंगसे लूँगा, बादमें खून-खराबेसे हिसाब चुकाऊंगा।

कंक —— हुं ह ! यह चालाकी तो मेरी बुद्धिसे भी परे थी। कश्मीरके सिंहासनपर एक बांदीको बिठाना ! यह मजाक सफल हो जाता तो सारा एशिया खीसें निपोरता।

तोरमाण —— वे हमें बर्बर मानते हैं और समझते हैं कि ऐसे गंवारू छल-कपट हमारे सीथियन दिमागोंको परेशान करनेके लिये काफी हैं। लेकिन इन अक्लमन्द मसखरोंको ऐसा शर्मिन्दा करूंगा कि वे जबतक जीने पायेंगे अपने हंसोड़े सिरोंको नीचे झुकाये रहेंगे। कंक, तू राजपूतोंकी राजकुमारीसे ब्याह करेगा ?

कंक —— मैं राजपूत हिरणकी टांगका मांस ज्यादा पसन्द करूंगा; उनके पहाड़ोंमें मोटे-ताजे हिरन होते हैं।

तोरमाण —— मैं तुझे ईडर नरेशकी बेटी देता हूँ। जबतक मैं आधे भालाधारियोंको लेकर अपने पहाड़ोंकी ओर कूच करता हूँ, तबतक तू सीथियन तोरमाण बनकर भौंहें चढ़ाता हुआ यहीं घूमता रह और राजकुमारीसे शादी कर लेना।

कंक —— क्या सचमुच ? क्या तुम मुझे साग-भाजी समझते हो और चाहते हो कि मैं राजपूत तरकारीके लिये संवारा जाऊं ? ओह, मैं राजा बनना जरूर चाहूँगा लेकिन सारे जीवनमें बस एक बार अच्छी तरह पेट-पूजाका सुख पानेके लिये। लेकिन एक गंवारू खाली तोंद भी राजपूत भालोंसे भरी शाही तोंदसे ज्यादा सुन्दर है।

तोरमाण —— बेवकूफ मसखरे, वे तुझे कैसे पहचान पायेंगे ? मुझे यहां कोई नहीं जानता, राणा और उनके आदमियोंने तो मेरा स्वागत नहीं किया था।

निःसंशय, उस घमण्डी राजाकी दुमने ईडरमें मेजबान और मेहमानके रूपमें मेरे साथ बैठकर खाना खानेसे अवज्ञा प्रकट की थी; हमारे साथ खानेसे भी उन्हें दाग लग जाता है! इसीलिये इस अनोखे षड्यन्त्रमें यह ठीक हुआ था कि मैं इस मसखरेपनके लिये दिलसासे यहां आऊं। खैर, अब इस बातसे मुझे सहायता ही मिलती है, यद्यपि मैं भयंकर रूपसे इसका बदला लूँगा। यह किया जा सकता है। क्योंकि हमें यहां कोई नहीं पहचानता और तुम मुझसे ज्यादा कीमती कपड़े पहने हुए हो, और तुम्हारे अन्दर जो गंवारूपन है उसे वे सीथिया-की निरी बर्बरता समझेंगे, वे तो सीथियन राजघरानेवालोंको बर्बर और निरा अमानवीय बर्बर मानते हैं। ओह, चलो काम बन जायगा।

कंक — बन जायगा? खैर, तभीतक जबतक मैं अपनी तोंदको अछूता रख सकूँ। यह मजाक मेरे मन मुताबिक है।

तोरमाण — मेरे भी। ये राजपूत अपने-आपको सारी धरतीपर पवित्रताकी एक-मात्र मूर्ति समझते हैं। उनकी लड़कियां आर्य शीलमें इतनी ऊंची हैं कि एक सम्राट्का प्रणय-निवेदन भी, अगर वह राजपूत दूधका नहीं है, अपमान माना जाता है। इस अपमानका बदला लेनेकी आशामें उन्होंने सारे उत्तर देशके राजापर एक नीच कुलकी दासीको थोप दिया था। जब उन्हें पता लगेगा कि उनकी दुलारी कुमुदिनी, जो राजस्थानका गौरव है, जिसे वे इतना महान् समझते थे कि कश्मीरके उच्च राजसिंहासनतक उतरना भी उसके लिये अप-मानजनक था, जब उन्हें पता लगेगा कि वही कश्मीर राज्यके विदूषकके साथ सोती है, बकझक करके चार पैसे कमानेवाले नीच मसखरेके आलिंगनसे कलुषित हो गयी है, उसका दर्प एक मजाककी चीज बन गया है, उसकी पवित्रता कीचड़-में बदल गयी है और वह स्वयं सारी दुनियाके लिये उपहास पात्र बन गयी है; तब वे कैसे आंखें फाड़-फाड़कर देखेंगे, कैसे दांत पीसेंगे, और कैसे शर्मसे पागल हो जायेंगे।

कंक — हुं! यह मजाक सदियोंतक चलेगा।

तोरमाण — तो फिर, शुरू कर दो। अपने ऊपर लादे गये अपमानको हंसी-हंसीमें उड़ा देनेका ढोंग रचो और प्रणय-निवेदन कर दो। अपनी असफल चालाकीसे बंधकर उन्हें अनमने भावसे अनुमति देनी पड़ेगी और यही वांछनीय है। बादमें लज्जा और अपमानका स्वाद हजार गुना कड़ुआ होगा। वे जिद करें तो राज-कुमारीको जबरदस्ती ले लेना, लेकिन लेना जरूर। विश्वास रखो मैं जल्दी ही बदला लेनेके लिये एक सेना साथ लिये आ पहुँचूंगा और जोर-शोरसे हमला

करते हुए ईडरको तबतक घेरे रहूँगा जबतक राजा रानी और राजकुमारीको उसके जलते खण्डहरोंमें सूलीपर न चढ़ा दूँ।

(कई सीथियनोंके साथ जाता है)

कंक — अच्छा तो फिर, मैं कश्मीरका राजा तोरमाण हूँ; याद रखो, शैतानो। या फिर तोरमाण-कंक या राजा कंक-तोरमाण क्यों नहीं? यह ज्यादा भारी भरकम है और जीभको ज्यादा संतोष देता है। फिर भी खाली राजा तोरमाण-की अपनी शान है और सारे कश्मीरकी महिमा उसके पीछे चलती है। हो, गुलाम, हमारी ओर आनेवाली ये आवाजें कैसी हैं? गुप्तचर भेजो और छान-बीन करो। राजा तोरमाण, कश्मीरका प्रतापी पुत्र! मैं इस भूमिकाका अभिनय अच्छी तरह कर सकूँगा। प्रकृतिने मुझे उसके अनुरूप अंग दिये हैं और एक राजोचित तोंद भी दी है।

हुश्क — (आता हुआ) राजा कंक-तोरमाण या राजा-तोरमाण-कंक या सिर्फ तोरमाण, मैं मनुष्योंके पदचाप और शस्त्रोंकी झनझनाहट सुन रहा हूँ। निश्चय ही ईडरकी राजकुमारी अब सब कुछ शान्त समझकर दोनगढ़की ओर जा रही है। उनपर हमला बोलकर राजकुमारीको पकड़ लोगे?

कंक — छिप जाओ, अयोग्य सेनापति, छिपे रहो। युद्धविद्या सीखकर भी तुम्हें घातका उपयोग नहीं मालूम? हम छिप जायेंगे, गुलाम। देखो, अपनी बांस-सी लम्बी नाकको जल्दी बाहर न निकलने देना! उसे ढकने लायक बड़ी-सी शाखा ढूँढ़ लो।

हुश्क — हुंह! हमला करनेके लिये महाराजके कौनसे इशारेकी प्रतीक्षा करें?

कंक — मुझसे इशारेके बारेमें बकवास न करो! तुम्हारे मूढ़ फौजी-दिमाग सूझ-बूझसे कितने शून्य हैं! अगर मैं रास्तेपर कूद पड़ूँ और चीखूँ तो तुम लोग भी कूदते-फांदते मेरे पीछे चले आओ; लेकिन, अगर मैं भागूँ तो तुम भी मेरी दुम पकड़कर पागलोंकी तरह पीछे-पीछे दौड़ोगे। सचमुच, मेरे अन्दर व्यूह रचनाकी विरल शक्ति है। चलो, छिप जाओ!

(वे छिप जाते हैं। इच्छलगढ़के राव, रतन और अन्य राजपूतोंका प्रवेश)

इच्छलगढ़ नरेश — वह मेरे हाथसे निकली या फिर सीथियनने उसे पकड़ लिया है। अगर दूसरी बात हुई है तो मेरा अपमान है।

रतन — हम सवेरेसे रास्ता रोके हुए हैं। दासियां ही सीथियनके हाथ लगी हैं राज-कुमारी तो भाग निकली।

इच्छलगढ़ नरेश — मैं इस बातसे खुश हूँ।

रतन -- तुम अभी और पीछा करोगे ?

इच्छलगढ़ नरेश -- पहले खाली महत्वाकांक्षा ही मुझे उससे प्रणय-निवेदन करनेके लिये लायी थी; अब मेरी इज्जत दांवपर लगी है। मेरा क्षात्र-धर्म किसी हालतमें नहीं सह सकता कि एक राजपूत फूल सीथियनके हाथोंमें पड़े। और मैं साहसिक कार्यके लिये इतने अच्छे आह्वानको अस्वीकार भी नहीं कर सकता। चलो, दोनगढ़की ओर !

रतन -- भाई, वह स्थान मजबूत है और हम घेरा डालनेके लिये सुसज्जित नहीं हैं।

इच्छलगढ़ नरेश -- मैं ऐसे सुरक्षित गढ़से भी राजकुमारीको बाहर निकाल लाऊंगा और इच्छलगढ़में उसे अपने राजमुकुटमें सजाऊंगा ताकि देवता भी उसे ताकते रह जायें।

(कंक रास्तेपर तलवार चमकाता हुआ कूद पड़ता है, उसके पीछे हुश्क और दूसरे सीथियन आते हैं।)

कंक -- हो अमिताभ ! हे कश्मीरके बुद्ध भगवान् !

इच्छलगढ़ नरेश -- सीथियन चढ़ आये ! उठाओ तलवारें !

कंक -- अपने-अपने छुरे रख दो ! कमबख्तो, थर-थर मत कांपो, अपने कांपते घुटनोंको स्थिर करो। मेरे पास नाराज होनेके लिये कारण है, फिर भी मैं दयालु हूँ। तुम मेरी एक सुन्दर संपत्तिको लूटना चाहते थे, खैर, तुम स्वभावसे पहाड़ी लुटेरे हो और यही तुमने सीखा भी है, इसके सिवा तो कुछ जानते ही नहीं। इसीलिये शान्ति। हे तोरमाणके कोपके भयानक अनुचर, अपनी म्यानमें सो जाओ, इन कंकालोंसे अच्छे किसी और शिकारकी प्रतीक्षा करो। राजपूतों, हिम्मत रखो, तुम नहीं मरोगे।

इच्छलगढ़ नरेश -- (मुस्कराते हुए) यह महान् वीर पुरुष कौन हैं ?

कंक -- मैं अति दुर्जेय और पराक्रमी वीर, सीथियन तोरमाण, कश्मीरका राजा हूँ। फिर भी, डरो मत। मैं देखनेमें डरावना जरूर हूँ, लेकिन मुझमें दया-माया है -- सच, पूरी तोंद भरी है।

इच्छलगढ़ नरेश -- तुम राजकुमारीको खोजते थे ? क्या वह तुम्हारी अति पराक्रमी उंगलियोंमेंसे फिसल गयी ?

कंक -- मानो उसने अपने ऊपर मक्खन चुपड़ रक्खा हो। लेकिन मैं अभी-अभी सीधा दोनगढ़ जा रहा हूँ। राजकुमारी और भोज दोनोंकी मांग करूंगा।

इच्छलगढ़ नरेश -- तो चलो, साथ चलें। हम उसे गंवानेमें साथी बन गये। अब फिरसे जीत लेंनमें साथी क्यों न बने ?

कंक —— क्या इतनी आसानीसे उल्लू बन जाऊंगा ? तुम मेरी खोपड़ीका अपमान करोगे ? तुम राजकुमारीको पानेके लिये मेरी पराक्रमी अजेय तलवारका उपयोग करोगे ? तुम सोचते हो जब मैं उस ओर न देख रहा होऊं तो तुम राजकुमारीको चुरा लोगे ?

इच्छलगढ़ नरेश —— दुर्जेय तोरमाणको, पराक्रमी और वीर सीथियनको धोखा देनेकी हिम्मत किसमें है ?

कंक —— अच्छा ! मैं प्रसन्न हूँ, पहाड़ियो, मेरे पीछे-पीछे आओ।

इच्छलगढ़ नरेश —— रतन, इस सीथियनपर निगाह रखनी होगी। मुझे भय है उसकी शेखी भरी मूर्खताके पीछे कोई धूर्तता भरी चाल छिपी है।

कंक —— बजें नरसिंघे ! दोनगढ़की ओर ! कूच करो !

(जाते हैं)

दृश्य ३

पहाड़ीपर बाप्पाकी चारपाई

बाप्पा, सेनानायक, और कुमुद चारपाईको फूलोंसे सजाती हुई।

बाप्पा —— उसने तुम्हें यह पत्र दिया तब वह थी कहां ?

सेनानायक —— एक आनन्दमय पर्वत-देवीकी तरह पहाड़पर अकेली युद्ध के गीत गा रही थी और हवा उसके बिखरे बालों और वस्त्रोंसे जूझ रही थी।

बाप्पा —— उसने कुछ कहा भी था ?

सेनानायक —— उसने मुझे प्रसन्न और मुस्कराती आंखोंसे यह दिया और हंसी, "यह मेरे अभिजात भीलके लिये है, मेरे लुटेरोंके सम्राट् मेरे वनराजके लिये। और ये हैं इन पत्रोंके महान् मालिकोंके लिये।"

कुमुद कुमारी —— पढ़ोगे ?

बाप्पा —— (पढ़ता है) "लुटेरे, मैंने तुम्हारे नायकको पत्र दिये हैं। इन्हें पढ़नेके बाद यथास्थान भेजना न भूलना। मैंने तुम्हारे लिये शिक्षक बुला भेजे हैं जो तुम्हें पीट-पीटकर नम्रता सिखायेंगे, और सिखायेंगे कि एक महिला और राजकुमारीके साथ कैसे व्यवहार किया जाता है........." नायक, तुम्हें कौनसे पत्र दिये हैं ? ये ?

सेनानायक –– प्रतापको, इच्छलगढ़के रावको; ......और एक सीथियन तोरमाणको।

बाप्पा –– उन्हें दे आओ। दोनो लड़ाकू राजा तुम्हें दोनगढ़के पास मिलेंगे। ना, मैं ये पत्र नहीं पढ़ूंगा।

(नायक जाता है)

कुमुद कुमारी –– हां, तो बाकीका पत्र सुनाओ।

बाप्पा –– "डाकू, मैं तुम्हें अपने साहसभरे और जघन्य अपराधोंका हिसाब दिखा दूंगी, यद्यपि मैं इस बातकी आशातक नहीं कर सकती कि उससे तुम्हें शर्म आयेगी। तुमने एक कुलहीन भील और लुटेरे होते हुए एक राजकुमारीपर अपमानजनक हाथ डाला है, तुमने मुझे जबरदस्ती उठाकर अपने दो कौड़ीके संकरे झोंपड़ेमें ला बिठाया है। एक राजकुमारीके शरीरके साथ ऐसा व्यवहार किया है मानो वह आलुओंका बोरा हो। तुमने अपने भोंडे भील हाथोंसे बड़ी दुष्टता और निर्दयताके साथ मेरे सारे गहने उतार लिये, इतने गहने तो तुमने अपने सारे जीवनमें भी न देखे होंगे। और गहने उतारते समय तुमने बड़ी बेरहमीके साथ मुझे बहुत चोटें पहुँचायी हैं हालांकि तुम इससे व्यर्थ ही इन्कार करते हो। अपने झोंपड़ेमें नौकरानियोंके कुख्यात अभावके कारण तुमने (मुझे ईडरकी राजकुमारीको, उसके राजसी हाथोंसे अपने जैसे एक मामूली भीलकी सेवा-टहलके लिये बधित किया है और अब भी करते हो। तुमने जिस तलवार-का उपयोग शायद पहाड़ी सियारसे ज्यादा बहादुर प्राणीपर कभी न किया होगा, उस जंग खायी तलवारको रगड़ते-रगड़ते मेरी उंगलियां सूज गयी हैं। और तुम्हारे लिये अराजसी खाना पकानेके लिये आगपर झुकनेसे मेरा मुँह अभी तक लाल बना हुआ है। और इन सब अपराधोंपर तुर्रा यह, तुमने अपने ऊधमी लुटेरे ढंगसे पूछनेकी तकलीफ उठाये बिना मेरे होंठोंका चुम्बन लिया है और उसे अब भी अपने पास रखे हुए हो। ये सार-के-सारे भीषण दुराचार और प्राणघातक अपराध हैं, फिर भी मैं तुम्हें एक जंगली छोकरा मानकर माफ कर देती, लेकिन अब तुम यह कहनेका साहस करते हो कि मैं, एक राजपूत कुमारी, तुम जैसे भीलसे प्रेम करती हूँ, और तुम्हें मेरे इन्कारकी भी परवाह नहीं है क्यों-कि मैं चाहूँ या न चाहूँ मैं तुम्हारी हो चुकी हूँ, तुम्हारी बन्दिनी और तुम्हारी बांदी। यह असह्य है। इसलिये मैंने अपने वीर प्रणयी इच्छलगढ़नरेश और सीथियनको लिखा है कि वे तेरे भील शरीरसे मेरा बदला ले; मुझे विश्वास है कि अगर तुम सभ्यताके साथ इजाजत दो तो वे बहुत जल्दी तुम्हारे सिरको एक टोकरीमें डालकर ईडर ले जायेंगे। फिर भी चूँकि तुम्हारे अनुचर तुम्हें

जंगलका दण्डनायक और पर्वत-केसरी कहते हैं, इसलिये जरा देखूँ तो तुम सियारसे बड़ी किसी चीजपर कैसे प्रहार करते हो और पहाड़ी हिरनसे बढ़कर और किसी बहादुरका मांस काट सकते हो। लुटेरे, जब तुम सीथियनको एक गेंदकी तरह पहाड़के नीचे लुढ़का दोगे तब अपने दुष्कृत्योंके बावजूद मुझसे शादी कर सकोगे। अगर तुम्हारे अन्दर हिम्मत हो और अगर तुम इच्छलगढ़के चौहानसे भी अधिक पौरुष दिखा सको, जो कि असम्भव है, तो तुम मुझे अपनी दासीतक बना सकोगे और मैं इन्कार न करूंगी। इस बीच तुम मुझे वसन्तकी सप्तमीतक मोहलत दो, तबतक मुझे छूनेका दुःसाहस न करना।

तुम्हारी बन्दिनी
कमल कुमारी"

वाह, कुमुद, यह तो बड़ा डराता धमकाता हुआ सामरिक पत्र है।

कुमुद कुमारी — वह अपना प्रसन्न हृदय ऐसी ही अद्‌भुत कल्पनाओंमेंसे उंडेलती रहती है। मैंने उसका ऐसा सनकीरूप कभी न देखा था। उसकी आत्मा तुम्हारे हाथोंमें जितनी अधिक फंसती जायगी उतनी ही उग्रतासे उसके होंठ तुम्हें झिड़कते जायेंगे।

बाप्पा — क्या तुम बता सकती हो कुमुद कि उसने इन बलवान् वीर योद्धाओंको मुझपर क्यों छोड़ा है ?

कुमुद कुमारी — नारी हृदयको पढ़ा नहीं जा सकता। वह उसके लिये भी भटकते आवेगोंकी और अध-कचरे भावोंके फंदोंकी एक जटिल भूल-भुलैया है जिससे स्त्रीके अपने गुप्त विचार भी अनभिज्ञ होते हैं।

बाप्पा — फिर भी ?

कुमुद कुमारी — उसका आकस्मिक आतुर और जिद्दी प्रणय तुम्हें अद्वितीय प्रमाणित करके अपने उच्छृंखल प्रेमको उचित सिद्ध करेगा। इसीलिये उसने पृथ्वीके वीर युगलको तुम्हारे प्रतिस्पर्धीके रूपमें चुना है।

बाप्पा — चौहान प्रताप, इच्छलगढ़के राव ! उनसे मिल लेना भी सारे जीवनके लिये गौरवकी बात है लेकिन उनके साथ तलवारके दो-दो हाथ करना ! वाह ! राजकुमारीने मेरे हृदयमें झांका है।

कुमुद कुमारी — उसे सात दिनका समय दोगे ?

बाप्पा — सात घंटे भी नहीं — तुनुकमिजाज विद्रोही ! महान् इच्छलगढ़ नरेश यहां गरुड़की तरह उड़ते आयेंगे और मैं उनसे भिड़कर उन्हें पराजित कर दूंगा। कुमुद, कलसे मैं अपने अन्दर एक दैत्यकी शक्तिका अनुभव कर रहा हूँ। मेरा

भाग्य सूर्यकी ओर चढ़ रहा है।

कुमुद कुमारी — बाप्पा, हमारे भाग्य तो वहां पहुँच चुके। दोनगढ़के रास्तेमें ही कल हमारे सूर्यका उदय हुआ था।

(परदा)

दृश्य ४

दोनगढ़के बाहर

इच्छलगढ़ नरेश हाथमें पत्र लिये, सेनानायक रतन

इच्छलगढ़ नरेश — सैनिक, कौन हो तुम ?

नायक — ईडरकी राजकुमारीकी रक्षक-सेनाका नायक, जिसे उनके साथ-ही-साथ भीलोंने पकड़ लिया था। अब उन भीलोंके सरदारकी सेवामें हूँ।

इच्छलगढ़ नरेश — अरे थरथरानेवाले अधम, मृत्युको सामने देख तुमने अपने स्वामी-को छोड़ा और एक जंगलीकी सेवामें जाकर तुमने अपनी राजपूती आनपर बट्टा लगाया है!

नायक — इच्छलगढ़के राव, मेरी आन मेरी अपनी है और उसका उत्तरदायित्व मुझपर है। और उचित समयपर मैं अपनी तलवारकी धारसे तुम्हारे अपमानों-का उत्तर दूंगा। लेकिन इस समय तो मैं केवल एक दूत हूँ।

इच्छलगढ़ नरेश — मैं राजकुमारीके अक्षर पढ़ूँगा (पढ़ता है) "इच्छलगढ़के महाराज, मेरी माताके सगोती, वीर योद्धा, अभिजात राजपूत, इन विशेषणों-के नाते तुम निर्बलकी सहायता करने और पीड़ितोंको बचानेके टेकसे बाधित हो! एक अभिभूत कन्या, ईडरकी राजकुमारी, कमल कुमारी, आपकी वीर भुजाओंसे सहायताकी याचना करती है। वह भील लुटेरोंका शिकार बनी हुई है, उसके अपने लोग उसे नहीं चाहते; अगर आपने बचाया तो, मैं एक राज-कुमारी रहते हुए आपकी दासी बनूँगी वर्ना कैदी होकर बाप्पाकी लौंडी बनूँगी।" जाओ! इस करुण पत्रका सीधा उत्तर पहाड़ियोंमें गूँजता हुआ मेरा रण-नाद देगा। रतन, जल्दी! शस्त्र! शस्त्र! मैं अपने कोपको शेखीभरे शब्दों-में व्यक्त न करूंगा। जबतक वह कोप मेरी लपलपाती तलवारमें नहीं उतरता तबतक मुझे कष्ट होता रहेगा।

रतन —— आपको देरतक प्रतीक्षा न करनी होगी।

(जाता है)

नायक —— मेरे पास सीथियन तोरमाणके लिये भी एक पत्र है।

इच्छलगढ़ नरेश —— इन्हें दे दो, ये वही हैं।

(कंक, हुश्क और सीथियनका प्रवेश)

कंक —— मरेगा नहीं। इस तुच्छ बंजर राजपूतानानेके पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे वह मेरे अन्दरकी खाईको पूरा कर सके। चल हट, दूर हो! मेरे आगे कागज फड़फड़ाता है? राजपूतानामें मेरे कोई लेनदार साहूकार नहीं हैं।

नायक —— मैं समझा नहीं। यह पत्र ईडरकी राजकुमारी, कमल कुमारीने आपके भेजा है।

कंक —— ऐसा है? अच्छा, तो तुम घुटने टेककर इसे मेरे चरणोंमें समर्पित कर सकते हो। मैं इसे पढ़नेकी कृपा करूंगा। (नायक उसके हाथपर फेंक देता है) क्यों, गन्दे, बदमाश! टहलुए! (नायक अपनी तलवारपर हाथ रखता है) नहीं, नहीं, यह तो तमाशा है? हां, मैं पकड़ सकता हूँ, समझ गया हूँ।

(नायक जाता है)

कंक —— (पढ़ता है) "महाराज तोरमाण, कहते हैं कि तुम मेरी कामना करते हो और मेरे लिये काश्मीरसे इतनी दूर, ईडरतक आये हो। कुमार, आपको जरा दूर और आना होगा! लुटेरा बाप्पा, तुमसे आगे निकल गया है और उसने जबरदस्ती मुझे पहाड़ोंमें बन्दी बना लिया है। कुमार, यदि तुम्हें अब भी एक बिचारे शरीरमें स्थित थोड़े-से सौन्दर्यकी चाह है तो यहां आकर युद्ध करो वरना सात दिनके अन्दर-अन्दर मुझे मजबूर होकर अपहरण करनेवालेके आगे झुकना पड़ेगा। अगर तुम मुझे उससे बचा लो तो,——किन्तु मैं तुमसे मोलतोल न न करूंगी, तुम्हारे अभिजात राजसी स्वभावपर विश्वास रखूँगी कि तुम किसी पुरस्कारकी आशाके बिना ही एक मुसीबतकी मारी कन्याको बचाओगे।

कमल कुमारी"

ना, ना, ना, तेरे चारों ओर बहुत ज्यादा मक्खन लगा है। पुरस्कारकी कोई आशा नहीं! क्या! मैं गुस्सेसे पागल गेंडेकी तरह लड़ूँगा, अपनी वीरता-से पहाड़ोंको चौंका दूंगा, अपने राजसी हाथोंसे तीन हजार भीलोंको उतने ही सूअरोंकी तरह बींध डालूँगा, और यह सब सवेरे उग्र कहरतें किस लिये? अपनी भूखोंको तेज करनेके लिये? मेरी आंतोंमें जितगा पाचक रस समा सकता है उससे कहीं अधिक है मेरे अन्दर। मेरी आंतें अभीसे हरिनके मांस-

के टुकड़ोंके लिये गरज रही है।

हुश्क — महाराज तोरमाण, क्या मैं पहाड़ोंकी ओर कूचका हुकुम दे दूं ?

कंक — हां, लम्बी नाकवाले हुश्क, हिरनके मांसका कुछ पता चला, मेरे दोस्त ?

हुश्क — मेरा मतलब था, राजकुमारी कमलकुमारीको भीलोंसे बचानेके लिये......।

कंक — तेरा यह मतलब था ? खैर, मैं तेरे उत्तम संकल्पमें बाधा न दूंगा। लेकिन हुश्क, राजकुमारीके साथ-साथ हिरनका मांस भी लेते आना।

हुश्क — कश्मीरके महाराज, हमें पहाड़ोंतक ले चलिये और राजकुमारीको डाकुओंके हाथोंसे छीन लाइये। एक राजा और वीरके नाते आप इससे कम नहीं कर सकते।

कंक — तुम अपनी लम्बी नाकमेंसे झूठ बोलते हो ! मैं इससे बहुत कम कर सकता हूँ। मैं तुम्हें अपनी अनन्त योग्यताको सीमित न करने दूंगा। और मैं फुसलानेवाली चिड़िया और सच्चे हंसमें फर्क कर सकता हूँ। क्या मैं कूल्हे मटकाता बाप्पाके जालमें जा फंसूं ? यह चिट्ठी दबावसे लिखवायी गयी है।

हुश्क — राजकुमारीको बचाना ही होगा। मुझे ताज्जुब है, महाराज तोरमाण, कि आप इतनी गंभीर और दुःखद बातको मजाकमें लेते हैं।

कंक — वाह, प्रतिभा प्रकाशमें आकर ही दम लेगी, उसे अस्तबलमें देरतक बांधकर नहीं रखा जा सकता। हुश्क, वह रस्सी तुड़ाकर भाग निकलेगी। फिर भी हुश्क जाओ, मेरे सब आदमियोंको ले जाओ। हुश्क, भीलको मार डालो; हुश्क, राजकुमारीको बचा लाओ। काश, मैं तुम्हारे साथ जा पाता और अपनी भयानक तलवार अपने बलवान् हाथोंसे घुमाकर पहाड़ोंको उसकी झनझनाहटसे प्रतिध्वनित कर देता। लेकिन सीधी सच्ची बात यह है कि मुझे खूनकी पेचिश हो गयी है। अपनी प्यारी देवीके लिये मैं खुशी-खुशी अपना खून बहाता लेकिन वह तो अपने-आप और ही रास्तेसे बह रहा है।

हुश्क — (स्वगत) अरे पेटू कायर, पाजी, क्या अपने बन्दरपनसे एक वीरके नामपर कालिख पोत देगा ? (प्रकट) चलो, एकदम बाहर चलो वरना राजपूतोंको पता लग जायगा कि तुम कौन हो और तुम्हारी बोटी-बोटी कारटकर कुत्तोंको खिला दी जायगी।

कंक — तुम्हारा यही कहना है, मेरे नन्हें नायक ? तुम्हारे तर्क विचित्र ढंगसे निर्णायक होते हैं। शस्त्र ! शस्त्र ! घोड़ा ! मेरा घोड़ा, मेरा घोड़ा ! जाओ, सीथियनों, पहाड़ोंपर चढ़ो, ! मैं कहता हूँ, मेरा घोड़ा ! मैं पराक्रम दिखाऊंगा; मैं पहाड़ोंको रक्तसे रंग दूंगा, तराइयोंपर गोदना गोदूंगा।

रतन —— आपको देरतक प्रतीक्षा न करनी होगी।

(जाता है)

नायक —— मेरे पास सीथियन तोरमाणके लिये भी एक पत्र है।

इच्छलगढ़ नरेश —— इन्हें दे दो, ये वही हैं।

(कंक, हुश्क और सीथियनका प्रवेश)

कंक —— मरेगा नहीं। इस तुच्छ बंजर राजपूतानानेके पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे वह मेरे अन्दरकी खाईको पूरा कर सके। चल हट, दूर हो! मेरे आगे कागज फड़फड़ाता है? राजपूतानामें मेरे कोई लेनदार साहूकार नहीं हैं।

नायक —— मैं समझा नहीं। यह पत्र ईडरकी राजकुमारी, कमल कुमारीने आपके भेजा है।

कंक —— ऐसा है? अच्छा, तो तुम घुटने टेककर इसे मेरे चरणोंमें समर्पित कर सकते हो। मैं इसे पढ़नेकी कृपा करूंगा। (नायक उसके हाथपर फेंक देता है) क्यों, गन्दे, बदमाश! टहलुए! (नायक अपनी तलवारपर हाथ रखता है) नहीं, नहीं, यह तो तमाशा है? हां, मैं पकड़ सकता हूँ, समझ गया हूँ।

(नायक जाता है)

कंक —— (पढ़ता है) "महाराज तोरमाण, कहते हैं कि तुम मेरी कामना करते हो और मेरे लिये काश्मीरसे इतनी दूर, ईडरतक आये हो। कुमार, आपको जरा दूर और आना होगा! लुटेरा बाप्पा, तुमसे आगे निकल गया है और उसने जबरदस्ती मुझे पहाड़ोंमें बन्दी बना लिया है। कुमार, यदि तुम्हें अब भी एक बिचारे शरीरमें स्थित थोड़े-से सौन्दर्यकी चाह है तो यहां आकर युद्ध करो वरना सात दिनके अन्दर-अन्दर मुझे मजबूर होकर अपहरण करनेवालेके आगे झुकना पड़ेगा। अगर तुम मुझे उससे बचा लो तो,——किन्तु मैं तुमसे मोलतोल न न करूंगी, तुम्हारे अभिजात राजसी स्वभावपर विश्वास रखूँगी कि तुम किसी पुरस्कारकी आशाके बिना ही एक मुसीबतकी मारी कन्याको बचाओगे।

कमल कुमारी"

ना, ना, ना, तेरे चारों ओर बहुत ज्यादा मक्खन लगा है। पुरस्कारकी कोई आशा नहीं! क्या! मैं गुस्सेसे पागल गेंडेकी तरह लड़ूँगा, अपनी वीरता-से पहाड़ोंको चौंका दूंगा, अपने राजसी हाथोंसे तीन हजार भीलोंको उतने ही सूअरोंकी तरह बींध डालूँगा, और यह सब सवेरे उग्र कहरतें किस लिये? अपनी भूखोंको तेज करनेके लिये? मेरी आंतोंमें जितगा पाचक रस समा सकता है उससे कहीं अधिक है मेरे अन्दर। मेरी आंतें अभीसे हरिनके मांस-

के टुकड़ोंके लिये गरज रही है।

हुश्क — महाराज तोरमाण, क्या मैं पहाड़ोंकी ओर कूचका हुकुम दे दूं ?

कंक — हां, लम्बी नाकवाले हुश्क, हिरनके मांसका कुछ पता चला, मेरे दोस्त ?

हुश्क — मेरा मतलब था, राजकुमारी कमलकुमारीको भीलोंसे बचानेके लिये......।

कंक — तेरा यह मतलब था ? खैर, मैं तेरे उत्तम संकल्पमें बाधा न दूंगा। लेकिन हुश्क, राजकुमारीके साथ-साथ हिरनका मांस भी लेते आना।

हुश्क — कश्मीरके महाराज, हमें पहाड़ोंतक ले चलिये और राजकुमारीको डाकुओंके हाथोंसे छीन लाइये। एक राजा और वीरके नाते आप इससे कम नहीं कर सकते।

कंक — तुम अपनी लम्बी नाकमेंसे झूठ बोलते हो ! मैं इससे बहुत कम कर सकता हूँ। मैं तुम्हें अपनी अनन्त योग्यताको सीमित न करने दूंगा। और मैं फुसलानेवाली चिड़िया और सच्चे हंसमें फर्क कर सकता हूँ। क्या मैं कूल्हे मटकाता बाप्पाके जालमें जा फंसूं ? यह चिट्ठी दबावसे लिखवायी गयी है।

हुश्क — राजकुमारीको बचाना ही होगा। मुझे ताज्जुब है, महाराज तोरमाण, कि आप इतनी गंभीर और दुःखद बातको मजाकमें लेते हैं।

कंक — वाह, प्रतिभा प्रकाशमें आकर ही दम लेगी, उसे अस्तबलमें देरतक बांधकर नहीं रखा जा सकता। हुश्क, वह रस्सी तुड़ाकर भाग निकलेगी। फिर भी हुश्क जाओ, मेरे सब आदमियोंको ले जाओ। हुश्क, भीलको मार डालो; हुश्क, राजकुमारीको बचा लाओ। काश, मैं तुम्हारे साथ जा पाता और अपनी भयानक तलवार अपने बलवान् हाथोंसे घुमाकर पहाड़ोंको उसकी झनझनाहटसे प्रतिध्वनित कर देता। लेकिन सीधी सच्ची बात यह है कि मुझे खूनकी पेचिश हो गयी है। अपनी प्यारी देवीके लिये मैं खुशी-खुशी अपना खून बहाता लेकिन वह तो अपने-आप और ही रास्तेसे बह रहा है।

हुश्क — (स्वगत) अरे पेटू कायर, पाजी, क्या अपने बन्दरपनसे एक वीरके नामपर कालिख पोत देगा ? (प्रकट) चलो, एकदम बाहर चलो वरना राजपूतोंको पता लग जायगा कि तुम कौन हो और तुम्हारी बोटी-बोटी कारटकर कुत्तोंको खिला दी जायगी।

कंक — तुम्हारा यही कहना है, मेरे नन्हें नायक ? तुम्हारे तर्क विचित्र ढंगसे निर्णायक होते हैं। शस्त्र ! शस्त्र ! घोड़ा ! मेरा घोड़ा, मेरा घोड़ा ! जाओ, सीथियनों, पहाड़ोंपर चढ़ो, ! मैं कहता हूँ, मेरा घोड़ा ! मैं पराक्रम दिखाऊंगा; मैं पहाड़ोंको रक्तसे रंग दूंगा, तराइयोंपर गोदना गोदूंगा।

(सीथियनोंका प्रवेश) अमिताभ ! अमिताभ ! हल्ला करो, पाजियो, क्या तुम्हारे बड़े-बड़े चिचिपे मुर्दोंमें फेफड़े नहीं हैं ? तब क्या लेकर लड़ाई करोगे ?

सीथियावाले — अमिताभ !

(रतन और राजपूतोंका प्रवेश)

रतन — राजपूतो, हम आज एक बन्दिनी राजकन्याको बचानेके लिये कूच करते हैं। हमारे विरोधी कोई शूरवीर निश्छल शत्रु नहीं बल्कि पहाड़ोंके पीछे छिपे रहनेवाले बर्बर हैं। राजपूतो, उन्हें अपनी तलवारोंकी चमकमात्रसे पहाड़ोंसे बुहार दो और उनके दुष्ट स्पर्शसे एक राजकन्याको उबारो।

(इच्छलगढ़ नरेश, रतन और अन्य राजपूत जाते हैं)

कंक — कूच करो, सीथियनो ! (मन्द स्वरमें) हुश्क, क्या कहते हो ? हम इन हड़काए कुत्ते राजपूतोंके पीछे रहेंगे और उनकी छायामें बहादुरीसे लड़ेंगे। यह हमारी युद्धनीति है।

हुश्क — (स्वगत) तूने ऐसा किया तो लातें मारकर दुश्मनोंके बीचमें फेंक दूंगा।

कंक — (स्वगत) आह, ! ऐसे बढ़िया लबादेको गन्दा करेगा ? है ऐसा कलेजा ? (प्रकट) नरसिंघा बजाओ और चढ़ चलो दर्रोंकी ओर, दर्रोंकी ओर मेरे सिपाहियो !

(जाता है)

दृश्य ५

वनमें

प्रताप, रतन और राजपूत

(बाहर) — बाप्पा ! बाप्पा ! हे शिव एकलिंग !

(एक तीर आता है। एक राजपूत गिरता है)

रतन — अब भी ऊपरकी ओर !

इच्छलगढ़ नरेश — और भी ऊपरकी ओर ! ऊंचाईपर मुकुटधर मृत्यु हमारा स्वागत करनेके लिये बैठी है, नीचे जानेमें तो बेइज्जती है, यह राजपूतोंको शोभा नहीं देता। भाई रतन, हमारे गलोंमें अदृश्य फन्दा पड़ गया है। मेरे बहादुर राजपूतो, मेरी अंधाधुंध मूर्खताके कारण तुम एक बुरी मौतमें जा फंसे

हो।

रतन —— प्रसिद्ध इच्छलगढ़के चौहान, यह कैसी दुर्बलता है ? अपने-आपको न भूलो मेरे भाई। बस जरा और, और हम पहाड़ीपर उनके बर्रोके छत्तेपर जा पहुँचेंगे।

इच्छलगढ़ नरेश —— लेकिन एक भी जिन्दा न बचेगा।

(और एक तीर आता है। एक राजपूत गिरता है)

रतन —— भाई ! हारकर हो या जीतकर, बस तुम्हारे पास ही मरकर गिरूं, इससे बढ़कर किसी सौभाग्यकी कामना नहीं करता।

इच्छलगढ़ नरेश —— हमने लापरवाह बच्चोंके जैसा काम किया है। सोचा तो यह कि हमें भीड़-भड़क्केको, कुली कबारियोंको अपनी एड़ीसे कुचल डालना है। लेकिन यहां तो सधे हुए सैनिकोंसे और अद्भुत युद्धकौशलवाले मस्तिष्कसे पाला पड़ा है। वे अपने-आप छिपे और सुरक्षित रहकर हमें भेदते जाते हैं। हम बिना किसी लक्ष्यके अंधाधुँध हवापर तलवार चलाये जाते हैं। हम मानो दुःस्वप्नमें ठोकरें खाते, लड़खड़ाते जाते हैं। जिसे हमारी तलवारें छूतक नहीं पातीं ऐसा अदृश्य दुश्मन बड़ी नीचताके साथ हमें बींधता जा रहा है। हम शूर-वीरोंकी तरह नहीं कौओं और गीदड़ोंकी मौत मर रहे हैं।

रतन – फिर भी बढ़े चलो !

इच्छलगढ़ नरेश —— हां, आगे बढ़े चलो, जबतक आखिरी वीर उस डचोढ़ीपर छिदकर गिर न पड़े जो उस माधुरीको कैद किये है जिसे हम बचा न पाये। चौहानो, आगे बढ़ो !

(कोदलका प्रवेश)

कोदल —— रुक जाओ ! संधिवार्ता !

इच्छलगढ़ नरेश —— बोलो, किन्तु समर्पणकी बात न करना।

कोदल —— बात तो मैं उसीकी करूंगा। मैं बाप्पाकी ओरसे बोल रहा हूँ। राजपूतो, तुम पूरी तरह घिर गये हो। हम चाहें तो तुम्हारी खोपड़ियोंमेंसे सनसनाते हुए हमारे तीर तुम्हें पांच क्षणमें समाप्त कर सकते हैं। अब या तो अपने विनीत सिर बाप्पाके पैरोंपर रख दो; या पागल कुत्तोंकी तरह बिंध जाओ और भौंकते हुए अपना जीवन समाप्त करो।

इच्छलगढ़ नरेश —— दण्ड पाये बिना लौट जाओ। तुम्हारी जंगली उद्दंडतामें भी दूतका नाम तुम्हारी रक्षा कर रहा है।

(संग्रामका प्रवेश)

संग्राम —— कोदल, तुम अपना सन्देश बहुत उद्धत ढंगसे दे रहे हो। इच्छलगढ़के

चौहान, तुम बहुत माहन् हो, इस तरह कट मरनेके लिये नहीं बने। हम निकृष्ट समर्पणकी मांग नहीं करते। समानताके स्तरपर शिष्ट शर्त्तोंपर संधि चाहते हैं।

इच्छलगढ़ नरेश — तुम सच्चे राजपूत हो; क्या इन तीरोंका निर्देशन तुम कर रहे हो ?

संग्राम — तुम्हें थकानेवाले इन तीरोंका निदेशन मैं करता हूँ; सीथियनोंको और एक व्यक्ति घेरे हुए है; लेकिन हम एक अधिक देवोपम मस्तिष्ककी भुजाएं हैं।

इच्छलगढ़ नरेश — तो मैं उसीके साथ संधि-वार्ता करूंगा।

संग्राम — ठीक है। कोदल, जाओ, हमारे नायककी मरजी जान आओ।

(कोदल जाता है)

इच्छलगढ़ नरेश — युवक, तुम्हारा रूप और आचरण राजपूतोंका-सा है, फिर भी तुम शस्त्रों और संस्कृतिसे दूर इन हिंस्र जंगली जातियोंके साथ घुले-मिले हो। क्या तुमने अपना नाम भी छिपा रखा है ?

संग्राम — मैं भी तुम्हारी तरह एक चौहान हूँ तुम्हारी तरह मेरी रगोंमें भी राजाओं-का रक्त बह रहा है। अजमेरके वीरोंसे पूछना पराक्रमी मार्तण्ड कौन थे; हम उनके पुत्र हैं, संग्राम और पृथ्वीराज।

इच्छलगढ़ नरेश — हे युवक, तेरे पिता युद्धमें मेरे महान् आदर्श और पथप्रदर्शक थे। भाई और शत्रु, आओ, मुझे गलेसे लगा लो। (वे आलिंगन करते हैं) संग्राम, तुम्हारा नायक कौन है ? आखिर मार्तण्डके पुत्र एक भीलकी सेवा करनेसे रहे।

संग्राम — तुम्हारी अपनी आंखें ही इसका जवाब देंगी।

(बाप्पा और कोदलका प्रवेश)

इच्छलगढ़ नरेश — भव्य चेहरे मोहरेवाले युवक! इन ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों-के बीच किस राजवंशका लाल छिपा बैठा है ?

बाप्पा — प्रख्यात इच्छलगढ़के चौहान, अब अगर मैं युद्धमें मारा भी गया तो मृतकों-से कह सकूँगा कि मैंने तुम्हें, युद्धके देवको देखा है, हां, हममें घृणा और द्वेष न हो वीरवर! एक दूसरेके प्रति विश्वास और निष्ठा रहे।

इच्छलगढ़ नरेश — युवा नायक, तुम्हारा स्वरूप देव-पुरुषों-सा है किन्तु तुम्हारे काम कम उदात्त हैं। क्या तुमने एक राजकुमारीको लुटेरेकी भांति जबरदस्ती नहीं पकड़ा, और उसे अपने साथ अपनी अनगढ़ मांदमें जानेके लिये बाधित

नहीं किया और उसके सुकुमार शरीरको लज्जाजनक रूपसे अपने अधिकारमें कर लेनेकी धमकी नहीं दी ?

बाप्पा — राजपूत ! हम योद्धा हैं। हमें विवाहके दो ही तरीके शोभा देते हैं। या तो जैसे स्वर्गमें होता है वैसे, परस्पर अबाध मधुर आकर्षणसे बंधकर एक होना या सिंहकी सी एक ही छलांगमें अपनी वधूको रक्षक भालोंके बीचसे हर लाना और उसके हृदयको बलप्रयोगसे जीत लेना। हम युद्ध-विमुख जातियों-की तरह पाणिग्रहण नहीं करते जहां पिताके हाथोंसे एक निर्दोष, भोले नयनों-वाली आश्चर्यचकित बालाको दानमें मिले या खरीदे गये पशुकी तरह खींचकर लाया जाता है। धरतीके बूढ़े होनेसे पहलेसे राजपूत यही करते आये हैं और अब एक राजपूत ही उसमें दोष देखेगा ? इच्छलगढ़के चौहान, प्रताप, तुम कल सवेरेसे शस्त्र झनझनाते हुए, घोड़ेपर बगटुट किसलिये आये हो ?

इच्छलगढ़ नरेश — नायक, मैं तुमसे लड़कीकी रक्षा करनेके लिये वचनबद्ध हूँ।

बाप्पा — लेकिन तुम अपने वचनका पालन अपने मृत शरीरसे ही कर सकते हो। वीरवर, मैंने सारी दुनियाका विरोध सहकर भी लड़कीको अपने पास रखने-का प्रणाम किया है। आओ हम सच्चे वीरोंकी तरह फैसला करें। मेरे साथ तलवार भिड़ानेकी कृपा करो और हममेंसे जो विजयी हो वही कुंवरीको प्राप्त करे।

इच्छलगढ़ नरेश — हे धरती फोड़कर उठते हुए तने, तुम निश्चय ही सूर्यसे मिलने उठते रहोगे ! मुझे स्वीकार है। हमारे बीच कोई भी दखल न दे।

बाप्पा — कोदल, अपने भीलोंको सम्भालो।

(कोदल जाता है। वे लड़ते हैं)

रतन — तुम्हारा नायक बड़ा साहसी है जो अपने किशोर कौशलसे मेरे भाईके साथ तलवार भिड़ाने आया है।

संग्राम — वह महान् योद्धा है, उम्र या भारसे सामर्थ्य नहीं तोला जा सकता। कीर्ति-की ओर अभिमुख उल्लासभरी आत्मा हाथोंको पार्थिव शक्तिसे अधिक समर्थ बल देती है। वे गिर पड़े।

(इच्छलगढ़ नरेश घायल होकर गिरते हैं)

रतन — महान् इच्छलगढ़ नरेश ! यह देव-सदृश योद्धा कौन है ?

बाप्पा — मेरी राजकुमारी समर्पित कर दो चौहान।

इच्छलगढ़ नरेश — वह तेरी है। तू तो उससे भी बहुत अधिकका अधिकारी है।

(उठता है)

वीर युवक जो अपने पहले ही द्वन्द्वमें अनुभवी वीरोंको परास्त कर सकता है ! जान लो कि इच्छलगढ़का प्रताप तुम्हारा अटल मित्र है। जब कभी मेरी तलवार मांगोगे वह तुम्हारी होगी।

बाप्पा — आप घायल हो गये क्या ?

इच्छलगढ़ नरेश — इससे बुरे घाव देखे हैं और शत्रुसे मिलनेके लिये दूर दूर जा चुका हूँ। किसी और दिन एक पहाड़ीपर हम लोग किसी पथरीले तकियेके सहारे लेटकर युद्धकी बातें करेंगे।

बाप्पा — प्रताप, मैं अक्खड़ और पहाड़ी आतिथ्यके सिवा दे ही क्या सकता हूँ लेकिन जब मैं ईडरमें दरबार लगाऊंगा तब आज सवेरेका ऋण चुका दूंगा।

(नायकका प्रवेश)

इच्छलगढ़ नरेश — विदा !

बाप्पा — मित्र, इन्हें लिवा जाओ।

(संग्राम, इच्छलगढ़ नरेश, रतन और राजपूतोंका प्रस्थान)

मित्र, वहां सीथियनोंके साथ युद्ध कैसा चल रहा है ?

नायक — वह तो समाप्त हो चुका। वे बूचड़खानेकी लाशोंकी तरह ढेर हो गये।

बाप्पा — और राजा तोरमाण ?

नायक — चित्त गिरा और चीखा चिल्लाया। हम उन्हें भी ले लेते किन्तु युद्धके आनन्दमें पागल होकर पृथ्वीराज उनकी अगली पंक्तियोंपर कूद पड़ा। जब वह कभी न थकनेवाले लकड़हारेकी तरह उन्हें काटता चीरता जा रहा था, उसी समय एक विशालकार सीथियन झाड़िडों और चट्टानोंमेंसे होता हुआ झपट पड़ा और तुम्हारे जालमेंसे निकल आया, उसके साथ मुट्ठीभर वफादार लोग थे जो तोरमाणको ले भागे।

(पृथ्वीराजका प्रवेश)

पृथ्वीराज — मेरा अपराध क्षमा कर दो, बाप्पा।

बाप्पा — वह उदात्त भूल थी मेरे वीर। हमने जितनेकी आशा की थी वह सब पूरा कर लिया। अब प्रेमासक्त सीथियन हमारी हरी-भरी पहाड़ियोंमें राजपूत कन्यासे प्रेम निवेदन करने जल्दी नहीं लौटेगा। चलो चलें। देखें, महान् ईडर नरेश हमपर कब धावा बोलते हैं। मेरा मन इन पहाड़ियोंमें उनकी युद्ध-भेरी सुननेके लिये ललचा रहा है।

(जाते हैं)

दृश्य ६

बाप्पाके बाड़ेके बाहर

कमल कुमारी अकेली

कमल कुमारी — क्या मैंने इतने जबरदस्त झंझावातका आवाहन करके अपने सर्वस्वकी बाजी लगानेमें दुःसाहस किया है? अब न तो सीथियनोंका गर्जन जंगलको भयभीत कर रहा है, न इच्छलगढ़का रणघोष पहाड़ोंपर उठता सुनायी देता है; लुटेरोंका अपने युवक युद्ध देवके नामका भयंकर विजयनाद भी चुप हो गया है। जीता कौन और कौन गिरा?

(बाप्पाका प्रवेश)

कमल कुमारी — (उसकी ओर आतुरतासे बढ़ते हुए) लड़ाई कैसी रही? तुम सही-सलामत हो! और इच्छलगढ़ नरेश?

बाप्पा — अपने हाथ दो, मैं सब कुछ बताऊंगा।

कमल कुमारी — देखती हूँ, तुम्हारा सिर टोकरीमें नहीं है। (वह उसके हाथ पकड़-उसे अपनी ओर खींचता है) डाकू, मैंने सातवें दिनतक छूनेका निषेध किया था न?

बाप्पा — जो मेरा अपना है उसीको छूता हूँ। इस पहाड़ीपर मैं ही प्रभु हूँ। यहां हुकुम देना या मना करना मेरे अधिकारकी बात है। बैठो यहां, मेरे पास।

कमल कुमारी — मैं अपने ऊपर हुकुम न चलाने दूंगी।

(उसके पैरोंके पास बैठती है)

बाप्पा — ओह, प्यारी, तुमने ठीक ही किया। मेरे पैरोंके पास ही ठीक है, मैं तो तुम्हारा स्वामी और सम्राट् हूँ। रुको, उठना मत। वहीं बैठी रहो, जहांसे प्रेमकी आभामें चमकती हुई तुम्हारी हरिण जैसी आंखोंको अपनी ओर निहारते

देख सकूँ।

कमल कुमारी -- अरे, तुम तो मुझे चिढ़ाते हो। तुम चौहानसे नहीं भिड़े वरना काफी सुधर गये होते।

बाप्पा -- मैं उनसे मिल चुका।

कमल कुमारी -- महान् इच्छलगढ़ नरेशसे ?

बाप्पा -- हमने झटपट सीथियनोंको परास्त किया। कमल, तुम्हारे प्रेमी, महान् तोरमाणके भयसे कांपते मांसके लोथड़ेको उसके भगोड़े वफादार उठाकर पहाड़ीके नीचे नौ दो ग्यारह हो गये।

कमल कुमारी -- विजयपर इतने न फूलो। वे सीथियन ही तो थे। लेकिन इच्छल-गढ़ नरेशका क्या हुआ ?

बाप्पा -- हम लड़े और मैं जीत गया।

कमल कुमारी -- तुम ? तुम ? असम्भव।

बाप्पा -- लेकिन हुआ यही।

कमल कुमारी -- अरे, तुम तो अभी लड़के ही हो, निरे दुधमुँहे बच्चे ! हे मेरे ओजस्वी सिंह, तुम सचमुच परम सुन्दर और राजसी प्राणी हो, लेकिन हो बहुत छोटे। वे ऊंचे पूरे केसरी सम्राट थे। जब वे अपने शत्रुपर उछलते थे तो उनकी गरज सारे जंगलको थर्रा देती थी। तब बड़े-बड़े दांतोंवाले हाथी भी उनके विशाल सुनहरे वक्षके नीचे हरिनोंकी तरह गिरते थे। उन्हें जीत लिया तुमने ?

बाप्पा -- वे गिर पड़े और उन्होंने समर्पण किया।

कमल कुमारी -- तुमने जंगली शिखरों और रातके तारोंसे परी कथाएं सीखी हैं और दिवास्वप्नको सच मानने लगे हो।

बाप्पा -- अविश्वासियोंकी रानी ! संग्रामसे पूछ देख।

कमल कुमारी -- तब मैं समझ गयी। तुम वैसे ही जीते होगे जैसे मेरे साथ द्वन्द्वमें जीते थे -- एकदम अन्यायसे। तुमने हाथ-चालाकी की थी ?

बाप्पा -- शायद मेरी राजकुमारी, उनका पांव फिसला और वे गिर पड़े। मेरे सौ-भाग्यने उन्हें जीता है; मैंने नहीं।

कमल कुमारी -- जरुर ! तुम्हारे उच्च अनिवार्य भाग्यने ही जीता है। ओ मेरे राजा, मेरे वीर, तुमने महान् इच्छलगढ़ नरेशको हराया; अब तुम्हारे सामने कौन खड़ा रह सकता है ? तुम मेरे हृदयसे भी बढ़कर बहुत कुछ जीतोगे।

(बाप्पा उसे अपने बाहुओंमें भर लेता है)

भील, यह क्या करता है ? खबरदार ! दूर रह ! मैं तो मजाक कर रही

थी।

बाप्पा — कमल, अपनी चिट्ठी याद है? लड़की, मैंने चौहानको नीचा दिखाया है।

कमल कुमारी — भील, मैंने कुछ नहीं लिखा, कुछ भी नहीं।

बाप्पा — राजकुमारी, अब मैं तुम्हें अपनी प्यारी बांदी बनाकर रख लूँ? अब तो मना न करोगी?

कमल कुमारी — मेरे हस्ताक्षर न थे। तुम्हारी कुमुदने जाली चिट्ठी लिखी थी। मैं उसे न मानूँगी।

बाप्पा — अपने हृदयके विरुद्ध द्रोह करनेवाली! तू अपने ही जालमें फंस गयी है। मेरी हरिणी! तुझे अपनी मांदमें लाया हूँ; तो क्या भक्षण न करूंगा? मुझे चूम।

कमल कुमारी — नहीं चूमूँगी। (चूमती है) ओ अभी नहीं! इस वसन्तकी स्मृति मुझे मृत्युतक और उसके भी परे रखने दे। श्वेत रक्त वसन्तकी हरी-भरी झलकका स्वप्न, पृथ्वीसे दूर अमर दोनगढ़के पहाड़ोंमें हवाओं और झरनों-के बीच रची यह भूमिका, शिखरोंपर आह्लादक स्वतन्त्रतासे विचरते हुए, सारे जीवनके आनन्दकी संपूर्णताका स्वप्न-लेते हुए विचरण, मेरे लिये रहने दे बाप्पा।

बाप्पा — मधुमय ओठोंवाली, अब तू इस तरह याचना करे, तो कौन मना कर सकेगा?

कमल कुमारी — सातवीं सुबहतक, बाप्पा।

बाप्पा — हां, लेकिन सिर्फ तभीतक।

कमल कुमारी — यह मेरा वचन है। (उससे दूर भागते हुए) और अब जीतकर मैं उससे इन्कार करती हूँ, अपना कहा अनकहा करती हूँ। जीतनेके लिये मैंने जितनी भी खुशामद की या कही है उस सबको रद्द करती हूँ, उसका पूरी तरह खण्डन करती हूँ। तुम अब भी मेरे भील और मेरे लुटेरे हो; मेरे न्यायहीन डाकू। मैं महान् ईडरकी राजकन्या, और तुमसे प्रेम करूं! उसका स्वप्न भी न लेना। छह दिन! तबतक मेरे पिता तुम्हारी मांदमें धुँआ देकर तुम्हें बाहर निकाल लेंगे और मेरे सिंह, मुझे तुम्हारे भयंकर पंजोंसे बिना निगली हुई हिरणीकी भान्ति निकाल लेंगे।

बाप्पा — धोखेबाज, सोचा भी है कि इसके लिये कैसी भयंकर सजा मिलेगी?

कमल कुमारी — सिंह, सातवीं सुबहतक तो नहीं।

(जाती है)

बाप्पा — तबतक, मेरी हरिणी, अपने अद्‌भुत सौन्दर्यके साथ मेरे पहाड़ोंकी

स्वाधीनता और लालित्य भरी हवा और मधुरता भरे वनोंमें विचरण करते हुए उन्हें नन्दन कानन-सा बना दो क्योंकि तुम उन्हींकर एक भाग मालूम होती हो और वे तुम्हारे सहज निवास लगते हैं।

(जाता है)

अंक ३

दृश्य १

दोनगढ़के पासका जंगल

कमल और कुमुद जंगलमें मिलती हैं

कुमुद कुमारी — कमल, सारी सुबह कहां छिपी रही ?

कमल कुमारी — मैं अपने जंगलोंमें अकेली घूमती रही और कल्पना करती रही कि मैं उनकी पहाड़ी रानी हूँ। हे कुमुद, ! सारा जंगल मेरी अर्चना कर रहा था ! कुमुद ! फूलोंने अपने धूपदान पूजाके लिये ऊपर उठाये और हल्के कदमोंसे पत्तोंके बीच विहरता मन्द मधुर स्वरवाला पवन मेरे कानोंमें कलरव करनेके लिये झुका। ओह ! कैसा पवित्र आनन्द था ! वनके अनाम पक्षियोंने अपनी प्यारी महारानीकी स्तुति गायी और वह चलते-चलते खुले हाथों चारों ओर लय बिखेरती गयी। गुदगुदे बालोंवाली गिलहरियां पत्तोंमेंसे झांकती थीं और घनी दुमोंको हिलाते हुए चीं चीं करके बोलीं, "देखो, वह चली, हमारी प्यारी रानी, कमल कुमारी।" और मोर मेरा एक कटाक्ष पाकर ही फूल उठे और मेरे आगे नाचकर यह केकारव करने लगे "हम अपने सौन्दर्यमें कितने शानदार लगते हैं, फिर भी अपनी रानी, कमल कुमारी जैसे सुन्दर नहीं हैं।" कुमुद, मेरी पूजा होगी।

कुमुद कुमारी — हां, होगी। किसी देवीमें ऐसा वसन्तकालीन सौन्दर्य नहीं है और न ऐसा शरीर है जो पीछे छूटे हुए स्वर्गकी स्मृति अपने अन्दर समाये हो या जो घुमक्कड़ मन्द समीरके साथ फूले-फूले फिरने और ज्योत्स्नाके साथ सुस्ताने योग्य हो।

कमल कुमारी — यही तो उन्होंने भी कहा था, जंगलकी आवाजोंने,—बहन कुमुद, उन असंख्य आवाजोंने यही कहा था।

कुमुद कुमारी — क्या कहा उन्होंने, कमल ?

कमल कुमारी — उन्होंने कहा कि मेरे केश ऐसा सुकोमल अंधकार हैं जिसमें प्रकाशके विचार बन्दी पड़े हैं। वे बोले कि स्वर्गसे देवोंने नीचे ताका तो मेरी आंखें

देखते ही इच्छा करने लगे कि ये नयन ही स्वर्ग होते। बच्ची, उन्होंने कहा, कि मेरा मुख ऐसा है जिसे बनानेका ब्रह्माने स्वप्न तो लिया था किन्तु बना न पाये थे — ना, सृष्टियोंके सर्जनहार अपना सारा कौशल लगाकर भी — इतने अपूर्व माधुर्यको शरीरमें न उतार पाये। उन्होंने मेरे सर्वांग संपूर्ण शरीर-को लालित्यपूर्ण सौंदर्यका उत्सव बताया, स्त्री शरीरमें गीतकी टेक और सामं-जस्यका अवतार कहा। उन्होंने ये सब बातें कही,—कुमुद उन्होंने सचमुच कही थीं, हालांकि तुम विश्वास नहीं करोगी। मैं उन वनस्पतियोंकी भाषा समझ सकती थी।

कुमुद कुमारी — चल, तुझे इस तरह पत्तोंकी मर्रमर्र और हवाकी फुसफुसाहटको अनूदित करनेकी जरूरत नहीं पड़ी होगी। मैं कसम खाती हूँ, जिसने इतनी कुशलतासे तेरी खुशामद की वह जरूर मानव भाषा रही होगी।

कमल कुमारी — छि: कुमुद, वहां सिर्फ वृक्षों, नदियों और पवित्र कोमल फूलोंकी आवाजें थीं।

कुमुद कुमारी — बस एक आवाज। प्रिया, तुमसे प्रेम निवेदन करते समय क्या वह मधुर ध्वनिमें गरज रहा था।

कमल कुमारी — अरे, वह अपने कर्तव्यकी ओरसे बड़ा लापरवाह है। उसे सिर्फ पहाड़ोंपर भागते हिरन और शत्रुओंके चमकते भालोंसे प्रेम है, कमलसे नहीं। उसकी बात मत करो, सिर्फ पहाड़ोंकी, हरियालीकी और मेरी बातें करो।

कुमुद कुमारी — और ईडरकी, कमल ?

कमल कुमारी — ईडर! किसी धुँधले भूतकालमें यह नाम सुना तो था। किसी पुरानी दूर-दराजकी दुनियामें जहां मैं ढ़ेर-सी सदिओं पहले, असंख्य स्वप्नों-के पूर्व घूमती थी। वहां न लौटूँगी। वहां वृक्ष न थे, मुझे विश्वास है, वहां जूहीकी बेलें न थीं, शिखरोंपर हाथमें हाथ पिरोये नाचती हुई आनन्दमग्न हवाएं न थीं; नील नभको कोमल बनाती गर्वसे बैठी पर्वतमालाएं न थीं, उच्च शिखरवाले और नीचे गोता लगाते पहाड़ न थे और न चारों ओर फूलोंसे लदी हरियाली थी। वहां न पक्षी थे न वसन्त।

कुमुद कुमारी — हम ईडरसे एक दुनियाकी दूरीपर हैं। कमल, वसन्तोत्सवका सबसे बड़ा दिन है।

कमल कुमारी — ओ, तब तो हम आनन्दमग्न हवाएं बनकर मदनोत्सवकी सारी सुबह पहाड़ोंपर हाथमें हाथ जाले नाचती फिरेंगी।

कुमुद कुमारी — यह स्मृतिमें संजोये रखने लायक वसन्त न होगा।

कमल कुमारी —— यह तो मेरे जीवनका वसन्तोत्सव होगा कुमुद ! मेरे जीवन भरका वसन्तोत्सव, ऐसा वसन्त जो मेरे हृदयमें हमेशा बना रहेगा, प्यारा, सदा सर्वदा मधुर बना रहेगा। हमारी बहनें कहां गयीं ?

कुमुद कुमारी —— निर्मल झरनेसे पानी भरकर ला रही है; ईशानी आज देहाती शिकारी बनकर दूब चरते हिरनका पीछा कर रही है।

कमल कुमारी —— तुम्हारी टोकरीमें क्या है ?

कुमुद कुमारी —— बाप्पाकी पूजाके लिये सबसे हरे-भरे वनके फूल चुराये हैं मैंने। आज उन्हें अपनी बहारसे एकलिंग शिवको ढक देना होगा। प्राणप्यारी, कल इसकी जगह मैं तुम्हारे बालोंके लिये फूल चुनूँगी और तुम्हारे लिये रजत पंखुड़ियोंसे नूपुर गढ़ूँगी, चमकते वासन्ती-फूलोंके कर्ण-फूल, वसन्तके सुगन्धित फूलोंकी करधनी बनाऊंगी और तुम्हारे हाथोंको हरे स्वर्णसे ढक दूंगी। हम तुम्हें, अपनी वसन्त रानीको, एक शाखाके नीचे प्रतिष्ठित करेंगे, और पत्र-पुष्पोंसे पूजेंगे। ऐसे फूलोंसे तुम्हारे चरण ढक देंगे जो चन्द्रकिरण-सी धवलतामें उनकी बराबरी करेंगे या उनके गुलाबीपनकी हल्की नकल करेंगे; ——हमारी महारानी, कमल कुमारी।

कमल कुमारी —— क्या बाप्पा भी मुझे पूजेगा ? लेकिन, कुमुद, मैं निचले लोककी देवी हूँ और स्वर्गके राजासे अपनी पूजा करनेके लिये कहनेका साहस नहीं कर सकती।

कुमुद कुमारी —— तुम्हें उसकी पूजा करनी होगी; तुम्हारा यही काम है।

कमल कुमारी —— करूंगी, जबतक वसन्त है।

कुमुद कुमारी —— और बादमें ?

कमल कुमारी —— कुमुद, हम दोनगढ़में और वह भी वसन्त ऋतुमें बादकी बात नहीं सोचेंगे।

कुमुद कुमारी —— कल सातवें दिनकी पौ फटेगी।

कमल कुमारी —— मैंने सुना नहीं। क्या ये हमारे शिकारी हैं ?

(पृथ्वीराज और ईशानीका प्रवेश)

ईशानी —— मेरा निशाना तुमसे अच्छा है।

पृथ्वीराज —— मैंने कब नकारा है ? ओह, तुम सीधा हृदयको बेधती हो।

ईशानी —— जिसे मैं युद्धमें या तीरन्दाजमें हरा सकूँ उससे कभी विवाह न करूंगी। तुम कहते हो, तुम समर्थ गहलोत, मार्तण्डके बेटे हो तब इन दुर्गम और बीहड़ जंगलोंमें क्यों छिपे रहते हो। जब नीचे तराईमें जीवन कोलाहल करता हुआ

दौड़ा जा रहा है तब तुम अपने दूर-दूरतक पहुँचनेवाले तीरोंसे यश और कीर्तिको टालते क्यों रहते हो ? आघातोंका सामना करके, प्रचण्ड प्रवाहसे उल्टा बहकर कालकी शिलाओंपर अपने नामकी अमिट रेखा क्यों नहीं आंकते ?

पृथ्वीराज —— ईशानी, एक दिन हम कवचकी विजयी चमक-दमकसे गंगाका भी सामना करेंगे। लेकिन हमारा भाग्य अभी बच्चा है और बाहर निकलकर गरजनेसे पहले उसे अपनी जन्मभूमिकी झाड़ियोंमें रहकर हृष्ट-पुष्ट होना होगा और अपने केसरी सामर्थ्यका अनुभव करना होगा।

ईशानी —— वह जबतक न निकले, तबतक प्रेमकी बात न करो।

पृथ्वीराज —— तुम मुझसे क्या करवाना चाहती हो ? सीथियन तोरमाणको द्वन्द्वमें मार गिराऊं, और दानवाकार हुश्कको मौतके घाट उतार दूं ? इच्छलगढ़ नरेशका सामना करूं और अक्षत लौट आऊं या अपनी अकेली तलवारसे तुम्हारे ईडरके सर्वश्रेष्ठ बीस भाला बरदारोंको रोककर दिखा दूं ? ईशानी, तुम्हारे लिये यह सब और इससे भी अधिक कर सकता हूँ।

ईशानी —— तुम बोलते ही हो, पहले कर दिखाओ। पृथ्वीराज, करनेवाले बोलते नहीं।

पृथ्वीराज —— ओहो, यह तो बड़ी संकुचित सिद्धान्त है। उदात्त वाणी उदात्त कर्मकी उच्च प्रस्तावना है। वह छलांग मारनेसे पहले वनराजकी गर्जना है। गर्वीली वाणी शक्तिशाली भुजाकी शोभा है और मंत्रणा-गृहसे समर भूमिकी ओर, यही पुराने जमानेके महान् लौह पुरुषोंकी स्वभाविक गति थी।

ईशानी —— तुम अभीतक गरजते ही रहे हो। आज तुम्हें धनुषसे हराया, किसी दिन तलवार लेकर लडूँगी और नीचा दिखाऊंगी।

पृथ्वीराज —— हराओगी ? उसी तरह जैसे तुम्हारी राजकुमारीने हराया ?

ईशानी —— उन्होंने स्वांग रचा था, खेल किया था किन्तु मैं सीधा तुम्हारे हृदयपर वार करूंगी। एक दिन हम लड़कर देख लेंगे।

पृथ्वीराज —— खैर, अगर लड़े भी, तो ईशानी, मैं तुम्हारे प्यारे शरीरपर विजयीके नाते अधिकार करूंगा।

ईशानी —— और मेरे हृदयपर ? अगर वह भी चाहिये तो तुम्हें और बहुत कुछ करना होगा।

पृथ्वीराज —— ईडरके नालदार जूते जल्द ही हमारी पहाड़ियोंपर खटखटाने लगेंगे। तब मैं तुम्हारे हृदयका अधिकारी बन सकूँगा।

ईशानी —— तबतक तुम मेरे साथी-शिकारी ही हो, मेरे स्वामी नहीं।

(निर्मलका प्रवेश)

निर्मल कुमारी — आलसी, निकम्मे कहींके, चलो ! यहां मैं पूरे एक दर्जन मटके झरनेसे भर लाई, चूल्हेमें लकड़ियां लगाई, आग सुलगाई, और इधर तुम आराम-से लटके मटके करते जंगलमें आवारागर्दी कर रहे हो। हिरनका मांस कहां है ?

पृथ्वीराज — एक भीलके काले कंधोंपर रसोईके बरतनोंकी ओर सफर कर रहा है।

निर्मल कुमारी — तुम्हारी सेवामें, ईशानी ! वरना तुमने जिस हिरनका शिकार किया है उसे चख न पाओगी।

ईशानी — बच्ची जुल्म न कर। इस शिकारके बाद मुझे गाय-खाऊ सीथियनोंकी-सी भूख लग आयी है।

(जाती है)

निर्मल कुमारी — वीरवर, चलो भागो, उसे अपने वीर कंधोंसे मदद दो।

(पृथ्वीराज जाता है)

कमल कुमारी — शूरवीर प्रेमियोंका जोड़ा !

निर्मल कुमारी — मेरी भगोड़ी बहनो, तुम भी यहीं हो ? पत्तोंमें छिपने और लुक-छिपकर प्रेमियोंकी बकवास सुननेके सिवा और कोई काम नहीं है तुम्हें ?

कमल कुमारी — वाह, निर्मल, यहां आनेसे पहले मैं अपना काम कर आयी।

निर्मल कुमारी — हां, जानती हूँ ! एक कमरेमें झाड़ू लगाना — हां, बहुत साव-धानीसे साफ करना पड़ता होगा, वह बाप्पाका कमरा है न ? और फिर बहुत देरतक उसके कवचको रगड़ना, पोंछना जबतक वह बाप्पाको निहारती तुम्हारी आंखोंकी तरह चमक न उठे,—इसकी आंखें चमकती हैं न कुमुद ?

कुमुद — हां, चमकतीं हैं, देवकी ओर देख पानेवाले तारोंकी तरह।

निर्मल कुमारी — बिलकुल ठीक ! मैंने उसे देखा —

कमल कुमारी — निर्मल, पता नहीं इस जंगलमें कितनी लकड़ियां हैं, लेकिन अगर तूने बात आगे बढ़ायी तो उन सबको तेरी पीठपर तोड़ूँगी।

निर्मल कुमारी — क्या यहां भी अपने-आपको ईडरकी राजकुमारी समझती हो कि चली हो मुझे धमकाने ? ना, हम सब वसन्तके गणतन्त्रमें रहते हैं जहां सब मधुर पुष्प एक समान हैं। ठहरो, अब तुम्हारे ईडरके अत्याचारोंका बदला लूँगी। कुमुद, जब यह समझ रही थी कि इसे कोई नहीं देख रहा, मैंने इसे बाप्पाकी तलवारकी मूठपर उत्सुकतासे अपना कपोल रखते देखा है। यह कल्पना करनेकी कोशिश कर रही थी कि ठंडे कठोर लोहेमें तलवारके स्वामी-के और उसके अपने होंठ थे। मैंने कमलको चोरी-चोरी उसे चूमते देखा।

कमल कुमारी — (उसे आलिंगनमें भरकर उसका मुँह बन्द करती है) चुप , चुप, शैतान गपोड़ेबाज।

निर्मल कुमारी — तो जा और एक अच्छी राजकुमारीकी तरह हमारे लिये खाना पका और मैं वचन देती हूँ कि तुझे अकेलेमें फुसफुसाते समय मैंने जो कुछ सुना था उसे किसीके सामने दोहराऊंगी नहीं।

कमल कुमारी — निर्मल, उमरके साथ-साथ तुम शैतानीमें भी बढ़ती जा रही हो। देवीजी ठहरो, जरा ईडर पहुँचकर मेरे हाथमें आना, शरारतके इस भूतको मार-मारकर ठिकाने लगा दूंगी।

निर्मल कुमारी — मैंने उसकी बात सुनी थी, कुमुद —

कमल कुमारी — मैं यह चली, मैं दूर जा रही हूँ। मैं कोदलके धनुषसे निकला तीर हूँ।

(जाती है)

निर्मल कुमारी — उसे मजबूर करना कठिन है, लेकिन इस बार अधिकार मेरे हाथ-में है।

कुमुद कुमारी — तुम्हारे पास रक्त चन्दनका चूर्ण तैयार है न? वसन्त मधुर उदारतासे मालाओंके लिये फूल देगा।

निर्मल कुमारी — हां, उसे पता लगानेसे पहले उसका पाणिग्रहण हो जायगा।

कुमुद कुमारी — हम जिन फूलोंकी दीवारोंके पीछे छिपे हैं उनमेंसे हमारे पिताकी तलवार आघात करके रोक दे तो और बात है।

निर्मल कुमारी — कुमुद, हमारे कोमल फूल एक ऐसा बन्धन गूँथेंगे जिसे न लोहा अलग कर सकेगा, न मृत्यु तोड़ सकेगी।

(जाते हैं)

(इससे आगे अप्राप्य)

चक्की घरकी कन्या

प्रेम पत्तोंकी की हेर फेर करता है।

(सुखान्त नाटक)

नाटक के पात्र

क्यूपिड —— प्रेमका देवता।

ऐट —— स्पेनका राजा फिलिप।

सामन्त बेलट्रान —— एक अभिजात व्यक्ति।

एण्टोनियो —— बेलट्रानका बेटा।

बेसिल —— बेलट्रानका भतीजा।

सामन्त कोनरेड —— एक कुलीन युवक।

रौंसीडास —— } दरबारी।
गजमन —— }

मिल-मालिक।

एण्सिटो —— मिल-मालिकका बेटा।

जेरोनिमो —— } छात्र।
कार्लो —— }

फ्रायर बाल्टासर —— एक पादरी।

यूफ्रोसीन —— चक्कीघरकी कन्या।

इस्मेनिया —— कोनरेडकी बहन।

ब्रिजिडा —— इस्मेनियाकी चचेरी बहन।

अंक १

दृश्य १

(सालामन्कामें राजाका दरबार)

महाराज फिलिप, कोनरेड, बेलट्रान, रोन्सीडास, गजमन,

एण्टोनियो, बेसिल, इस्मेनिया, ब्रिजिडा और ग्रेंडीस

महाराज फिलिप — काउण्ट बेलट्रान।

बेलट्रान — महाराज ?

महाराज फिलिप — क्यों, योजनाका कुछ पता चलेगा ?

बेलट्रान — महाराज, यह कोई रहस्य नहीं है। और फिर भी यह खेल मेरा तो कम ही है, नाम भी मुझसे कोसों दूर है। पुराने जमानेमें केस्टिलीय प्रजा सेनाओं-के लिये लोहा और साम्राज्यके नियंत्रणके लिये तलवारें घड़ती थी किन्तु हम लोग इन मुलायम रेशमी चीजोंके कारण उनसे काफी दूर भटक गये। हममें वेगाकी गंभीरताके साथ कैल्ड्रोनकी कल्पनाशक्ति नहीं रही जो नाटकोंका मूल्यांकन कर सके। किन्तु महाराज हमारे बेटे अपने अनगढ़ पिताओंसे बहुत आगे निकल चुके हैं। वे प्रायः फरांसीसी हैं। एण्टोनियो, तू ही बोल।

एण्टोनियो — यह पेरिसके न्याय और स्पार्टाकी हेलनके बलात्कारकी कहानी है महाराज।

महाराज फिलिप — वह तो पुरानी बात है।

'मास्क' होनेकी तैयारी है। यह एक प्रकारका दृश्य काव्य होता था जिसमें कभी पुरानी गाथाओंको लेकर कभी मौलिक नाटकोंको लेकर अभिनय किया जाता था। राजा उसकी योजना-के बारेमें पूछते हैं। बेलट्रान कहता है न तो मैं वेगा जैसा कवि हूँ न कोल्ड्रन जैसा कवि और नाटक-कार कि इस नाटकका सुन्दर वर्णन कर सकूँ। हां, मेरा बेटा बहुत सुशिक्षित और सुसंस्कृत है है — दुस जमानेमें फ्रांसकी हर चीज सर्वोत्कृष्ट मानी जाती थी — बल्कि यूँ कहिये कि पूरा फरासीसी है। वह आपको बता सकेगा। तब एण्टोनियो बताता है कि पैरिसके न्याय और स्पार्टा-की हेलेनके बलात्कारका नाटक होनेवाला है।

यह नहटक अधूरा ही है। — सं०

इस्मेनिया —— एण्टोनियो ? हे एण्टोनियो ? आह, मेरी गरीब आंखोंने धोखा दिया, तुम कहां भटक गये ?

बेलंट्रान —— चुप।

एण्टोनियो —— महाराजा, बात जितनी पुरानी हो नाटकके लिये उतनी ही अच्छी होती है क्योंकि वह एक ही बार सुना जाता है। मंचपर घटना तेजीसे घटती है और उसके पीछे घसिटते हुए विचार नाटककी सूक्ष्मताओंको कर्कश तथा उसके सुकुमार रंगको धुँधला देते हैं, सिर्फ बड़े-बड़े आकार ही दिखते हैं। अगर कथावस्तु नयी हो तो घटनाओंमें उलझा हुआ मन फूलोंकी सुरभि और सरकती हुई छायाको छोड़कर धाराके प्रवाहमें तेजीसे बहता जाता है। लेकिन कथा-वस्तु परिचित हो तो मन नाटकके प्रवाहमें भी उन नाजुक और उपेक्षित-से कौशलभरे स्पर्शोंको आरामसे पकड़ सकेगा जिनके बिना पूर्णता निराश होती है। ऐसी जगह कला प्रतिभाको सार्थक सिद्ध करनेके लिये पदार्पण करती है। और फिर विषय पुराना हो तो उसे नया बनानेके लिये रचनात्मक परिश्रम काममें आता है। दूसरी वस्तु केवल शोधकार्य है, एक भंगुर वस्तु है यद्यपि है मनोहर। महान् सर्जक वही है जो महान् वस्तुको महान् रूपमें संचलित कर सके, समृद्धिकी गहराईमें पैठकर वहांसे व्यवस्था ला सके, वह नहीं जो हवामें-से बस मधुर छायाएं उभारता रहे। क्षमा कीजिये, भगवन्, इतने महान् व्यक्तिके सामने इस तरह अनाप-शनाप बोलते हुए मैं अपनी मर्यादा भूल गया था।

महाराज फिलिप —— लार्ड बेलट्रान, तुम्हारा बेटा होनहार है। इसमें विनय और रसिकताका सुन्दर संगम है, एक बड़ा समालोचक और मुग्धकारी वक्ता है।

इस्मेनिया —— सच है, हां सच है! उसने मेरा हृदय मेरे वक्षसे निकाल लिया।

ब्रिजिडा —— तू चुप न रहेगी ?

महाराज फिलिप —— काउंट, मैंने सुना है कि तुम्हारी जमीनोंपर प्रकृति अपना सर्वोत्तम, उदार रूप दिखाती है। शायद मैंने उन्हें नहीं देखा। स्पेनकी चप्पा भर जमीन भी जिसे मेरी आंखोंने नहीं देखा, या दिलमें नहीं संजोया, मुझे अखरती है। फिर भी परदेशमें बचपन बितानेके कारण और विदेशी वंशकी वजहसे और फिर इतनी अशांतिके बीच गद्दी पानेके कारण मैं पूरा-पूरा अजनबी हूँ। मैं सुन्दर स्पेनमें आदमी नहीं झंझाकी तरह उड़ता फिरा हूँ, कभी भगोड़ेकी तरह मारा-मारा फिरा तो कभी सफलताके बवण्डरपर अपने उचित स्थानतक आ पहुँचा। किन्तु संभव है कि कार्यरत रहनेके कारण तुम भी इस छोटी-सी

बातसे वंचित रहे हो।

बेलट्रान — राजन्, मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरा पुत्र ज्यादा अच्छा उत्तर देगा। मुझे इस बातकी परवाह नहीं कि यह वृक्ष मीनार जैसा है या व्याल जैसा। और न मैंने खेत खेतमें आकार, सीमा और मालगुजारी के सिवा कोई फर्क ही देखा। जो खेत कभी बड़े थे,—वे छोटे कैसे हो गये और किसने उन्हें छोटा किया — महाराज इन बातोंको दुहराकर आपको दुःखी न करूंगा, हालांकि मेरा दिल बड़े दर्दके साथ बोलता है।

महाराज फिलिप — तो कह डालो एण्टोनियो, किन्तु नियमबद्ध फरांसीसी रियासतों या सुरचित उद्यानोंकी बात न कहना। उनमें जीवन मानो पत्थरकी नारी मूर्ति जैसा सर्वांग सुन्दर होता है जो आंखोंको तो मोह लेता है पर हृदयको नहीं। जब प्रकृतिको अप्रकृत बनाया जाता है, उसकी ऊष्माभरी बड़ी-बड़ी रेखाओं-को शीत असामंजस्यके साथ कठोर सीधी लकीरोंमें बदला जाता है तो हृदय असन्तुष्ट हो जाता है और स्वतन्त्रता तथा विशालताकी मांग करता है। वह ऊपर बृहद् आकाशके विस्तारके साथ तुलना करता है और एक विसंवादकी अनुभूति होती है। तुम्हारे वास्तुकार गजसे नापकर सौन्दर्यकी योंजना बनाते हैं, रेतसे रेतको तौलते हैं और समान लकीरोंसे लकीरें मिलाते हैं किन्तु सबसे बड़ी बातको भूल जाते हैं। क्योकि अनगढ़ शक्ति अनियंत्रित होते हुए भी अपूर्व सफलता प्राप्त करती है और कारीगरके यांत्रिक दृष्टिसे अच्छे कामको बहुत पीछे छोड़ जाती है।

एण्टोनियो — हमारे खेत देहाती त्यौहार हैं महाराज, तराशी हुई प्रकृति नहीं।

महाराज फिलिप — क्या तुम्हारे लिये वह मुखर है? मौनावस्थामें वह इतनी मनोहर नहीं लगती।

एण्टोनियो — हां, हमारे यहां बेंतके झुरमुटों और पत्थरोंके बीच गुनगुनाते झरने हैं और उनके पास ही बिखरे बालोंवाली लताएं झुकी रहती हैं, छिपे हुए आस-मानी सदाबहार, ब्राह्मी, मुश्कदाना, बनफशा और दुखदायिनी क्षेत्रनन्दिनीकी बहार है और जब हम मदमाते भौंरेको किसी एकाकी फूलपर गुँजन करते हुए देख-देखकर थक जाते हैं तो पीछे मुड़कर पक्षियोंका कलरव सुन सकते हैं। हर एक अपने ही सुरमें मस्त फिर भी सब संगीतमय अन्तरालोंके माधुर्यमें जुड़े हुए।

महाराज फिलिप — तुम्हारे यहां अनेक वृक्ष हैं क्या?

एण्टोनियो — महाराज, वनपथ और हरी-हरी वनसभाएं हैं और हैं अलग-अलग

एक दूसरेकी ओर झुकते हुए भीमकाय वृक्ष जो मिलनको आतुर दिखते हैं। कई भड़कीला बनाव-सिंगार किये हुए है तो दूसरे सिर्फ वन-पालकोंकी तरह हरी वर्दी चढ़ाये हुए हैं।

इस्मेनिया —— क्या द्वेष इतना मधुर हो सकता है? ब्रिजिडा, क्या दुश्मनोंकी आवाजें कानोंको देवदूतोंके अभिवादन-सी लगती हैं?

ब्रिजिडा —— चुप रह बुद्धू। हम बहुत नजदीक हैं। कोई तुम्हें पहचान लेगा।

इस्मेनिया —— क्यों बहन, इसमें हर्ज ही क्या है? सभी निर्दोष रूपसे मधुर संगीतको सुनकर उसकी प्रशंसा कर सकते हैं।

ब्रिजिडा —— अपनी जबानपर लगाम लगाइये देवीजी। या फिर मैं यहांसे चल दूं?

महाराज फिलिप —— तुमने मुझे दुखी कर दिया। इस फीके दरबारका चित्र कितना भिन्न है? इसकी दीवारें निश्छल श्वासोंको रोक देती हैं। भगवान्ने अपनी खदाने जंगलोंमें और सुदूर पहाड़ियोंपर ऐसी विकृतिके लिये नहीं रखी थी। वह पाप था जब पहले पहल हाथोंने पत्थरसे पत्थर सटाया था। गजमन, तुम समझदार और धैर्यशील विचारक हो,—क्या हमारे लिये भगवान्की बनायी हुई खुली हवामें रहना बेहतर न होगा? धरतीके प्रकट गौरवको जाने बिना, उसका स्पर्श पाते हुए एक किसानकी भांति रहना, उसीकी तरह जीवनदायी झरनेका ठंडा पानी पीना, न तो कभी अंगूरोंसे बनी खट्टी मादक उद्भ्रांति या थकी हुई रसनाके लिये दूर-दूरसे लाये गये मांसकी कुंठित सरसताके लिये तरसना, बल्कि सीधी-सादी रोटी या मकईका साधारण और पौष्टिक भोजन करना अधिक अच्छा नहीं है? तुम्हें यही लगता है न कि इस तरह भव्य सूर्यके प्रकाशमें नहायी जिन्दगी, जिसे स्वस्थ, सशक्त धरतीने शरीरको घड़नेवाले परिश्रम और विशाल हृदय जननीके सरल स्पर्शके साथ पाला पोसा है, दरबारके वातावरणमें पले जीवनकी अपेक्षा अधिक उदात्त मनुष्य घड़ती है। हम बिलकुल बचपनसे ही उसके पयस्वी वक्षसे दूर, सूर्यसे छिपे हुए और वायु तथा वर्षाके भावभरे अभिवादनसे वंचित रहते हैं। हम ऐसे शून्य उभयचर, अमानव हैं जो धरतीके लिये अति अस्वस्थ ज्ञानी हैं और स्वर्गका उत्तराधिकारी बननेके लिये अति भ्रष्ट।

गजमन —— श्रीमन्त महाराज, मैं ऐसा नहीं समझता।

महाराज फिलिप —— ऐसा नहीं है गजमन? क्या एक किसान राजासे ज्यादा सुखी-नहीं है? क्योंकि वह उपयोगी शारीरिक श्रम करता है और शिशुकी-सी गहरी नींदमें सोता है। वह जकड़नेवाले ऐसे रीति-रवाजोंके बाड़ेमें नहीं बंधा रहता

जिनके कारण राजा अपने-आपको आदमी नहीं महसूस कर सकता। उसके मित्र होते हैं क्योंकि उसे समकक्ष लोग मिलते हैं और जवानीमें वह अपने बचपन-की प्रियतमासे शादी करता है और फिर हट्टे-कट्टे प्यारे सहायक, बच्चे पाता है। और फिर उसकी गोदमें चढ़नेवाले नाती-पोते आते हैं। वह एक सुखी, शान्त बूढ़ा होता है क्योंकि उसने आदमीकी सच्ची जिन्दगी गुजारी है और फिर अपना काम सिद्ध करके बिना किसी ननुनचके मानो मौतके दरवाजेसे निकल जाता है।

गजमन — अपने पेशेके लिये मेहनत करता हुआ प्रत्येक प्राणी दूसरेका पेशा अपनाना चाहता है और अपने नसीबके भारको सारी दुनियाका एकमात्र भार समझता है। हर एक वस्तु अपनी अनुभूतियोंसे सीमित होती है और उसके लिये दूसरों-की अनुभूतियां दुर्बोध या यूँ कहें अनुमानकी विशाल अस्पृश्यतामें खोयी हुई शरीरहीन छाया मात्र हैं। शून्यमें अपनी अनवरत यात्रा करती हुई धरती एक अंधा और कराहता हुआ ग्रह है। वह शुक्रके दुःखोंको नहीं जानती, किन्तु ईर्ष्यभरी आंखोंसे देखते हुए कहती है, "इनमें प्रकाश और सौन्दर्य है, बस मैं ही अंधकारमय और विश्रामहीन हूँ"; जमीन जीवनकी लालसाके साथ समुद्र-की ओर बढ़ जानेका प्रयास करती है और समुद्र गतिशीलतासे थक कर प्रशान्त धरती बननेके लिये आतुर होता है लेकिन अगर यह हो जाय तो दोनों फिरसे खीजते और कूढ़ते हुए बदलनेवालेको धिक्कारेंगे; जमीन अपनी घास, अपने फूलों और पक्षियोंका अभाव महसूस करेगी और समुद्र मूँगों और गुफाओंके लिये तरसेगा क्योंकि जिसने श्रमको जीवनकी आधारशिला बनाया है उसने साथ ही साथ शक्ति भी दी, जो सत्ताको इतनी प्रिय है कि उसे खोना मृत्यु है। श्रम स्वयं शक्तिका रूप है बल्कि श्रम ही परिणामस्वरूप शक्तिका सृजन करता है और श्रमका अभाव है दैन्य और दुर्भाग्य। श्रमिक भौतिक रूपसे दिव्य होता है और अन्दरसे खाली फिर भी अपनी सीमामें धन्य। अगर शहरका सुसंस्कृत पुत्र यह देखकर ईर्ष्या करे, और पुकार उठे, "काश, मैं सीधा-सादा उस जैसा आदिम मानव होता तब कितना सुख होता।" लेकिन ऐसे वातावरण में बंध-कर उसका स्वभाव परिस्थितियोंके कटघरेपर आघात करता और विशाल क्षेत्र पानेके लिये आक्रोश करता। उनके स्वभावोंका आपसेमें परिवर्तन सम्भव नहीं है और वे अपने आप सीमित हैं क्योंकि धरतीने ही उन्हें ऐसा बनाया है, पशुवत् और ममतामयी धरती माताने जो मनकी तलाशमें टोह लेती और टटोलती रहती है। उसने अपनी ओजभरी प्रकृतिसे बेटे उत्पन्न किये, उन्हें

अपने दूध और अपनी शिराओंमें उफनती उष्ण शक्तिसे हृष्ट-पुष्ट बनाया। या फिर भरत पक्षी-से बेटे जो धरतीके वक्षसे उड़कर स्वर्गको अपना लक्ष्य बनाते हैं। ऐसी भी आत्माएं हैं जिनकी जड़ें उसके शक्तिशाली पशुत्वमें हैं और बहुत अधिक पार्थिव होते हुए भी वे सारे व्योममें फैलती हैं और आकाशकी ओर ऊंची उठती हैं। किंतु ये बिरल होती हैं और किसी भाग्यवान् देशकी नागरिक नहीं होतीं और न किसी शहर या देहातसे बंधी होती हैं। वे अपनी लीकपर विज्ञ और शाही होती हैं, धूलमें भी अपनी परिष्कृत शक्तिको अनुशासित रखकर अपनी आत्माको विशाल आधार देती हैं। एण्टसकी भांति मनुष्य अपनी जन्म-भूमि धरतीपर ही मजबूत है। उससे ऊपर उठाये जाने पर महान् जातियां अपने बौद्धिक उत्कर्षमें नष्ट हो जाती हैं। इसलिये भूमि-पुत्रको और शहरी कलमको अपनी-अपनी अवस्थामें ही रहने देना चाहिये और अगर हो सके तो दोनों एक-दूसरेके श्वास, महक और शक्तिसे ज्यादा ऊपर उठें और तरो-ताजा हों। एक अबाध ईर्ष्याको अपने पास फटकने न दे, दूसरा, व्यर्थ कल्पनासे दूर रहे जो अस्वाभाविक वापसीको प्रकृतिकी ओर लौटनेका भ्रामक नाम देती है।

महाराज फिलिप — गजमन, तुम अच्छा तर्क करते हो। हमें भगवान् और उनके संतोंने जहां बिठाया है वहां बैठकर हमें मन-ही-मन घुलना तो न चाहिये। अपने बड़प्पनकी याद किये बगैर मैं देहाती हवाका स्पर्श चाहता हूँ इसलिये कल मैं एक सामान्य रईसकी तरह जाऊंगा। मेरे सामन्तगण, एक दिनके लिये भूल जाइये कि मैं राजा हूँ, मेरे मिजाजके उतार चढ़ावपर ध्यान न देना और न मेरी सेवामें आंखें बिछाये रहना, न मान-सम्मान-भरे व्यवहारके कारण लोगोंके भ्रमको दूर करना, बल्कि सामान्य शिष्टाचार-भरा बर्ताव रखना।

गृह-प्रबन्धक — लेकिन, महाराज......

महाराज — हां, महाशय, तुम्हारा पुरातन ज्ञान......

गृह प्रबन्धक — स्पेनके राजा —

महाराज फिलिप — सर्वोपरि हैं, तुम कहोगे। लेकिन बस मनुष्योंके ऊपर ही? रीति-रिवाज राजाओंके ऊपर हुकूमत करते हैं। जैसे अनधिकार चेष्टासे राजसभा राजापर शासन किया करती है वैसे मैं तुम्हारी सड़ी-गली रूढ़ियोंको अपने ऊपर शासन न करने दूंगा। बल्कि मैं उनपर अधिकार रखूँगा, जब चाहूँगा अपनाऊंगा और जब चाहूँगा उतार फेंकूँगा। बस, तुमने विरोध करके अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। मैंने तुम्हारी बात सुन ली। और अब मेरे

सामन्तगण.........

सामन्त — महाराजकी आज्ञाका पालन होगा।

महाराज फिलिप — आगे कहो, एण्टोनियो, नाटकमें कौन अभिनय करेंगे?

बेलट्रान — यह मैं बाता सकता हूँ, महाराज, देहती लड़कियां, धरतीकी बेटियां, जिन्हें देहती हवाने लाल सुर्ख तंदुरुस्ती दी है जो उनके गालोंपर खिल रही है। वे हमारे स्पेनके सूर्यके प्रकाशसे भरी हैं, उनकी आवाज जूनो-सी है और हमारी उच्चकुलकी नारियां उनके आगे फीकी दिखेंगी। एक चक्की चलानेवालेकी सुन्दर बेटी है, अद्‌भुत है वह। वह बहुमूल्य वस्त्रोंसे सुसज्जित तो होगी ही, उस समय सारे स्पेनमें ऐसी लड़की न मिलेगी जो उसके पास खड़ी होकर खुश रह सके। मेरे बेटोंने क्या शब्दोंमें क्या संगीतमें, क्या वस्त्रोंमें और क्या तड़क-भड़कमें, किसी चीजमें अपना निष्ठापूर्ण कर्तव्य पूरा करनेमें कोताही नहीं की।

महाराज फिलिप — मैं उनके इस मनोहर कष्टसे बड़ा प्रभावित हुआ हूँ किन्तु लार्ड बेलट्रान, इन जगमगाते नाटकोंसे भी बढ़कर उदात्त काम हैं। यह नहीं कि मैं इनसे नफरत करता हूँ, यह न सोचना कि मैं इतना अधिक अनुदार या संकुचित हूँ,—या जिस काममें सच्चे हृदय अपने समृद्ध मौनको वाणी देते हों मैं उसका आदर नहीं करता। फिर भी, मेरी एक इच्छा है जिसपर मैं अनेक नाटक न्यौच्छावर कर सकता हूँ। वह इच्छा उदात्त है। एक आसान-सा शब्द उसे व्यक्त कर सता है, फिर भी मुझे सन्देह है कि वह तुम्हारे लिये बहुत भारी पड़ेगी।

बेलट्रान — मेरे स्वामी, आप मेरी सेवासे परिचित हैं और आपको मेरे आज्ञा-पालनके बारेमें शंका न होनी चाहिये। कहिये और लीजिये, और न हो सके तो भर्त्सना कीजिये।

महाराज फिलिप — सिर्फ एक उदारतापूर्ण समाधान, काउंट बेलट्रान, युद्ध-रत शक्तिशाली परिवारोंमें मधुर मैत्री, भव्य प्रतापी हृदयोंमें युद्धसे विरक्ति। ये भव्य नाटक हैं, ये ज्वलन्त मंच हैं जिन्हें प्रजाजनोंको उपहार-स्वरूप अपने राजाको देना चाहिये। कोनराट, और सामन्त बेलट्रान, जो कोप तुम्हारे दिलोंको अलग रखता है उसका मैं मान करता हूँ; फिर भी दयाको भगवान्‌का आशीर्वाद प्राप्त है और यह धर्मका संपूर्ण मनोभाव है। उस बेहतर दुर्बलताको स्वीकार करो। प्रवेश करती हुई शान्तिकी दस्तकपर अपने दिलोंको पूरा-पूरा खोल दो। दुनियाके त्यागे हुए कोपकी राखको अपने बीच न सुलगने दो और न पिछले दुःखोंको जिन्दा रखो। क्या, एकदम चुप? कोनरेड, क्या मुझे उत्तर भी न दोगे, तुम, जिसने कई बार मेरे लिये जिन्दगीतक न्यौच्छावर

कर दी थी ?

कोनरेड — मेरे मालिक, जिस ईर्ष्याको मैंने कभी पोसा ही नहीं, उसे त्यागना मुझे नहीं आता। मैं दूसरोंके प्रेमके झोंकेमें नहीं जिया करता बल्कि मेरे नसीबने मेरे लिये जो सीधी रांहें बनायी हैं उनपर चलता जाता हूँ। जो प्यार करना चाहे प्यार करे और जो घृणा करना चाहे घृणा करे, मैं दोनोंको शान्त और हल्के भावसे लेता हूँ। अपने प्रेमीको मित्रकी तरह गलेसे लगाता हूँ, अपने शत्रुका एक पहलवानकी तरह आलिंगन करता हूं। मैं अपनी मरजीके मुताबिक काम करता हूँ क्योंकि यह मेरी मरजी है। जहां जाता हूँ इसीलिये जाता हूँ कि यह मेरी राह है। अगर कोई मेरे रास्तेमें आड़ा आता है तो यह उसका चुनाव है, मेरा नहीं। और अगर उसे कष्ट भोगना पड़े तो यह भी उसीका चुनाव है, मेरा नहीं। मैं स्वयं ही अपने भाग्यका तारा हूँ। मैं उसे नहीं कोसता। मेरा भाग्य उसके हाथोंकी पहुँचसे बाहर है और मेरी आत्मा उसके प्रभावसे ऊपर। मुझे किसीसे नफरत नहीं है और अगर लार्ड बेलट्रान मेरी ओर हाथ बढ़ाये तो मैं उसे बड़ी खुशीसे पकड़ लूँगा और पुराने जख्मोंको और कबके भरे हुए घावोंको भूल जाऊंगा।

बेलट्रान — ओ, तुम बड़े उदार हो, कोनरेड, बड़े कृपालु हो। अब कौन कह सकता है कि बुरा करनेवाला माफ नहीं करता ? कोनरेडने मेरे रिश्तेदारोंको उनके अधिकारोंसे वंचित कर दिया है, मेरे गुलामोंकी हत्या की है, मुझे अपनी पुरानी जमीनसे छुट्टी दिलवाई है, मेरे बड़े परिवारको संक्षिप्त कर दिया है; किन्तु बेलट्रानको क्षमा प्रदान की जा रही है। क्या अपने उदार स्वभावको और भी विस्तृत न करोगे ? मुझे और भी क्षति पहुँचाओ ताकि तुम्हें अपने क्षमाशील हृदयको काममें लानेका नया और बृहत्तर अवसर मिले। साहब, आपकी दोस्तीसे मुझे और अधिक दुर्भाग्य और क्षतियोंका स्वागत करना पड़ेगा।

महाराज फिलिप — बस, अब और नहीं।

बेलट्रान — महाराज, क्षमा करें, इतनी गहरी ईसाई-भावनाके प्रति यह जरा प्रशंसा-मात्र थी। लार्ड कोनरेड, मैं अब आपको अधिक कष्ट न दूंगा। और शायद अच्छे संतों और पवित्र कुमारीकी सहायतासे मैं भी तुम्हें माफ करनेके लिये अपने दिलमें जरा-सा स्थान बना लूँगा।

कोनरेड — लार्ड काउंट, मैं आपसे नहीं डरता। हमारी तलवारें टकरा चुकी हैं और मेरी तलवार ज्यादा मजबूत निकली थी। मैंने जो कुछ जीता है अपने शस्त्रोंके बलपर जीता है। यदि तुम भी भाग्यको अपनी ओर रख पाते और

तलवारके बलपर उसे वफादार रख सकते तो शायद तुम भी इसी तरह विजयी होते। तुम्हारे व्यंग्यकी धारमें तेजी नहीं है।

महाराज फिलिप — इस सबसे कुछ फायदा नहीं। बस, अब और नहीं। लार्ड कोनरेड, आप सवेरेके साथ-साथ अपने महलकी ओर चल पड़ेंगे ?

कोनरेड — महाराज, आपकी कृपासे अपनी बहनोंको भी साथ ले जानेकी अनुमति मिल जाय तो।

महाराज फिलिप — रानी अपनी चहेती सहेलियोंको खोना पसन्द नहीं करती किन्तु आपको निराश करना उन्हें और भी अधिक नापसन्द है। मेरे सामन्तो, आप लोग मेरे साथ चलेंगे न, आप भी लार्ड बेलट्रान।

(राजा, बेलट्रान, गजमन, और ग्रेंडीस जाते हैं)

रोन्सीडास — हुजूर, एक शब्द।

कोनरेड — रोन्सीडास, जितना चाहो।

रोन्सीडास — यह (फुसफुसाता है) मेरे हुजूर, मैं हमेशा आपका अच्छा मित्र रहा हूँ।

कोनरेड — वह तो तुम रहे ही हो।

(रोन्सीडास जाताहै)

मेरी मीठी बहन, मैं एक कामसे घर जा रहा हूँ जिसमें मेरी उपस्थिति आवश्यक है। डोनमारियो और उनकी पत्नी तुम्हें वहां ले आयेंगे। तुम संतुष्ट हो या फिर मैं तुम्हारे लिये रुका रहूँ।

इस्मेनिया — प्यारे भैया, तुम जो भी करो, मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ होंगी।

कोनरेड — तुम्हारा सुख मेरी बड़ी-से-बड़ी शुभेच्छाओंसे भी बढ़कर हो।

इस्मेरिनया — भइया, ऐसा ही होना चाहिये वर्ना मुझे दुःख होगा।

ब्रिजिडा — उसे अब ऐसा कौन-सा काम होगा ? लड़की भगाना और क्या काम ! चलो, चलें बहन ?

इस्मेनिया — ठहर जा। हम उनके एकदम पीछे उतावलीमें न जाना चाहिये।

ब्रिजिडा — शिष्टता ? ओह, माफ करना मैं अन्धी थी।

बेसिल — अरे, तुम प्रेमी हो या मछली, एण्टोनियो ? बोलो। वह अब भी टाल-मटोल करती है।

एण्टोनियो — बोलो ?

बेसिल — शैतान तुम्हें ऐसी जगह ले जाय कि फिर तुम इसे कभी देख ही न पाओ। मेरा धीरज चुक गया।

ब्रिजिडा — बहन, मुझे पता है कि तू खड़ी-खड़ी थक गयी। बैठ जा, और उससे भी थक जाये तो अध्यवसाय बड़ा शक्तिशाली गुण है; शायद पुरस्कार स्वरूप गूँगे तुमसे बोलने लगेंगे।

इस्मेनिया — प्यारी सखी, अब मैं क्या करूं?

ब्रिजिडा — क्यों तू ही बात चला काउंट कोनरेडकी बहन। बेचारे अपने गरीब पहाड़के लिये मुहम्मद बन[1]। हाय, कसम ले लो, मुझे लगता है कि इन दोनों में तो पैगम्बरका पहाड़ ही जल्दी चलता। इसे तो शायद भूकंप भी न हिला सके। अरे! उस आदमीको हो क्या गया है? जरूर वह किसी रास्तेके खम्बेके साथ शर्त्त लगाये बैठा है।

इस्मेनिया — ब्रिजिडा, पगला गयी हो क्या? इतनी बेहया बनूँ? एक अजनबी और फिर मेरे खानदानका दुश्मन!

ब्रिजिडा — ना, उससे कभी न बोलना। सचमुच बड़ी ही बेहयाई होगी।

इस्मेनिया — ब्रिजिडा, तुम मजाक क्यों उड़ा रही हो। मैं ऐसी हल्की तो नहीं हूँ कि मुझको गूँगा बनकर रहना चाहिये ताकि लोग मुझे गलत न समझें। कमजोर और अपने आचरणके बारेमें सन्देह करनेवाले ही अपनी पवित्रताको निभाये रखनेके लिये हर शब्द और भावभंगीपर ध्यान रखें। मुझे क्यों इतने कमीनेपनके घेरेमें रखा जाय? इस सौम्य युवकके लायक कुछ गंभीर और तटस्थ वाक्योंसे उसका अभिवादन करनेको तुम बेहयाई क्यों कहती हो?

ब्रिजिडा — तुझे ऐसा नहीं करना चाहिये।

इस्मेनिया — नहीं करना चाहिये? क्यों, मैं तो जरूर करूंगी।

ब्रिजिडा — बच्ची, मैं कहती हूँ तुम्हें यह नहीं करना चाहिये।

इस्मेनिया — तब तो मैं जरूर करूंगी, इसलिये नहीं कि मैं चाहती हूँ (मैं क्यों चाहूँ?) बल्कि इसलिये कि तुम हमेशा मुझे अपनी बेकार-सी छद्म-लज्जासे उकसाती रहती हो।

ब्रिजिडा — वाह! इस आधे घण्टेसे यही तो चाहती थी तुम और अब कहती हो कि तुम्हें उकसाया गया है। उसपर धावा बोल दो, बोल दो धावा। मैं यहां सहायक सेनाके रूपमें खड़ी हूँ।

इस्मेनिया — क्या असम्भव जानवर हो! लेकिन नहीं! अब तुम मुझे रास्तेसे

[1] अंग्रेजीकी एक कहावत है अगर पहाड़ मुहम्मदतक नहीं आता तो मुहम्मदको पहाड़तक जाना होगा।

न हटा सकोगी।

ब्रिजिडा —— मेरा यह मतलब भी न था।

इस्मेनिया —— महाशय ——

बेसिल —— एण्टोनियो, जागो। अपने पौरुषको बटोर लो वरना तुम्हें हमेशाके लिये शर्मिन्दा ही रहना पड़ेगा।

इस्मेनिया —— ब्रिजिडा, मेरी मदद कर।

ब्रिजिडा —— ना, मैं नहीं, बहना।

इस्मेनिया —— महाशय, आप दैवी ढंगसे बोले थे। महाशय, मैं आपको यह याद दिलानेके लिये नहीं बोल रही कि हम पहले मिल चुके हैं —— जिसकी आपको याद भी न होगी —— किन्तु मैं नहीं चाहती कि आप या कोई भी मेरे बारेमें यह समझे कि चूँकि आप एण्टोनियो हैं और मेरे दुश्मन हैं और मुझे बड़ी चोट पहुँचा चुके हैं —— दिलमें —— इसलिये जब कोई प्रशंसा योग्य बात कहता है या करता है तो मैं उसकी प्रशंसा नहीं कर पाती या उसके गुणसे प्यार नहीं कर सकती चाहे उसका पात्र कोई क्यों न हो। मेरा यही मतलब था। मैं यह नहीं सह सकती कि लोगोंको मेरी इस बातका पता न चले। मैं इसीलिये बोली।

बेसिल —— बोलो या फिर हमेशाके लिये गूँगे हो जाओ।

इस्मेनिया —— अच्छा, तो आपने मेरे बोलनेको गलत समझा है और इसलिये मेरी अवहेलना करते हैं। साहब, आपका यह ख्याल ठीक हो सकता है कि आपकी जबान इतनी मीठी है कि वह पक्षियोंको पेड़ोंको टहनियोंपर ही फंसा सकती है, दुश्मनको भी सम्मोहित कर सकती है —— ऐसी भी कोई गरीब अभागी होगी —— जिसके हृदयको वह जादूसे बाहर खींच सके। अगर आप ऐसी सस्ती चीजको पसन्द करते हैं और उसे अपने हाथोंसे थामें हों तो मैं लुट गयी —— खो गयी —— हाय, मेरी किस्मत! ब्रिजिडा!

बेसिल —— छिः, कैसा अधम मौन है! बोलो भी! वह चकरा गयी है। बोल भी, ओ मेमने, बोल!

इस्मेनिया —— हालांकि है ऐसा ही फिर भी एण्टोनियो, तुम मुझे उन जैसा समझकर मेरे साथ अन्याय, घोर अन्याय कर रहे हो। तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे मुख-से एक शब्दकी प्रतीक्षा कर रही हूँ ताकि तुम्हारे आगे प्रणय निवेदन कर सकूँ, तुम्हारा एक प्रेममय शब्द सुनते ही तुम्हारी दासी बननेके लिये तरस रही हूँ —— तुम्हारा एकमात्र शब्द और मैं तुम्हारी हूँ।

बेसिल —— सराहनीय देवी! हा दैव, क्या यह सुननेके बाद भी गूँगे रह सकते हो?

इस्मेनिया –– तुम अब भी मेरा तिरस्कार करते हो। इसके बावजूद मुझे नाराज न कर सकोगे। क्या तुम कल्पना करते हो कि चूँकि मैं लार्ड कोनरेडकी बहन हूँ और वेलास्क गलीमें डोना क्लारा सांता क्रूजके मकानमें रहती हूँ जिसके संगमरमरके अग्रभाग और विलक्षण छड़ोंवाली खिड़कियोंको तुमने देखा है इसलिये यदि तुम सांध्य पूजाके बाद जब रास्ते सुनसान हो जाते हैं, वहां आ खड़े होओ तो मैं तुम्हें बुलवा भेजूँगी ? सच, सचमुच, मैं इस लायक नहीं हूँ कि तुम मेरे बारेमें इतनी बुरी धारणा बनाओ। अगर तुम उदार हो और मेरा तिरस्कार नहीं करते तो मेरे निषेधके तात्पर्यको समझ सकोगे। ब्रिजिडा !

ब्रिजिडा –– गिने-चुने शब्दोंके साथ, निष्प्राण और मायूस शब्दोंके साथ चली आओ। तुमने उसकी बोलती बन्द कर दी है।

(जाती है)

एण्टोनियो –– हे भगवान् ! यह तो वही थी –– उसके शब्द स्वप्न न थे, फिर भी मैं गूँगा था। उसके हिचकिचाते खिलवाड़में भी एक राजसी उदात्तता थी। जब वह अधिक मुस्कुरायी तो रोमांचने मेरे हृदयकी धड़कनको इतना तेज कर दिया कि बोलना असम्भव था। हाय, मैं गूँगा और लज्जाशील बना रहा जब कि एक ही कदममें स्वर्ग हथिया सकता था।

बेसिल –– एण्टोनियो !

एण्टोनियो –– मैंने धोखा नहीं खाया। वह लजा रही थी और उसके गालोंकी चारु लालिमा उसके हृदयके अक्षय समुद्रसे उमड़ रही थी। वे ऐसे गुलाब थे जो गुलाबोंको भी मात करते हैं। हां, हर शब्द बड़े राजोचित ढंगसे उसके गोरे गालपर रंग डालता हुआ नये असम्भव सौन्दर्यका सर्जन करता था। वह लजाई और मानो इस सुखद दुर्बलताकी नाराज शरमिन्दगीमें उसने अपने छोटे शाही सिरको ऊंचा उठाये रखा और नीचे झुकती प्यारी पलकोंको व्यर्थ ही उठानेका प्रयास करती रही। काश, मेरी जीभ एक बार भी आंखोंकी तरह दिलेर हो पाती ! किन्तु वे तो मानों रस्सियोंसे उसके साथ बन्ध चुकी थी। उनकी हिम्मत तो नग्न अनिवार्यता थी।

बेसिल –– आह बेचारे एण्टोनियो –– तुमपर जादू चल गया है, तुम अपंग बना दिये गये हो एण्टोनियो। जिसने तुम्हारी यह हालत की उसे तुम दुःखसे कराहना सिखाना। अब उसकी एक इंद्रिय हमेशा गायब रहा करेगी। कुछ देर पहले उसके जीभ न थी। अब वह लौट आयी है तो कानोंने छुट्टी ले ली। सुनते हो, एण्टोनियो, हम यहां क्यों रुके हैं ?

एण्टोनियो —— मैं स्वप्न देख रहा हूँ। जहां चाहो ले चलो। क्योंकि अब सारी दुनिया-में कोई स्थान नहीं रहा, यहां तो वह है या फिर मौन।

दृश्य २

काउंट बेलट्रानके महलका बगीचा

एण्टोनियो, बेसिल

बेसिल —— तुमने मुझे शर्मिन्दा कर दिया। यह क्या, एक भद्र महिलासे प्रणय-निवेदन करवाया, उससे जिसका चेहरा इतना सुन्दर था, अभिनन्दन इतना सुन्दर था कि उसके अन्दर एक देवी जान पड़ती थी। तुम्हें उत्तर देनेका अवसर देनेके लिये वह हर वाक्यके बाद विराम देती थी। लेकिन सतत उत्तरके रूपमें निर्जीव मौन और लज्जा ही पा सकी। छिः, तुम एण्टोनियो नहीं हो, तुम बेलट्रानकी सन्तान नहीं। जाओ, अपने सजातियोंको आलप्सकी हिम-राशिमें ढूँढो या फिर किसी खम्भेको अपना पिता कहो।

एण्टोनियो —— बेसिल, मैं तुम्हारी लांछनाका अधिकारी हूँ। फिर भी अगर ऐसा अवसर दोबारा हाथ आये तो मैं जानता हूँ कि मैं फिरसे गूँगा बन जाऊंगा। मेरी जीभ कल्पनामें खूब दौड़ती है लेकिन वास्तविकता आते ही बांझ बन जाती है। जब मैं उससे दूर होता हुँ तो एक देवकी भान्ति उससे प्रेम निवेदन करता हूँ, मेरे मनमें शब्द वैसी ही छलकते हैं जैसे विशाल नीलमें जल। लेकिन उसके प्रकट होते ही मैं उसका दीन गूँगा बन जाता हूँ। वह मुझसे अपनी मनमानी कर सकती है। बस उसके शब्द याद रखो। जब वह, हां, वह, मेरी शुभ्र देवी अपनी मुस्काती आंखोंमें दिव्य करुणा और अपनी आवाजमें सृष्टिका महान् संगीत भरे लज्जासे आरक्त निष्कपटताके साथ उठी, और जब उस अर्ध-नारी और अर्ध अप्सराने मेरे प्रेमनिवेदनके बिना ही अपनी अपूर्व उदारताके साथ मेरा अभिषेक किया और अपना हृदय मेरे ऊपर उंडेल दिया तब भला बोलना संभव था? ओ, उस समय बोलना छिछले प्रेमका सूचक होता।

बेसिल —— भागो! तुम नम्र प्रेमी लोग पुरुषत्व के कलंक हो, हमारे प्रभुत्वके प्रति विद्रोही। मैं तुम्हारी सारी जातिको एक ऐसे द्वीपमें देश-निष्कासित करना चाहूँगा जहां एक भी घाघरा न आ सके ताकि तुम्हारी सारी जातिका अन्त हो

जाय।

एण्टोनियो — तुम प्रेम-भावके ही विरुद्ध बोल रहे हो, जो सेवापर जीवित है।

बेसिल — निर्जीव विद्रोह! क्या पुरुषको स्त्रीसे उच्चतर नहीं बनाया गया ताकि वह स्त्रीपर काबू रखे? उसकी आज्ञाकारिता पानेके लिये वह अधिक बलवान् है और ज्ञानमें अधिक श्रेष्ठ है ताकि उसकी इच्छाशक्तिको मार्ग दिखा सके और बुद्धिमें भी आगे ही है ताकि उसे चुप रख सके। तीन भीमकाय महाकार्य! अगर स्त्रियोंको एक बार छूट मिल जाय तो वे धरतीपर नया शब्द-प्रलय ले आयेंगी। समझदारीसे सृष्टिको सिरके बल खड़ा कर देंगी। तर्कशास्त्रको नया रूप मिलेगा, गणित नशेमें झूमने लगेगा और बुद्धि निराश होकर अपनी गद्दी त्याग देगी। एक बार स्त्रीकी इच्छा शक्ति चल पड़े तो फिर इन्द्रका वज्र भी उसे रोकनेमें समर्थ न होगा।

एण्टोनियो — ओ! तुम मजेमें बोल सकते हो। अगर तुमने प्रेम किया होता तो तुम अपनी बातको जरा भी तकलीफ किये बिना वापिस ले लेते।

बेसिल — मैं और बात वापिस लूं! एण्टोनियो, काश मुझे तुम्हारी हालतका पहले-से पता होता! मैं तुम्हें सिखाता कि प्रेम कैसे किया जाता है।

एण्टोनियो — चलो तुम किसी स्त्रीसे प्रणय निवेदन करोगे? कम-से-कम तख्तेपर नक्शा बनाकर सिखा दो।

बेसिल — खैर, तुम्हारे कमजोर मनको ढाढस मिले तो यही करूंगा। और अब मैं सोचता हूँ तो इसी निश्चयपर पहूँचता हूँ कि मैं कामशास्त्रकी एक नयी पुस्तक प्रकाशित करूंगा और एकमात्र स्मरणीय ओविद[1] बनूँगा।

एण्टोनियो — बोलो, बोलते जाओ, जरा सुनें तो।

बेसिल — सबसे पहले मैं उसे चूमूँगा।

एण्टोनियो — क्या? उसकी इजाजतके बिना ही?

बेसिल — इजाजत? एक औरतसे उसे चूमनेकी इजाजत मांगना? वाह, इसके सिवा वह बनी ही किसलिये?

एण्टोनियो — और वह नाराज हो गयी तो?

बेसिल — तो और भी अच्छा! तब तुम बार-बार उसे दुहराकर उसे अपने तेजस्वी पौरुषका कायल कर लेना। यह शुरूमें ही हो जाय तो तुम बड़े फायदेमें रहोगे, बल्कि यह तुम्हारा कर्तव्य है जो तुम्हारे लिये सुखद भी है। यही नहीं औरत

1 लेटिन भाषाका एक बड़ा कवि।

भी इसे पसन्द करती है। ऐसे अवसरोंपर वह डांटे भी तो मैं उसे अपनी हाजिर जवाबीसे चुप कर दूंगा। हंसी अभेद्य किलोंकी दीवारोंको भी गिरा लेती है। मैं एक बार उसके चेहरेपर मुस्कान ला सकूँ तो बस विजय है, वाक्-पटुता, हास्य और शारीरिक बलकी, पैदल, घुड़सवार, तोपखानेकी तिरंगी सेनाके द्वारा प्राप्त विजय। बादमें आती है शान्तिस्थापना जो पुरोहितकी मददसे या उसके बिना भी हो सकती है। वह तो सिर्फ औपचारिक है जिससे मुख्य बातमें कोई फर्क नहीं पड़ता।

एण्टोनियो — तुम जैसोंके लिये तो इनक्विजिशन[1] होने चाहिये। फिर उसके बाद ?

बेसिल — कुछ भी नहीं, यदि तुम अपनी विजयको स्थायी बनाना चाहते हो, और अमीर तैमूरकी तरह लूटने खसूटनेपर ही संतुष्ट न हो तो और बात है। मैं तुम्हें वह भी सिखा दूँगा। उसे आटच और दुर्दमनीय रूपसे अपनी हीनताका भान करा देना। उसे दिखा देना कि तुम्हारा मिलना उसके लिये कितना बड़ा सौभाग्य है जिसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनेके लिये उसकी सारी जिन्दगी भी बहुत छोटी है; कि तुमने उसे उसके भलेके लिये ही लूटा है, उसे सभ्य, शिष्ट बनानेके या प्रशिक्षण देनेके लिये ही। अगर वह एक भी शब्द ऐसा बोले जिसमें प्रेमकी कमी हो तो ताड़ना करो। उसपर अत्यधिक अत्याचार करो और उसके लिये उससे कृतज्ञता वसूल करो। उसकी ऐसी आदत डालो कि जब तुम उसे पीटो तो वह तुम्हारा जय-जयकार करे। ये सब बातें मामूली हैं और हर बुद्धिमान परोपकारी विजेताने इस चालाकीको सीखा है। तब वह तुमसे हमेशा प्रेम करेगी।

एण्टोनियो — तुम एकदम नास्तिक हो और अगर प्रेमका देवता अब भी अपना पवित्र न्यायालय रखता है तो इन बातोंके लिये तुम जलाये जाओगे।

बेसिल — मैं उनसे सुरक्षित हूँ।

एण्टोनियो — और इसीलिये आरामसे शेखी बघारते हुए ऐसे काल्पनिक युद्धोंका परिचालन करते हो जिनका भार औरोंपर होता है। मैंने ऐसे अ-सैनिक शहरी-बाबूको कुरसीपर बैठे-बैठे शाब्दिक हत्याकांडद्वारा विख्यात विजय पाते देखा है। वे मानचित्रपर अपनी युद्ध-कौशलभरी उंगली चलाते हुए चिल्लायेंगे "युजेनकी गलती! यहां मार्लबोका दोष था, और देखो, एक बच्चातक देख सकता है विलरकी साफ भूल जिसके कारण उसने मालप्लाको गंवा दिया!"

1 ईसाइयोंके धार्मिक न्यायालय जो बड़ी कड़ी सजाएं दिया करते थे।

मेरा ख्याल है कि तुम भी ऐसे ही कागज-कलमके धनी युद्धनीतिज्ञ हो। एक ऐसे ही प्रणययाचक!

बेसिल —— भगवान्की कसम, एण्टोनियो, मैं तुमपर दया करूंगा। तुम मेरा महान् उदाहरण देखोगे और मुझसे सीखोगे।

एण्टोनियो —— अच्छा मैं तुम्हारा शिष्य हूँ। लेकिन सुनो, एक सलौना चेहरा हो, वरना मैं इस मामलेमें न पड़ूँगा, और भले घरकी हो वरना मैं तुम्हारे कौशल और पराक्रमको बट्टेखातेमें समझूँगा।

बेसिल —— स्वीकार है। लेकिन कहते हैं कि परीक्षण इसी ऊटपटांग शरीरमें किये जाते हैं। मैं तुम्हारी शर्तें स्वीकारता हूँ ताकि तुम इसका लाभ उठाकर मेरा मूल्य कम न कर दो।

एण्टोनियो —— देख लो दुश्मन आ ही रहा है। अगर उसे जीत सको तो तुम्हारा जय-जयकार है।

बेसिल —— भगवान्की कसम, अनुपम चेहरा है। इस पागल प्रयोगके लिये अमूल्य वस्तु है।

एण्टोनियो —— आह, तुम पीछे हट रहे हो?

बेसिल —— तिल भर भी नहीं। देखना, मैं उसके आगे कैसे जीतके नगाड़े बजाता हूँ।

एण्टोनियो —— चुप, यह रही।

(ब्रिजिडाका प्रवेश)

ब्रिजिडा —— महाशय, मुझे आपको यह पत्र देनेका आदेश मिला है।

बेसिल —— जानेमन मुझे?

ब्रिजिडा —— यदि आप सचमुच वही हैं तो मेरी किताबोंमें आपकी विवरण-सूची है। मैं अध्ययन कर लूँ। कवियोंके लम्बे बाल, अवर्णनीय वेश, विनम्र भाषण शैली —— महाशय, मेरा ख्याल है आपके लिये नहीं,——अभिजात शिष्टता,——धत्, ना! —— एक खूबसूरत चेहरा। मुझे विश्वास है, महाशय आपके लिये नहीं है।

बेसिल —— हूँ।

एण्टोनियो —— क्यों, भाई, एकदम गुमसुम क्यों? अपना तोपखाना खोलकर हमला बोल दो न!

बेसिल —— ठहरो, ठहरो, क्या विजेतासे उतावली करवानी चाहिये? खुद सीजर-को भी प्रयास करनेसे पहले मैदानकी जांच करनी चाहिये। शीघ्र ही तुम मेरी विजय सुनोगे।

ब्रिजिडा — आप अपना खत लेंगे महाशय ?

एण्टोनियो — देवि, तो मेरे लिये है ? बड़ा नाजुक-सा खत है और मुझे अचरज है किसने भेजा होगा। मैं इस लिखावटको नहीं पहचानता। देखनेमें किसी महिलाकी-सी लगती है किन्तु साथ ही साथ पौरुषका कुछ स्पर्श भी है — उसके प्रवाहमें गति और प्रबल शक्ति है। सुन्दरी, यह किसी ओरसे आया है ?

ब्रिजिडा — क्यों, सरकार, मैं उसका हस्ताक्षर थोड़े ही हूँ। अगर आप अन्दर देखेंगे तो मुझे शंका नहीं कि आपको अपनी पहेलीका हल मिल जायेगा।

बेसिल — देख लो, होशियार औरत है, एण्टोनियो, और सिर्फ अठारह वर्षकी, या फिर एक चमत्कार है।

एण्टोनियो — हां, भाईसाहब।

ब्रिजिडा — यह हाजिर जवाब दिमाग मुझे अजीब तरहसे घूरता है। मुझे भय है कहीं पहचान न ले।

एण्टोनियो — इस्मेनिया ओस्ट्रोकाडिज ! ओ मेरे आह्लाद !

ब्रिजिडा — आप बीमार हैं, साहब, आपका रंग बदल रहा है।

एण्टोनियो — भगवान्‌की कसम, अगर मौत भी मेरे दिलके दरवाजेतक आ पहुँची हो या उसका झकोरा मेरी पलकोंटर आ चुका हो तो भी यह खत उसे निर्वासित कर देगा। यह लिखावट मेरे आगे तैर रही है।

ब्रिजिडा — हुजूर, आप एकदम पीले पड़ गये हैं। कहीं चिट्ठीमें जहर तो नहीं है ?

एण्टोनियो — ओ, भगवान् करे हर घंटे ऐसा जहर मिलता रहे। अब मैं अपने सुख-से खिलवाड़ न करूँ, वह पंख फड़फड़ा उड़े या एक स्वप्न बन जाय। हे पत्र ! स्वागत है क्योंकि तुम उस गोरे हाथसे आये हो जिसे मैं पूजता हूँ।

लार्ड एण्टोनियोकी सेवामें,

महाशय, मेरी इस साहसभरी प्रेम-याचनाको आप कैसा मानेंगे, मैं आपके विचारोंमें कैसे तड़पती हूँ, यह सोचते हुए डर लगता है। बिना किसी लाग-लपेटके सच्ची बात सुनो एण्टोनियो, मैं तुम्हारे प्यारके बिना जिन्दा नहीं रह सकती। यदि तुम इस इकरारके कारण मेरे कुलीन होनेमें शंका करो या इसे बेलगाम जल्दबाजी या अस्थिरता मान लो,—जैसे पुरुष आमतौरपर दावा करते हैं कि जल्दबाजीमें किया गया प्रेम उतनी ही जल्दीसे खतम भी हो जाता है — तो इस चिट्ठीको फाड़कर फेंक दो और साथ ही मेरे दिलको भी। लेकिन फिर भी मैं आशा करती हूँ कि तुम उसके टुकड़े-टुकड़े न करोगे। मुझे तुमसे

मुहब्बत है और जबसे मैंने अपने कुलोंकी अनबन देखी है और देखा है कि तुम्हारा अभिजात भय मुझे अपने स्वामीसे दूर रखता है तभीसे उस दूरीको पूरनेके लिये मैंने हया और औरतोंमें प्रशंसित नखरोंको दूर फेंक दिया है। एण्टोनियो, मेरे पास आओ। आओ, किन्तु, मानके साथ! मैं इतनी गिरी हुई नहीं हूँ और न अपने कुलकी या अपनी कुलीनतासे इतनी गिर सकती हूँ कि अधम रूपसे प्यार करूं। प्यारे, मैंने हयाके लजीले ढोंग-फरेब दूर फेंक दिये हैं किन्तु सच्ची हयाको तुम्हारी तसवीरकी तरह कलेजेसे लगाए रहूँगी। खतम करनेको मन नहीं करता, फिर भी करना तो पड़ेगा ही। इसलिये यों खत्म करती हूँ "प्राण प्यारे, मुझसे मुहब्बत रखो, आदर करो या मुझे भूल जाओ।"

ओ प्रिय अभिव्यक्ति, स्वर्गसे धरतीपर आयी हुई मधुरतम रचना, मेरे होंठोंको पवित्र कर। काश मैं तुम्हें वह गोरा हाथ समझ सकूँ जिसने तुम्हें लिखा है, तब तो मैं धन्य हो जाऊंगा। तूने मुझे दुबारा बनाया है। मैं महसूस करता हूँ कि मैं एण्टोनियोसे इतर हूँ। आकाश मुझे ज्यादा नजदीक दीख रहा है या धरती एक पवित्र रोशनीमें लिपटी हुई है! ओ आओ! मैं इसे आंखों-द्वारा पीकर अपने हृदयपर ऐसे अंकित कर दूंगा कि जब मौत आकर उसे देखेगी तो एक स्मारक और अमर कृति समझकर छोड़ देगी।

बेसिल — कुमारी, तुम देवी इस्मेनियाके घरानेकी हो?

ब्रिजिडा — उनकी एक गरीब रिश्तेदार हूँ, महाशय।

बेसिल — तुम्हारा चेहरा विचित्र ढंगसे जाना-पहचाना लगता है। क्या मैंने तुम्हें किसी ऐसी जगह नहीं देखा जहां मैं हमेशा आता-जाता रहता हूँ।

ब्रिजिडा — ओ हुजूर, मुझे आशा है आप मुझे इतनी गयी बीती न समझेंगे। मैं गरीब हूँ लेकिन सच्चरित्र।

बेसिल — कैसे, कैसे?

ब्रिजिडा — मुझे नहीं मालूम कैसे। मैं बस वही बोली जो अन्तरात्माने बुलवाया।

बेसिल — तुम्हारी जीभ बड़ी फुरतीली है। तुमसे दो शब्द कहने हैं।

ब्रिजिडा — खुशीसे हुजूर, अगर आप सीमासे आगे न बढ़ें।

बेसिल — हे सुन्दरी.........

ब्रिजिडा — ओह हुजूर, मुझे खुशी है मैंने आपकी बात सुन ली। मुझे आपके दो शब्द बहुत पसन्द आये। आपपर भगवान्की कृपा रहे।

बेसिल — लेकिन, मैंने तो बात शुरू भी नहीं की।

ब्रिजिडा — आपके गणितके लिये शर्मकी बात है। आपके अध्यापकने अगर छड़ीके साथ ऐसी ही आजादी बरती होती तो वे ज्यादा सावधान विद्यार्थी बना पाते।

बेसिल — भगवान्की मार, मेरी बातें सुनोगी ?

ब्रिजिडा — खैर साहब, मैं आंकड़ोंपर जोर नहीं दूंगी लेकिन अपने ही भलेके लिये गालियां मत दीजिये। इतने खिंचाव कोई भी वाक्पटुता न सह सकेगी।

बेसिल — ध्यानसे सुनो तो तुम्हें ऐसी खबर सुनाऊंगा कि तुम्हारी तबीयत हरी हो जायगी।

ब्रिजिडा — खबर अच्छी हो, नयी हो, और दुहराने लायक हो तो मैं आपका एहसान मानूँगी।

बेसिल — बेशक, कुमारी, तुम बेहद खूबसूरत हो।

ब्रिजिडा — महाशय, महारानी एन मर चुकी है। दूसरी खबर सुनाइये।

बेसिल — दूसरी खबर यह है कि मैं तुम्हें चूमूँगा।

ब्रिजिडा — अजी, साहब, यह तो भविष्यवाणी है। मौन और चुम्बन हम सबपर आते हैं और कौनसे रोगसे पहला और किसके द्वारा दूसरा आता है, ज्ञानी इसकी पूर्व सूचना देनेकी परवाह नहीं करते। दुर्घटनाओंको पहलेसे जानकर कोई खास लाभ नहीं होता। ईश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि जब वह आ ही जाय तो मैं अगर और अच्छी तरह नहीं तो उदासीनतासे उसे ले सकूँ।

बेसिल — मेरी जानकी कसम, और विलम्ब किये बिना मैं अभी चुम्बन करूंगा।

ब्रिजिडा — किस बूतेपर ?

बेसिल — क्या मैंने अभी-अभी नहीं कहा कि तुम सुन्दर हो ?

ब्रिजिडा — मेरे दर्पणने भी यही कहा है, एक बार नहीं, हजारों बार, किन्तु अभीतक उसने चूमनेकी कोशिश नहीं की। जब वह चूमेगा तब मैं आपके तर्कको मान लूँगी। ना, हम एक-दूसरेके काफी नजदीक हैं, मेहरबानी करके दूरी बनाये रखिये।

बेसिल — मैं अपना तर्क होंठोंसे प्रमाणित करूंगा।

ब्रिजिडा — और मैं अपनी युक्तिकी हाथसे रक्षा करूंगी। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ वह दोनोंमें अधिक योग्य तार्किक होगा।

बेसिल — अच्छा !

ब्रिजिडा — महाशय, मुझे खुशी हुई कि आप ऐसा समझते हैं। महाराज, मैं रुक नहीं सकती। मैं मालकिनसे क्या कहूँ ?

एण्टोनियो — उनसे कहना मेरा दिल उनके पैरों तले है और मैं उनका हूँ, बस उन्हीं-

का, जबतक आकाश है तबतक और उसके बाद भी उन्हींका हूँ। उनसे कहना प्रेम-देवकी माताने जब स्वर्णिम स्वर्गसे उतरकर इलियन एंचीससकी गोदमें आकर उसे धन्य किया था, मैं अपनी दीनतापर उनकी मधुर कृपा पाकर उससे भी अधिक धन्य हो उठा। उनसे कहना कि मैं उन्हें देवीसा सम्मान देता हूँ और एक सन्तकी तरह पूजता हूँ; कि मेरे लिये जिन्दगी और वह एक ही है क्यों-कि उन्हें छोड़कर मेरा कोई दिल ही नहीं। उनके सुखके सिवा मेरे लिये कोई वायुमण्डल नहीं, उनकी आंखें जो प्रदान कर दें बस वही मेरे लिये प्रकाश है। उनसे कहना, हां, कहना......

ब्रिजिडा — महाशय, रुकिये, रुकिये। आप ही यह सब कह लेना। मुझे तो इसका आधा भी याद न रहेगा और दूसरा आधा मेरी समझमें ही नहीं आया। क्या मैं उनसे कह दूँ कि आप जरूर आयेंगे?

एण्टोनियो — उतने ही निश्चित रूपसे जैसे सूर्य अपने नियत समयपर, या आधी रात अपने कामपर। मैं जरूर आऊंगा।

ब्रिजिडा — अच्छा, आखिर तीन शब्द तो ऐसे हैं जिन्हें एक गरीब लड़की समझ सकती है। याद रखिये, आप अंधेरेके बाद वेलास्क चौकसे एक तीरकी दूरी-पर ऐसी जगह प्रतीक्षा करें जो कुमारीकी खिड़कीसे दिखायी देती हो। तब मैं आपके पास आऊंगी। साहब, अगर आपकी तलवार आपकी जबानसे आधी भी तेज और बेरोक है तो मुझे आपको एण्टोनियोके साथ ले जानेमें खुशी होगी, होगी, सन्त इआगोकी दयासे दोनोंमेंसे एककी भी जरूरत न हो। साहब, आप गमगीन दीखते हैं। भगवान् आपको हाजिर जवाब और वाक्पटु महानुभाव बनाये रखे।

(जाती है)

एण्टोनियो — ए भाई, मैं खुशीके मारे उन्मत्त हो गया हूँ। क्षमा करना, तुम्हें छोड़-कर जा रहा हूँ। एकान्तमें रहनेके लिये देव होना चाहिये और मैं खुद अपने लिये देवता स्वरूप बन गया हूँ। इस पत्रने मुझे देव बना दिया है। मैं अपने सौभाग्यके साथ अकेला रहूँगा।

(जाता है)

बेसिल — भगवान् करे कि मैं भी उन्मत्त न हो जाऊं! सन्तगण और देवदूतो! यह क्या है? यह कैसे हुआ? क्या सूर्य अब भी आकाशमें है? वह पक्षियों-का कलरव है या ढोलक? मैं पिये हुए तो नहीं हूँ। उस पेड़ और उसपर बैठी गिलहरीमें अच्छी तरह भेद कर सकता हूँ। क्या मैं बेसिल नहीं हूँ? वह बेसिल

जिसे लोग चतुर और वाक्पटु बेसिल कहते हैं? क्या मैं मांके पेटसे ही हंसता हुआ नहीं आया था? क्या मेरी पहली चीख उस दुनियाका मजाक न थी जिसमें मैंने प्रवेश किया था? क्या मैंने मांका दूध पीनेसे पहले ही उसपर एक कल्पना नहीं जड़ दी थी। मर कहीं का! क्या मुझे एक जरा-सी छोकरीकी जीभने दे पटका और हरा दिया? गुस्ताखियोंकी भण्डारी एक मामूली छोकरीने मुँह बन्द कर दिया? है तो कुछ ऐसा ही, पर हो नहीं सकता। मुझे जड़वादीके सिद्धान्तोंपर विश्वास होने लगा है। मेरी दृष्टिमें जठर रसका मान बढ़ रहा है। प्रतिभा आखिर बदहजमीका ही तो एक रूप है। शेक्सपियरकी एक पंक्ति भेड़के मांसका देवीकरण है और अफलातूनके चिन्तनने रुग्न तंतुके पलायनको स्याहीमें पकड़कर अमर कर दिया गया है। आज सवेरे मैंने नाश्तेमें क्या खाया था? नमकीन हैरींग मछली? डबल रोटी? मुरब्बा? चाय? हे नमकीन हेरींग, क्या तू मूर्खताका ठोस रूप है और मुरब्बा मसखरेपनका दुश्मन? ऐसा ही होगा। हे महान् जठराग्नि! हे मां! हे उद्धारक! मैं तेरे आगे नतमस्तक हूँ। हे सुन्दर देवी, प्रसन्न हो, अपने भक्तपर प्रसन्न हो।

उठो बेसिल, आज या तो अपनी ख्यातिके कलंकको धो डालो या चतुरोंकी सूचीमेंसे तुम्हारा नाम हमेशाके लिये कट जायगा। अपने-आपको संकेत और व्यंगके कवचसे सजा लो, दिल्लगीकी तलवार कमरमें कस लो और हाजिरजवाबीकी ढाल उठाओ। मैं आज रात इस लड़कीसे मिलूँगा। मैं उसे मजाकोंकी मारसे चूर-चूर कर दूंगा, व्यंगोंसे तड़पाऊंगा, उपहाससे गुदगुदाऊंगा, सारे बदनमें चुटकुले चुभाऊंगा। मेरा मसखरापन उसकी नाकमें दम कर देगा, उसे तोड़-मरोड़ देगा, पेट दुखा देगा, उसकी मौत ला देगा, उसे सूलीपर लटका देगा, घसीटेगा, टुकड़े-टुकड़े कर देगा, और अगर यह सब बेकार गया तो, शैतानकी कसम, अन्तिम प्रतिशोधमें उससे शादी कर लूँगा। हे सन्तो!

दृश्य ३

इस्मेनियाका कमरा

इस्मेनिया — ब्रिजिडा देर लगा रही है। हाय, उन्होंने शायद मुझे ठुकरा दिया है, इसीलिये वह आते सकुचा रही है, क्योंकि वह जानती है कि इस तरह वह मेरी मौत लायगी। ऐसा नहीं है। उन्होंने उत्तर देनेके लिये उसे रोक रखा है।

हालांकि मैंने कोई मांगा नहीं था। मेरे अन्दर डर समा गया है। ऐ मेरे दिल, मैंने तुझे एक खतरनाक दांवपर चढ़ाया है। अगर न जीत पायी तो बहुत दुःखी होऊंगी। हां, वही है। काश, मेरी आशाएं उसे पंख दे पातीं या उसे सशरीर उठाकर खिड़कीमेंसे ले आतीं और इस प्रतीक्षाकी अवधिको कम कर सकतीं। चेहरेपरसे कुछ न पढ़ पायी। उसकी पदध्वनि आशाभरी लगती है।

(ब्रिजिडाका प्रवेश)

प्रियतमा ब्रिजिडा — आखिर आ गयी! क्या कहता है एण्टोनियो? मुझे जल्दी बता। हे भगवान्।! तुम उदास लगती हो।

ब्रिजिडा — आह, सन्त केथेरीनो! मैं कितनी थक गयी हूँ! मेरे कान भी थक गये हैं। मेरा ख्याल है कि मैंने इन बीस मिनटोंमें जितनी बे-सिर पैरकी बातें सुनी हैं उतनी अपने अठारह वर्षके कुल जीवनमें भी न सुनी होंगी। बच्ची, एण्टोनियो जैसा पागल प्रेमी पानेके लिये तूने जरूर कोई अक्षम्य पाप किया होगा?

इस्मेनिया — लेकिन, ब्रिजिडा!

ब्रिजिडा — और उसकी छाया भी, वह तीन सिरवाला हाजिर जवाब, जो उसकी काव्यनिधिपर पहरा देता है। मेरा ख्याल है कि अगर मैंने उसके तीनों मुखों-को बन्द करनेका साधन न जुटाया होता तो शायद वह मुझे खा ही जाता।

इस्मेनिया — क्यों, ब्रिजिडा, ब्रिजिडा!

ब्रिजिडा — दैयारे! देखो तो आदमी कैसी गप लगाते हैं! मैंने इस बेसिलकी कितनी ख्याति सुनी है। हाजिर जवाबोंका बादशाह, कालकी जीभ और उसका अट्टहास्य! लेकिन छोकरी, अपने ग्राहकसे किसी कूँजड़ीके मामूली घिसे-पिटे ढिठाईभरे उत्तरोंसे उसकी बोलती न बन्द की तो मेरा नाम नहीं। वह और हाजिर जवाब! सचमुच! लेकिन उसके मुँहसे एक भी बोल ऐसा न निकला जिसे हमारा कूढ़ मगज पेड्रा शह न दे सके।

इस्मेनिया — कैसी बहक है! इस सबका एण्टोनियोसे क्या मतलब? ब्रिजिडा तेरा दिमाग खराब हो गया है। एण्टोनियोने क्या कहा? अरी लड़की, मैं उत्सुकताके कांटोंपर खड़ी हूँ।

ब्रिजिडा — मैं जल्दी-से-जल्दी उसी बातपर तो आ रही हूँ। हे भगवान्! तुम कैसी दहकती जल्दीमें हो इस्मेनिया! बच्ची, तुम्हारा रंग फक हो गया है। मैं अपने कमरेसे तुम्हारे लिये नौसादर लिये आती हूँ। एक छोटी पांसेदार बोतलमें रखा है जिसके हर पहलूका रंग अलग है। कल सवेरे डोना क्लारा जब प्रार्थना कर रही थी तो उसके कमरेसे चुरा लायी थी।

इस्मेनिया — अरी बकवादी, मुटरी, जल्दी बता।

ब्रिजिडा — और कर क्या रही हूँ ? तुम्हें पता है मैंने एण्टोनियोको अपने बगीचेमें पाया। ओह इस्मेनिया, क्या मैंने तुम्हें बताया था कि डोना क्लारा इस मौसममें मेरे लिये बीज चुनती है और मैं समझती हूँ कि उन्हें जल कुम्भी लताओंका जितना ज्ञान है वैसा किसी विरली स्त्रीको ही होगा। कल मैं पैड्रोसे ग्रीष्म आवासमें बात कर रही थी क्योंकि तुम्हें याद है न कि आदमी अंधेरे-उजालेका फर्क समझ सके उससे पहले बड़े जोरका कड़ाका हुआ; और मैं उस समय बगीचेके दरवाजेसे मीलों दूर थी।

इस्मेनिया — दयाके नामपर ब्रिजिडा ....

ब्रिजिडा — दैया रे ! क्या जल्दबाजी करती हो। खैर, जब मैं बगीचेमें एण्टोनियोके पास गयी — वह एक बढ़िया बगीचा है, इस्मेनिया। मुझे आश्चर्य है कि डोन बेलट्रानका माली बिग्नोलिया कहांसे लाया होगा।

इस्मेनिया — ओह–ह–ह !

ब्रिजिडा — अच्छा, तो हां, मैं कहांतक आयी ? ओह, हां , एण्टोनियोको चिट्ठी देनेतक। हां, तो तुम विश्वास करोगी, उसी समय डोन हाजिर जवाब, डोन पहरेदार, डोन सूक्ष्म तीन सिर घुस पड़े......

इस्मेनिया — अरी राक्षसी, अत्याचारोंकी पराकाष्ठा, नीरोका नारी रूप, असंभव क्रूरताओंका सम्मिश्रण, तू बतायेगी या नहीं ?

ब्रिजिडा — हाय, दैया, मैंने इतनी गालियां खाने लायक किया क्या है ? मैं उस बातपर चार घोड़ोंकी बग्घीसे भी तेज आ रही थी। तू इतनी विवेकशून्य तो न होगी कि कहानीका परिशिष्ट ही जानना चाहे, बस पूंछ ही पूंछ और लटकानेको कुछ भी नहीं ? खैर, एण्टोनियोने चिट्ठी ली।

इस्मेनिया — हां, हां, और उत्तर क्या दिया ?

ब्रिजिडा — उसने घुमा-फिराकर देखी और सोचता रहा कि कहांसे आयी होगी। इस जटिल प्रश्नपर विद्वत्ताके साथ शोध की, फिर मुझे तुम्हारे खराब अक्षरोंके लिये बुरा-भला कहा।

इस्मेनिया — प्यारी बहन, मधुर बहन, उत्तम ब्रिजिडा ! मैं तेरे आगे घुटने टेकती हूँ, मुझे और न सता। हालांकि मैं जानती हूँ कि अगर सब कुछ ठीक-ठाक न होता तो तू इस तरह न करती, फिर भी जरा सोच कि प्यार करते समय औरतका दिल कितना कमजोर होता है। मुझपर दया कर। प्राणप्यारी, मैं तेरे आगे घुटने टेकती हूँ।

ब्रिजिडा — वाह, इस्मेनिया, मैंने सारे जीवनमें तुझे कभी इतना नम्र नहीं देखा। हां, अपने भाईके सामने और बात है लेकिन उसे तो मैं गिनती ही नहीं। उसकी चले तो मुझपर भी हुकुम चलाये। और तुम घुटने टेके हो। यह बहुत अच्छा है। कसम ले लो यदि इसे देखकर यह इच्छा न होती हो कि देखें तुम्हें कितनी देर इस तरह रख सकती हूँ। खैर, मैं दया दिखाऊंगी। अच्छा, उसने तुम्हारी लिखावटकी बारीकीसे छानबीन की और फिर एक कर्कशा चण्डीकी लिखावट कहकर गालियां दीं।

इस्मेनिया — ब्रिजिडा, अगर तुम बिना लम्बे वर्णनके, सीधे सादे ढंगसे, मैं जो जानना चाहती हूँ वह नहीं बताओगी तो भगवान्‌की सौगन्ध, मैं तुझे जरूर पीटूँगी।

ब्रिजिडा — वाह, यह तो बड़ी बुरी बात है। क्या तुम घड़ी देखकर पचास सेकेंडके लिये अपना मिजाज ठीक नहीं रख सकती? आह, क्या चिड़चिड़ापन है, क्या गुस्सा है! खैर, हां, मैं कहांतक पहुँची थी? हां, हां, ठीक है, तुम्हारी लिखावट। ओह! अरे! बहन, यह क्या? भगवान् बचाये मुझे। बहन! बहन! लो वह आयेगा! वह आयेगा! वह जरूर आयेगा!

इस्मेनिया — वे मुझसे मुहब्बत करते हैं?

ब्रिजिडा — बेहद! पागलोंकी तरह! कामातुर पागलकी तरह। दैया रे!

इस्मेनिया — प्यारी, प्यारी ब्रिजिडा! तू फरिश्ता है। तुझे कैसे धन्यवाद दूं?

ब्रिजिडा — बच्ची, मेरी सांस फुलाकर तूने काफी धन्यवाद दे दिया। अगर तूने मेरे कंधेको उतार नहीं दिया और आधे बाल नोंच......

इस्मेनिया — सुनो काफिरकी बातें! एक जरा-सी धकापेल, जरा और तरहका केशविन्यास, बस! तू जिस सजाके लायक थी उससे तो कम ही है। लेकिन लो, तुम्हारे लिये यह मरहम है। और प्यारी, अब जरा सयानी बनो। एण्टोनियोने क्या कहा? चलो, बता दो। मैं जाननेके लिये मर रही हूँ।

ब्रिजिडा — मैं बोलूँ तो मुझे फांसी लगे। दूसरी बात यह है कि मैं चाहूँ तो भी न बता सकूँगी। वह तो कविता कर रहा था।

इस्मेनिया — लेकिन क्या उसने मेरी ढिठाईके लिये मुझसे नफरत नहीं की?

ब्रिजिडा — चुप, तुम बचकानी हो। लेकिन खरी-खरी बात बता दूं इस्मेनिया, मैं सोचती हूँ कि वह तुमसे काव्यमय प्रेम करता है। तुम्हारा नाम देखते ही उसने बेहोश होनेकी तैयारी की, लेकिन उसे मैं बहुत महत्त्व नहीं देती। कई लोग लहसनकी गंध पाते ही या एक तिलचट्टेको देखते ही बेहोश हो जाते हैं। लेकिन वह दस मिनटतक तुम्हारा खत लिये अपने दिलपर या इसी तरहकी

किसी और प्रेम पोथीपर नकल करते रहे। लेकिन यह भी कुछ नहीं है। मुझे शंका है कि वहां भी तुम्हारे लिये जगह थी या नहीं, हाशियेपर हो तो और बात है। फिर उसने उपमाओंके लिये आलिम्पसपर हाथ मारना शुरू कर दिया, फिर उसे बहुत रूढ़िवादी और पुराना कहकर छोड़ दिया। फिर उसी खोजमें ओविद और उसके प्रार्थना संग्रहको मथ डाला और उसे भी मध्ययुगीन कहकर छोड़ दिया, फिर प्रकाश और ऊष्माकी ओर भटका लेकिन बिजलीकी आधुनिकता तक न आ सका। लेकिन हे भगवान्! बहन, क्या अन्धाधुन्ध भागा था वह! उसने अपने-आपको अन्धा और बेदम सोच लिया था जब मैंने उसे रोका। मैं यह सोचकर कांप उठती हूँ कि अगर मैंने अपने-आपको उसके रूपकोंके पहिये तले न डाल दिया होता तो न जाने कैसी-कैसी विपत्तियां आ पड़तीं। निष्कर्ष यह है कि वह तुमसे प्रेम करता है, तुम्हें पूजता है और तुम्हारे पास आयगा।

इस्मेनिया — ब्रिजिडा, ब्रिजिडा, तुमने मुझे जितना आनन्द दिया है उतना ही तुम्हें भी नसीब हो।

ब्रिजिडा — सच, प्रेमियोंका आनन्द है बच्चोंकी खुशी जैसा, एक नया खिलौना पाते ही उससे खेलनेके लिये पागल हो उठते हैं। लेकिन, जब वे खेलसे ऊब जाते हैं — ओह, खैर, मुझे वह सब नहीं चाहिये। मैं क्वारी स्त्रियोंका प्रतीक और संरक्षिका बनी रहूँगी। बूढ़ी क्वारियोंकी उदात्त सेना मुझे श्रद्धांजलि देनेके लिये मेरी कब्रके चारों ओर इकट्ठी होगी।

इस्मेनिया — तो वह आज रातको आयेंगे?

ब्रिजिडा — हां, अगर उसकी मुहब्बत तबतक निभ सके।

इस्मेनिया — हजारों वर्षोंतक। ब्रिजडा, मेरे साथ चल और इस आनन्दको वहन करनेमें मेरी मदद कर। आज रात तक!

दृश्य ४

मेड्रिडका एक रास्ता

एण्टोनियो — यही वह स्थान है।

बेसिल — यहांसे कुछ दूर है।

एण्टोनियो — यही, मैं जानता हूँ। यह रहा वेलास्क चौक। वहां अपने घोड़ेपर

सवार, महाराज चार्ल्स इस सुनसान शहरको देखते रहते हैं जिसे उनकी सन्तान रख न सकी। वह रोशनी जहांसे हमें बुला रही है वह डोन मारियोका महल है। हे दिव्य प्रकाश, तुम्हें उसको रोशनी देनेके लिये जलाया गया है जो स्वयं मेरा सूर्य है? अगर ऐसा है, तो तुम बड़े खुशनसीब हो क्योंकि उसकी गाढ़ निद्राके मन्दिरतक तुम्हारी पहुँच है और तुम उसके गुप्त रहस्योंके साझीदार हो। हालांकि तुम सिर्फ एक रातके लिये ही जीते हो फिर भी तुम्हारी लघु किन्तु उदात्त सेवा सूर्यके युगोंसे ज्यादा समृद्ध और मूल्यवान् है। हे धन्यदीप, तूने उसके उघरे और चमकते कंधोंपर घनी केश-राशिको और भी ज्यादा अन-मोल बनते देखा है। तूने उस प्यारे चेहरेको अपने दिव्य सिरहानेपर शान्त अलकोंके बीच सोते देखा है। उससे भी बढ़कर, शायद तूने अपनी एक दमकती उंगली पवित्र नींदमें डूबी उसकी गोरी छातीपर रखी और वहां स्वर्ग पा लिया। इसीलिये तू आदमीके हाथोंसे जलायी गयी सभी रोशनियोंसे ज्यादा प्रख्यात है।

बेसिल — यह लो, तोलेभर तेल और किसी पंसारीकी दुकानसे खरीदी हुई अकिंचन, डूबी हुई बत्ती और उस तेलमें तरबतर मक्खीपर तो एक पूरा महाकाव्य बन रहा है।

एण्टोनियो — सुनो! कोई आ रहा है।

बेसिल — पीछे हटो, पूछताछ नहीं।

एण्टोनियो — वे हमपर शंका नहीं करेंगे। हम लोग महलसे दूर खड़े हैं।

बेसिल — क्या मैं पागल हूँ? क्या तुम समझते हो मैं एक प्रेमीपर विश्वास करूंगा? अरे, तुम तो समय भी ठीक ढंगसे न पूछ सकोगे, तुम कहोगे मेहरबान, इस्मेनिया-में कितने मिनट बाकी हैं?

एण्टोनियो — खैर, पीछे हटो।

बेसिल — कोई जरूरत नहीं है। मैं देखता हूँ यह तो पथप्रदर्शक नारी है, हाजिर जवाब औरत, जीभ, वही बेगम।

(ब्रिजिडाका प्रवेश)

लो, घंटी सुनो।

ब्रिजिडा — आप हैं, लार्ड एण्टोनियो! इस तरफ हुजूर!

एण्टोनियो — तुम जैसा कहो। मुझे मालूम है तुम मेरे स्वर्गकी मार्गदर्शिका हो।

ब्रिजिडा — ओह, आप भी आये हैं? महाशय, बड़ी कृपा है आपकी। एक बात बताइये, जब मैं आपकी ओर आ रही थी तब आप छिप नहीं रहे थे क्या? क्या बात थी साहब? किसलिये? शायद कोई सिपाही या लेनदार आ रहा

होगा ? क्योंकि यह तो मैं जानती हूँ कि अबला लड़कीसे टकरानेके लिये तो आप बहुत बहादुर हैं। क्या कहा आपने ? मैंने सुना नहीं। सरकार, लीजिये हम आ पहुँचे। अब बहुत धीरे-धीरे, अगर आप उससे, अपनी मधुर रमणीसे प्यार करते हैं तो धीरे-धीरे। (बेसिलसे) हुजूर, आप चुप रह सकते हैं न? वरना हम कहींके न रहेंगे।

दृश्य ५

इस्मेनियाकी बैठक

इस्मेनिया इन्तजार कर रही है

इस्मेनिया — बहुत अन्धेरा है। मुझे कुछ नहीं दिखता। यह कैसी आवाज! जरूर दरवाजा बन्द हुआ। मेरे दिल, खुदको वशमें रख! तू बड़ी तेजीसे धड़क रहा है और खुशीकी बांहोंमें टूट जायगा। ब्रिजिडा!

ब्रिजिडा — इस तरफ भगवन्, पधारिये और उसे लीजिये।

एण्टोनियो — इस्मेनिया!

इस्मेनिया — एण्टोनियो! ओ एण्टोनियो!

एण्टोनियो — मेरे हृदयकी प्रियतमा!

ब्रिजिडा — साहब, अपनी हाजिरजवाबीको इस ओर ले आइये। उसकी जरूरत नहीं है।

(बेसिलके साथ बाहर जाती है)

इस्मेनिया — ओ इस तरह नहीं! तुम मुझे शरमिन्दा करते हो। प्यारे, मेरी जगह यहां है, तुम्हारे चरणोंके पास और वह भी मैं जिस योग्य हूँ उससे बहुत ऊंची है।

एण्टोनियो — मैं यह नहीं सह सकता कि अपवित्र निन्दा मेरे स्वर्गको छू भी सके। यद्यपि तुम्हारे होठोंने उसे पवित्र कर दिया है। ऊंचे-से-ऊंचा स्थान भी तुम्हारे लिये नीचा होगा। तुमदेवी हो और पूजाके लायक हो।

इस्मेनिया — हाय, एण्टोनियो, यह तरीका नहीं है। मुझे भय है कि तुम्हें मुझसे मुहब्बत नहीं, नफरत है। बोलो, नफरत करते हो न?

एण्टोनियो — तब शायद चूमनेके लिये आनेवाली चांदकी किरणसे कोंपल घृणा

करेगी। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम्हारा आदर करता हूँ।

इस्मेनिया —– तब तुम मुझे उसी रूपमें अपनाओ जिस रूपमें मैंने अपने-आपको अर्पण किया है, अपनी दासीके रूपमें जो पूरी तरह तुम्हारी है। जिसे देवी बनाकर स्तुति, प्रांर्थना न करो बल्कि अपनी प्रिय दासी मानकर उसपर हुकुम चलाओ। वरना मैं स्वच्छन्द होकर बिगड़ जाऊंगी और तुम्हें खो बैठूँगी।

एण्टोनियो —– हुकुम चलाना पड़ेगा ? तब ऐसा ही होगा, लेकिन तुम इतनी ज्यादा रानी-सी लगती हो कि मुझे कोशिश करते हुए हंसी आती है। चलो, हुकुम दूं ?

इस्मेनिया —– अपना सिर यूँ मेरे कंधेपर रख और खबरदार मेरी इजाजतके बिना उसे उठानेकी हिम्मत न करना।

इस्मेनिया —– हाय, मुझे भय है कि तुम बड़े अत्याचारी होगे। मैंने तो सीमित राज-सत्ताकी बात सोची थी।

एण्टोनियो —– बड़बड़ाना बन्द कर और मेरे सवालोंके जवाब दे।

इस्मेनिया —– खैर, यह आसान है, जवाब दूंगी।

एण्टोनियो —– और सच सच।

इस्मेनिया —– ओह, लेकिन यह प्राय: असम्भव है। कोशिश करूंगी।

एण्टोनियो —– बोल, पहले-पहल तुझे मुझसे कब मुहब्बत हुई थी ?

इस्मेनिया —– प्यारे, आज।

एण्टोनियो —– मुझसे शादी कब करोगी ?

इस्मेनिया —– प्यारे, कल।

एण्टोनियो —– मेरे हाथोंमें यह तो बड़ा विद्रोही राज्य है। अब सच-सच बता।

इस्मेनिया —– तब सच कहूँ, सात दिन पहले, सातसे ज्यादा नहीं। मैंने तुम्हें दरबार-में देखा और देखते ही मेरी जिन्दगीमें हलचल मच गयी, तुम्हारी आवाज सुनी और उसने मेरे हृदयको खींच लिया।

हे एण्टोनियो, मैं तबसे आजतक एक खोखली चीज थी। मैं तुम्हें रोज देखती थी लेकिन चूँकि मुझे भय था —– जिसे अब मैं सत्यके रूपमें जानती हूँ —– कि तुम लार्ड बेलट्रानके बेटे हो, इसलिये मैं तुम्हारा नाम पूछनेका साहस न करती थी। इतना ही नहीं, जानकारीकी ओरसे अपने कान बन्द किये थी। ओ मेरे प्यारे, मुझे भय है कि तुम्हारे पिता बड़े बदला लेनेवाले हैं। एण्टोनियो, मेरे साथ क्या करोगे ?

एण्टोनियो —– अपने रत्नको अलग करनेवाले हाथोंसे दूर निरापद रूपमें पवित्रता-के साथ अपनी छातीपर जड़े रहूँगा। मेरे पिता ? जबतक हमें कठोर विच्छेद-

से सुरक्षित होनेका विश्वास न हो जाय तबतक उन्हें हमारी मुहब्बतका पता भी न चलेगा। वे नाराज जरूर होंगे पर मैं उनका सबसे बड़ा और चहेता बेटा हूँ। और जब उन्हें तेरी मधुरता और मोहिनीका पता चलेगा तब पछताएंगे और ऐसी बेटीके लिये मेरा आभार मानेंगे।

इस्मेनिया — जब तुम्हारी आवाज मुझसे कहती है तो मैं असम्भव बातोंपर भी विश्वास कर लेती हूँ। खैर, यह तो बताओ — एण्टोनियो, तुमने मुझे लजा दिया था, अब मेरी इच्छा है कि मैं भी बदला ले सकूँ। तुम जैसे अनजाने युवकके साथ प्रेममें पहल करनेकी मेरी पागलपन भरी ढिठाईपर तुम्हें आश्चर्य नहीं हुआ ?

एण्टोनियो — हां, उसी तरह जैसे आदमको अदनपर पहली बार सूर्योदय देखकर हुआ होगा। इस तरह उन प्राणदायिनी किरणोंको प्रणय-याचन या प्रेम-निवेदनके बिना महिमान्वित करना सूर्यको शोभा न देता था।

इस्मेनिया — हाय, तुम तो खुशामद करते हो। एण्टोनियो, तुम्हें भी मुझसे मुहब्बत थी ?

एण्टोनियो — तुम्हारी अद्‌भुत आंखोंका आनन्द लाभ करनेसे तीन दिन पहले हीसे।

इस्मेनिया — तीन दिन ! बेचारी मैं, एण्टोनियो, तीन दिन ? मैंने तुमसे प्यार किया उससे पहले पूरे तीन दिन ?

एण्टोनियो — हां, तीन दिन प्रिये।

इस्मेनिया — ओह, तुमने मेरे अन्दर ईर्ष्या पैदा कर दी। मैं नाराज हूँ। पूरे तीन दिन ! यह हुआ कैसे ?

एण्टोनियो — प्रिये, मैं इसकी क्षतिपूर्ति कर दूंगा। इसके बदले जब तू मेुझसे मुहब्बत करना छोड़ देगी उसके बाद भी तीन दिनतक मैं तुझसे प्यार करता रहूँगा।

इस्मेनिया — एण्टोनियो, मजाकमें भी ऐसी जुदाईकी बातें न करो। हम दोनों अलग हों उससे पहले सूरज अपनी रोशनीको अलग कर देगा। लेकिन तुमने मुझे बढ़ावा दिया है। मुझे तुमसे बेहद प्यार करना होगा, एण्टोनियो, हां करना ही होगा, तुम मुझे चाहते हो उससे ज्यादा वरना हिसाब बराबर न होगा। कुछ आवाज ?

एण्टोनियो — कोई सड़कसे गुजर रहा है।

इस्मेनिया — हम खिड़कीके करीब हैं, प्यारे, और बेहद लापरवाह भी हैं। इस तरफ आओ; हम यहां सुरक्षित हैं। मुझे तुम्हारे लिये जोखिमकी आशंका है।

(जाते हैं। कुछ देर बाद ब्रिजिडाका प्रवेश)

ब्रिजिडा —— कोई आवाज नहीं ? हुजूर ! इस्मेनिया ! उन्होंने एक दूसरेको बाहोंमें भरकर अदृश्य तो न किया होगा। ना, कामदेव उन्हें ले उड़ा है ! शैतान नहीं हो सकता क्योंकि मुझे गंधककी गंध नहीं आती। खैर, अगर वे इतने उकतानेवाले हैं तो मैं भी एकांतमें अपना मन न मारूंगी। मैंने पुरानी गाथाओंका मान रखनेके लिये महाशय त्रिमुखको सीढ़ीपर नियुक्त किया है। वह एक पहरेदारकी तरह वहां तलवार खींचे खड़े हैं और तहखानेसे चूहोंके अचानक हमलेसे हमारी रक्षा करते हैं। क्योंकि मुझे नहीं मालूम कि और कौन-सा जंगली जानवर हमारे लिये भयका कारण हो सकता है। डोन मारियो खर्राटे ले रहे हैं और डोना क्लारा उनके अलगोजेके साथ-साथ वायोलिन बजा रही है। मैंने उनकी आवाज तीन कमरे पारतक सुनी है। ये आदमी ! ये पुरुष ! और वे खुद को हमारा मालिक कहते हैं। मैं चाहती हूँ कि कोई पुरुष आ जाय मेरे साथ जबान चला ले। अपनी बुद्धिके आल्प्स शिखरोंपर मैं कुछ सूनापन-सा महसूस करती हूँ। आल्प्सके शिखर मेटरहार्नके विचार मुझे आते रहते हैं और रोजाकी चोटी मुझे बहन-सी लगती है। जरूर इस औरत-का बुखार छूतका है और बहुत खतरनाक ढंगसे उड़कर लगता है। मैंने खुदको उसांसे लेते हुए पकड़ा हे। यह हालत मुसीबतके परिपाककी निशानी है। वाह ! जब कछुए जोड़ी बनाते हैं तो मैंने यह कभी नहीं सुना कि मैना एकाकी रहती हो ! इस क्षण मेरे मनमें सारे दुःखी जानवरोंके लिये दया-भाव उमड़ रहा है। महाशय त्रिमुखपर भी मुझे दया आ रही है। मैं उसे चौकीदारीसे छुट्टी दूंगी। हीश ! महाशय ! डोन बेसिल !

(बेसिलका प्रवेश)

बेसिल ! सब ठीक-ठाक है न ?

बेसिल —— एक चूहातक नहीं कुनमुनाता !

ब्रिजिडा —— मेहरबानी करके तलवार म्यानमें रख दो। मेरा ख्याल है, कोई खतरा नहीं है और अगर आ भी जाय तो तुम समयपर तलवार खींचकर उसकी दुम काट सकते हो।

बेसिल —— जो हुकुम भगवती ! (स्वगत) अगर मेरी अक्लका दिवाला नहीं निकल गया है तो मुझे लगता है कि यह जरा-सी छोकरी मुझे गधा बना रही है। मेरी काया पलट हो रही है, मैं अनुभव कर रहा हूँ। मैं शीघ्र ही खुदको रेंकते हुए सुनूँगा। लेकिन मैं वशीकरणका विरोध करूंगा। मैं उसे संभाल लूँगा। एक

आफतका परकाला है वह। क्या मैं हमेशा ही इस बालूकी भीतसे शह खाकर भोंदू बनता रहूँगा? सब बुदबुदे हैं और कुछ भी नहीं? बेसिल, हिम्मत?

ब्रिजिडा — महाशय, तुम ध्यान कर रहे हो? अगर सीढ़ियोंसे लायी हुई गरमीको विचारकी ठंडकसे हटाना चाहते हो तो मैं बाधा न डालूँगी।

ब्रिजिडा — महाशय, तुम ध्यान कर रहे हो? अगर सीढ़ियोंसे लायी हुई गरमीको विचारकी ठंडकसे हटाना चाहते हो तो मैं बाधा न डालूँगी।

बेसिल — सच बात तो यह है सीनोरिटा, कि मुझे इतनी ठण्ड लग रही थी कि मैं तुमसे मीठी और गरमी पहुँचानेवाली शराब मांगनेकी सोच रहा था।

ब्रिजिडा — इतनी छोटी बातके लिये मैं आपको मना करना न चाहूँगी। तुमको अभी मिल जायगी।

बेसिल — तो तुम्हारी इजाजतसे।

ब्रिजिडा — आह, महाशय, सावधान, जलते अंगारे खतरनाक होते हैं, वह जलाते हैं।

बेसिल — मुझे कुछ न होगा।

ब्रिजिडा — जैसा कि उस आदमीने कहा था जिसे ऐसे कुत्तेने काटा था जिसे लोग पागल समझते थे। किन्तु कुत्ता खुद ही मर गया। साहब, सम्भलकर। तुम आग बुझा दोगे।

बेसिल — चलो, मैंने तुम्हें पा लिया। आज सवेरे तुमने एक चुंबनके लिये मना किया था, उसके बदले दस लूँगा।

ब्रिजिडा — ओह बहुत, ज्यादा चक्रवर्ती ब्याज है। मैं आपकी चिरौरी करती हूँ साहब, जरा सम्भलकर। ऐसी सूदखोरीके लिये कानूनसे सजा हो सकती है।

बेसिल — इसके लिये मेरे पास पैसेवालोंकी तरकीब है। जिस सिक्केकी गैरकानूनी तौरपर प्राप्त किया है उसीसे कानूनका मुँह बन्द करूंगा।

ब्रिजिडा — अजी साहब आप शब्दोंमें जितने फजूलखर्च हैं उतने ही चुंबनोंके हिसाबमें लापरवाह। मुझे भय है कि आपका दिवाला निकल जायगा। साहब, बस और नहीं। सीढ़ीपर वह कैसी आवाज थी? अच्छा, अब आप ठीक दूरीपर है। मैं आपको इसे बनाये रखनेका कष्ट दूंगी। मैं कहती हूँ ज्यादा नजदीक नहीं। आप द्वन्द्व-युद्धके नियमोंका पालन नहीं करते। आप फायदा उठाते हैं।

बेसिल — मेरे साथ? वाह, तुम महत्त्वाकांक्षी बन रही हो। मैं जानता था कि तुम्हारा मुँह बन्द करना तुम्हारी जिन्दगी खत्म करना है इसलिये दयाके मारे मैंने तुम्हारे साथ भिड़नेसे इन्कार कर दिया।

ब्रिजिडा -- सचमुच ऐसा था ? काश, मेरी खातिर आपने अपने साथ जो अत्याचार किया है उसे देखकर मैं रो सकती। महाशय, विनती है कि आप अपने ऊपर ऐसा अत्याचार न करें। हाय, इस दुनियामें अच्छाईके बारेमें कितनी गलत-फहमी होती है! दयाके मारे ? और मुझे यह समझने दिया कि आप बुद्धू हैं।...

बेसिल -- अच्छा।

ब्रिजिडा -- ओह नहीं साहब, यह अच्छा नहीं, बिलकुल अच्छा नहीं है। आप फिर-से ऐसा न कर पायेंगे। अगर मुझे मरना है तो मरूंगी। आपका बाल भी बांका न होगा। अब अपनी बुद्धिको इतने कष्टसे रखी हुई प्रतापी चीजोंके भारसे हल्का करनेकी कृपा करें। अति कुपथ्य होती है और मैं नहीं चाहती कि आपका अन्त बुद्धिके पक्षाघातसे हो। मेरे ऊपर उंडेले जाओ। कल्पना, चुटकले या सूक्तियां, व्यंग्य, उपहास झिड़कियां, ताने, कटूक्तियां, और द्वयर्थक वाक्य, श्लेष और छलोक्ति, तर्कसंगता और तर्कहीनता, सिसकारियां और ध्वनि-अनुकरण, सब, सब मुझपर उंडेल दो फिर चाहे वह वेगसे आनेवाला हिमधाव क्यों न हो जाय। मैं उसका वेग सह लूँगी।

बेसिल -- (स्वगत) हे सन्त इआगो! मेरा ख्याल है कि उसके पेटमें पूरा-का-पूरा शब्दकोश होगा। मैं हताश होता जा रहा हूँ।

ब्रिजिडा -- मेहरबानी करके डरिये मत। मैं आपको गले पड़नेके लिये बाधित न करूंगी। किन्तु आपकी थोड़ी-सी हाजिर-जवाबीका सामना कर लूँगी।

बेसिल -- (स्वगत) इस छोकरीमें शैतान बैठा है।

ब्रिजिडा -- साहब, चुप क्यों हैं? मुझसे नाराज हैं? मैंने आपको कोई कारण तो नहीं दिया। यह क्रूरता है। डोन बेसिल, मैंने हर जगह आपकी यही तारीफ सुनी है कि आप इस युगके सबसे मुँहफट और हाजिरजवाब आदमी हैं। लोग कहते हैं कि अगर और कोई न मिले तो आप मेयरचौककी मूर्तियोंसे मजाक करेंगे और इतने तेज तर्रार ढंगसे कि उनसे एक बातका भी जवाब न बन पड़ेगा। मैंने ऐसा क्या किया है कि आप सिर्फ मेरे साथ गूँगे बन जाते हैं।

बेसिल -- (स्वगत) जरूर मुझपर जादू फिर गया है।

ब्रिजिडा -- साहब, अब भी दया चल रही है? तो फिर सिर्फ मेरे ऊपर ही क्यों? अजी साहब, सारी दुनियापर रहम कीजिये और हमेशा मौन रहिये। खैर, देखती हूँ कि आपकी परोपकारिता अजेय है। तुम्हारी इजाजत हो तो हम इन बेकार बातोंको छोड़ देंगे; मैं आपके कंठस्वरको याद करके प्रसन्न होऊंगी।

आप द्वन्द्व युद्धसे तो इन्कार करते हैं इसलिये ज्यादा नजदीक आ सकते हैं।

बेसिल — धन्यवाद सीनोरिटा। इस बार किसकी भेड़ मिमियाई ?

ब्रिजिडा — डोन बेसिल, तो अब हम संयत होकर बात करें ?

बेसिल — महोदया, जैसी आपकी मरजी।

ब्रिजिडा — महोदया नहीं, साहब, एक गरीब दोस्त। कल आप काउण्ट बेलट्रान-के घर जा रहे हैं ?

बेसिल — इरादा तो ऐसा ही है।

ब्रिजिडा — ओ वह नाटक, उसमें कौन-कौन भाग ले रहा है ?

बेसिल — बहुरूपिये, महोदया।

ब्रिजिडा — अजी साहब, यही आपकी दया है ? मैंने पहले ही कह दिया था कि अगर आप अपनी अक्ल बहुत देरतक दबाये रखेंगे तो वह फूट निकलेगी ? अपनी स्थितिके अनुसार वे कौन हैं ? नाटकके पात्र देवियां होंगी और आजकलके रिवाजके अनुसार खेलनेवालोंको जिन्दा देवियां होना चाहिये।

बेसिल — वे हैं ही।

ब्रिजिडा — क्या वे सचमुच इतनी सुन्दर हैं ?

बेसिल — क्रिस्टोफरकी बेटी युफ्रोसिनी सारे राज्यमें अद्वितीय सुन्दरी है।

ब्रिजिडा — आप बड़े विश्वासके साथ बोलते हैं, महाशय, क्या इस्मेनियासे भी ज्यादा सुन्दर ?

बेसिल — यह बात अनमना होकर कहता हूँ। लेकिन ईमानदारीकी बात तो यह है कि लेडी इस्मेनिया असाधारण सुन्दरी होते हुए भी चक्कीवालेकी लड़कीके आगे नहीं ठहर सकती।

ब्रिजिडा — मेरा ख्याल है मैंने उसे देखा है लेकिन मुझे नहीं याद पड़ता कि वह कोई विलक्षण सुन्दरी हो।

बेसिल — तब हर्गिज नहीं देखा क्योंकि वह जिन अद्भुत सुन्दरियोंको तेजहीन और श्रीहीन कर देती है, वे स्वयं स्त्रियां होते हुए भी अपनी पदच्युतिकी बात करती हैं।

ब्रिजिडा — क्षमा कीजिये यदि मैं यह समझ लूँ कि आप प्रेमीके स्वरमें गुणगान कर रहे हैं।

बेसिल — काश ऐसा होता। उसका सौंदर्य और उसकी भद्रता इसी योग्य हैं। मैंने उससे योग्य कहीं नहीं देखा।

ब्रिजिडा — आपको उसके साथ खुशी मुबारक हो। महाशय, मैं यहांसे जानेकी

आज्ञा चाहती हूँ।

बेसिल —— एकको छोड़कर।

ब्रिजिडा —— है! और वह कौन थी?

बेसिल —— क्षमा करो।

ब्रिजिडा —— साहब, मैं दबाव न डालूँगी। मैं उसे पहचानती नहीं, क्यों है न?

बेसिल —— ओ, ऐसी बात नहीं। वह एक नारंगीवाली थी जिसे मैंने एक बार काडिज-में देखा था।

ब्रिजिडा —— ओ!

बेसिल —— (स्वगत) हा! वह सचमुच चिढ़ गयी है। यह मेरे लिये शहद-सा मीठा है।

ब्रिजिडा —— खैर साहब, आपकी पसन्द आपकी बुद्धिकी तरह अकाट्य है। आटा जिन्दगीका सहारा है और नारंगी एक ऋतुके लिये ही अच्छी रहती है। यह सौन्दर्यकी मूर्ति किसकी भूमिकामें आ रही है?

बेसिल —— हीनस, और बादके दृश्यमें हेलेन।

ब्रिजिडा —— अच्छा? औरोंके नाम भी जान सकती हूँ क्या? वहां आपको मेरी एक रिश्तेकी गरीब बहन भी मिलेगी।

बेसिल —— काउण्ट कोनरेडके कारिन्देकी बेटी काट्रीओना, और विद्यार्थी जेनोरिमो-की बहन सोफ्रोनिया। वह भी काउण्टके घरानेकी है।

ब्रिजिडा —— तो फिर नाटकमें भाग लेना मुश्किल नहीं है।

बेसिल —— सीनोरिटा, नाटककी मांग थोड़ी ही है। एक आकर्षक शरीर, एक लहराता कदम, अच्छा गला, स्मरण शक्ति —— लेकिन आकस्मिक प्रसंगके लिये पासके कमरेमें बोलती हुई स्मृति बहुत उपयोगी होती है।

ब्रिजिडा —— सच, ऐसी लम्बी भूमिकाएं तेज स्मृतिवालोंके लिये भी भारी पड़ती होंगी।

बेसिल —— वैसी तो बस दो ही हैं, वीनस-हेलेन तथा पेरिसकी भूमिकाएं। बाकी रहा पवन-देवका नृत्य, एक वक्तव्य और जरा परिस्थितिकी सहायताके लिये एक गाना और फिर दौड़कर बाहर।

ब्रिजिडा —— भगवान् तुम्हारा भला करे। तुम्हारी बातचीत बड़ी शिक्षाप्रद और गंभीर है और मैं तुम्हारे बारेमें यही कहा करूंगी लेकिन यहां उपविरामचिह्न आ रहा है। हम पूर्ण विरामको कलके लिये बचा रखेंगे।

(एण्टोनियो और इस्मेनियाका प्रवेश)

इस्मेनिया —— ब्रिजिडा, सोचती हूँ पूर्वमें सवेरा आगे बढ़ रहा है। मेहरबानी करके दरवाजा खोल दो, लेकिन बिना आवाजके।

ब्रिजिडा —— मुझे मत सिखा। यद्यपि इन महाशयकी धुँआधार बातोंने मेरी आधी बुद्धिको तो बहा दिया है फिर भी मैंने बड़ी कठिनाईसे आधीको तेरी सेवाके लिये बचा रखा है। चलिये, साहब, चूहोंको मार भगानेके लिये मुझे आपकी जरूरत होगी।

बेसिल —— हे सन्त इआगो !

(बेसिलके साथ ब्रिजिडा जाती है)

इस्मेनिया —— प्यारे, हमें अलग होना पड़ेगा। काश, तुम मेरे गलेका हार बनते ताकि मैं हमेशा तुम्हें अपने गलेंके चारों ओर अनुभव कर सकती। या फिर सारी जिन्दगी ही रात होती और सब लोग सोते रहते ताकि हमें कभी अलग न होना पड़ता। लेकिन हमें अलग होना पड़ेगा, एण्टोनियो। क्या तुम मुझे भूल जाओगे ?

न होना पड़ता, एण्टोनियो। क्या तुम मुझे भूल जाओगे ?

एण्टोनियो —— जब मेरे अन्दर अनुभूतिकी क्षमता समाप्त हो जायगी।

इस्मेनिया —— जानती हूँ कि तुम भूल नहीं सकते। मैं बहुत सुखी हूँ। मुझे अपने आनन्दके साथ खेलनेमें और उससे प्रश्न पूछनेमें बड़ा मजा आता है। प्यारे, हम जल्दी ही मिलेंगे। प्रिय, तुम्हारे साथ एक समझौता करुंगी। जबतक हमारी शादी न हो जाय मेरी इच्छाके अनुसार सब कुछ करोगे और कभी कुछ न पूछोगे, बादमें तो तुम जानते हो मैं तुम्हारी दासी हूँ। तबतक मानोगे न ?

एण्टोनियो —— तबतक और उसके बाद भी।

इस्मेनिया —— अब जाओ, प्यारे, तुम्हें जबरदस्ती बाहर करना होगा वरना तुम जाओगे ही नहीं।

एण्टोनियो —— एक चुम्बन !

इस्मेनिया —— तुम्हें हजारों मिल चुके हैं, खैर एक और सही। बस एक ही, या फिर मैं तुम्हें कभी अलग न होने दूंगी।

(ब्रिजिडाका प्रवेश)

ब्रिजिडा —— क्या तुम दोनो पागल हो गये हो ? मैं पूछती हूँ, क्या यह मंडरानेका समय है जब कि पूरबमें पौ फटनेकी तैयारी है। महाशय, चलिये निकलिये बाहर, वरना आपके अपने त्रिमुखको पीछे लगा दूंगी। मैं शर्त्त लगाकर कहती हूँ कि वह अच्छी तरह काटता है हालांकि उसके भौंकनेके बारेमें मेरी राय बहुत

अच्छी नहीं है।

(एण्टोनियोके साथ जाती है)

इस्मेनिया –– ओ, मैंने अपने-आपको पूरा दे दिया है और जब वे मुझसे दूर चले जायें तब जीनेके लिये कुछ भी नहीं रख छोड़ा। मेरी जिन्दगी उनका चन्द्र है और उसके बिना मैं एकदम अंधकार और दुःखमें हूँ। कलतक मैं इस्मेनिया थी, अपने-आपमें मजबूत और एक व्यक्तित्ववाली औरत। आज मैं सिर्फ किसी औरका शरीर हूँ, एक अलग व्यक्ति नहीं। खैर, अगर मैं उन्हें पा लूँ तो मेरा अपनापन भले खो जाय फिर भी मैं सुखी रहूँगी। दरवाजा बन्द हो रहा है वे चले गये। (ब्रिजिडा फिरसे आती है) आह, ब्रिजिडा !

ब्रिजिडा – चलो, अन्दर चलो। थोड़ा सो लें क्योंकि मैं विश्वास दिलाती हूँ कि कल बिलकुल न सो पाओगी।

इस्मेनिया –– इसका मतलब क्या है ? या सिर्फ मजाक है ?

ब्रिजिडा –– मुझे अकेली रहने दो। मेरे दिमागमें एक पूरा नाटक है। नाटकके अन्दर नाटक और फिर भी नाटक नहीं। मुझे पात्रोंको थोड़ा इधर-उधर बदलना होगा और कलका सूरज उसे रंगमंचपर देखेगा जहां उसका दृश्य होगा, अभिनय होगा और अन्त भी होगा। जाओ, सो रहो।

(जाती हैं)

अंक २

दृश्य १

कोनरेडके महलका एक कमरा

कोनरेड और एक नौकर

कोनरेड —— फ्लेमिनिया कहां है ?

नौकर —— हुजूर, वह इन्तजार कर रहा है।

कोनरेड —— उसे भेजो।

(नौकर जाता है)

मैंने पहले कभी मुहब्बत नहीं की। विधाता, मैं तुझसे सिर्फ एक दिन और एक बढ़िया रात मांगता हूँ फिर जो तेरी मरजी हो करना। तबतक मैं अपने शिखरतक पहुँच चुका होऊंगा।

(फ्लेमिनियाका प्रवेश)

फ्लेमिनिया —— मेरे स्वामी !

(इससे आगेका हिस्सा अप्राप्य है।—सं०)

ब्रूटका राजघराना

नाटक के पात्र

ब्रूटस —— ब्रिटेनका राजकुमार।

कोरिनस ——
आसारक ——
ब्रूटसके भाई।

डीवन —— कोरिनसका बेटा।

काम्ब्रे —— केम्ब्रियाका राजकुमार
आल्बानाक —— ऐलबेनीका राजकुमार
लोक्रीन —— लेओग्रीसका राजकुमार।
ब्रूटसके बेटे।

हम्बर —— नार्वेका राजा।

ओफा ——
सिग्फ्रीड ——
नार्वेके नेता।

गडोलन —— कोरिनसकी बेटी।

एस्ट्रील्ड —— पिक्टशकी राजकुमारी, हम्बरकी रखैल।

श्रीअरविन्दके कई नाटकोंके टुकड़े मिले हैं। हमें मालूम नहीं कि ये नाटक पूरे किये भी गये थे या नहीं। इस अंकमें इसी तरहके दो टुकड़े दिये जा रहे हैं। —सं-

अंक २

दृश्य १

स्थान : हम्बरका शिविर

हम्बर, ओफा और नार्वेवासी

हम्बर —— पिये जाओ, पिये जाओ, समुद्रकी झंझाओ और उड़नेवाले सर्पो, चढ़ाये जाओ। (पीता है) है वाइकिंग-गण धरतीके इस मधुर रसकी एक बुँद भी न छोड़ो, ओह, ओठोंके पास आकर इसमेंसे कैसे बुदबुदे उठते हैं, नये बहाये गये रक्तका-सा स्फूर्तिदायक है यह रस। खूब पियो और चिल्लाओ "थोरकी जय और हम्बरकी जय"। हम एलबनेक्टके सैन्यपर चढ़ाई करते हैं। चिल्लाओ नार्वेवासियो! आकाश भी तुम्हारे कोलाहलको सुन ले। चढ़ाए जाओ। (पीता है)

सब —— चढ़ाओ, प्राचीन थोरकी जय हो! हम्बरकी जय हो!

हम्बर —— मैं थोरका पुराना हथौड़ा हूँ जिससे यह देशोंको कुचलता है। वह शराब-में मस्त है और संसारपर मेरे द्वारा प्रहार कर रहा है। (पीता है) मैं यह सब प्रताप क्यों प्रांप्त करता हूँ? जब दो तूफानी लहरोंके बीच व्हेलतक मूर्छित हो गयी थी, ऐसे समय बिजलियोंके बीच मैंने अपने शत्रुको नहीं मार गिराया था? क्या मेरे लौटते समय मीलोंतक जलते हुए गालके गांवोंने मेरे रास्ते-पर रोशनी नहीं की थी? नार्वेवासियो, एरिन[1] ने मेरा परिचय पाया है।

सब —— हम्बरकी जय!

हम्बर —— क्या मैंने एलबन सेनाओंका संहार नहीं किया और राजाओंकी गरदनों-में फंदे नहीं डाले? हां और उनके भाग्यके तारे एस्ट्रिल्डको, जिसके लिये तीन राज्य पानी भरते थे, अपने जहाजोंकी ओर नहीं ले आया? ओरकेडकी

1 आयरलैंडका पुराना नाम।

रानियां नार्वेके सिपाहियोंकी दासियां और रखैलें नहीं बनीं ?

सब —— हम्बरकी जय हो, थोरका हथौड़ा, हम्बर ! हम्बर !

हम्बर —— क्या मैंने आयरलैंड, डेन्मार्क, ओरकनीको नहीं उजाडा ? पिक्ट लोगों-के पहियोंको तहस-नहस नहीं किया, उनकी दरातियोंको नहीं तोड़ा और उनके प्रदेशको बंजर नहीं बनाया ? तब फिर तुम थोरको मुझसे अधिक क्यों पसन्द करते हो ? क्या उसने तुम्हारे जहाजोंको फ्रांसकी शराबसे, सोने तथा महंगी अंगूठियां, तरह-तरहके गहनों, अमूल्य धातुओं और तेज सुन्दर तलवारोंसे भर दिया है ? तुम्हें किसने अमीर बनाया ? किसने तुम्हें बढ़ा-चढ़ाकर देवताओं जैसा बना दिया ? किसने हर हाथको एक देशकी दौलत और हर तलवारको एक शताब्दीके लिये यश प्रदान किया ? नार्वेवासियो ! किसने मामूली-से-मामूली आदमियोंके साथ सोनेके लिये अप्सराओं-सी सुन्दरियां जुटा दीं और किसने रानियोंको तुम्हारी बांदी और राजाओंको तुम्हारा दास बनाया ?

सब —— हम्बर, हम्बर ! थोर नहीं, उससे भी बलवान् हम्बर ।

हम्बर —— नार्वेवासियो पियो, तुम सब राजा बनोगे । स्काटिया, एलबानी, आयर-लेण्ड सब मेरे होंगे । मेरे राज्यमें उतने ही राज होंगे जितने वर्षमें चन्द्रोदय । वांइकिंग-गण क्या तुम्हें सन्देह है ? तुम बड़बड़ा रहे हो क्या ? तुम मेरा प्रताप देखोगे ? हम्बरके दासो, ऐस्ट्रिल्डको बुलाओ ।

सब —— महान् हम्बरकी जय ! अब हम्बर ही थोर होगा । वह अपने हाथोंमें हाइमिरकी हड्डियोंको नया रूप देगा । बोलो हऽऽऽ म्बऽऽऽ रऽऽऽऽऽऽऽ

हम्बर —— हम जिस नदीपर चढ़ रहे हैं उसका पुराना नाम बदल जायगा । अब उसे मेरा नाम मिलेगा और यह सारा प्रदेश अब एलबानी नहीं, हम्बरलैंड कहाएगा । इस संसारका नाम बदल जायगा और वह मेरा स्मारक होगा ।

(एस्ट्रिल्डके साथ दासोंका प्रवेश)

एस्ट्रिल्ड —— देवो, यदि तुम हो तो मेरी रक्षा करना !

सब —— हम्बरकी जय !

हम्बर —— लो, वह नारी जिसकी रहस्यभरी आंखें, देशोंको अपने वशमें कर लेती हैं, वही हम्बरको नमन करनेके लिये आ रही है, वह हम्बरके प्रतापके अधीन एक नगण्य अनुचर बननेमें ही खुश है । लो नमन करो राजकुमारी, तुम फ्रेया और गुड्गुनसे भी ज्यादा भाग्यशाली हो । वे तो केवल देवों और अर्ध-देवोंकी पत्नियां थीं पर तुम तो हम्बरकी दासी हो । लो, जिसकी इच्छा पूरी करनेके लिये बड़े-

बड़े राज्य संघर्ष करते थे वही मेरी पादपीठ बनी है। मैंने इसे पानेके लिये देशोंकी और राष्ट्रोंकी हत्या की और इसके बापकी आंखोंके रहते, उनके आगे इसके सैकड़ों योद्धा प्रेमियोंके सामने इसपर बलात्कार किया। लेकिन वे सब-के-सब भी उसकी चीख-पुकारके समय कोई सहायता न कर सके।

सब —— हम्बर !

ओफा —— महान् हम्बर, प्रतापी हम्बर !

हम्बर —— लड़की, उठ औंर मुझे शराब दे, लेकिन देना राजकीय ढंगसे, यह तेरे बाप-की खोपड़ी है।

(अपूर्ण)

अकब और ऐसर हद्दान

अकब और ऐसर हद्दान

(श्रीअरसिवन्दके एक अप्रकाशित नाटकका प्राप्त अंश)

अकब — व्योमपर मेहराब बनाते हुए आकाशसे, नील नभसे सूर्यको बुझा दो, मिटा दो; गर्जनसे बहरी बनी चट्टानोंके नीचे झाग उगलते और ऊपर उठ-उठकर अपनी फुहारोंसे उनके शिखरोंका अभिषेक करते सागरको भूल जाओ, लेकिन यह आशा कभी न करना कि बआल सह लेंगे या बआल माफ करेंगे। यह एक असम्भव महत्त्वाकांक्षा है, यह विचार सत्यसे बहुत उखड़ा हुआ है।

ऐसर हद्दान — बआल ! मुझे लगता है तुम बआलपर विश्वास करते हो !

अकब — और तुम किसपर विश्वास करते हो ? गंवारू जनता सूर्यको देवता मानती है, पत्थरको देवता मानती है। मैं इसे महत्त्व नहीं देता, लेकिन बआल तो साक्षात् हैं।

ऐसर हद्दान — और अगर वह साक्षात् है तो हम तुम बआल हैं, उन्हींकी तरह प्रार्थना और बलिदानके अधिकारी हैं। खैर, तब बैठकर उससे कहो, "भगवान्, अगर आप बआल हैं, तो आपकी वेदीपर अग्नि अपने-आप प्रज्वलित हो उठे, मनुष्यों-को विश्वास हो जाय।" क्या देव यह कर सकेगा, और अगर न कर सके, अगर उसे अपनी पवित्र अग्नि जलानेके लिये चकमक, लकड़ी और मानवीय हाथोंकी जरूरत हो, तो क्या वह मानवसे भी कम नहीं है ? चकमक और लकड़ी हमारे कामके लिये काफी है। यदि हमारे ओठोंके द्वारा रटे जानेके बिना वह जिन्दा भी न रह सके तो वह एक लुंज-पुंज नामसे बढ़कर क्या है ?

अकब — और चकमक और लकड़ी ? उन्हें किसने बनाया या उन हाथोंको किसने आकार दिया जो आग सुलगते हैं ? ये ओठ किसने बनाये जो उन्हें शून्य साबित कर रहे हैं ? या किसने तुझे यह स्पष्ट और शंकाशील मस्तिष्क दिया ? तेरी शासनकला और तेरी साहसी, तिरस्कारभरी इच्छाशक्ति जिसके कारण तू जिसका उपयोग करता है उसीसे नफरत करता है ? क्या इन सबका निर्माण तूने किया था ?

ऐसर हद्दान — नहीं, मेरे मां-बापने किया था। यूँ मान लो कि मेरी माताके गर्भ-को जिस बीजने छुआ था वही भगवान् है, उसीने परिचित प्रक्रियासे यह गृह बनाया जिसमें ऐसर हद्दानका निवास है।

अकब — उस बीजका निर्माण किसने किया ?

ऐसर — वह और एक बीजसे निकला, और वह बीज धरतीके सबसे पुराने तत्त्व पृथिवी, जल, प्रकाश, गरमी और आकाशसे निकला था। सब कुछ उस शक्ति-द्वारा चालित है जो अपने स्वभावसे बाधित होकर अनिवार्य रूपसे सब काम करती रहती है। वही मैं हूँ और वही लकड़ी और चकमक है, वही अकब, वही एसीरिया है और वही सृष्टि है।

अकब — वह शक्ति कहांसे आयी ?

ऐसर हद्दान — वह अतीत कालसे है।

अकब — तो उसीको बआल क्यों न कह लें ?

ऐसर हद्दान — इसकी मैं परवाह नहीं करता कि उसको क्या नाम दिया जाय, मित्र या भगवान्, तुम बआल कहते हो, परीजाद कहता है कि वह अहुरमज्द, मित्र और महिमावान् सूर्य है, मैं कहता हूँ वह शक्ति है।

अकब — तब फिर एसीरियाके कानूनको बदलनेकी कोशिश किसलिये करते हो, बआलके संप्रदायको क्यों उखाड़ फेंकना चाहते हो ?

ऐसर हद्दान — मैं नहीं उखाड़ रहा वह अपने-आप ढह रहा है। उस कूड़े-कचरेको क्यों रखे रहें ? पुजारी, मुझे राज्यके लिये ज्यादा सौम्य और कम खूनी संप्रदाय-की जरूरत है। हर मोड़पर मानवरक्तके लिये चीख पुकार करनेवालेकी नहीं; क्योंकि उसका मतलब होता है बहुत सारे श्रमकी, सुवर्णकी, सैनिकोंकी और शक्तिकी क्षति। मित्रकी पूजा ऐसी ही है। चलो, पुजारी, तुम खुद ही संदेह-शील हो, किन्तु अपने व्यापारकी रक्षा करते हो; इसी तरह मैं भी अपने व्यापार-की रक्षा करता हूँ; सभी करते हैं। अगर यूँ कहा जाय कि बआल और मित्र सब एक हैं, किन्तु बआल अपना स्वरूप बदल रहा है, अधिक सौम्य और दयालु बन रहा है, मनुष्यका मित्र बन रहा है, तो क्या तुम्हें नुकसान होगा ? या रक्त-कर जैसे व्यर्थ करके स्थानपर यदि हम कीमती चढ़ावा चढ़ाएं और हारे हुओंको बलि देनेके स्थानपर लूटे हुए स्वर्णके ढेर लगा दें तो ?

अकब — तुम यह आग्रह करते हो। जनताका मानस इतना गतिशील नहीं है।

ऐसर हद्दान — अगर हम तुम सहमत हों तो कौन इन्कार करेगा ? अरे भई, मुझे इसकी परवाह नहीं कि काम किस तरह होता है, शास्त्रोंको गढ़ लो, पुरानी लिखावटकी जाली किताबें बनाओ; बआलको सिरपर बुलाकर कोड़े खाते हुए लोग उसकी आज्ञाकी घोषणा करें। तुम चाहो तो बहुत सूक्ष्म और कुशल हो सकते हो। सारे एसीरियाके धार्मिक प्रमुखका पद, मेरे सारे करका बीसवाँ

भाग और भक्तोंके यहांसे मित्रके पास आनेवाला सारे-का-सारा चढ़ावा तुम्हारा होगा। खिन्न, मौन गुलाम ओनन, या नीतिकुशल इकबाल सूफा दे सकें उससे यह पदवृद्धि अनेक गुनी है।

अकब —— यह क्यों ?

ऐसर हद्दान —— तुम समझते हो मैं नहीं जानता ! अकब, मैं तुम्हारे बन्द कपटी दिमागकी एक-एक गतिविधिको देखता हूँ।

अकब —— अगर देखते हो, तो अपना हाथ क्यों रोके हुए हो ?

ऐसर हद्दान —— यह बात साहससे, प्रायः ईमानदारीसे पूछी गयी है। क्योंकि रक्त-पातसे राज्य भली-भांति नहीं टिकता। वह नीति जो दोषपूर्ण दीवारमें एक दरार देखती है और उसकी मरम्मत कर देती है वह उस नीतिसे अच्छी है जो सारे मकानको ढाकर नये सिरेसे बनाती है। मैं जनताके मानसको जानता हूँ। उसे कोई ऐसी बीमारी लगी है जिसका निदान किसी वैद्यके पास नहीं है। मैं धरतीमें एक भयानक हलचल देख रहा हूँ, और अपनी पुरानी नींवको मजबूत कर रहा हूँ। अकब, तुम जानते हो मेरे पास एक तलवार है लेकिन वह सो रही है। मैं तुम्हें उसकी मूठके रत्न और मैत्री देता हूँ। लोगे ? देखो, मुझे तुम्हारे जैसे स्पष्ट मस्तिष्क और साहसिक हृदयकी आवश्यकता है। तुम्हें मारकर मुझे क्या मिलेगा ? एक जन्मजात राजनीतिज्ञ हाथसे निकल जायगा।

अकब —— महाराज, आप जीत गये, मैं झुकता हूँ।

ऐसर हद्दान —— यह अच्छा हुआ। लो, समसौतेपर हाथ मिलाओ।

मथुरा का राजकुमार

शायद यह ईडरके राजकुमारका पहला रूप होगा।

नाटक के पात्र

अजमीढ़ —— मथुराका राजकुमार, पहाड़ोंमें भागकर आया हुआ शरणार्थी।

इन्द्रद्युम्न —— उसका मित्र और साथी।

अत्रि —— सीथियनोंकी सहायतासे मथराका राजा।

तोरमाण —— कश्मीरका राजकुमार, उत्तर-पश्चिमके एक सीथियन युद्धनेताका बेटा।

कंक —— एक ब्राह्मन विदूषक।

हुष्क —— सीथियन अंग-रक्षकोंका कप्तान।

मयूर —— अत्रिका सेनापति और मंत्री।

इन्द्राणी —— मथुराकी रानी।

उर्मिला —— मथुराकी राजकुमारी, अत्रि और इन्द्राणीकी बेटी।

लीला —— हुष्ककी पुत्री।

अंक १

दृश्य १

मथुरा, महलका एक कक्ष।

अत्रि, इन्द्राणी

अत्रि — यह चाहे जितना कठोर, भद्दा और गंवारू क्यों न हो इस खुले बल-प्रयोगको कोई नहीं रोक सकता। इन्द्राणी, दुःसाध्य और अव्यवहारिक विद्रोहके द्वारा निमंत्रित अत्याचार ज्यादा गहरा, नीचतापूर्ण, लज्जाजनक होता है जो पराजित दासोंपर नंगे, घृणास्पद रूपमें किया जाता है। दुराग्रही पवनके आगे झुकनेवाला तृणा उस तनेसे ज्यादा बुद्धिमान होता है जिसे तूफान उखाड़ फेंकता है। हम सामर्थ्यके आगे झुक रहे हैं, किन्तु दरबारी सम्मानमें लिपटी हुई सामर्थ्यके आगे। अनिष्टके चाबुकके आगे झुकनेसे तो यही अच्छा है।

इन्द्राणी — एक अधिक गौरवपूर्ण पराजय भी होती है — हम टूट भले जायं पर झुके नहीं। और हम टूटेंगे अवश्य, यह बात मैं जानती हूँ, किन्तु हमेशाके लिये कलुषित होकर जीना, कीचड़ लगी मखमली पोशाक पहनकर गुड्डेका सलमा-सितारोंवाला मुकुट पहनकर सारी दुनियाके लिये उपहासका पात्र बनना, सचमुच अपमान है।

अत्रि — यह राज्य हमारे हाथोंमें इसलिये है क्योंकि उत्तरका सीथियन हमारे दल-बलकी मदद करता है।

इन्द्राणी — हां, लेकिन राजोचित समझौतेसे, गरिमामय संधिसे, क्रय या सामाजिक कलंकके कारण नहीं।

अत्रि — हमारी बच्ची साम्राज्ञी बनेगी।

इन्द्राणी — और साथ ही बिरादरीसे बाहर भी होगी।

अत्रि — ऐसे मिले-जुले कई विवाह हुए हैं और उनसे जगत्-प्रसिद्ध सम्राट् जन्में हैं।

इन्द्राणी — हां, लेकिन हमने लड़कियां ली हैं दी नहीं और वह भी युद्ध वीरोंसे गुलामोंसे नहीं। पराजित यूनानीने अपनी मुक्तिका मूल्य भारतीय चन्द्रगुप्तको बेटी देकर चुराया था, और यह जानते हुए कि उसकी बेटीका पुत्र कभी

राज न कर सकेगा।

अत्रि — एक और बन्धन है। सीथियन सबसे विवाह कर लेता है और फिर इसका निर्णय निष्पक्ष कालपर ही छोड़ता है कि उसके राजका उत्तराधिकारी देशी या विदेशी कौनसी कोखसे जन्मेगा।

इन्द्राणी — इस सम्मानको बड़ी घिनौनी कीमत देकर खरीदा जाता है। और कोई चारा भी तो नहीं। हम अपनी बेटी देनेसे इन्कार करेंगे तो वह जबरदस्ती ले लेगा और तब उसे बांदी बनायगा पत्नी नहीं।

इन्द्राणी — अच्छा, ऐसा करो। झुकनेका दिखावा करो लेकिन लड़कीको अपने पहाड़ियोंके किलेमें भेज दो। आर्य राजाओंमें, मगध, अवन्ती या दक्षिणमें जो सबसे बड़ा वीर हो वही वीरताका प्रदर्शन करके अत्रि-कुलकी कन्याका योग्य साथी बन जाय। उसके और कश्मीर नरेशके बीच युद्ध जमने दो। हम कश्मीर नरेशके कोपसे बच निलेंगे।

अत्रि — ऐसा ही होगा। मैं एक विश्वासपात्र आदमीको सुबहसे पहले मगधकी ओर भेज दूंगा। तबतक तुम अपनी बेटीको पहाड़ोंपर जानेके लिये तैयार कर लो।

(इन्द्राणी प्रसन्न होकर चली जाती है)

यह अच्छा नहीं होगा। उसे चालाकीका पता चल जायगा। रानी ऐसे भयंकर बर्बरको बहकानेके लिये कह रही है जो तूफान-सा तेज और उग्र प्रतिशोधी है, जो दुनियाको पैरों तले कुचलनेवाले, हवामें हिनहिनाते हुए युद्धके तेज घोड़ेकी न्याई है जिसके नथुने लड़ाईकी गंध पानेके लिये हमेशा खुले रहते हैं। उसकी राजकीय आंखें मनुष्योंके मनको पढ़ सकती हैं। वह गर्वीला, प्रचण्ड और हिंसासे भरा आदमी मार-काटके लिये और बस्तियोंको उजाड़नेके लिये तैयार रहता है। रानीकी सलाह है कि मैं ऐसे आदमीको स्पष्ट टालमटोल करके बहकाऊं। मैं उर्मिलाको पहाड़ी किलेपर तो भेज दूंगा लेकिन वहांसे मगधराज नहीं, वही उसे गुप्त परिणयके लिये ले जायगा। वह उग्र है तो क्या हुआ आदरणीय है, घमण्डी तो है पर राजनीतिज्ञ भी है। बदलते हुए समयके साथ हमारी जातिके पूर्वाग्रहोंको भी अधिक आवश्यक विचारों और परिस्थितियोंके अनुसार बदलना होगा। रीति-रिवाज तो बदलते रहते हैं, लेकिन अगर हम बहुत उतावलीमें परिवर्तन लानेकी कोशिश करें तो रीति-रिवाजको तोड़ना भयंकर हो सकता है। जनमतको उत्तेजित करना ठीक नहीं है, उसे झाँसा देना ही ठीक है।

कौन है ? मयूरको बुलाना जरा। राजाका पहला काम है अपने राजको संभाले रखना। साधन, चाहे प्रतिष्ठापूर्ण हों या निन्दनीय, आखिर साधन हैं। जो ज्यादा उपयोगी हों उन्हींका आंख बन्द करके उपयोग करना चाहिये।

(मयूरका प्रवेश)

मयूर, तुम जानते हो न, कश्मीर नरेशके बेटेने मेरी बेटीसे ब्याह करनेका प्रस्ताव किया है।

मयूर — हम पहले ही इसकी बात कर चुके हैं।

अत्रि — तुम्हारी अब भी वही राय है ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि मेरी प्रजा विद्रोह करेगी ?

मयूर — यह निश्चित है।

अत्रि — सीथियाकी तलवारें उन्हें चुपचाप और निश्चेष्ट रख सकती है।

मयूर — जी, और आपको भी दास और नपुंसक किरायेका टट्टू बना सकती हैं।

अत्रि — तब यूँ करो। बात अभीतक गुप्त है, उसे गुप्त ही रहने दो। पहाड़ियोंमें गुपचुप उर्मिला और तोरमाणका ब्याह रचा दो, ऐसा लगे मानो मेरी स्वीकृतिके बिना ही उर्मिलाने उसके प्रणय-निवेदनको स्वीकार कर लिया है। तब मथुराकी प्रजा किसके विरुद्ध विद्रोह करेगी ?

मयूर — हां, किया तो जा सकता है ऐसा, लेकिन क्या उस सीथियनका गर्व इसे स्वीकार करेगा ? और अगर रिश्ता गोपनीय रहा तो क्या वह इसे मानेगा ?

अत्रि — करेगा, उसे स्वीकार करना तो चाहिये। वह हर सम्भव उपायसे उस गर्वका सिर नीचा करना चाहेगा जो उसे अपने नीचेसे नीचे कर दाता राजाओंके सामने नीचा स्थान देता है। और रिश्तेके लिये, पहले उसे प्रतिज्ञा करनी होगी। उसके बाद ही वह इस लड़कीको पा सकेगा। मयूर, तुम स्वयं तुम उसके डेरेपर जाओ और उसे राजी कर लो। कुछ अनुरक्षकोंके साथ उर्मिलाको तुरन्त रुद्र पहाड़ीकी ओर रवाना कर दो। मयूर, सफलताके लिये मैं पूरी तरह तुमपर भरोसा करता हूँ। मेरा मुकुट और मेरी लाज तुम्हारे चरणोंमें है।

मयूर — राजन्, आपका मुकुट मेरे पास सुरक्षित है, आपकी लाजकी भी रक्षा करूंगा।

अत्रि — तुम हमेशा मितभाषी रहे हो पर तुम्हारा हर शब्द सोने जैसा होता है।

(जाता है)

मयूर — आप जिस अपमानकी इच्छा कर रहे हैं उसकी अपेक्षा आपको धोखा देना

ज्यादा अच्छा है। आपका मुकुट अपना जाल सारे भारतपर फैलानेवाले धूर्त, साहसी और उग्र सीथियन राक्षसकी अपेक्षा शक्तिकी सहायताके लिये छल-कपट और छल-कपटकी सहायताके लिये शक्तिका प्रयोग करनेवाले तोरमाण-की अपेक्षा मेरे हाथोंमें ज्यादा सुरक्षित है।

(मेखलाका प्रवेश)

मेखला — वह अकेला है, सुनो हे मयूर !

मयूर — रानीकी ओरसे है ?

मेखला — पढ़ देखो।

मयूर — उनसे कह दो कि मैं वचन देता हूँ। उर्मिला सीथियनके साथ विवाह करनेसे बच गयी।

मेखला — इसका मतलब तुम करोगे ?

मयूर — तोरमाणसे उसका ब्याह नहीं होगा।

(मेखला जाती है)

यह एक कौर फंदा है। ऐसा लगता है कि राजा अपनी प्रजाको धोखा देता है और रानीको भी ठगता है। न तो रानी ही उस पर विश्वास करती है और न प्रजा ही। छल-कपट भरी सर्पगतिसे चलनेवाला भूठा राजा अपनी उलट फेरसे जितना कमाता है उतना ही लोगोंके अन्दर अविश्वास पैदा करके गंवा देता है। मैं मगध नरेशको लिखूँगा तो जरूर, लेकिन रानी जैसे स्वप्न ले रही है उससे अलग ही ढंगसे। पहले मैं अपने निष्कासित सिंह अजमीढ़के पास दूत भेजूँगा जो रुद्र पर्वतपर भटक रहा है। दूसरा महान् मगध-नरेशके पास भेजूँगा जो देशको बर्बरों द्वारा कुचले जानेसे बचानेके लिये शक्ति इकट्ठी करेगा। मैं अपने आप तोरमाणके पास जाकर सीथियन संकल्प शक्तिका मुकाबिला करूंगा। परिणाम वही होगा जो भगवान्ने न जाने कबसे ठीक कर रखा है।

(आगेके पृष्ठ फटे हुए हैं)

— श्रीअरविन्द

पाप का जन्म

(इसका संशोधित रूप 'पापका जन्म' नामक कवितामें मिलता है
जिसका भावानुवाद अन्यत्र छपा है)

पात्र परिचय

लूसिफर –– शक्तिका देवदूत ।
सिरिओथ –– प्रेमका देवदूत ।
ग्रेब्रिअल –– आज्ञा पालनका देवदूत ।
माइकेल –– युद्धका देवदूत ।
राफेल –– मधुरताका देवदूत ।
एलोहिम
बेलिआल –– बुद्धिका देवदूत ।
बाडल –– सांसारिक समझदारीका देवदूत ।
मोलोक –– कोपका देवदूत ।
सूर्य
एष्ट्रोराथ –– सौन्दर्यका देवदूत ।
मेरोथ –– यौवनका देवदूत ।

अंक २

दृश्य १

लूसिफर — प्रकाश और प्रतापके स्वामी, अपनी किरणें उठाओ, कष्ट-पीड़ित प्रलय-पर अपनी किरणें डालो, मेरी आज्ञा मानो।

सूर्य — लूसिफर ! प्राचीन जगत्पर राज करनेवाले देवोंपर तुझे किसने अधिकार दिया ? मैं तेरी आज्ञा क्यों मानूं ? क्या तू ईश्वर है ? क्या तूने विद्रोह करके सर्वशक्तिमानको स्वर्गके सिंहासनसे उतारकर रसातलमें फेंक दिया है ? क्या उसने तुम्हें परम आदेश दिया है ? तब मन्त्री या सेवककी तरहसे बोलो, तारा मण्डलपर अधिकार रखनेवालेके लहजेमें नहीं।

लूसिफर — तुझे अपने ज्योतिर्मय विश्रामसे किसने खींच बुलाया, तू यहां कैसे आया ?

सूर्य — उसकी आज्ञासे विवश होकर जिसके आदेशके आगे सब देवता भी थर्राते हैं।

लूसिफर — उसकी, या मेरी आज्ञासे ? यह मैं देख लूँगा। उठो सूर्य, जब तक काल है अपने चारों ओर घूमनेवाले प्रतापी ज्योतिर्मण्डलसे नील नभमें सर्जन शक्ति और उर्वर अग्नि बिखेरते चलो।

सूर्य — लूसिफर, प्रभातके पुत्र, स्वर्गमें सर्वप्रथम, तुझे किस पागलपनने पकड़ लिया है ? तेरी शान्ति-विहीन आंखोंसे कैसी भयानक अद्भुत दुष्टतापूर्ण, दुर्बोध और भड़कीली अशुभ शक्ति झांक रही है !

लूसिफर — हुकुम मान !

सूर्य — मेरे आगे कोई विकल्प नहीं है। तेरे अन्दरसे शक्ति उछलकर मेरे ऊपर आ रही है। मेरे अन्दर जलती हुई टीसें उठ रही हैं, मुझे छोड़ दो, हे भयानक देवदूत, मैं आज्ञा मानूँगा।

लूसिफर — मेरे अन्दर शक्ति बढ़ रही है, दुनियाको बनाने और बिगाड़नेकी शक्ति बढ़ रही है। मैं सर्वशक्तिमान हूँ। अपनी ज्योतिर्मय सेनाओंसे अनन्तको भरनेवाली अमरताकी सन्तान, हे आश्चर्यकी सृष्टि, हे इच्छाओंकी कठ-पुतलियो, हे शाश्वत अग्निमें चक्कर लगानेवाले सूर्यगण, हे आकाशमें असंख्य बीज बोनेवाला तारागण, हे विविध जीवनोंवाली सृष्टियो ! मैं तुम्हारा राजा हूँ। मैंने जान लिया है कि भगवान् और मैं एक हैं और अगर एक हैं तो

समान भी हैं। मैंने ठीक ही माना है कि भगवान्‌का भी विकास होता है, भगवान् भी बढ़ता है। युवा होनेके नाते मैं अधिक महान् हूँ। उस शक्तिसे महान् हूँ जिससे मैं जन्मा था। नया पुरानेसे श्रेष्ठ होता है।

बेलिअल —— तू क्या कर रहा है लूसिफर, भगवान्‌के दूत? अनन्त आकाश समुद्र-की तरह कलमला रहा है; स्वर्गीय प्रदेश झंझाके झोंकोंसे कांप रहे हैं। प्रकृति आश्चर्यसे स्तब्ध खड़ी है। यह विद्रोह कहांसे आया? दुनिया भरको पलट देनेकी शक्ति तुझे दी किसने?

लूसिफर —— देखते जाओ बेलिआल, मेरे साथ देखते चलो। अनन्त, गतिशील और प्रगति करता हुआ संसार एक चरम बिन्दु पर पहुँच रहा है। भगवान् समाप्त हो जाएगा और लूसिफर भगवान् बनेगा।

बेलिआल —— तू ऐसी बातें करता है जो पागलपन ही कर सकता है। अगर भगवान् भगवान् हैं तो वे कैसे बदल सकते हैं और कैसे समाप्त हो सकते हैं?

लूसिफर —— देखते चलो बेलिआल! मैं सत्य प्रमाणित कर दूंगा। बुद्धिमान् देव-दूत।

पापका जन्म

(कविताका भाव)

लूसिफर, सिरिओथ

लूसिफर —— सिरिओथ, कौनसी प्रबल और अकथनीय कामना तुझे प्रेरित कर रही है ? तेरी अभ्यासगत नीरवता वेगसे उलट गयी है और जो आंखें मधुर शांतिके कारण दैवी लगती थीं उनमें मानव ऊष्मा और कष्टमय आवेश झांकता है।

सिरिओथ —— हे प्रभात-पुत्र लूसिफर, देवदूत, तू भाग्य-निर्माताओंमें सबसे महान् है। तुझे ही यह वर दिया गया है कि जब तू स्वर्गकी पारदर्शक दीवारोंमेंसे भव्यताके साथ झांके तो तू अपनी जादूभरी दृष्टिसे मर्त्योंको बाधित करके सारी सृष्टिको डुला सके। हे कार्यरत, धैर्यशील, अथक देवोंके राजा, क्या तेरा आनन्द अभी नया ही नया है ? जिन स्थानोंपर महान् ज्वाला और भव्य इच्छाएं सदा ही तुझे आगे बढ़नेकी प्रेरणा दिया करती थीं क्या तुझे नहीं लगता कि उन स्थानोंको कभी दिव्य थकान हड़प लेती है। मुझे लगता है कि हमारी नित्यता सेवाके लिये अत्यधिक दीर्घ है। कोई शब्द है, कोई विचार है जो अधिक देवोमय है।

लूसिफर —— सिरिओथ, लो मैं उस शब्दका उच्चारण करता हूँ। वह 'शक्ति' है न ?

सिरिओथ —— नहीं, लूसिफर वह प्रेम है।

लूसिफर —— प्रेम ? प्रेम ही ने करोड़ों और अरबों वर्ष तक मुझे प्रेरणा दी और मेरे अन्दर सेवाकी, क्रियाशीलताकी जबर्दस्त मांग पैदा की। वह मुरझा जाता है और उसकी जगह कोई दानवी आवेग लम्बे डग भरता हुआ मेरे ऊपर आ बैठता है। मैं जगत्को अपार और विशाल रूपमें देखता हूँ। मैं स्वर्गको नमोनील आनन्द और तेजस्वीतासे भरा पाता हूँ और उसमें करोड़ों तारे भरे हैं। सिरिओथ, संसारका स्वामी कैसे बन गया ? क्या उसने किसी पुराने दुर्बल अधिपतिको उसके प्राचीन शासनसे धक्का देकर सब कुछ अपने कब्जेमें कर लिया ? क्या उसने शान्तमय उपायोंसे, स्वीकृति या दायके रूपमें यह सब पाया है ? और अगर वह हमेशासे है और हमेशा राज करेगा तो क्या उसके

विशाल राजकी कोई सीमा नहीं है ? क्या उसके अपरिमेय देशमें कोई भूला-बिसरा अंधेरा कोना नहीं है जिसे हथियाकर मैं अपने लिये एक ऐसा ही भव्य साम्राज्य खड़ा कर लूँ और उसमें नित्य शासनका आनन्द ले सकूँ ?

सिरिओथ —— देवदूत, ये विचार भी तेरे जैसे विशाल हैं। लेकिन क्या तू द्रोह करेगा ? अगर वह विजय पाने और दण्ड देनेमें भी महान् है तो तेरा क्या होगा ? तब शायद तेरे भाग्यमें अनन्त शासनकी जगह अनन्त हृदय-विदारक भयंकर यातनाएं होंगी।

लूसिफर —— निस्तेज, अरुचिकर, भयानक विवशताके कारण, बिना किसी इच्छाके सेवा करते रहनेसे तो यही अच्छा। अनन्त कालमें घंटे भरकी फुरसत को ढूँढ़ते जाओ लेकिन उसकी जगह मिलता क्या है लौह आवश्यकता, देशके लिये, स्थानके लिये, स्वाधीनताके लिये व्यर्थ हाथ पांव मारना।

सिरिओथ —— तेरा इरादा है ?

लूसिफर —— सिरिओथ मेरा इरादा नहीं है, मुझे अनुभव होता है।

सिरिओथ —— क्रियाशील शक्तिकी अनुभूतिने मुझे कामपर लगाया था जैसे तारे गतिशील हैं, सूर्य अबाध रूपसे आकाशमें जलता रहता है और प्रचण्ड झंझा-वात दौड़ता चलता रहता है। लेकिन मैंने वसन्तसे मधुर स्पर्शका अनुभव किया है, मैंने एक आनन्दमय संगीत सुना है जो कोमल, असह्य आनन्दकी मधुर चोटोंसे हृदयको पागल करता है। इसकी बराबरीका आनन्द कहां, किधर मिल सकता है ? लूसिफर तुमने अपना श्रम प्रेमसे शुरू किया था। किस प्रेमसे ?

लूसिफर —— सहायता करनेकी, सेवा करनेकी भव्य कामनासे ?

सिरिओथ —— मुझे इसमें रस नहीं है। मैं इसकी खोजमें हूँ कि दो व्यक्ति आलिंगन-में एक हो जाएं, एक दूसरेमें घुल-मिल जाएं और आत्मा आनन्द सागरमें लुढ़कती, लोटती चली जाय।

लूसिफर —— वह स्वीकृति देगा ?

सिरिओथ —— मुझे एक बाधाका, निषेधका अनुभव होता है। किसीने एक शब्द प्रयोग किया था मैं उसे पकड़ तो नहीं पाया पर उसे पाप कहता हूँ।

लूसिफर —— यह शब्द नया है, ये सब चीजें भी तो नयी हैं।

सिरिओथ —— मुझे नहीं मालूम वह कौन था। उसने हंसकर कहा 'पाप, संसारमें पापका जन्म हो गया है। विद्रोह और परिवर्तनने सिरिओथ और लूसिफर ——सांध्य और प्रभात तारा —— के यहां जन्म लिया है। हे जगत्, आनन्द

मनाओ।' और मैंने एक स्वप्न-सा देखा कि एक भव्य मुखाकृति वाली, डरावनी, भयानक किन्तु सुन्दर स्त्री, अपने अन्दर संकटको छिपाए हुए तेरे दिमागमेंसे निकलकर मेरे दिमागमें कूद पड़ी। और संसार संघर्ष और चिल्ल-पोंसे भर गया। मुझे लगा कि जहां-जहां उसके सुन्दर अशुभ, अपशकुनकारी चरण पड़े थे, उस जगह को, अपनानेके लिये, उसके वस्त्रोंको छूनेके लिये देवता, देवदूत और मनुष्य घोर प्रयास कर रहे थे। वे चिल्लाते जाते थे, हे लूसिफर-की बेटी, हे मधुर, आराध्य, शक्तिशाली पापात्मा तू हमारी हो जा।'

लूसिफर — सिरिओथ, अगर उसे आना ही है तो उसके जन्मकी प्रतीक्षा करो। मैं यह जानता हूँ कि आवश्यकता अनन्त जगत्पर राज्य करती है। और शायद स्वयं भगवान् भी एक अनजानी अनिवार्यताके आगे झुकते हैं। जब समय आएगा तो हम फिरसे सलाह करेंगे कि हमें क्या करना चाहिये।

इलनीकी डाइन

(जंगलका सपना)

पात्र परिचय

कोरिलो –– इलनीका राजकुमार।
वेलेन्टाईन –– एक मुसाहिब।
आएम्बिलकस
पेलियस –– जंगलके लोग।
मारसियोन ––
मेलेंडर –– ग्रामीण कवि।
जंगलके लोग।
मुसाहिब ––
ऐलेसिएल –– इलनीकी डाइन।
ग्वेंडोलेन –– उसकी बहन।
मिर्टिल
डोरिस –– वन कन्याएं।
एर्मेंग्लिड या हर्मेनगिल्ड
जंगलकी लड़कियां

15-16

इलनीकी डाइन

इलनीके जंगलमें लड़के-लड़कियां नाच रहे हैं

गाना —

अंधेरे पेड़के नीचे, कह दे बहनी तेरे साथ कौन नाच रहा है ?
उसके बाल मधुर धूप-से हैं, उसकी आंखें मईकी तारों भरी रात हैं।
पत्तोंसे बने परदेके पीछे चूम कर कौन तेरा राज्याभिषेक कर रहा है ?
उसके ओठ माणिक जैसे लाल हैं और उसके गाल पेड़ोंपर लगे फूलोंकी रोशनी जैसे हैं।
घास जैसी हरी शाखाओंके नीचे कौन तेरी छातीका सहारा लिये है ?
उसकी आवाज अबाबीलकी उड़ान जैसी है उसके अंग सफेद ओसमें ढके नरगिस जैसे हैं।

आएम्ब्लिकस — लो, अब नाचके हर्षोन्मादकी कड़ी खोलो क्योंकि क्षितिजकी नील लोहित सीमापर, उदयाचलकी ढलानपर, स्वच्छ मेघहीन व्योमपर आग्नेय परिधान और मधुवर्ण केशवाला स्वर्गीय पुष्प तेजीसे खिल रहा है। जबतक स्वर्णिम करोंवाला सूर्य प्रभातका नील गुम्बजवाला विशाल स्मारक नहीं बना लेता तब तक इस पुष्प-खचित तटपर जहां धूप भी सिर हिलाती है हम भयानक कहानियोंका ताना बाना बुनें।

मिर्टिल — चलो ऐसा ही हो, लेकिन हमारे छन्दोंके निपुण जौहरी, मधुर शब्दोंको उदारतासे लुटानेवाले कोकिल-कंठ कविको कौन-सा काम रोके हुए है। अभी तक सो रहा है क्या ? हमारे मेलेंडर, धूसर भौंहोंवाले मेलेंडरको सबसे अन्तमें किसने देखा था ?

हर्मेनगिल्ड — इससे पहले कि गेरुआ केशविन्यासवाला प्रात दिवाके आलिंगनमें आग्नेय चक्षु सूर्यको जन्म दे, मैंने उसे काई से ढकी गुलाबी पगडंडियोंसे सजी गुफाके पास रुपहले-से अंगोंवाली डाइन ऐलेसिएलके साथ देखा था।

मिर्टिल — भगवान्से प्रार्थना करो कि काले बालोंवाली डाइन कुछ नुकसान न पहुँचा सके। उसमें बहुत शक्ति है। उसके पास साक्षात् नरकके मृत्युकुण्डों-में बनाया हुआ कुचला, संखियोंकी पुटवाला घातक धतूरा, मारक गुलाबी कण्टालिका और रसातलके विषैले फलोंसे बने क्वाथ हैं। उसे यह विद्या

अपनी मांकी नरकमें पगी सम्पत्तिके रूपमें मिली है।

मारसियोन — क्या उसे वहांसे बुला लेना ज्यादा अच्छा न होता ?

आएम्बिलकस — बात बुद्धिमानीकी है। अच्छे मारसियोन जल्दी करो अपने शब्दों में मधु घोलो और उसे यहां खींच लाओ। लेकिन इधर तुम लोग गान और नाचके साथ इन उदास घड़ियोंमें आनन्द उंडेलो।

दृश्य १

जंगलमें एक पथ

ऐलेसिएल — तुम क्यों जाओगे ? अभी तो दुपहरी नहीं खिली, प्रिय ! अभी तक चांदी-सी चमकती घासपर ताजा ओसके तारे लगे हैं, पक्षियोंके कलरव-से पत्ते भी गा उठे हैं, और बंसीकी-सी ध्वनियां उपवनमें फड़फड़ा रही हैं। तुम उस जगह आराम करो जहां नीली आंखोंवाली बनफशा के फूल सेवती कहाने-वाले हल्के सुनहरी बिगुलोंके साथ परिणय कर रहे हैं। मैं तुम्हें गुलाबकी कलि-योंसे गुँथी कहानियोंके फूलोंसे लदे फीतोंसे बांध दूंगी, या तुम्हारी आत्माको तालबद्ध संगीतके चिकने पंखोंपर खींचनेके लिये मोहक धुनें गुनगुनाऊंगी। अभी तो दुपहरी नहीं खिली है प्रिय, तुम क्यो जाना चाहते हो ?

मेलेंडर — अपने अवकाशका समय बितानेके लिये देहती युवक मेरे संगीतमय स्पर्शकी आशा कर रहे हैं। मेरे अन्दर इतनी हिम्मत नहीं है कि बहुत देर तक तेरे बरफीले पार्श्वमें बैठा रहूँ। तुझे लोग खतरनाक बताते हैं। तू कैसी सुन्दर है ! तेरे कुमकुमसे रंगे कपोलोंमें उषा रंग भरती है और तेरी अलकोंमें बैंगनी पैंजी जैसी रात तारोंकी जगह ओससे भीगे गुलमेंहदीके फूल लटकाती है। तू चौड़ी निश्छल पंखुड़ियोंवाला ज्योत्स्ना-सिंचित पुष्प है जो आंखोंको बिलकुल निर्दोष लगता है। लेकिन कहते हैं तेरे प्यालेमें हलाहल वाली मदिरा भरी है। जो कोई उसे पी ले उसपर अंधेरे नरकका फंदा आ पड़ता है जो उसे सूर्य-के मधुर आलोकमेंसे घसीट ले जाता है।

ऐलेसिएल — डाहका सुरमई दांत किसमें नहीं गड़ता ? यह ठीक है मेरी बुद्धिमानी उनके अज्ञानको बिलकुल बौना बना देती है। यह ठीक है जब मेरे पंख फूट रहे थे, उन दिनों जब मैं भली-भांति फुदक भी न पाती थी, मेरी मां मुझे कटे-छंटे रास्तोंपर लाल गुलाबी बगीचोंमें, बाजफल बिखरी पग-डंडियोंसे, चरा-

गाहोंके समुद्र और फूलोंके कालीनपर खींच ले जाती थी और मुझे सीधे-सादे पौधोंकी रंग-बिरंगी, तड़क-भड़कवाली भाषा सिखाती थी। इस प्रकार मैंने गुलाब, नाना प्रकारके कुमुद, वन-अजवायन, कंटकारी, वच, घोड़ा-वच, कूट, मीठा तेलिया, जटामांसी, कनैरकी जड़ आदिका परिचय पाया।[1] इतना ही नहीं सब प्रकारके सहायक वृक्षोंने सहायता करने या कष्ट देनेके लिये, मारने या बचानेके लिये मुझे अपनी आत्माका रस दिया। मैंने तुम्हें अभी उस अखरोट-के अद्‌भुत प्यालेमें जो थोड़ा-सा तीखा दूधिया रस ढाल कर दिया था वही अगर जरा अधिक हो जाय तो हलाहलसे भी बढ़कर घातक है।

मेलेंडर —— उसने मेरी धबकती नाड़ियोंमें नया रक्त उंडेल दिया है और मेरी आत्मा-की महानताको दुगुना कर दिया है।

ऐलेसिएल —— तीखी और दुर्लभ मार्गेरिटकी जड़ अपने तनेमें यह झागदार आसव बनाती है। उसके कन्द और गूदेदार तन्तुओंके बीच एक बादाम जैसी धुँधले-से छिलकेवाली फली होती है जो आकारमें छोटे अंगूरसे बड़ी नहीं होती वह मधुर हालासे भरी होती है। मेरे क्वाथ, लेह, विष, रस, आसव और जादुई पेय इस तरहके हैं। इन्हींके कारण तुम लोगोंकी मूढ़ता मेरी बुद्धिको कोसा करती है।

मेलेंडर — जब ऐसे मधुर अधरोंसे मादक शब्द निकलते हों तो तिरस्कार भरी छिद्रान्वेषी वृत्तिको मौन हो जाना चाहिये क्योंकि वाक्‌पटु प्रवक्ता या कुशाग्र बुद्धि विद्वानोंकी अपेक्षा नारीकी जीभसे कहीं अधिक सूक्ष्म तर्क सरल शब्दोंमें चुआ करता है।

ऐलेसिएल —— मधुर युवक, मैं तुम्हें धोखेसे जालमें क्यों फंसाऊं? सचमुच तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम बड़े वाक्‌पटु हो, हो न? तुम स्त्रियोंके हृदयसे पांसा खलते हो। मैंने सुना है कि आलसी युवकोंमें यह मनबहलाव बहुत प्रचलित है।

(वशीकरण पेयका असर हो रहा है, उसकी पलकें ओससे भर रही हैं)

तुम औरतोंकी आत्मा ले लेनेके लिये दातेदार पांसे फेंकते हो, तुम उनसे विनि-मय तो करते हो पर दाम चुकानेसे इन्कार करते हो, है न ऐसा ही?

(आह, कैसी अच्छी है यह दुर्लभ मार्गेरिट)

तुम ऐसी धोखा-धड़ीमें कुशल हो। तुम अपनी सुन्दरताका फंदा बनाकर सारि-काओंको फुसलाते हो और फिर आहारका लोभ दिखाकर गानेके लिये कहते

1 यहाँ अंग्रेजी बूटियोंको भारतीय बूटियोंके नाम कर दिये गये हैं। अनु०

हो। लेकिन तुम मुझे न ठग सकोगे, ऐसी बातें मनमें भी न लाना। मेरे ख्याल-से तुम भी एक ऐसे ही चिड़ीमार हो।

मेलेंडर — प्यारी सारिका, क्या मैंने तुझे अपने फंदोंमें फंसाया है? वन देवीकी एक मीठी तान तुम्हारे गुलाबकी पंखुड़ियों जैसे पंखोंपरसे सारे फंदोंको उठा लेगी।

ऐलेसिएल — लेकिन जब घातमें लगे हुए चेहरे झाड़ियोंके फूल बन जाते हैं तो जंगली चिड़ियां उनकी प्रत्याशाओंका मुँह चिढ़ाती हुई उड़ जाती हैं।

मेलेंडर — नहीं प्रिये, तुम नहीं जा सकतीं। मैं तुम्हें जोरसे पकड़े हूँ। लाओ, तुम्हारा रक्षा-शुल्क कहां है? तुम हवामें उठने पाओ उससे पहले वह तान कहां है जिसके लिये मैंने सौदा किया था। अपने फड़फड़ाते पंखोंको छाटने-की कोशिश न करो। मैं तुम्हें जोरसे पकड़े हुए हूँ।

ऐलेसिएल — मेरी विनती है मेरे मजाकको गंभीरतासे न लो। तुम बहुत तेज हो। तुम्हें एक दमड़ी भी न मिलेगी, एक पैसा भी न मिलेगा जिससे तुम अपने पश्चा-त्तापको धन्य कर सको।

मेलेंडर — तो प्रिये, मैं स्वयं ऊष्माभरी, चुम्बनोंकी कुसुमित क्यारीसे भुगतान कर दूंगा। मैं यौवनके ओस भरे एक ताजा, मधुर लाल गुलाब झटक लूँगा (उसे चूमता है) लो मैंने तुम्हारे ओठोंका विष चूसकर निकाल दिया! चिकित्सकों-का कहना है कि कुछ रोग अपने कारणके द्वारा ही दूर किये जा सकते हैं। हे मधुर विष, अन्तिम चिकित्साके लिये एक बूँद और (चूमता है)।

ऐलेसिएल — और गुलाब न तोड़ना मेरे पौधेसे। छोड़ दो मुझे वरना मुझे गुस्सा आ जाएगा।

मेलेंडर — प्रिये, नाराज न हो। मैंने तो बस उन मनोहर आंखोंकी पलकोंमेंसे झांकती हुई लिखित चुनौतीको स्वीकार किया था। हे लजीले मृदु नेत्रो, अपनी काजल-काली बरौनियोंके पीछे तैरती हुई सुन्दरताके संसारको छिपाने वाली, हे विशुद्ध मधुर कामना, तू रातके किनारेपर तारोंकी तरह, हरे पत्तोंपर ओसकी तरह। चमकती है; हे मृदु नेत्रो, तुम मूक वक्ताओंकी प्रतिभा हो जो अपने झपकने-की वाक्पटुताके द्वारा तरुणोंके जलते हुए हृदयको अपनी इच्छाके अनुसार झुलाती और नियंत्रित करती हो। अगर मैं ज्यादा देर तक तुम्हारी ओर देखता रहूँ तो तुम मेरे कर्मोंको पुण्यके रास्तेसे भटका दोगी, पथ-भ्रष्ट कर दोगी। उसकी प्रत्याशामें ही मैं तुम दोनोंको चुम्बनों द्वारा खतम कर दूंगा — लो ऐसे, ऐसे। नहीं प्रिये, लजाओ मत। मैं अपनी निजी चीजपर अधिकार जमा

रहा हूँ और अपने ओठोंसे तुम्हारे सब कुछपर, तुम्हारे प्यारे-प्यारे काले बालों-से लेकर सुकुमार कठगुलाब-से पैरोंतक सब पर मुहर लगाता हूँ। और तुम चाहो तो प्रेमीके स्पर्शसे धबकते हुए अन्तःकरणका प्रफुल्ल विक्षोभ दिखा सकती हो जिससे मैं तुम्हारे कपोलोंमें गुलाबी समुद्रको अपनी प्रतापी विजय बिखेरते देख सकूँ।

ऐलेसिएल —— ओह, सुख और विलास खरीदनेके लिये तुम्हारी जीभ पर सोनेकी मुहरें धरी हैं। इस बार बस एक ही बार, मैं तुम्हारे लिये विदूषक बन जाऊंगी। अपनी बंसीकी सुरीली तानसे खुशामदोंके खनकते सिक्के फेंको। तुम दाम चुकानेपर ही अनुग्रह पा सकोगे।

मेलेंडर —— जो तुम्हारे लावण्य और लालित्यका रंग-ढंग सुनाना चाहे या उसकी तालिका बनाना चाहे उसके ओठोंसे मधु चूना चाहिये। उसकी आवाज गुलाबों-भरे जूनकी मधुमक्खियोंके आनन्दमय रागके साथ बंसीकी धुन मिलाते हुए समीर जैसी होनी चाहिये। उसका एक-एक शब्द लाल झुमकोंवाला गुलाब हो उसका छोटे-से-छोटा वाक्य भी देवदारुकी पट्टी हो, हर वाक्यांश जायफल पड़ा हुआ मलाईका बरतन हो, उसके विराम ठाठें मारते समुद्रपर बहती हुई हवा द्वारा लाये गये अगरकी सुगन्ध हों। अब कहो, मैंने वेतन कमा लिया न? तुम्हारे गुण गाते-गाते मुझे प्यास लग आयी, अब अधर-पान करने दो।

ऐलेसिएल —— तुम छिछोरे हो प्रिय। तुम्हारे पास सिक्कोंकी टकसाल नहीं है, तुम्हारे पास है केवल हवाके जैसा बड़ा कागज जिसपर कुछ घसीटा गया है। मैं इसे नहीं स्वीकार करती। लो तुम्हारा शिक्षक आ रहा है अब तुम्हें अधिक गंभीरताका पाठ पढ़ाएगा।

(ऐलेसिएल हट जाती है, मारसियोनका प्रवेश)

मारसियोन —— भले मिले मेलेंडर —— काई भरे रास्तोंपर, ढलानोंपर होने-वाले धूप-छांहके खेलके बीच धीरज भरे कदम बढ़ाते हुए तुम्हें पा लिया। नाना प्रकारके रंगोंसे भिदे फर्नोंके बाड़ोंमें, दौड़ती हुई झागभरी नदियोंके किनारे ढूँढ़ा, तब दैवयोगसे प्रेमकी देवीने तुम्हें सामने कर दिया। तुम यहां क्यों खड़े हो? इन पत्तोंसे रक्षित दूबकी क्यारियोंमें जहाँ धूप और छांव एक दूसरेपर छितरे हुए हैं, जहां गहरे लाल गुलदस्ते भूले-भटके पैरोंके नीचे ऐसे पुलकित होते हैं जैसे किसी देवदूतके नाचते हुए पैरोंके नीचे तारे, और वे हरी-भरी धरतीको टिम-टिमाते आकाशका रूप दे देते हैं। घुलती हुई रातकी हवाएं लोबानके के आंसुओंसे गीली होकर बह रही हैं और अपने हर मोतीको ओसके चोरोंके

पंजोंसे बचानेवाले हर पत्तेको लहराती जाती हैं। यहां तक कि उनका क्रोध वायवी वंशीमेंसे सरसराता हुआ निकल जाता है, दिव्य वीणासे भूल-भुलैयांमें चक्कर काटती हुई संगीतकी वर्षा बूँद-बूँद करके उभरती और पेंडुकी जैसे पैरोंको झकोला देती है। भली-भांति बन्द वन-अजवायनके गुच्छोंके पास आश्रय-गान गुनगुनाती हुई व्यापारी मधु-मक्खियोंके गानसे कलियां खिल उठती हैं और खिले युवक फूल मुरझा कर लोभी धरतीको मोटा करते हैं। सुनहरे युवकों और रुपहले पैरोवाली लड़कियोंका दल फड़फड़ाता जाता है जैसे पतिंगोंका दल तड़क-भड़कवाले रंगोंके दृश्य को देखकर देशान्तरण करनेवाले पवन पर उड़ा चला जाता है। वहां मोती-टंकी घास पर जंगली हरिण, भूरी हर्मेनगिल्ड, मधुर हृदयवाले आएम्ब्लिकस, गुलाबी गालोंवाले गुलाबोंसे सज्जित आएम्ब्लिकस को देखोगे। मधुवर्ण अलकोंवाली हमारी मिर्टिलको, हमारे जंगलके चांद, सोनेके कामवाली रुपहली मिर्टिल को देखोगे। सिर्फ तुम्हारी ही देर है। हमारे मनोभावोंकी चालक तुम्हारी वाणी, कुशल छन्दोंकी धारा बहाते हुए तुम्हारे कोकिल-कंठकी कमी है और यह कमी सितारके एक टूटे तारकी तरह छुट्टिकी स्वर-संगतिको बिगाड़ रही है।

मेलेंडर — मारसियोन, मैं तुम्हें इन सब कष्टोंके लिये धन्यवाद देता हूँ पर इससे अधिक पुरस्कार न दे सकूँगा। मेरी तबियत ठीक नहीं है। अर्धनिशाके विचारों का धुँआ मुझे अवकाश की सजधजके अयोग्य बना रहा है।

मारसियोन — छिः, छिः मेलेंडर, तुमने कब-कब हमारे दारिद्रय को अपने वाणी-विलास द्वारा दूर करनेसे इन्कार किया है? सारा जंगल ओसके आंसुओंसे गीला होकर तुम्हारी राह देख रहा है क्योंकि तुम अभी तक नहीं आये।

मेलेंडर — अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा लेकिन ज्यादा समयके लिये नहीं। मेरा निवेदन है तुम आगे चलो, मैं आता हूँ और तुमसे वहां आ मिलूँगा जहां नरम-नरम घासके गद्दे लगाये हुए सरिता सिरोही की तरह अन्दरकी ओर मुड़ती है।

(मारसियोन जाता है)

ऐलेसिएल — लो, लो, मैंने तो कहा ही था। महाशय, आप बड़े दब्बू हैं। मैंने तुम्हारी बागडोर पर जासूसी नहीं की पर वह होगी जरूर। यह तुम्हारा शिक्षक था न, जो अपने भगोड़ेको पकड़ने आया था।

मेलेंडर — प्रिये नाराज न हो। सूर्य अपनी सुनहरी गेंदसे आकाशकी ऊंचाइयों पर टीका लगा पाये उससे पहले मैं लौट आऊंगा। यह ठीक नहीं लगता कि

जब न्यायने योग्यताका पुरस्कार निश्चित कर दिया है तो अनुनयको उसके पुरस्कारसे वंचित किया जाय। मधुर सुसंस्कृत मनमें सभ्य प्रणय-निवेदन करनेवाले शब्दोंके स्पर्शसे संगीत फूट निकलता है।

ऐलेसिएल — ओह, शब्द ही शब्द, बस भी करो लेकिन सार क्या है, इसका उद्देश्य और तात्पर्य क्या है? छिः, एक चीं-चीं करती हुई गुलगुलिया, एक चोरी करनेवाली, टें-टें करती गुलगुलिया भी इस जंगली कौएका मजाक उड़ानेके लिये तैयार न होगी। उसने अपने तड़क-भड़क भरे शब्दोंमें मेरी आंखोंसे क्या समझा? वह नीरस लेखक बड़ी बेकार-सी कहानियां बनाता है। उसने अपने पेशेका क ख भी तो नही धोखा है।

मेलेंडर — तुम सच्चे शिष्टाचारको बुरा-भला कह रही हो। मधुर शिष्टाचार ही तो हमारे शासकीय भवनका निर्माण करता है।

ऐलेसिएल — हां, तभी तक के लिये जब तक झंझा उसे तोड़कर खण्डहर न बना दे। लेकिन जाओ, अपनी राह लो। मैं तुम्हें एक ऐसे पुरुषके रूपमें जानूँगी जो अपने अवकाशके समय को एक सुन्दर चेहरेसे मीठा करता है और नारियोंके हृदयका दिवाला निकालनेके लिये मधुर मिथ्या शपथें गढ़ता रहता है। सफाईकी कोई जरूरत नहीं है। मैं हाथ जोड़ती हूँ। मुझे तुम्हारे संगकी एक फांक भी नहीं चाहिये।

मेलेंडर — प्रिये, छोड़ो भी यह तकरार। मृदु मधुर शब्दोंमें कहो कि फिरसे मैं तुम्हें कहां देख पाऊंगा। मैं ज्यादा न ठहरूंगा।

ऐलेसिएल — क्यों? कहीं नहीं। क्योंकि मैं तुम्हारा स्वागत न करूंगी। लेकिन अगर तुम अपने सामने दरवाजा धड़ामसे बन्द होते हुए देखना चाहते हो तो जंगलके किनारे मेरी कुटियापर आ जाना जहां दुर्जन झाड़ियां मैदानमें गायब हो जाती हैं।

मेलेंडर — तो मैं चढ़ती दुपहरीको वहीं आ पकड़ूँगा। इस उबाऊ घंटे भरके लिये विदा दे दो प्रिये।

ऐलेसिएल — प्यारे, मैं हाथ जोड़ती हूँ, अपना वचन भंग मत करना नहीं तो मैं मर जाऊंगी। मैं तुम्हारे बारेमें ही सोचती रहूँगी और अपने एकान्तको ठंडी सांसों और आंसुओंसे हल्का करती रहूँगी जब तक तुम, मेरे दोपहरके तारे, फिरसे नहीं उग आते।

(पहलेके जंगल, जंगलके लोग और कुछ लड़कियां। मेलेंडर पेड़से लगा विचारोंमें मग्न है। एक टुकड़ीमें मारसियोन और एर्मेनिल्ड बातचीतमें लगे

हैं। दूसरी ओर आएम्ब्लिकस और मिर्टिल हैं। मिर्टिल आगे आती है।)

मिर्टिल—प्रिय मेलेंडर, कौन-सा मनोभाव तुम्हारी वाणीको सुन्न किये हुए है? क्या तुम क्षण भरके भावावेश में ही हास्यापद चिड़चिड़ापन लिये बैठे रहोगे? पाण्डुर रात्रि अपने दुखके वैभवको लिये हुए दिनके सुनहरे छिलकेमें बन्द है और कोमल संश्लिष्ट विषादकी तंगीके कारण करुण कोकिल मौन है। उस विषादकी कमी के कारण जिसके खिन्न मलिन अंगूरोंको पेर कर वह भागदार बूँदोंमें संगीतकी धारा बहाती है। लेकिन आनन्दमय ज्योतिके सभी अनुयायी, स्वरोंका इन्द्रधनुष बनानेवाले पंखोंकी अराजकता, युवा तरुण युवराज-सूर्यके के लिये मंत्रोच्चारण कर रहे हैं। रेशेदार बनातके हरे पर्दोंके पीछे अपने गीतिमय रोमांच के कारण भूरे रॉबिनका पता चलता है। कोमल भावनाओंमें कराहते हुए सफेद पड़ी हुई पेंडुकी वयस्क बलूतके आगे प्रेम के स्वर गुनगुना रही है। लिनेट पक्षी अपने सीधे-सादे ग्वालगीत बजा रहा है। इतना ही नहीं वायुके सभी पंखदार कवि मंचसे अपने छन्दोंका पाठ कर रहे हैं — वर्षा कर रहे हैं। तेरे संगीतका किरमिजी मकान ही क्यों बन्द है, तेरे ओठ जो संगीत की धुनमें ही विभोर रहते हैं, क्यों चुप हैं?

मेलेंडर — प्रिय मित्र, मेरी भावना कल्पनाकी धुँधली मधुर कूचीसे गहरी रंगी हुई है और वह नृत्यके द्रुतगति भाव को संगीतके शब्दों और मधुभरे छन्दोंमें परिधान पहनानेमें असमर्थ है। मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि आग्रह न करो। मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

आएम्ब्लिकस — और आग्रह न करो। कभी-कभी जो अंधाधुंध और हास्यकर भूत इस पर चढ़ जाता है उसपर काबू करना संभव नहीं है। लेकिन जब हमारी मधुरतम वाणी मूक हो गयी है तो चलो कोई कर्कश आवाज ही खिसकते हुए समय को भेदती चले।

मिर्टिल — आह, नहीं, आएम्ब्लिकस, जब पवन शान्त हो जाता है तो सागरके झांझ भी चुप हो जाते हैं और हर हरे बालोंवाली नर्तकी अपनी झागोंमें लिपटी लहरदार छड़ी चरण चूमनेके लिये नीचे गिराती है। मधुरतमके खो जानेसे मधुरका मूल्य घट जाता है। अगर मधुर स्वरवाली मेविस मर जाय तो क्या कोई झाड़ियोंमें छिपी फुदकीमें रस लेगा? हम भावशून्य पश्चात्तापको चुनौती न देकर हाथोंमें हाथ डाले माणिक जैसे लाल रास्तोंपर मधुर वाणीके पोस्तके फूल चुनें। उन्हें पेर कर गीले, धुंधले पतझड़के दिनोंके लिये उसका रस तैयार करेंगे। क्यों, अच्छा नहीं रहेगा यह?

आएम्ब्लिकस —— तुम्हारी वाणी सुख-सी मीठी और दुख-सी बुद्धिभरी है। आओ मित्रो, हम वर्तमानसे मधु चुरा लें ताकि आनेवाले जाड़ोंमें स्मृति उसे चूसती रहे।

(मेलेंडरको छोड़कर सबका प्रस्थान)

मेलेंडर —— मुझसे पूछो कि सिरसिअन जादूगरनीकी औषध मेरे अन्दर क्या-क्या कर रही है। मेरा रक्त मेरे हृदयसे धबकती आग की तरह बढ़ता जा रहा है, और मेरी भौंहोंपर ताजा रस फैल रहा है। हे सूर्य, तू आग्नेय छिपकलीकी तरह स्वर्गके प्राकारकी ओर निर्बाध रूपसे बढ़ा जा रहा है, तू अपने स्वर्णिम चक्रों-को तेज और तेज चलाता जा। काश, मेरे हाथ तेरी केसरी लटोंको पकड़ पाते और मैं तुझे महान् अतलान्तकमें डुबा सकता। ताकि संध्या सुन्दरीके नील-लोहित केसर मधुर, आर्द्र पवन को पी सके और शुभ्र वर्ण चन्द्रमा मेरी प्रियाकी आंखोंमें उदित होकर छिपता, लजाता झांक सके। मेरी इच्छा आवेग-पूर्ण सागर सुन्दरी की न्याई है जो अपने प्रियतम पवनका आवाहन करती है पर उत्तरमें केवल घुटते गलेकी, दबी आवाजमें, खोखली पहाड़ियोंकी फुसफुसाहट सुनायी देती है।

(आएम्ब्लिकस मिर्टिलको भुजाओंमें लिये आता है)

मिर्टिल —— बस मुझे और न घसीटो आएम्ब्लिकस। मुझे तुम्हारे ऊपर लट्टू होकर तुम्हारे पैरोंमें झुकनेका शौक नहीं है। मैं उन जंगली लड़कियों जैसी नहीं हूँ जो तुम्हें देखकर ही सौन्दर्यकी मूर्तिकी कल्पना करती हैं, जिन्हें तुम्हारी आंखों-में स्वर्ग और तुम्हारे चुम्बनमें अमृत दिखायी देता है। छिः, छिः, जरा शील संकोचसे काम लो, महाशय! अपनी पकड़ ढीली करो।

* * *

आह, फिर से सूक्ष्म वड़वानलका सागर जीवनके गहरे लाल फाटकों पर दुहाई दे रहा है। मेरी आत्मा पाइथियन तपस्वीकी तरह यंत्रणा पर फलती-फूलती है। विद्रोही रक्त शराबसे फूलकर बगावतकी धमकियां दे रहा है। हे दिवसके निर्माता, तुम अपने घरके लिये मध्याह्नके गुम्बज का निर्माण कितने धीरे धीरे करते हो। जिस खुदबुदाती भट्टीमें प्रेम काम करता है वहांसे हेबी तुम्हारे जगत्को प्रकट करनेवाली अग्नि नहीं लायी थी और न तुम झागोंसे बने समुद्रकी सुहाग शय्याकी ओर जा रहे हो; बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की न्याई जो अपने सत्यानाशको पहलेसे ही देख सकता है,

जिसकी सीमाएं और जिसका लक्ष्य सूर्यहीन नरकमें जा गिरता है। तुम मेरे लिये दिनकी सुनहरी स्याहीसे ऋतुओंका सीमांकन करनेकी आशा न करो। मेरा हृदय चालक जन्द्रमाकी प्रत्याशामें है जो मेघाच्छदित रात्रिका परिचालन करता है। पाण्डुर गोले, तू मेरी प्रज्वलित आत्माका प्रतीक नहीं है। तुझे पीछे-पीछे आना हो तो आ, नहीं तो न सही। मैं आगे चलता हूँ।

(बाहर जा रहा है, जंगलके लोग पेलियसके साथ आते हैं)

मारसियोन — यह क्या मेलेंडर ? अभी तो मध्याह्नने अपने अधिकार पत्रोंपर सूर्यकी मुद्रा नहीं लगायी है। अभी तो जाने का समय नहीं हुआ। तुम क्यों जाते हो।?

मेलेंडर — मैं लौह-प्रतिज्ञासे बंधा हूँ। समय निश्चित है। वरना क्या मैं और न ठहर जाता। अब भी प्रतिज्ञाने कार्यको पीछे छोड़ दिया है।

मिर्टिल — मेलेंडर, मत जाओ।

मेलेंडर — प्यारी बच्ची, मुझे जाना पड़ेगा।

आएम्ब्लिकस — चलो हटो, तुम नहीं जा सकते। यह बहुत निष्ठुरताकी बात है। मैं अभद्रता या अशिष्टता नहीं करता। हमारे अमिश्रित आनन्दके इस छोटे-से दिनको तुम अपनी उपस्थितिके प्रकाशसे वंचित कर दो यह बड़ी निर्दयता होगी। जरा कहे में रहो।

पेलियस — बच्चे, मेरी सलाह मानो। यह उत्सुकतापूर्ण आवेग और इस तरह फूट पड़ना जवानोंके लिये हानिकर है और चढ़ती उम्रके लिये शोभा की बात नहीं है। जब मैं युवक था तो मैं अपने नाचते हुए खूनको वशमें रखता था। मैं राससे, स्त्रियोंसे, कवितासे और मदिरासे दूर रहता था और अब तुम मुझे स्वस्थ वृद्धावस्थामें मौज करते देख रहे हो, मानो पतझड़ के गिरे हुए पत्तोंके बीच एक हरा पत्ता हो। बहुत असंयम जीवन रसको मन्द कर देता है। जो नियम को तोड़ता है नियम उसे तोड़ देते हैं। प्रेम एक आकर्षक शिकारी है।

मेलेंडर — बूढ़े, भाग यहांसे ! तुझे तो अभी तक कब्रमें सड़नेके लिये पहुँच जाना चाहिये था। जा वहीं अपनी गप्पे हांक।

अंक ३

दृश्य १

ऐलेसिएलके मकानके सामने

ग्वेंडोलेन — लेकिन तुम जो कह रही हो वह विश्वासके योग्य नहीं लगता। क्या प्रेम प्रथम दृष्टिमें तुम्हारी बाड़ लांघकर, अपनी गुनगुनाती लाल मधु-मक्खियों-को तुम्हारे हृदयमें घुसा गया? क्या पहली बार आंखें चार होते ही बीजमेंसे कली निकल आयी और कली खिलकर फूल बन गयी और फूल बढ़कर फल बन गया? क्या अछूती भूमिमें अनुराग इतना गहरा पैठ सकता है? तुम्हारा प्रेम किसी असाधारण मुखौटेमें तो नहीं छिपा?

ऐलेसिएल — प्यारी बच्ची, तू अभीतक अछूती मंजूषा है, एक सुन्दर कोरा कागज है। ये रहस्य तेरी पकड़से बाहरके हैं। जबतक प्रेम तुम्हारे अन्दर नामके संगीत-से बुदबुदाता एक अनूठा अश्मलेख नहीं लिख देता तबतक ये चीजें तुम्हारे लिये अपरिचित रहेंगी।

ग्वेंडोलेन — लेकिन क्या वह अपनी कल्पना-शक्तिको तुम्हारी रुचिके अनुसार मोड़ देगा?

ऐलेसिएल — और क्या? लड़कीकी नखरे-भरी नजरोंमें एक सूक्ष्म-सा जादू होता है जो पुरुषोंको कठपुतलीको खींचनेवाले धागेकी तरह खींचता है और समयसे पहले टूटता भी नहीं। प्रेमकी अभिरुचिके किनारे अम्लपुष्प होते हैं, जब अधर अस्वीकार करते हैं तो आंखें निमंत्रण देती हैं।

ग्वेंडोलेन — तुम भूल गयी हो क्या बहना, जबसे हमारी शान्तिके लिये घातक युद्ध-का रक्त-रंजित पांसा फेंका गया है तभीसे इलनीकी मधुर सीमाएं और उसका आदिम सन्तोष पाशविक नियों द्वारा घिरकर संकुचित हो गये हैं।

ऐलेसिएल — बच्ची, मैं भूली नहीं हूँ लेकिन पहला प्रेम सागर-देवता पोसाइडनकी तरह सब विघ्न-बाधाओंको अपने समुद्रमें डुबा देता है। मनुष्य जिन नियंत्रणों-का विरोध करता है, उनसे वह कुपित होता और भाग निकालता है। उसका सामना कौन कर सकेगा? भस्म करती हुई ज्वालाएं या दन्तुर पहाड़ियां नहीं और न चुड़ैल-सी बल्लियां और न धातुके खूँटे। वह इन सब मेंसे सुरक्षित

निकल जाता है। लो देखो, जंगलके उस छोर पर दिनके चटकीले मार्गपर मेरे मध्याह्न-नक्षत्र का उदय हो रहा है। प्यारी, वह तुम्हें देख न ले, कृपा करके अन्दर चली जाओ।

(मेलेंडरका प्रवेश)

यह कैसे ? क्या यही था तुम्हारा समझौता ? जरा नजर उठाओ उस तरफ जहां अब भी हवाकी नील-लोहित कमानों पर वसन्ती प्रिमरोज लिपटा है, अभी कंगनीपर अपनी सुनहरी मुहर नहीं लगा रहा। तुम बहुत जल्दी आ गये। ऐसी भी क्या बेतहाशा जल्दी थी कि तुम अपनी प्रतिज्ञाके लक्ष्यसे भी आगे बढ़ गये ?

मेलेंडर — हाय, क्रूर बच्ची ! तूने क्या कर डाला मेरा ? तेरे दोषका क्या प्रायश्चित है ? लाल माणिक-से स्थानोंसे आती हुई तुम्हारी बांसुरी जैसी जीभसे निकलती ध्वनियोंकी मधुरिमामें नहीं, न मखमली पलकोंके नीचेसे आनेवाली फड़फड़ाती चितवनमें, और न तुम्हारे कपोलोंपर चुगली खानेवाली लज्जाकी लालिमा इस तरह दबे पैरों आती है मानों कोई लाल लेखनी तेरे गालों-पर धीरे-धीरे प्रेम गीत लिख रही हो। तुम्हारी निष्कपट भौंहें तुम्हारे पर्दा-नशीन विचारोंका अन्तःपुर है, ये हल्के पवनको चूमने चरण, तेरे नींदसे फूले हुए मखमली वक्ष, तेरे हाथमें वसन्तके फुसलाते हुए वृन्तके नीचे अभी-अभी अलग हुई गुलाबकी पांच कलियां जुड़ी हैं। तेरी कटि, कभी न पिघलनेवाली गरम बरफके वे महाद्वीप — ये सब चीजें तेरी भूलकी तुलनामें हवाके समान हैं। नहीं,अगर दूसरे पलड़ेमें पड़ा तेरे सारे सौन्दर्यका कुलयोग भी रखा हो तो वह पासंगके बराबर भी न होगा। मेरा भार तेरी सहायता करे तो और बात है। इसलिये प्यारी बच्ची, हमारे प्रेमकी एकताको अपना आशीर्वाद दे।

ऐलेसिएल — मुझे तुम्हारी एक दमड़ी भी नहीं देनी है। तुम्हें इतना भी न मिलेगा जिससे तुम बालूका एक कण, घासकी एक सूखी पत्ती भी खरीद सको। महाशय, मेरी सम्पत्ति अच्छी तिजोरियोंमें बन्द है और तुम्हारी खोजसे भी बढ़-चढ़कर भूखी खोजसे बच निकलेगी।

मेलेंडर — अगर तुम मेरे न्याय्य अधिकारोंको झुठलाओगी तो मैं तुम्हें तुमसे छीन कर प्रेम के कोड़े लगा कर तब तक यातना दूँगा जब तक तुम अपनी जमा-जता न दिखा दो। आहा ! इस भरे हुए शहदके छत्तेको पकड़कर बढ़िया भोज उड़ाना ! अरे, इन गोलाकार अग्नियोंको दूसरी ओर मोड़ दो। उनकी चमक-दमक मेरे हृदयपर आघात करती है, वे वेदना पैदा करती हैं। अपने कामनासे

ढले ओठोंको अपने बालोंसे ढक दो, उन दूधिया झलकोंको मेरी आंखोंसे ओझल-कर दो। मैं एक ही चुम्बनमें तेरी आत्माको खींच लूँगा। तू आगमें आग मिलाएगी? मेरी लालसाको इन्कारसे यातना न दे। अब अवहेलना और तिरस्कारका अभिनय न कर। जल्दीसे मेरी भुजाओंमें आ जा और अपने आप-को खो दे। (वह आलिंगन करती है) प्रिय, माफ करना, तेरी सुन्दरताके कारण मेरे अन्दर कामनाका समुद्र ठाठें मारता है और संयम चूर-चूर हो कर समुद्रमें मिल जाता है।

ऐलेसिएल — प्रियतम मेलेंडर, अगर मैंने तुम्हें नाराज किया है तो रोमके ऋणी लोगोंकी तरह अपना शरीर तेरी दया या तेरे दण्डके लिये तेरे हवाले करती हूँ। मेरी आत्माको भी ले ले और अपने राजसी वैभवमें इस विद्रोही हृदयको, जो सेवक होनेसे चिढ़ता है, अपनी दासतामें घसीट ले। देख, मैं एक चमकदार गहनेकी तरह तेरे गलेमें लटक रही हूँ। सब तरहसे अपनी इच्छा पूरी करनेमें न सकुचा।

मेलेंडर — वहीं लटकी रह जबतक तू स्वयं मेरा ही अंश न बन जाय! और हां, यदि भावावेश प्रेमका स्वाभाविक पुरोहित हो तो मेरी आग्नेय श्रद्धांजलि तेरी आत्माको चौंका न दे। अपना परिपक्व, निष्कलंक कौमार्य मुझे दे, जिसके लिये सारी दुनिया ललकती है। उपहार मधुर होता है। हे विक्षण चोर, तूने मेरी शान्ति चुरा ली है। पहले मेरे अन्दर आनन्दकी दरिद्रता न थी। आ, और निकट आ! हम अपने अधर इस तरह चिपका दें कि सारी नित्यता ही एक चुम्बन बन जाय।

ऐलेसिएल — क्या तुम मुझे चुम्बनोंमें गाड़ दोगे? प्रिय, जरा सन्तुलित रहो। कहो तो, तुम प्रतीक्षा करनेवाली आंखको जुल देकर एक घंटा पहले ही कैसे दौड़ आये?

मेलेंडर — जरा चमकते चांदसे पूछो वह अपने दलसे आगे क्यों निकल आया, अपने हरावल तारेकी प्रतीक्षा क्यों नहीं की। जरा प्रेमी पवन से पूछो कि उसने पत-झड़के उच्छ्वाससे पहले ही लाल गुलाबकी पंखुड़ियोंके साथ अठखेलियां क्यों कीं। इतना ही नहीं, जोरसे गरजनेवाले सागरसे पूछ-ताछ करो जिसने कर्कश विद्रोही आंधियोंसे मिलकर वर्षा के कारण धुँधले समुद्रमें बहते जहाजोंको क्यों विलीन कर दिया। फिर आग्नेय-चरण भावावेशसे पूछो कि उसके कोपने मेरी नौकाको तेरे रुपहले वक्षपर टकराकर क्यों चकना चूर कर दिया। ओ प्रेम, तू ही अपराधी है, तेरा ही दोष है। हे ऐलेसिएल, हे मधुर अबोध पाप!

तूने मेरे अंग-अंगमें ऐसी आग सुलगा दी है जैसी जादू-टोने-से ही लगायी जा सकती है। इसकी क्षतिपूर्ति करनेके लिये तेरे कौमार्यकी घड़ियोंको मधुर मूर्छामें ही मर जाना होगा जब कि तेरी गोदकी बर्फीली ग्रीष्ममें दयालु रात्रि भावावेशमें पिघले हुए अंगोंको ठंडा करेगी। जब तू लजाते हुए गुलाबकी नकल करती है तो, मैं सौगन्द खाकर कहता हूँ; तेरा रंग उस सच्चे रंगसे ज्यादा सुन्दर होता है, तू सौन्दर्यसे भी ज्यादा सुन्दर होती है। प्रियतमे, निरावरण प्रेम छद्म-लज्जाके पर्देको भी लज्जित कर दे। लज्जा गुलाबके खेतोंको जलानेके लिये नहीं जन्मी थी और न रंगोंके इस उत्कृष्ट परिणाममें अव्यवस्थाकी लाल पताका फहरानेके लिये।

ऐलेसिएल — प्रिय अगर मैं लाल हो उठती हूँ तो यह लज्जा नहीं, संकोचके कारण है। मैं तुम्हें किसी चीजके लिये मना नहीं कर सकती। जब रात हो जाय और जब कुमारीके अधरोंपर खेलते स्मितकी तरह चांदनी उनींदे गुलाबसे खेलने लगे तब आकर धीरेसे दो तीन बार मुझे पुकारना और मैं उत्तर दूंगी। इसका ठीक ख्याल रखना कि कठोर चुड़ैल जैसा नियम प्रकृतिके मधुर अनुष्ठान और गन्धर्व विवाह पर लागू नहीं होता.......

मेलेंडर — प्रिये, क्या तुम भूल गयी हो कि सूर्य अभी भागके वास्तविक मार्गपर बढ़ा जा रहा है और कराल पश्चिममें उसका विनाश होनेमें अभी बहुतसे थके-मांदे पर आडम्बरयुक्त घंटे लगेंगे। अभी तो उसकी आंखें मुश्किलसे हमारे विस्तारकी मेखलातक ही पहुँच पाती हैं। अपने निर्णयमें कुछ घंटोंकी अवधि कम कर दो ताकि मैं अपनी पीड़ा शान्त कर सकूँ। सावधानी और सतर्कताको मठोंमें चरनेके लिये छोड़ दो, उसके गंभीर विवेकका दिखावा प्रेमियोंके मिलन-स्थानपर शोभा नहीं देता।

ऐलेसिएल — प्रिय, सन्तोष करो, धीरजको आशासे पुष्ट होने दो। जब तक रातका बैंगनी तम्बू प्रेमकी छिपी चोरियोंको आंखोंसे ढक न दे। नहीं, अभी न जाओ, जबतक वह ढालू चक्र घूमता हुआ पहाड़ी पीपलके ऊपर नहीं आ जाता। प्रिय आओ, अन्दर आ जाओ।

दृश्य २

ऐलेसिएलके मकानके सामने

मेलेंडर –– (अकेला) अब रात्रि उसके वैधव्यसे प्रणय-याचना कर रही है इसलिये काले परिधानमें हवा तारे पहनकर छातीपर चन्द्रमाको टांक रही हे। वह शीघ्र ही अपने हीरेके जामसे मेरे प्रेमपर दया करके गुलाबके बालोंपर अपनी बहती हुई महिमा उंडेलेगी। हे मधुर किरमिजी गुलाब, ऐलेसिएलके दीपक, मेरे आनन्दके संकेत दीप, अपनी किरणोंसे जल्दी ही चंद्रमाको उज्जवल कर। मेरी प्रियाके पास रहकर तू कितना सुखी है। जिसे उसके श्वासकी सुगन्ध प्राप्त हो उसे भला सुगन्धित अधरवाले समीरकी क्या परवाह। तेरे लिये निश्चय ही सुखी घासमें सरसराते हुए पेंडुकी जैसे पांव सूर्योदयसे भी ज्यादा मनोहर होंगे। या तू सारे संसारको अपनी भुजाओंमें लेनेवाले गोलेसे प्रणय-याचना करेगा जिसमें उसकी आंखोंका वैभव है जो तेरी निद्राको हौले-हौले जागृतिमें बदल देगा। हे रक्त गुलाब, काश, मैं तेरे अन्दर विलीन हो सकता। तब उसका स्पर्श मेरी सारी पंखुड़ियोंको सुखद पीड़ासे रोमांचित कर देता। मैं अपने सारे सौन्दर्यको उसके एक चुम्बनके लिये दांवपर लगा देता, मैं उसके चरणोंके नीचे अपने-आपको लाल धज्जियोंके रूपमें नष्ट करके कितना सुखी होता! यह मेरा समय है। देखो, काउस्लिमकी तरह घुँघराली, रातोंको घूमनेवाली प्रेमियोंकी संरक्षिका, चमकदार खिले हुए सुषुप्त गुलाबपर अपनी लालटेनकी नारंगी किरणें बिखेर रही है। हे तारोंकी रानी, तेरी जय हो। आज रात तू ही मेरा विवाह प्रदीप बन जा। ऐलेसिएल! प्रतिध्वनि, अपनी बकवादी जीभको बन्द कर! यह नरगिसकी आवाज नहीं है। मैं एक चोर हूँ जो सुन्दरताकी वाटिकासे एक मधुर कली चुराता है, जिसे आगन्तुकोंकी तरह टनटनाती घंटीकी जरूरत नहीं है। ऐलेसिएल! हे मरक्यूरी, अपनी विचारों-को मारनेवाली अफीम की छडीसे उन सब आंखोंपर मुहर लगा दे जिनपर अभी-तक निद्रा देवका सम्मोहन काम नहीं कर पाया। ऐलेसिएल, आकाशगामी चन्द्रसे भी बढ़कर सुन्दरी, अपनी खिड़की पर उदय हो! मुझपर नजर डाल,

लहराते बालोंके बीच सफेद चेहरा।

(ऊपर एलेसिएल और पीछे मारसियोन और डोरिसका प्रवेश)

ऐलेसिएल —— कौन बुला रहा है?

प्रेम और मृत्यु

प्रेम और मृत्यु

(महाभारतमें रुरु और प्रमद्वराका आख्यान है। उसे पढ़कर श्रीअरविन्द के मनमें एक नये काव्यने जन्म लिया और वह है 'लव एंड डेथ'। इसकी गिनती अंग्रेजीके सर्वोत्तम काव्योंमें की जा सकती है। उसका अनुवाद करना तो एक असंभव-सा काम है। यहां श्री अनुबेनने अपने शब्दोंमें उसका भाव देनेकी कोशिश की है।)

पृथ्वी अभी जन्मी ही थी और उल्लाससे नाच रही थी। प्रेम स्वयं अपने लिये नया, ऊष्मासे भरपूर और निर्दोष था। सृष्टिकी उस वेलामें फूलसे खेलते प्रभात-सा रुरु अपनी प्रियंवदामें मग्न था। ओस-कणोंकी ताजगी और चमक नेत्रोंमें बन्द किये हुए, मधुर-गात्री शुभ्रवर्णा प्रियंवदाने अपने हृदयका रक्त-पुष्प प्रेम-मूर्ति रुरुके सामने खोल दिया। नव-कमलके चारों ओर नाचते जल-प्रवाहकी तरह रुरुके प्रणय-आवेगने प्रियंवदाको रोमांचित कर दिया और उसकी आत्माको अपने प्रचंड आवेग-से मंत्र-मुग्ध कर लिया। रुरुके लिये सारी पृथ्वी इस एक फूलकी क्यारी मात्र थी और प्रियंवदाके लिये मानो सारा जगत् ही रुरुके आलिंगनमें था।

उस समय सहस्र युगोंकी धधकती ज्वाला और असंख्य सूर्योंके गरम कोपसे मुक्त होकर पृथ्वी वर्षाकी शीतलतामें नहा चुकी थी। इस मुक्तिसे पुलकित हो-होकर वह हरियाली बिछाती गयी। सुरभित फूलोंसे उसका आतुर हृदय भर गया, उसके वत्सल हाथोंमें नवजात जीवन मस्तीसे झूमता गया। भोले शिशु-सा नव जीवन सदा खेलता रहता था, न कभी थकता और न पृथ्वीकी उज्जवल भावी-को भूलता। जीवनकी कली बहार ला रही थी। चारों ओर खुशीका दौर था, सुगन्ध और रंगकी बहार थी। मस्त हवाएं बह रही थीं और जीवनकी उन्मत्त किरणें चारो ओर फैली हुई थीं। उत्कंठापूर्ण आनन्द पृथ्वीको अपने आलिंगनमें समेटता गया। पृथ्वीके मैदानोंमें एक स्वतंत्र, बंधनोंसे अपरिचित मानवजाति विहर रही थी। उनके स्वच्छन्द हृदय और विशाल मानस ज्योतिकी ओर उन्मुक्त थे। उर्वरा धरतीके खेतों-में धान झूमता था। समृद्ध और विशाल जंगलोंके ऊंचे-ऊंचे पेड़ हवाके झोंकोंसे मर-मर ध्वनि करते रहते थे। उन्हें सुन और देखकर मानव मनमें विचारोंकी भी ऐसी ही उच्च तान छिड़ जाती थी। कुमारी कन्या-सी, बांधसे अपरिचित नदियां निदर्द्वंद्व होकर समुद्रकी ओर बहती जाती थीं। इस नयी मानवजातिके मनमें अनदेखे पहाड़ों-

की कल्पना गरुड़सी विचरती रहती और उनके हृदय एक विचित्र काल्पनिक सौंदर्य-से भर जाते। युवक रुरुके अन्तरमें नवीन, पृथ्वीका माधुर्य रक्तकी तरह घुलमिल गया था। जिन्दगी छोटी होते हुए भी युगों-सी लम्बी लगती थी क्योंकि उसमें अनन्त कार्य करनेका समय था और था प्रेम — जीवनके मधुरतम वरदान-सा और जीवन-के अविरत उल्लास जैसा प्रेम ! जैसे चमकते रंगोंसे सुशोभित पक्षी हवामें तैरता हुआ, गुलांटे खाकर, कल्लोल करता हुआ अपने घोंसलेमें लौटकर संगिनीको हृदयसे लगाता है और उसे अपनी ही समझता है; वैसे ही रुरु भी सोते खेतोंमेंसे घूमती हुई हवासे खेलता हुआ या आशीर्वाद रूपी धूपमें निकलकर फिर प्रियाके पास चला आता था। जंगलोंमें पत्ते उड़ते रहते थे। नीलम जैसे सुहावने — श्यामल वनमें वह नये-नये स्थान ढूँढ़ता फिरता। अनजानी पहाड़ियोंमें घूमता-घामता, मैदानोंमें दौड़ते वायु-के साथ स्पर्धा करता-सा रुरु प्रियंवदाकी ओर प्रायः उड़ता हुआ आता। ताजे कमल-सी नवीन प्रियंवदा उसकी ओर बढ़ती और रुरु इस नवीन कमलमें खो जाता। उसे इस गौरांगी बालाके माधुर्य और उग्र भावका कहीं ओर-छोर न दीखता था। उसकी गहन-गंभीर आंखें रुरुकी आत्मापर जादू कर देती थीं। कान्ताके शरीरका हल्का-सा स्पर्श भी उसे झकझोर देता था। उसके दीर्घ चुंबनोंसे रुरुका सुख सौ गुना बढ़ जाता और उन अमृतमय होठोंका स्पर्श प्रेमीको रोमांचित और आश्चर्यचकित करता रहता। प्रियंवदाके श्वेत कंधे कुंतल केशराशिमेंसे चमेली-से कोमल और धवल दीखते। प्रिया-के चुंबन और सौन्दर्यसे मुग्ध रुरु उसके सारे शरीरको अपना साम्राज्य समझता और उसे देवोंकी महिमा जानकर पूजता। वह ठीक न कर पाता था कि उसे कांताका कौन-सा रूप ज्यादा प्रिय है; उसका धवल स्मित, अकारण कांखें भरना, जरा-जरा-सी बातोंमें रूठना या कमलोंमें एक नवीन कमल-सी उस सद्यस्नाताका आलिंगन। कभी-कभी रुरुके सारे सामर्थ्यको अपनी रूप-माधुरीसे हरा देनेवाली प्रियंवदा बड़ी प्यारी लगती। हठात् सामने आकर वह रुरुको चौंका देती। ज्योत्स्ना रात्रिमें चमेलीके लता-मंडपके अन्दर बैठे-बैठे आनन्दके आंसू बहाती या रुरुके प्रेम-विहारसे प्रसन्न होकर धीरे-धीरे हंसती या किसी अनजान दुःखसे भरी हुई आंखोंसे उसे देखती रहती। इस प्रकार रुरु माधुर्यके सुहावने जंगलमें रहता था और इस आनन्दको स्थायी समझता था। वह इससे बढ़कर किसी आनन्दकी कल्पना भी न कर सकता था।

किन्तु उच्च आत्माओंके लिये प्रेम देवके पास खास रक्तरंजित सुख होता है जो कटकहीन गुलाबके सुखसे कहीं अधिक धन्य है। उस दिन पूर्वमें अभी अंधेरा ही था कि रुरु सोती प्रियंवदाके बाहुपाशसे उठकर नदीमें जा कूदा। जलका शीतल प्रवाह शरीरके चारों ओर घूम रहा था। प्रवाहके विरुद्ध तैरनेका आनन्द लेता हुआ

रुरु दूसरे किनारे निकलकर वनकी ओर मुड़ा। जैसे अपने अयालमें हवाके झोंके-का आनन्द लेते-लेते खुशीसे हिन-हिनाता अश्व गर्वसे गरदन मोड़कर चलता है उसी तरह युवक रुरुने हर्षके साथ अपने घुँघराले बालोंको हिलाकर चारों ओर ओस कन-से जल-बिन्दु बिखेर दिये। दिनकी उठती हुई प्राणवाही शक्तिमें जीते प्राणीकी तरह वह जीवनके प्रचंड प्रवाहमें बहने लगा और दूर-दूर फल-फूल बटोरता चला गया। प्रियंवदाके सौंदर्यके लायक फूल ढूँढ़ता-ढूँढ़ता वह आगे बढ़ता गया और नये झरनों, नये पेड़ों और अभिनव वनराजिमें खो-सा गया। सूर्यकी किरणें ओसकणोंसे गीले हुए पत्तोंके इस सघन देशमें धीरे-धीरे आयीं। दिन चढ़ता गया और किरणें प्रकाशका पथ बनाती-बनाती आगे आती गयीं और सारे वनको रंगोंकी सुहावनी दुनियामें ले गयीं। सारा वन जीवनके संगीतसे भर गया; मृग और पशु-पक्षी सभी उसमें बहकर सामंजस्यके राज्यमें रहने लगे। दोपहरके इस दर्शनसे संतुष्ट रुरु कुटीकी ओर मुड़ा। कुटीके पास बने कुंजमंडपसे निकलते हुए उसने हंसते-हंसते सूर्यकी ओर देखा, "तात अंशुमाली! जीवन कितना मधुर है और प्रेम!......अवश्य ही हमारे आनन्दका न कभी अन्त होगा और न हमें वृद्धावस्था सतायेगी। है न? इस स्वच्छन्द वायु और इस कलकल करती सरितासे, हम भी सदा जीवित रहेंगे या इन फलोंकी तरह नये-नये जन्म पायेंगे। और नहीं तो इन विशाल वृक्षों-सी दीर्घ आयु हमें मिली ही होगी।"

सोचते-सोचते रुरु दिवास्वप्नमें घूमने लगा। उसके ओठ मुस्कराये, "ओह प्रिया......वह रूठकर अपना अश्रुसिक्त मुख मुझसे मोड़ लेगी। उस समय उसका सुकुमार मुख आंधी-भरे आकाश-सा या ज्योत्स्ना रात्रिमें वर्षा-सा सुन्दर लगेगा। फिर मैं उसके पीछे-पीछे चलकर मीठी-मीठी बातोंसे मानिनीको मना लूँगा अथवा उसके क्रोधकी उपेक्षा करके पके फलकी तरह उसके कोपका स्वाद लेता-लेता चुप रहूँगा और तब शांतिसे उसके हृदयपर अपना अधिकार जमाकर छातीसे लगा लूँगा। वह मना न कर सकेगी, वह विरोध करना ही भूल जायेगी। और तब अपनी प्रसन्नचित प्रियाकी सुषमाको फूलोंसे सजा दूंगा। नहीं तो ऐसा करूंगा, मैं उसके पैरोंपर गिरूंगा तब उसका मुख ऊषा-सा उज्ज्वल हो जायेगा और छोटा-सा स्मित उसके मुखपर खिल उठेगा। रुरु इन विचारोंमें खोया हुआ था कि उसे प्रियंवदा दिखायी दी। वह चमेलीका गुच्छा आतुर हाथोंसे तोड़ रही थी। रुरुका पदरव सुनते ही, उसे देखने से भी पहले प्रियं-वदाके चेहरेपर मनोहर स्मित खिच गया और खुशी और लज्जासे उसका नत मुख गुलाबी हो उठा। ऐसा लगा मानों आनन्द और लज्जाने उसे चकित कर दिया हो। इस तरह मरनेसे पहले वह अपने प्रेमके संमुख पूर्ण सौन्दर्यमें खड़ी थी। रुरु उसकी

ओर देखकर मुस्कराया।

अचानक एक दर्दभरी चीखके साथ प्रियंवदा पीली पड़ गयी और कराहती हुई धरतीपर आ गिरी। आश्चर्यसे जड़वत् रुरु उसे फटी आंखोंसे देखता रहा। फिर एकदम चौंककर एक ही छलांगमें पास आ गया। आते ही उसने चमकती कुंडलियों-को कौंधते हुए देखा। वे दिनके उजालेसे भाग रही थीं। मौतकी फूत्कार करते-करते उस घृणित भड़कीले फनने शीतल हरे पत्तोंमें आश्रय ले लिया।

वाचाहीन रुरु प्रियापर झुक गया और उसके असहाय से हाथ प्रियंवदाके मुख-पर कोमलतासे फिरने लगा। वह निःशब्द भाषामें उस उड़ती हुई आत्मासे वापिस आनेकी प्रार्थना करने लगा। क्रूर आशा उसके हृदयको छलने लगी "आह ! अभी उसका शरीर गरम है"......परन्तु वृक्षपर मुरझाते चमेलीके गुच्छे जैसा प्रियं-वदाका मुख भी विवर्ण हो चला।......वह गुलाबी वर्ण कहां गया ?......दर्दसे विस्फा-रित नयनोंसे वह उजालेमें देखने लगी। उसकी दुर्बल होती बांहें रुरुके गलेमें थीं। सिसकते-सिसकते बोली, हाय प्रिय !" फिर जरा रुककर "......प्रियतम ! हमारी छोटी-सी हरी भरी कुटी ! क्या मुझे वह इतनी जल्दी छोड़नी पड़ेगी ?......मैं तुम्हारे प्यार और चुंबनोंमें कितनी रमी हुई......मैं समझती थी कि हमारा आलिंगन युग-युगतक बना रहेगा। मुझे अभीतक जीवनके हास्य, आंसू, मधुरता और घर्षण—किसी का भी पूरा अनुभव नहीं है। अभी तो मैं इस वनके पशु-पक्षीयोंको भी भली-भांति नहीं पहचानती। अभी तो जी भरकर सूर्योदय और सूर्यास्तको भी नहीं देखा है और न कोयल और चातककी स्वर-लहरीको ठीक-ठीक पहचान पायी हूँ। इस कुटि-याके कितने ही फूलोंके नाम मुझे नहीं मालूम। ये बड़े वृक्षराज अभीतक अपरिचित हैं, अंधेरी रातमें तारोंकी पहचान भी कहां हो पायी है ? क्या मुझे इतनी जल्दी मरना होगा ? उफ, ठंडे-ठंडे हाथ मुझे तेरे ऊष्माभरे शरीरसे अलग खींच रहे हैं।......वे मुझे कुहासाभरे अंधकारमें लिये जा रहे हैं।......चारों ओर से रातका अंधेरा मुझे घेर रहा है।......हाय ! अब मैं तेरी नहीं रही।......किसी अनजान प्रदेशमें जा रही हूँ।......मुझे विचित्र छायाएं दीखती हैं, विचित्र प्रदेश दिखायी देता है और दिखा-यी देती है वह भयंकर नदी......हाय वे मुझे तुझसे दूर-दूर लिये जा रहे हैं......क्या फिर कभी मिलन हो पायेगा ?...मृत्युके उस विराट् प्रदेशमें हम मिल सकेंगे ? जीवन-शक्ति तुझे दूसरे हाथोंमें धकेल देगी। तू मुझे भूल जायेगा। ना......ना तू भी मेरे साथ चल। ...भयभीत असहाय होकर मैं उस प्रदेशमें अकेली नहीं भटकना चाहती शायद तेरे प्रेमसे वंचित होकर मुझे प्रकाशहीन झरनेके किनारे आंसू बहाने पड़ेंगे।" ...मृत्यु उस सुन्दर मुखपर झुक आयी। एक सिसकीके साथ खेलसे जल्दी बुलाये

गये बालककी तरह असंतुष्ट सुभग आत्मा, प्रियंवदाके शुभ्र शरीरको छोड़ गयी।

शरीरपर झुका हुआ रुरु अब भी निस्तब्ध था। उन बन्द होठोंसे कुछ और सुननेके आशा लिये बैठा था। चंचल हरे-भरे उपवनमें सिर्फ प्रियंवदा खामोश पड़ी थी। रुरु उठा नहीं, मृतकके ऊपर झुका रहा। उसे तेजविहीन आंखोंसे देखता रहा।....कुछ देर बाद ऋषि पत्नियां आयीं। पाल-पोसकर दुलारसे जिस शरीरको पुत्रीकी तरह पाला था, उसपर आज वे आंसू बहा रही थीं। बड़ी कोमलतासे उन्होंने उस ठंडे शरीरको उठाया, फिर भी रुरु मृत बना वहीं बैठा रहा। न हिला-डुला, न नजर ही उठायी अंतिम चुँबन भी न दिया। मृत प्रियंवदा किसी शीतल निकुंजमें अपनी माताओंके साथ ले जायी गयी।

सारा जंगल प्रियंवदाको याद कर रहा था फिर भी रुरु निःशब्द बैठा रहा। रुरुकी आत्मामें एक विस्तृत निस्तब्धता छायी थी। उस सन्नाटेमें से वह जंगलकी आवाजें सुनता रहा; पत्तोंकी खड़खड़, गिलहरियोंकी दौड़-भाग, उड़ते पक्षीका चिहुकना, दूर-दूर कलापीका क्रंदण और पेड़ोंकी फुनगियोंका हवाके झोंकोंमें सरसराना ; यह सब दूर, सुदूर, था और रुरु अपने दिलमें अकेला था, बिलकुल अकेला। उसे खोयी प्रियाका विचार तक न आता था। वह कोमलांगी रुरुके जीवनमें प्रवेश कर पायी। उससे भी दूर अतीतकी छोटी-छोटी स्मृतियां मनपर बिछ गयी थीं।

रुरु इतना स्तब्ध बैठा था कि उसके सिरके आसपास चिड़ियां उड़ रही थीं। उनके छोटे-छोटे पंख उसपर हवा कर रहे थे। हवाके इन मृदु झोंकोंसे वह हिला और उसके मन और शरीरमें वर्तमान स्मृति जाग उठी। उसने चारों ओर देखाः वही हरा-भरा जंगल था, वैसे ही फूल मुस्करा रहे थे और वही चिर-परिचित वृक्षराज हवामें झूम रहे थे। उसे पृथ्वीकी प्रफुल्ल उदासीनता और अपने दुःखमें एकाकीपन अनुभव हुआ।दुःखसे विवर्ण सुन्दर मुखको उठाकर वह बुदबुदाया, "ओ ठंडे दिलवाली निष्ठुर मृत्यु ! मैं रो-धोकर तुझे संतुष्ट न करूंगा, तेरी नाटयशालामें दुःखके अभिनयका नाटक भी न रचाऊंगा। सामान्य पुरुषकी तरह स्मृतिकी तलवारके आगे रात्रिकी निस्तब्धतामें कराह न उठूँगा। तेरे वज्रपातसे डरकर, कांपता, सिसकता हुआ तुझे आनन्द न दूंगा। असह्य विचारोंसे रातमें अचानक परेशान होकर घूमता-फिरता, थककर, पराजित होकर गिर न पड़ूँगा। ये छोटे अशक्त पुरुषोंके कार्य हैं। हे भयंकर रहस्य ! हे विरह अन्धकार ! तुझसे हम कांप उठते हैं। बृहद् शक्ति, मुझे मालूम नहीं कैसे और कहां, पर मैं तेरे गहन अवसादमें प्रवेश अवश्य करूंगा और तब तुझे मेरे सामर्थ्यसे पता लगेगा कि मनुष्य कौन-सी धातुका बना है और तू खुद क्या चीज है ?" उठकर रुरु जंगलोंमें घूमने लगा। महीनों दुःखसे ही, दुःखमें ही जीवित रहा।

हर क्षण प्रियंवदाके विचारोंसे घिरा उसका अमर मन दुःखकी अतल गहरायी-में डूब-सा गया। जैसे दावानल लगते ही जंगलमें वृक्षोंकी शाखायें जलती मशाल बन जाती हैं और आकाशकी ओर लपटें फेंककर दुःखभरी महिमासे चीत्कार करती हैं वैसे ही रुरुका हृदय दुःखकी महिमासे गौरववान् होकर चीत्कार कर रहा था। गंभीर दुःखसे पावन हुए अपने सुन्दर मुखको ऊपर उठाकर उसने आकाशको देखा।

रुरुकी दृष्टिसे विधाता कांप उठा और देवलोक भी उसके लिये रो पड़ा। उसके मौनसे देवता भी भयभीत हो उठे। देवोंके आग्रहसे दिव्य शिखरोंसे उतर, अमर अग्निदेव विद्युत-वेगसे अश्वत्थ वृक्षके पास आये। अनेक शिखाओंकी संहारक वाणी बोल उठी, "हे विराट् वृक्ष! तेरी छायामें लश्करके लश्कर आश्रय लेते हैं। आज उनसे बढ़कर एक देवताको आश्रय दे और एक नयी ख्याति पा, एक प्रज्वलित देवता-का निवास स्थान बन। ऋषि-पुत्र रुरुके हृदयमें दुःखकी बाढ़ रुकी हुई है और देवगण भयभीत हो रहे हैं। उसके शापके भयसे पनपती नयी सृष्टिके लिये पृथ्वी कांप रही है। कहीं ऐसा न हो कि नित्य नूतन सर्जनका ईश्वर, प्रेम उलटा रूप ले ले और वेदनाकी सजा भोगता रहे। हे अश्वत्थ! उसमें रुद्र भाव जगा और उस भावको अपनी ओर खींच। तू मेरा सिंहासन बन जायेगा। तू हमेशा वेदना सहेगा फिर भी गरिमायुक्त रहेगा। दिव्य अग्निको धारण करनेके लिये वेदनाका यह मूल्य कम ही है।" पवित्र और नित्य युवा संहारकी वाणी रुकी और मूक वृक्षराजने मौन स्वी-कृति दे दी।

उस दिन रुरु घूम-घूमकर दुःखकी विस्मृतिमें बहक गया था। मधुर विचारों, कानके पास फुसफुसाते शब्दों तथा दृश्य चित्रोंमें वह ऐसा खो गया कि उसके पागल दिलने समझा कि प्रियंवदा जीवित है। इस अवस्थामें रुरु दोपहरके समय अश्वत्थके पास आ गया। धीरे झुककर पेड़के कोमल पत्तोंने उसके कपोल सहलाये, उसकी घनी केशराशिको छुआ। रुरु सस्मित मुड़ा। एक स्वर्गीय क्षणके लिये उसने समझा प्रियंवदा लौट आयी। वह बहुत बार इसी तरह चुपके-चुपके पीछेसे आकर अपनी छोटी-छोटी उंगलियोंसे उसके बालोंको सहलाती थी और उसके लम्बे बाल हवासे उड़-उड़कर रुरुको जकड़ लेते थे। प्रियंवदाकी गरम-गरम सांस बसन्तके मन्द समीर-सी सुगन्धित लगती थी। आश्चर्यचकित रुरु उन्मत्त-सा होकर उस स्वर्णिम शरीर-को आलिंगनमें बांध लेता था।......पर आह......वह कहां थी? वहां तो भयसे कांपता अपराधी वृक्ष ही खड़ा था। दुःख दुगुना हो गया और रुरुके मुखका रंग गहरा हो उठा। तपस्वी पूर्वजोंकी तपःशक्ति उसके हृदयमें प्रज्वलित हो उठी। मौन तोड़-कर वाणी अग्निशिखा-सी भड़क उठी, "हे अश्वत्थ! तूने जान-बूझकर अपने साथी

वायुसे मिलकर मेरे शोकका उपहास किया है, जा, तुझे भी हवाके शीतल स्पर्श या अपने हरे-भरे पत्तों-पंखुड़ियोंका सुख न मिलेगा। तेरे अपराधी पत्ते आगमें झुलसते हुए भी जियेंगे। जबतक तेरी शापित छायाके पाससे होकर आर्योंके रथ गड़-गड़ाते हुए समरांगणमें जाते रहेंगे और जबतक कविकुल माता सरस्वतीकी स्वरलहरी अनार्योंतक न फैलेगी तबतक तू इसी तरह जला कर।" रुरुकी वाणी मूक हो गयी और विशाल वृक्ष अपने विधानको सुनकर पत्ते-पत्तेद्वारा कराह उठा। फिर उसमें-से धुँआं उठने लगा। क्षणभरमें तनेसे लपलपाती हुई आगकी लपटें उठीं और बल खाती हुई हरे-भरे पत्तोंमें फूत्कार करती हुई घूम गयीं। सुसज्जित रथमें हुताशन आकाश मार्गसे आये। रथसे कूदकर शाखाओंपर लपके और आकाश अग्निकी लपटों-से आच्छादित हो गया। वेदनासे धू-धू करता बृहद् वृक्षराज तड़पते हुए भी खड़ा-का-खड़ा रह गया। उसका आधा अंग हरे-भरे पत्तोंसे पार्थिव लगता था किन्तु दूसरा आलौकिक आभासे मंडित उठती हुई अग्निशिखामें लिपटा था।

तप:शक्तिके आवेगसे कांपते, शोकसे अभिभूत रुरुने सूर्यकी ओर हाथ उठाकर चीत्कार किया, "आह प्रियंवदा।" उस परिचित प्रेमपूर्ण शब्दसे रुरुके मानस-पटल-पर अनेक शब्दचित्र उभरते-मिटते गये। कितनी बार उस प्रिय नामसे उसे पुकारा था। उसे वह प्रसंग याद आया जब प्रियंवदा रूठकर मुँह फेरे चंपाके पास खड़ी थी। रुरुने रौबभरी आवाजमें पुकारा मानो किसी सुन्दर प्रमादी दासीको बुला रहा हो। प्रियंवदाने धीरे-धीरे सिर मोड़ा, फिर लजाती-शरमाती आत्मसमर्पण करती हुई उस-पर आ गिरी। प्रेयसीका गर्म मुख उसके पैरोंपर था, हाथ प्यारे-प्यारे स्पर्शसे रिझा रहे थे। कभी-कभी वह उसके लम्बे नामको बड़े अनुनय-विनयसे लेता था तब रूठी हुई प्रिया दौड़कर उसके पास आ जाती, आंखोंमें पश्चात्तापके आंसू होते और होंठ चुंबनोंसे भी अतृप्त। कभी छोटे-मोटे कामके लिये बुलाना, कभी यूँ ही तंग करनेके लिये पुकारना। रोज-रोजका यही संबोधन था, फिर भी कभी खला नहीं, उसका जादू मिट न पाया। सब कामकाज छोड़कर रुरुकी पुकार सुनते ही हांफते हुए आना, खुशीसे चमकती आंखें, आतुर ओठ; इन सबकी याद ताजा हो गयी। किसी समय शान्तिमें उसके पास बैठे-बैठे जपकी तरह वह प्रेयसीका नाम उसीके कानोंमें फुसफुसाता या उसकी शांत गंभीर दृष्टिमें उन्माद जगाता था। कभी नदीके घाटपर लुभाकर ले जाता, कभी मीठी नींदमें सोयी प्रियाके नामका उच्चारण करता रहता। रतिके उन्मादमें टूटे स्वरोंमें उसका नाम दोहराता रहता। यही सब स्वर-चित्र उसके कर्ण-पटपर बाढ़में बढ़ती नदीसे टूट पड़े। अति सुखद स्मृतियोंके असह्य भारसे टूटते दिल-से वह कराह उठा, "ओ मृत प्रियंवदा! तू मेरे शोकमें अभी भी जीवित है। ओ

मेरे मुरझाये पुष्प ! हाय, मैं सिर्फ उस निर्दोष वृक्षको मार सका, पर जहां शक्तिका काम था वहां निर्बल ही बना रहा। हमारे पूर्वज भृगु जिनके पवित्र वीर्यसे हमारा कुल उत्पन्न हुआ, ऐसे न थे। भृगुके पुत्र और मेरे पिता भी इतने दुर्बल न थे। उन्होंने अपनी माता पुलोमाके गर्भसे सूर्यकी भांति प्रकट हो दाहक दृष्टिसे मांका अपहरण करनेवाले पुलोमा राक्षसको भस्मीभूत कर दिया था। ऐसे प्रतापी पूर्वजोंका पुत्र मैं, रुरु, निकम्मा निकला।

"मृत्यु ! तू तारोंभरे आकाशके नीचे पृथ्वीपर अपना मुँह नहीं दिखा सकती। प्रेमसे हारनेके भयसे तू अवगुँठनमें मुँह छिपाकर हमारे स्वजनोंका अपहरण करती है। हाय ! तेरे अंधियारे महलसे कोई लौटा नहीं जो हमें रास्ता भी बता सके। ......अगर प्रेमीके शोकेमें शक्ति है तो मैं उसी शक्तिसे दैवी सत्ताका पृथ्वीपर उतरनेके लिये आह्वान करता हूँ। प्रेमकी तपस्यासे जागृत शक्तिसे मैं उसे पुकारता हूँ। ओ काले मृत्युके प्रकाश-पुंज शत्रु ! उतर और मुझे उसके धुँधले द्वारतक ले जा। मैं अग्निसे भी प्रचंड आगमें झुलस रहा हूँ और मेरी शय्या तलवारकी नोकसे भी ज्यादा दुःखदायी है।" रुरु चुप हो गया और स्वर्ग रोमांचित हो उठा। दूर दिगंत अदृश्य पंखोंकी फड़फड़ाहटसे कंपित हो उठा।

रुरु आवेशमें आगे बढ़ता गया और शामतक पत्तोंसे ढके, हरे-भरे शीतल स्थानपर पहुँच गया। वहां एक वृक्ष अप्सरा और गंधर्व लोकके आलौकिक वायुमंडलमें खोया-सा खड़ा था। उसकी शाखाओंके बीच-बीचमेंसे नीला आकाश झांक रहा था। रुरु तनेके सहारे खड़ा रहा। ऊंची शाखापर बैठा एक तोता जोरसे चीख उठा। शाखापर एक कुंदनवर्ण किशोर खड़ा था जिसका ओजस्वी शरीर अर्धनग्न था। उस मधुर और कोमल शरीरका प्रत्येक अंग सुन्दर था। प्रत्येक अंग आंखोंको चुंबककी भांति अपनी ओर खींचता था और सम्मोहित हृदय निर्बल बन जाता था। किशोर हाथोंमें धनुष लिये था पर मनुष्य धनुषधारीकी तरह नहीं। उसके धनुषकी प्रत्यंचा कांपती रहती थी और उससे मधुमक्खियोंके गुँजनकी मर्मर ध्वनि निकलती थी। एक अनोखी सुगन्ध वातावरणमें फैली हुई थी जिसमें साँस लेना भी मधुर खतरा-सा लग रहा था। किशोरने अपना मुख रुरुकी ओर फेरा। उसका एक-एक कदम जादूका पाश था। "इस जंगलमें मारा-मारा क्यों फिरता है ? तेरा सुन्दर मुख तीव्र दुःखसे क्यों व्यथित है ? तेरे ओठों और विशाल नेत्रोंमें भयंकर दुःखके उज्ज्वल सौन्दर्यको देखनेके लिये ही देवोंने तेरे हृदयको मथा है। असुरभूमिमें जैसे अत्याचारी दूसरोंके कष्ट देखकर सुख पाते हैं, और अत्याचारसे ही अपना सामर्थ्य जताते हैं वैसे ही......देवोंने तुम्हारे साथ किया है। धरतीकी मधुर ध्वनि और शस्य श्यामल

सौन्दर्यको भूलकर जिस सुन्दरीमें तुम्हारा मन रम गया है उस तन्वीके ओठोंमें निश्चय ही मधु होगा और उसके वक्षमें जादू।" देवतासे वशीभूत रुरु न चाहते हुए भी बोल उठा, "कामदेव ! सृष्टियोंमें आग लगाने वाले, तुम्हारे क्रूर उज्ज्वल सौंदर्यसे मैं तुम्हें पहचानता हूँ। आह ! मेरा दुःख और मेरी कामना बढ़ानेके लिये उसके विषय-में क्यों पूछते हो ? अगर यह दृश्य मेरी अभागी आत्माकी प्रवंचना नहीं है तो तुम वही क्रूर मधुर देव हो —— महान् प्रेम ! उसकी मां तुम्हारी ही एक अप्सरा थी।" जो रोमांचित शाश्वत स्मित, बसन्तको जन्म देता है उसी स्मितको ओठोंपर लाते हुए रति-प्रेमी बोला, "मानव ! मैं वही हूँ। मैं वही मदन हूँ जो तारोंमें द्युति है और जो जीवनके विस्तृत फलकपर छाया और प्रकाश, आनन्द और अश्रुके चित्र खींचता है। मैं ही सामान्य क्षणको अद्‌भुत बनाता हूँ, सामान्य वाचाको जादूका असर देता हूँ। मैं ही विपरीत आत्माओंको मिलाकर एक जीवनको दूसरेके साथ बांध देता हूँ। एक ही क्षणमें आकस्मिक मिलन या धीरे-धीरे बढ़ते हुए जादूके पीछे भी मैं ही होता हूँ। मैं किशोर वरको वधुके कांपते हृदयकी ओर उड़ा ले जाता हूँ, देवोंको मर्त्य दुःखोंके पीछे पागल बना देता हूँ। अनेक घूरती जलती आंखोंके सामने स्वयंवरमें प्रसिद्ध, सुदर्शन राजाओंके बीचमें भी भयसे व्याकुल विवश कुमारी राजकन्याको एक अन-देखे मुखकी ओर धकेलता हूँ; जीवनका आनन्द मेरे द्वारा आता है। गृहिणी मेरे कारण गृहमें संतुष्ट और व्यस्त रहती है और खुशी-खुशी आज्ञाका पालन करती है। वह बड़े आनन्दसे अनथक सेवा करती है और उसके ओठोंपर स्मित थिरकता रहता है और आंखोंमें पूजाका भाव। पति भी मेरे कारण पत्नीके लिये बाहुपाश फैलाये रहता है। वह उन्हीं पुराने संबोधनोंसे कभी नहीं थकता। वही कुंतल केश उसे रोमांचित करते हैं, वही चिर-परिचित आकार उसे ऊष्मासे भर देता है। इतना ही नहीं प्रेमके अन्य उज्ज्वल रूप और अन्य सुखी, सुकुमार भाव मेरे चारों ओर मंडराते हैं। मैं भाईके दिलमें बहिनके लिये पुनीत प्रेम जगाता हूँ, बहिनके हृदयका आवेग और आकर्षण भाई और अन्य स्वजनोंके प्रति दौड़ता है। अपार्थिव प्रेमके प्रतीक-सम युवती-मांकी आंखोंमें पार्थिव गंभीर और तीव्र प्रेमकी दृष्टि लाता हूँ। शिशु हृदयमें माता-पिताके लिये भक्ति जगाता हूँ। मेरे इन गुणोंके कारण लोग मुझे पूजते हैं। ये हैं मेरे शांत गौरवशाली बाणोंके गुण, लेकिन मेरे पास प्रबल दाहक और प्रचण्ड तीक्ष्ण बाण भी हैं। उनसे मैं दृढ़ हृदयको भी चंचल और विवश बना देता हूँ। पत्थर-से कठोर दिलको पिघला सकता हूँ। आंसुओंकी झड़ी लगा सकता हूँ या मौन कटुता और निर्दय पीड़ा भी दे सकता हूँ। दयालु दिलमें खूनकी प्यासी ईर्ष्या जगाकर उसे पत्थर-सा कठोर बना देता हूँ। असंयत आत्मामें वैरका बीज बोता हूँ और उससे

असम्भव क्रूरताके काम कराता हूँ। मैं ही ठंड़ी लालसा और भयंकर चांचल्य देता हूँ। मानव मनमें ऐसा प्रेम जगाता हूँ जो द्वेषका ही दूसरा रूप होता है। मनुष्योंमें अमानुषिक हिंसा, असंतुष्ट, उच्छृंखल वांछा, मौत-सा अन्धा और तलवार-सा बहरा आवेग मेरे ही बाणोंका काम है। मर्त्य ! सब गहरी इच्छाएं और असीम स्पृहायें मेरी हैं। मैं यह सब कर सकता हूँ।" वह जैसे-जैसे बोलता जाता था वैसे-वैसे उसका मुख असीम सम्मोहनसे अधिक अद्‌भुत बनता जा रहा था। अपने अन्दर छिपे अमरत्वकी झांकी देते हुए उसके पार्थिव दीखनेवाले अंग सुकुमार दीप्तिसे चमक उठे।

पर तुरन्त असंतोषका भ्रू-भंग करके वह बोला, "मैं यह सब कर सकता हूँ। बड़े-बड़े देवता भी मेरी शक्तिको जानते हैं, पर मृत्युके साथ मुठभेड़ करते वक्त मैं बुरी तरह पछाड़ खा जाता हूँ, और मुझे अपने स्फूर्तिमान देवत्वपर शंका होने लगती है। मनुज ! मैं तारोंकी रोशनी हूँ, फूलोंकी बहार हूँ और वह अनामी सुगन्ध हूँ जो समस्त विश्वमें फैली हुई है, परन्तु काल मुझसे भी पुराना हे। वह मेरे पीछे-पीछे रातको लिये अपनी ठंडी बृहद् छाया फैलाता आता है। मृत्युपथ कठिन है और उस पथपर चलना मर्त्य चरणोंके लिये प्रायः असंभव है। फिर भी मनोहर युवक ! अगर तुझे जाना ही है, अगर तूने दृढ़ संकल्प किया है, (और मैं समझता हूँ कि तेरी आत्मा मजबूत होगी क्योंकि तू इतने गहरे विषादको भी सह सकता है); तो सुन ! प्रेमसे सुसज्जित होकर दुःसाहसके लिये मनको फौलाद-सा बना ले। फिर भी मृत व्यक्तिको जीवित मनुष्यके बाहुपाशमें लानेसे पहले कितना कठोर सौदा करना पड़ेगा, यह भी सुनता जा......" देव इतना ही बोल पाये थे कि बीचमें ही आवेशपूर्ण आरक्त मुख, आतुर आंखोंसे देखते हुए, कांपते स्वरमें प्रेमी रुरु बोल उठा, "ओ महान् प्रेम ! ओ सलोने प्रेम ! अगर शारीरिक या मानसिक सामर्थ्यसे उसे रोका जा सके, आत्मबलसे या मधुर शब्दोंसे जिन्हें सुनकर पत्थर भी पिघल जाये या मधुर-स्वर-लहरीसे उसका सामना किया जा सके तो मैं महान् संगीत रचाऊंगा और अनुपम वाणीसे उसे रोका जाये तो ऐसी वाणी उतार लाऊंगा। मैंने सुना है कि सरस्वतीकी वाणी सुनकर देवताओंके हृदयसे आंसू निकल जाते हैं। मैं भी वही तान छेड़कर उसे चुनौती दूंगा। उसे हर तरह पकड़कर उसकी अमानवीय शक्तिसे अपनी मानवीय शक्तिको भिड़ाकर उसे हरा दूंगा। देव ! सौदा कितना सरल है। अजस्र अश्रुधाराओंसे मूल्य चुकाऊंगा या सदियोंतक शारीरिक पीड़ा और आत्माकी वेदना सहकर ऋण उतारता रहूँगा ताकि मेरे मुखपर उसका सुकोमल हाथ फिरसे आ सके, उसके घुँघराले बाल मुझे घेर लें और मेरे वक्षपर उसका धड़कता हृदय फिर एक बार स्पंदित हो सके।

दयार्द्र स्मितके साथ महान् देव बोले, "ओ मूढ़ प्रणयी ! अश्रुधारासे कठोर मृत्युको संतुष्ट करना असंभव है। उसे तेरी विरह-व्यथापर जरा भी दया न आयेगी।

यह भी समझ ले कि उसके पाषाण नेत्र संगीतकी माधुरीसे द्रवित न होंगे और न ही उसके कान मीठे शब्दोंको स्वीकारेंगे। तू एक पुष्पको भी मुरझानेसे नहीं रोक सकता फिर उस निष्ठुर छायासे कैसे लड़ेगा? देवगण मनुष्यसे एक ही चीज मांगते हैं; वह है बलिदान। उसके बिना कोई सिद्धि नहीं मिलती, कोई मुकुट नहीं मिलता। कई तरह के यज्ञ होते हैं, जिनमें लाजाकी, सोमकी, पवित्र फूलोंकी आहुति दी जाती है। यही नहीं, प्रार्थना, रक्त और मानसका अदम्य विस्तार, अपने समस्त कार्यों और सब विचारोंकी पवित्र सुगन्ध -- इन सबकी भी आहुति दी जाती है। कभी सूर्य-सी उदारता, दयाहीन श्रम, अविरल अश्रुधारा आहुतिमें दिये जाते हैं। मृत्यु या मृत्युसे भी बढ़कर दुःखदायी पीड़ा या बिछोह, प्रियजनसे अलग एक रिक्त मरुस्थल; यही नहीं पापतक आहुतिके रूपमें अपवित्र सिद्धिके लिये अर्पण किया जाता है। किन्तु पाषाण-सी निश्चल मौतकी काली छाया इनमेंसे कुछ नहीं मांगती। वह शुभ्र और पवित्र तथा काले कलुषित हृदय; दोनों हीमें प्रवेश करती है। देख! वह न्याय-शील पुरुष असहाय होकर अपने प्रियके मृत शरीरपर झुक गया है। उसके सारे गुण उसका सारा पुण्य ठंडे हृदयको स्पंदित न कर सकेगा। वह पीले, निर्जीव मुखको पागल-की तरह बार-बार चूमता जाता है परन्तु अब वह मुख उसे मना करनेके लिये कभी न खुलेगा। विवर्ण प्रेत-सा काल जीवन मांगता है। अपना आधा जीवन देकर तू उस आनन्दमय जीवनकी डोरको वापिस ला सकेगा। रुरु, जीवन मधुर है और तुझे उसका आधा हिस्सा देना पड़ेगा। आह रुरु! जीवन क्षणिक होते हुए भी कितना मधुर और कितना अमूल्य है? सिर्फ श्वास लेना कितना अच्छा है, कितनी ऊष्मा देता है। जब तू जिन्दगीकी सामान्य चीजें गंवा देगा तब तुझे पता लगेगा कि वे कितनी मनोहर और रंगीन थीं। थके मांदे शरीरको मित्रकी भांति आलिंगनमें लेती नींद कितनी कोमल है, और भोजन कितना स्वादिष्ट! इनको खोकर तेरे अन्दर उनके लिये तृष्णा जागेगी और खोये सौन्दर्य और सुखके लिये पश्चात्ताप होगा। आह पागल प्रेमी! क्या तू इन सबको छोड़ देगा? प्रकाश और आनन्दपर अपना अधिकार यूँ ही किसी दूसरे मनुष्यको दे देगा? आखिर वह तू तो है नहीं। उसके हृदयमें बहते आनन्दके स्रोत-का तुझे अनुभव भी न होगा। तेरे शरीरमें यंत्रणा होगी, तब वह न चिल्ला उठेगी, न कराहेगी। ज्यादासे ज्यादा दयार्द्र दृष्टिसे तुझे देखती रहेगी। अनुकंपासे प्रेरित होकर तेरे पास आयेगी। प्रियतमसे इतनी दूरी देखकर वह अपनी असमर्थतासे दुःखी होकर फूट-फूटकर रोयेगी। मानव समाजमें व्यक्ति आकाशमें विचरते तारों-की भांति है; वे एक दूसरेको देख सकते हैं परन्तु परस्परके सुख-दुःखका अनुभव नहीं कर सकते। मनुज हर्षावेशके उल्लासमें भी अकेला ही रहता है और उसकी दर्दनाक

पीड़ामें भी कोई साझीदार नहीं बन पाता। ओह रुरु! सुन्दर सलोने मुख तो अनेक हैं परन्तु तुम! तुम तो एक ही हो। अच्छी तरह सोच देखो। जब तुम अपने-आप जीवनके मधुर खजानेको कम कर दोगे और अन्तमें मौतकी छाया तुमपर मंडरायेगी तब तुम व्यथित न होगे? पश्चात्ताप न करोगे? मन्मथ रुका और एक विचित्र शंकित दृष्टिसे उसे देखने लगा।

धुँआंधार वर्षाकी तरह प्रणयीका उत्तर गरजा, "उफ कैसे निरर्थक शब्द हैं ये? सिर्फ दिनकी रोशनी अपने-आपमें क्या है? अति वृद्ध होकर बूढ़ोंकी तरह, असन्तुष्ट दुनियामें जीना कौन चाहेगा? कंजूसकी भान्ति जिन्दगीके छोटे-छोटे सुखोंसे ही सन्तुष्ट होकर जीना, इस बृहद् उदार जीवनसे सिर्फ अपने ही स्वार्थको साधना कौन पसन्द करेगा? प्रेमके आदान-प्रदानसे आत्माको तुष्ट करना या महा विरल बलिदानसे स्वयंको दूसरोंमें पाना; यह न हो तो जीवनका अर्थ ही क्या है? ऐसा शीतदानी कौन होगा जो गरिमामय जीवनके ऐसे स्वार्थमय अपव्ययपर अफसोस न करे? ओ तारोंके मित्र! तू मेरा उपहास क्यों करता है? प्रेमका देव होकर भी तू यह नहीं जानता कि प्रेम शरीरके बंधनोंको जलाकर भस्म कर देता है और पृथकतापर हंसता है? पर शरीरसे खेलकर और भी मधुर हो जाता है। मैं अन्तरतमसे जानता हूँ कि प्रेमी प्रेयसीसे अलग नहीं होता। उनका मौनतक गूँगा नहीं होता। प्रणयी अपने हृदयमें प्रेयसीका हृदय रखता है, उसका शरीर भी अपने शरीरमें पाता है। उसकी लालीसे वह भी लाल होता है। उसको शीत लगे तो वह भी ठंडसे कांपता है और अगर वह मर जाय हां, जब वह मर जाती है तो एक खोखलापन......। अपंग, अपाहिज प्रेमीकी जिन्दगी जिन्दगी नहीं रहती। वह मधुर तीव्र ऐक्य खो बैठता है। इस तीव्र दु:खको कम करनेके लिये कोई भी कीमत देनी पड़े तो वह कम ही होगी। ऐसे सुखद अल्प जीवनसे लम्बी सदियां ईर्ष्या करेंगी। हम मौतके डरसे मुक्त होकर जियेंगे। हमें दूसरोंकी तरह वांछा और भयसे प्रणयीपर झुककर कांपना न पड़ेगा, न हमें उसके टिमटिमाते जीवन दीपको देखकर शीतकी अनुभूति होगी। छोटे-मोटे वियोगमें व्याकुल होकर हम अवारा कल्पनासे परेशान भी न होंगे और जब मौतकी काली छाया हमपर फैल जायेगी तब शांतिसे एक सिसकी लेकर चल बसेंगे। आत्मा आत्मासे लिपट जायेगी और शरीर एक दीर्घ चुंबनमें बंधे रहेंगे। स्वर्गके सुखका भी हम साथ-ही-साथ आस्वादन करेंगे और कभी-कभी स्पर्शसे अपनी धन्यताकी अनुभूति कर लेंगे। अगर नरकमें गये तो वहां भी दु:खमें साथ रहेंगे। असह्य पीड़ामें भी हमारे शरीर अभिन्न बने रहेंगे और इससे पीड़ा भी प्राय: सुख बन जायेगी क्योंकि हम दोनों साथ होंगे। ओ प्रेमके प्रभु, मैं शब्दोंसे ऊब गया हूँ। मुझे मेरी राजकुमारी-

सी, कोमल बसन्तके दूसरे अवतार-सी अद्‌भुत प्रियंवदाके पास उड़ा ले चलो। जिस निर्जन झरनेके किनारे वह भटक रही है मैं वहीं जाऊंगा।

रुरु चुप हो गया। उसकी आंखोंमें जिज्ञासा और उत्साह चमक रहे थे। और एक बार किशोर देवके मधुर मुख और कोमल शरीरपर अमरत्व झिलमिलाया। वह बोला, "प्रिय युवक! इस फूलको अपने हाथमें सावधानीसे रखो और चलते जाओ। पुनीत और मंथर स्थिर-गति गंगा और विकराल सागर-राजके मिलन-स्थानपर जब तू पहुँचे तो खड़े होकर मेरे उस उन्मत्त भाईसे अनुरोध करना" कहते-कहते उसने अपना हाथ रुरुकी ओर बढ़ाया। रुरुने हाथ उठाये और एक रोमांचसे उसका सारा शरीर कांप उठा। रुरुको अपने हाथमें एक सूक्ष्म, अगोचर फूलकी अनुभूति हुई । उस फूलमें अद्‌भुत स्पंदन था और एक आग-सी थी। उसकी पंखुड़ियां आगकी लपटोंकी तरह अपना रंग बदलती रहती थीं। उन पंखुड़ियोंमें भय देनेवाले मादक आकर्षणकी महक थी। उसमें भयातुर, व्याकुल आनन्द था। रुरुने ,ऊपर देखा, परन्तु हरे वृक्षसे देवता अदृश्य हो चुके थे। जादुई वृक्ष शाखाओंमेंसे नीले आकाश-को निहार रहा था। शाखायें आनन्दसे सिहर उठी थीं। धूमिल होती हुई पृथ्वीपर रात्रिका साम्राज्य फैलता जा रहा था।

पवित्र शतद्रु और विपाशा, लोगोंकी प्यारी शरावती, स्वच्छ, चुस्त चन्द्रभागा और मनुज कल्याणमें कार्यरत वितस्ता: इन नदियोंकी भूमि छोड़कर रुरुने आर्योंसे अपरिचित बीहड़ जंगलोंमें प्रवेश किया। अछूती कन्यासी कुंवारी प्रकृति गूँगे पर्वत और जंगलोंमें अकेली, मूक और मुग्ध, आनन्दसे लेटी हुई थी। गंगाके विस्तृत होते पाटके साथ-साफ आश्चर्यचकित रुरुने किरात, पौंड्र जातियोंको देखा। वे एक साथ रहती थीं पर लड़ती भी थीं। यह जातियां विराट् वृक्ष तथा महासर्पराजकी पूजा करती थीं। किन्तु यहां स्वस्थ, उन्मत्त पृथ्वी और उसके वनोंमें विचरते जंगली पशु इन छोटी-छोटी जातियोंपर प्रभुत्व रखते थे। आगे चलकर रुरुने देखा कि संध्याके क्षीण धुँधले प्रकाशमें गंगाकी असंख्य लहरें दूर-दूरतक फैलती जा रही हैं। गंगाके लुप्तप्राय सामनेके किनारेसे अनेक स्वर-लहरियां उठ रही थीं। उधरसे सफेद पताका-वाली नौका खेता हुआ एक कठोर, मूक मल्लाह आया। उसके आते ही रुरु नावमें जा बैठा। नाव गंगाके रहस्यमय जलपर फिसलने, उड़ने लगी। नदीके दोनों पाट चौड़े होते-होते आंखोंसे ओझल हो गये। सारी दुनिया जलमय हो गयी, नीला आकाश-तक पानीमें गोता खा गया। रातके धीरे-धीरे झुकने और पलकोंपर बढ़ते हुए अन्ध-कारके भारको रुरुने अनुभव किया। रुरुको यह सब अपने दैनिक जीवनसे भी सच्चा स्वप्न सा लगा। उस स्वप्नमें उसके पास मूक, पाषाण मुखवाला मल्लाह बैठा था

और चारों ओर क्षितिजका विस्तार बढ़ता जाता था। नौका धीरे-धीरे अथाह जल-पर सरकती जाती थी और एक ऐसे बन्दरगाहको ढूँढ़ती थी जो शायद ही कभी मिले। क्षीण अंधकारमें उसने लहरोंकी कराह सुनी। आसपास विशाल सागर था और नीचे अतल गहरायी। नौका रुकी। नाविकने अपनी पाषाणवत् तारोंकी समवयस्क आंखें रुरुपर गड़ी दीं। प्रभातके धुँधले प्रकाशमें रुरुने चारों ओर उठते उभरते धूसर समुद्रको देखा। वह फुसफुसाती लहरोंके ऊपर उच्च स्वरमें चिल्लाया, "सुन, गिरासे वंचित सागर, सुन, अगर तेरे अगणित छंदोंमें एक भी लय प्रेमीकी वेदनासे मेल खाती हो तो हे सागरराज! अपनी अतल गहराइयोंको मेरे मर्त्य कदमोंके लिये खोल दे। मैं उस विषादपूर्ण स्थानको ढूँढूँगा जहां अकाल मृत और बन्दी आत्माएं यादोंकी आहोंमें तड़पती हैं। मैं कोई सामान्य मनुज नहीं हूँ। महान् ऋषिकी संतान, मैं, रुरु, तुझे पुकार रहा हूँ। देवोंने मुझे इस विशिष्ट विपत्तिके लिये चुना है। इस फूलसे खिलते अग्नि-पुष्पको देख। कितना ताजा है! यह मेरी वेदनासे ही सजीव है। रुरुने फूलको आगे बढ़ा दिया और एक सजीव वस्तुकी तरह सारा समुद्र कांप उठा। वह हठात् ऊपर उठा, सारा आकाश उत्ताल तरंगोंसे भर गया। पहाड़-सी लहरें उठकर रुरुके ऊपर झुक गयीं। स्वर्गतक समुद्रके इस रूपसे डर गया। बाढ़-सा पानी तीव्र वेगसे बढ़ता गया और एक लंबी सांस लेकर सागरने रुरुको अपने अन्दर खींच लिया। गिरती, उठती तरंगोंके साथ रुरुने प्रवेश किया। सागरके क्षीण हरित आलोकमें सागर-कन्याओंके बाल लहराते थे। उनके रहस्यमय उरोज झलक जाते थे। आगे बढ़ते-बढ़ते दिङमूढ़ रुरुने पानीको एक अगोचर गर्तकी ओर भागते देखा। जैसे भयभीत मानव अपनी निश्चित भावीकी ओर असहाय होकर दौड़ता है वैसे ही असहाय तूफानी वेगसे पातालकी यह गंगा करुण चीत्कार करती भागी जा रही थी। घूँघटसे ढकी त्रिलोककी वह देवी पानीसे ऊपर उठी और रुरुके सामने आकर खड़ी हुई, असंख्य प्रपातोंकी-सी वाणीमें बोली, "तूने बेधड़क होकर सूर्यके प्रकाशको छोड़ा है। मेरे साथ चलकर तू उस असहाय जीवको काली निराशामें डूबा हुआ पायेगा। प्रेमी! मृत्युकी इस महारात्रिमें मुझ-सी देवीतक कलपती रहती है और अपनी क्रूरतासे स्वयं अपने हृदयको घायल करती रहती है। उस भयंकर रात्रिमें चलनेकी हिम्मत है तो चल, आ।"

अनिच्छासे नीचे उतरते-उतरते धवल गंगा भी काली हो चली और उसकी तरंगें ऐसा चीत्कार कर उठीं जैसा मनुष्यके कानने कभी न सुना होगा। रुरु कुछ ठंडा पड़ गया फिर भी उसके हाथमें स्थित महान् तीव्र प्रेम अपने अंगुलि-निर्देशसे उसे आगे धकेलता गया। वह गंगाके निर्दय स्वरके पीछे-पीछे चलता चला गया। उस भुतहा वातावरणमें अशरीरी प्रेत उसे पकड़ते थे, आसुरी आवाजें उसके कानोंमें चिल्लाती

थीं। आत्माकी वेदना सहता आखिर वह एक धूमिल मैदानमें आया। रास्तेके दुःख-से छुट्टी पाकर उसने शान्तिकी सांस ली। किन्तु वह दुःखकी शान्ति थी। अनेक मुसीबतोंसे निकलकर मनुष्य जैसी दुखभरी शान्ति पाता है वैसी ही थी।

पातालके काले प्रदेशमें न सूर्य था, न कभी बारिश होती थी। मनुष्यके सुखी श्रमसे वहांकी धरती कभी उर्वरा नहीं बनी थी। वहां थी सिर्फ रेत-ही-रेत, विचित्र पहाड़ियां, अस्पष्ट आकारकी गुफायें। उस काले सुनसान देशमें महान् सर्पराज और अनेक लहराते, बल खाते बीभत्स आकार थे। रुरुने घृणास्पद झिलमिलाते प्रकाश-को पहचाना। फूत्कारोंको सुनता हुआ और उन आकारोंको देखता हुआ आत्मबल-से आगे बढ़ता गया, थकी मांदी निराशाके छः प्रदेशोंमेंसे गुजरा जहां दुःख और आहों-का पहुँचना असम्भव था। अन्तमें आहोंकी पुकार सुनता-सुनता रुरु पातालसे भी नीचे उतर गया। वहां शोककी हृदय-विदारक ध्वनियां सुनायी देती थीं। स्वर मानवीय थे किन्तु इतने करुण कि मनुष्य उनको सह न सके। शापित गंगा पागल-सी, चीत्कार करती हुई बढ़ती जाती थी। उसकी प्रचंड धारामें बहते अनेक जीव दुःख, शोक और वेदनासे चिल्लाते जाते थे। उस प्रवाहमें रुरुने राजाओंके मुरझाये मुख देखे, महान् विजेताओंको देखा और विख्यात सुन्दरियोंको भी देखा। गंगाके उभरते, गिरते प्रवाहके ऊपर कभी एक कांपता कुंदन-सा हाथ, कभी वेदनासे पीला पड़ा हुआ चेहरा, छिन्न-भिन्न अंग या भयविह्वल वक्ष दिखायी दे जाते थे। सबके ऊपर गंगाका पानी रोता रहता था। उसे अपनी क्रूरतामें सुख नहीं मिल रहा था। इस क्रूरताको देखकर दयासे द्रवित स्वरमें रुरु पुकार उठा, "हाय! दुखी मानव जाति! तू पृथ्वी-पर आतुर और आवेगपूर्ण आत्मा लेकर आती है किन्तु तेरा नाश पहलेसे ही निश्चित होता है। जीवनके कुछ दिन अनिश्चितता और दुःख में बीतते हैं। बीच-बीचमें सूर्यका प्रकाश और फूलोंकी सुगन्ध-सा अदृश्य सुख पानेका प्रयत्न करती रहती है। पर तुझे सुखकी एक बूँद ही मिल पाती है और फिर इस विशाल भूमिको छोड़कर जल्दी ही इस भयानक रात्रिमें उतरना पड़ता है। यहां भी तुझे अपने छोटे-छोटे सुखोंकी कीमत चुकानी पड़ती है। जरासे सुखके लिये कितनी भारी कीमत! मौत भी हमारी मदद नहीं करती। वह अपने आलिंगनसे डरे हुए, थर-थर कांपते नग्न जीवको यहां ला पटकती है। हाय! मेरे प्यारे फूल! क्या तू भी इस कलपते प्रवाहमें डूब रहा है? मैं जल्दी इस निराशाकी धारामें कूद पड़ूँगा। तेरे सौन्दर्यको फिरसे तारोंभरे आकाशके नीचे मुस्कराता देखूँगा या उसे ढूँढ़कर तेरे दुखी हृदयको छातीसे लगा चुंबनों-से तेरे चीत्कार बन्द कर दूंगा। प्रेम तेरा आधा दर्द मेरे अन्दर खींच लायेगा। हम दुःख और कष्टमें भी विजयी बने रहेंगे। रुरु रुका और एक आवाज बोली, " मृत्युके

साम्राज्यको अपने सजीव नेत्रोंसे व्याकुल न कर। आगे बढ़ता जा। तू जिसे ढूँढ़ता है वह यहां नहीं है। मैंने उसे अभी-अभी देखा है। वह उन लोगोंके बीच है जिन्हें शारीरिक कष्ट नहीं होता। वे दुखद विचार और मूक यादोंके सताये हैं। वह थर-थर कांपते शहीद हृदयोंका एक दल है। रुरुने पीठ फेरी और उस दर्दभरे प्रवाहपर आगकी पच्चीकारीका एक बड़ा सेतु देखा। अग्नि शिखासे ही आवृत्त एक नारी मूर्त्ति नंगी तलवार लिये उस चंचल आगकी लपटोंके सेतुपर पहरा दे रही थी। उसका दहकता मुख भव्य और भयावह था। वह बोली, "भृगु पुत्र! आगे बढ़ता जा। तेरे हाथका फूल मुझसे भी तेरी रक्षा करता है। एक हाथके भव्य उग्र झटकेसे उसने रुरुको धकेला। उसके स्पर्शसे कांपता परन्तु सही सलामत रुरु अन्दर आ गया। नदी-का दूसरा किनारा भी काली लताओंसे ढका था। उसके मैदानमें एक भी फूल नहीं था। सारा मैदान दुःखकातर कोमल मुखोंसे भरा था। मजबूत पुरुष, आंसू बहाती माताएं, सौंदर्यकी आभायुक्त कन्याएं, और सुकुमार दुखी बालक भी वहां थे। नीची दृष्टि किये, नत मस्तक वस्त्रहीन दल इधर-उधर घूम रहा था। बिन बारिश मुरझाये फूलकी नाईं वे सब मौन थे। इनके बीच रुरु आ खड़ा हुआ। अचानक एकने उसे देखा। फिर चुपचाप खड़ी फसलपर हवाका झोंका जैसे बालियोंको आलोडित करता है वैसे ही सारे मूक जीव मुख उठाकर उसकी ओर देखने लगे। सब उसकी ओर बढ़े और दयनीय चेष्टाएं करते हुए उसे छूने लगे। कोई उसका वस्त्र पकड़ता, कोई उसका बाल सहलाता और कोई सिर्फ उसकी सांसका अनुभव करता था। छोटे-छोटे बालक और सुकोमल कन्याएं आकर उसके सामने बैठ गयीं और बड़ी-बड़ी करुण आंखें उठाकर रुरुकी आंखोंमें देखने लगीं। रुरुका दिल शोकके इस अतिरेकसे टूटने-टूटनेको हो रहा था। हृदय आंसू बनकर उमड़ चला। जीवित मनुष्यके लिये मृत जीवोंकी यह वेदना और प्रेम वह समझ सकता था। उसने उन विचित्र सुन्दर मुखों-पर दृष्टि घुमायी पर जिसे वह ढूँढ़ता था वह यहां भी न थी। स्थिर हवामें पीला मुख उठाकर मौन वातावरणमें रुरु बोला, "ओह दुखी जीवो! तुम एक बार कितने सुखी थे। अगर पुरानी बातें भूल सको तो कितना अच्छा हो। तुम्हारे दुखसे मेरी आत्मा भी दुखी है। बताओ तुम्हारे बीचमें मेरी प्रियतमा है? ओ मुरझाये सुन्दर जीव! तुम उसे झट पहचान लोगे। मृत आत्माओं वह सबसे सुन्दर होगी; उसकी माधुरी-से तुम उसे पहचान जाओगे।" बोलते-बोलते रुरुका स्वर रुंध गया। आंसू बह चले। वे लोग चुपचाप उसको निहारते रहे। रुरु बुदबुदाया, "आह क्या पागलपन है। अगर वह होती तो क्या देखते ही मेरी ओर दौड़ी नहीं आती और मेरे वक्षपर सिर रखकर उन्हीं जानी पहचानी आंखोंसे मेरे दुखको समझनेका प्रयास न करती? वह होती तो

कितना आनन्द होता। उसके होठ मौन रहते फिर भी उसका तीव्र प्रेम मूक भाषामें सब कुछ कह जाता। हम एक दूसरेको समझ जाते। और हाथमें हाथ लेकर यहां आरामसे चलते।" इतना कहते-कहते वह अकाल मृतकोंको छोड़ आगे बढ़ा। वाणी-विहीन असहाय मौनमें वे अवश लिपटती दृष्टिसे उसे निहारते साथ-साथ चले और एक भयावह विचित्र इमारतके सामने आ खड़े हुए। उसके चारों ओर बड़े-बड़े स्तम्भ थे। बादल-सी स्याह छत सारे महलपर छायी हुई थी। दरवाजेपर अजीब तरहके सशस्त्र प्राणी पहरा दे रहे थे। उनके डरसे दुखी मोहक मृतक पीछे हट गये और अनिच्छासे शब्दहीन शोक-जगत्में वापिस चले गये। रुरु बेधड़क द्वारतक चलता गया। पहरेदारोंने धनुषबाण सम्हाले। झट रुरुने प्रेमके अग्नि-पुष्पको आगे बढ़ाया। कठोर मुखवाले पहरेदारोंने उसे आगे बढ़ने दिया। रुरुने एक धुँधला-सा असीम सभा-मंडप देखा। चारों ओर मौनका साम्राज्य था। अंधेरी सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते जैसे रोशनी-की झलक आ जाती है वैसे ही ऊपरकी ओर थोड़ी-थोड़ी चमक दिखायी दे रही थी। वहां एक सिंहासन-सा दीखता था और रत्न-खचित तोरण झलक रहे थे। उसके चारों ओर कुंडलियां मारकर या लहराते हुए बड़े-बड़े सर्पराज थे। नागराज जल्कारू, तक्षक, विराट्-देह वासुकी तथा अग्नि उगलते करकोटकके साथ अनेक जहरीले सांप लेटे हुए थे। सिंहासनके नीचे भयंकर सौन्दर्यसे भयावह कुंडलियां मारे विचित्र महा-पद्म सर्पराज यमराजके सिंहासनको फनपर उठाये हुए था। अनेक नाम और प्रकृति वाले, महान् यमराज करुणामयी पर घातक दृष्टिसे देख रहे थे। पवित्र तथा बलवान, यमलोकके अवसादपूर्ण और रहस्यमय स्वामी, पुराने नियमोंको अटूट रखनेवाले धर्म राज, सब चीजोंको खतम करनेवाले कृतांत जो अन्तमें स्वयं भी खतम हो जायेंगे, यही थे। इधर-उधर चार आंखोंवाले कुत्ते पंजोंपर सिर रखकर लेटे थे। उनकी चारों आंखें पहरा देती रहती थी।

क्षीण प्रकाशमें देवत्व रूपी सर्पराज और कालरूपी, ठंडी, असाध्य मौत उसके सामने आते गये। सिंहासनके पास आकर रुरुने हाथ जोड़े। हवाके झोंकेसे लहराते चित्रमय परदेसे सारे आकार लहराये। एक विषण्ण वाणी बोली, "यमलोकमें सांस लेनेवाला यह मनुष्य कौन है? नरककी मृत माधुरी को अपने जीवन्त सौन्दर्यसे क्षुब्ध करनेवाला यह मनुज कौनसी आध्यात्मिक या अन्य शक्तिसे यहां आया है?" एक दूसरी पास ही की आवाजने उत्तर दिया, "वह देव और असुरकी संतान है। यह स्वर्गीय मुख एक अप्सरा और ऋषि च्यवनके आलिंगनसे उतरा है, भृगु-पुत्र च्यवन पुलोमा राक्षसीसे जन्मा था। भृगुको जानते हो, वह ब्रह्माका पुत्र था। प्रेमके देवने उसे विरह-से खिलता यह अग्नि पुष्प दिया है इसलिये यमलोककी हवा उसे शीतके मारे जड़ न

कर सकी, पातालकी नदी उसे पाषाण न बना सकी।" प्रेमका नाम सुनते ही सारा यमलोक कांप उठा। यमराजका सिंहासन प्रदोषकेसे अंधेरेमें छिप गया। सारे सर्प-राज दर्दसे फूत्कार उठे, कुत्तोंने अपने विराट् सिर ऊपर उठा लिये। यमराज बोले, "महान् ऊष्मा भरे प्रेमको इस ठंडे वातावरणमें क्या चाहिये ?"

"निर्मोही सृष्टियां प्रेमकी हवा लगते ही गड़बड़ा जाती हैं। वह जहां जाता है वहां यमके नियम तोड़ता है किन्तु नरकमें उसके प्रतिनिधि आ जा नहीं सकते। उसका अधिकार नरकतक नहीं फैलता। इस युवक विद्रोही को मेरी यह दुनिया रोके रहेगी। क्या यहां भी वह गड़बड़ करना चाहता है ? अपने अवारा सुखको यहां भी लाना चाहता है ?" फिरसे उसी आवाजने उत्तर दिया, "स्वर्गकी अप्सरा मेनका एक दिन पृथ्वीपर उतरकर लता मंडपमें आनन्दसे मस्त खेल रही थी। गांधर्व-राजके सह-वाससे पृथ्वीके सुखोंमें अपना अमरत्व भूलकर उसने एक कलीको जन्म दिया। रुरुने उस कलीको पाया परन्तु तेरे फनवाले सर्पने उसे बहुत जल्दी छीन लिया। उसी कली-की खोजमें प्रेमदेवसे रक्षित इस दुःसह लोकमें वह आया है। सारा यमलोक उसकी ओर झुककर चिल्लाया, "हा मर्त्य, ओ बेचारे पथभ्रष्ट ! बलिदान ही सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। स्वर्गके या नरकके नियम उसके आगे कुछ नहीं कर सकते। तेरी मृत प्रियाको मैं लौटा दूंगा। लेकिन मानव फिर एक बार सोच ले। देवोंने मनुष्य-को वृद्धावस्था या आयुष्य यूँ ही फेंक देनेके लिये नहीं दिया है। आयुष्य एक बेकार निकम्मी वस्तु नहीं है। बड़ी आयुतक रहकर मनुष्य शान्ति पाता है; गौरव अपनाता और उसीसे परम प्रभुकी ओरका कठिन आरोहण कम मुश्किल हो सकता है। इसी-लिये काल यौवनके सौंदर्य और वैभवको पीटता है। उसके जोशीले अद्भुत प्राणिक रूपको हरता है ताकि पार्थिव मानव समझ सके कि उसका सच्चा स्वरूप आत्मा है। उसकी चिरंजीव आत्मा इस चंचलतामें लीला करनेके लिये आती है। मृत्यु उसका अन्त नहीं है। मांके वात्सल्यपूर्ण हाथ उसका जीवन शुरू नहीं करते। वह अजन्म आत्मा अनजाने अवकाशमें रहती है। विकसित होती हुई आत्माके साथ शरीरका महत्व कम होता जाता है। उसकी सीमाओंसे बाहर आकर जीवनके छोटे-मोटे सुख अदृश्य हो जाते हैं। उनका स्थान परम शन्ति ले लेती है। यौवन, पौरुष, बढ़ती आयु और बुढ़ापा इन चार ऋतुओंमेंसे आत्मा गुजरती है। यौवन आतुरतासे आशा, आनन्द और स्वप्नोंकी ओर झुकता है। पौरुष आवेगोंको गहरा रंग देता है, गंभीर विचारों और श्रमको समझता है। वानप्रस्थ-सी बढ़ती आयु इन सबको इकट्ठा करने और उनपर ध्यान करनेकी आयु है। मनुष्य जैसे ऊंची पहाड़ीपर चढ़कर नीचे फैले खेत, खलिहान और मानव समाजको देखता है वैसे ही मनुष्य तटस्थ भावसे जिस समाजमें

वह हंसा, खेला, राग-अनुरागसे जीवनके अनेक पहलू जान सका उस समाजको देख सकता है। अन्तमें सर्वोत्तम आयु आती है जब नील गगन पास आता जाता है। इस वरदानको त्याग देगा? किसलिये? कुछ वर्ष, हां, केवल इने गिने —— वर्षोंके लिये उसे सूर्यके प्रकाशमें वापिस लानेके लिये जो अन्तमें चली ही जायेगी। आह ऋषि पुत्र! रुक जा! देख, मैं नरकका पंजा उठाकर तुझे अपनी सुन्दर सुहावनी जिन्दगीमें तारों भरे आकाश तले वापिस भेजे देता हूँ या फिर अपनी जिन्दगीके सफल वर्ष तू मुझे समर्पण कर तभी तेरी कली-सी प्रिया फिरसे मुस्कुरायेगी।" परन्तु दुश्मन-की आवाजकी नाईं एक छाया बोल उठी, "यह जिस गरिमाका त्याग कर रहा है वह दिखा दो।" अग्निसे दहकते तोरणपर मूर्तियोंका जलूस दिखायी दिया। स्वर्ग या पृथ्वीसे भी बढ़कर सुन्दर स्थापत्यके नमूने चलते फिरते दिख रहे थे। ऐसी सुन्दर सुडौल मूर्तियां न ऐथेन्सके एक्रोपोलीसमें हैं, न फिडियाकी कुमारी माता मरियमकी मूर्तियोंमें हैं। बौद्ध चैत्य या ओडिसाके ऊंची उठती अभीप्साकेसे मन्दिर जहां सेना-पति, और नर्तकी, ज्ञानी और राजा महाराजा, नगर प्रवेश करते हुए विजयी राजा और दैनिक जीवनके दृश्य स्वप्न-लोकसे अंकित थे। भुवनोंके स्वामीके भवनसे भुव-नेश्वरको भी हरानेवाले सुन्दर दृश्य रुरुके भावी जीवनके परदे पर नाच रहे थे। इनके बीच रुरुने अपने भावी रूपको देखा —— एक दिव्य आभायुक्त मुख —— एक ऋषि जो अनन्त तत्वोंसे परिचित है। उसने स्वयंको कभी पहाड़ोंपर, कभी छंदमय झरनों-के पास —— ऐसे स्थानोंपर देखा जहां असीमके साथ मनुष्य भी असीम बनता है। जैसे पुराने वृक्षकी छायामें छोटे-छोटे पौधे पलते हैं वैसे ही अपने चारों ओर उसने राजोचित और उत्साही मनुष्य देखे। महान् राजा जिन्हें काल भुला नहीं पाता, गहन गंभीर विचारोंके स्वामी, ज्ञानी पुरुष, कविवृन्द जिनके होठोंसे तत्त्वज्ञानके बीज रूपी काव्य स्फुरते थे, इन सब महान् पुरुषोंका समाज उसकी पूजा करता था। अन्तमें उसने सारी सृष्टिको सौंदर्यमें डूबते देखा और आश्चर्यमूढ़ हो उसने उस अद्‌भुत मुखकी ऊषा भी देखी। पागल-सा वह आगे बढ़ा फिर थककर पीछे हट गया। उसके दिमागमें आकाशमें उड़ते पक्षीकी तरह सारे दृश्य उड़ते चले गये। उसनें मनुष्यके दुखकी आहोंके प्रवाहको सुना। अचानक रोषमें आकर उसने अपनी आत्मासे आधी जिन्दगी फेंक दी और बिजली-सा गिर पड़ा। विजय-गर्वके साथ छाया चली गयी, घना अंध-कार बढ़ गया। सिंहासनके नग चमकते रहे, सर्पराजकी आंखें मुँद-सी गयीं। अचानक एक सुगन्ध फैल गयी, नरक आनन्दोल्लाससे रोमांचित हो उठा। दुनिया-को डराती हुई क्रुद्ध और विजित छाया निर्बल हो चली। समस्त पृथ्वीका दमन करने-वाले यमराज खिसियाकर निस्तेज होते गये। रुरुकी थकी आत्माने स्वर सुने, "उठ

बैठ। द्वंद्व युद्ध खत्म हो चुका है। आगेकी भीषणता अब इतनी कठिन न रहेगी। क्योंकि उसे सहनेके लिये तू अकेला न होगा। थककर चूर हुए रुरुके प्राणोंमें फिरसे जीवन उछल पड़ा। मृत्युके दरबारको छोड़कर वह आगे चला। बारह बार उसने दुःसह वैतरणीको पार किया, बारह बार नरकका सामना किया और उस बृहद् नद-को अंधेरे कूपमें गिरते देखा। उस कूपमें रात्रिसे भी अकल्पनीय गहन अन्धकार था। रुरुने वहां ऐसी यातनाएं देखीं कि उन्हें देखना भी आंखोंको अपवित्र करना था। मानव प्रेत अनदेखे, अनसुने कष्ट सहते थे। वहां आसुरी वेदनामें कांपते और मूक प्राणीकी तरह चुपचाप असह्य दर्दको सहते मूक प्रेतोंके झुँड थे। मूर्तियोंमें व्यक्त किये हुए अमानुषिक विचारसे उन प्रेतोंके शरीर विचित्र भंगिमा लिये सिहर रहे थे। एक हिंसक और लौह मौन इस सृष्टिको जकड़े हुए था। उन प्रेतोंको अनन्त दर्दकी चीख-पुकारका सहारा भी न था। वे न छूटनेका प्रयास करते थे, न सांस लेते थे। जहां गंगा मौतकी तलैया बनकर अपनी यात्रा खतम करती थी उस अन्तिम नरकमें रुरुकी त्रस्त आंखोंने प्रियाको देखा। मुरझायी हुई, पीली, निस्तेज प्रियंवदा उस पार्थिव मूर्तिसे कितनी भिन्न थी। कहां वह लालित्य, वह पार्थिव ऊष्मा। प्रेमसे लजाते उसके कपो-लोंपर गुलाब खिल उठते थे और चमेलीका धवल रंग भी निखर आता था। यहां वह मूक थी और मुरझायी कली-सी निस्तेज खड़ी थी। कड़कते बादलसे काले आक्रोश-भरे आकाश उसपर पहरा दे रहे थे। प्रेमदेवके आशीर्वादसे निर्भीक बना हुआ रुरु उनपर टूट पड़ा। उसके स्पर्शसे ही घबराकर वे झूठे भयकी तरह लुप्त हो गये। रोमांचित हो रुरुने प्रियाको पुनीत प्यारे नामसे पुकारा और उसपर झुक गया। रुरुके स्पर्शसे नरकके भयानक बन्धन छूट गये, सारे दुःख दर्द दुःस्वप्नसे अदृश्य हो गये। जैसे मनुष्य पहाड़ीपरसे कुहरेको भागते देखता है वैसे ही रुरुके मानस पटलसे नरकका असह्य विराट् जगत् भागता गया। अति दुर्गम विजयोल्लाससे उसकी इंद्रियां वशमें न रहीं। नींद-सी बेहोशीने सुकुमार हाथोंसे उसे अपनी ओर खींच लिया।

रुरुने जागकर दूर कूकती कोयलकी कूक सुनी। चारों ओर सूर्यका प्रकाश था, छोटी-छोटी चीजें सन्तोषकी सांस ले रही थी। पृथ्वीका स्पर्श, शरीरको शांति देने-वाले रोजके दृश्यः इन सबसे रुरुका शरीर लहरोंपर नाचते कमल-सा संतुष्ट लेटा था। उसने सिर उठाकर हरे घास-पात और हरे भरे वृक्षराजोंको देखा। पास ही छिपा एक टिड्डा जोर-जोरसे एक ही स्वरमें चिल्ला रहा था। रोम-रोमसे पुलसिकत रुरुने पास लेटी प्रियंवदाको देखा। ओह ,मौतके पंजेसे मुक्त उसका शरीर कितना सजीव, कितना प्यारा था। घासपर लेटा शरीर कितना श्वेतवर्ण था। उसके कुंतलकेश अस्तव्यस्त हो गये थे। फिरसे ओठोंकें गुलाब खिले और मुस्करा उठे। कपोलोंपर

माधुरी लौट आयी। सूर्यके सुनहरे प्रकाशके जालमें बंधे उस चमेलीसे सुकुमार शरीर-को वह आत्म-विस्मृत होकर देखता रहा। कुछ डरते-डरते छूकर विश्वास कर लिया कि वह सचमुच है। रुरुने धीरेसे उसके बन्द आंखोंको चूम लिया। छोटी-सी सिसकी लेकर उसने बड़ी-बड़ी पार्थिव आंखें खोली और रुरुको देखा। छोटे-छोटे हाथ ऊपर उठाकर उससे लिपट गयी। दोनोंकी आत्मा एक हो गयी। एक ही साथ रोती और हंसती प्रियंवदा रुरुसे लिपटकर बोली, "प्यारे! यह हरी-भरी सृष्टि। यह सुहावना सूर्य!" वह चुप हो गयी। अपने बच्चोंकी खुशीसे प्रसन्न पृथ्वी आनन्दमग्न होकर गाती-गाती घूमती गयी। कोयलकी कूक सृष्टिके उस सुदूर प्रभातमें आनन्द घोलती हुई गूँजती रही।

बाजी प्रभु

बाजी प्रभु

दक्खिनकी दोपहरी धरतीपर जुल्म ढा रही थी। पहाड़ियोंका आकार लूमें कांप-कांप उठता था और प्यासे खेत झुलसती गरमीमें सूखे नालोंपर खड़े-खड़े पानीको तरसते थे। प्रकृति और मनुष्य भड़कते कसैले पीतवर्ण नभकी जेलसे भागनेकी कोशिश में थे। गरमी न सिर्फ किसानों और चरवाहोंपर भार बनके लदी थी बल्कि साथ ही सचमचमाते भाले लिये, घोड़ोंको आगे फेंकती, पीछे हटाती और चक्करमें दौड़ाती मुगल सेनापर भी गजब ढा रही थी। फिर भी वे उत्साहसे बढ़ते गये। उनका मन न चिलचिलाती धूपकी परवाह करता था, न धूलके बवंडरकी गलाघोंटसे घबराता था, न चोटकी तरवाह थी, न घावोंका ख्याल। एक ही धुन सिरपर सवार थी, "आखिर अन्त आ ही गया, हमने पहाड़ी चीतेकी उसकी मांदमें कैद कर दिया, विद्रोही दलको मौतके घाट उतार दिया।" दूसरी ओर क्या था? चारों ओरसे घिरा, थका, प्यासा, खूनसे धरती मांका आंचल भिगोता शिवाजीका दल रायगढ़की ओर लड़खड़ाता चला जा रहा था। उसकी प्रिय पहाड़ियां आज मृत्युपाश लिये खड़ी थीं। ऊपर नीला नभ विडम्बनाओंपर मुस्करा रहा था। शायद उन्होंने देशके लिये व्यर्थ ही प्रयास किया। आज वे ईश्वर और मानव दोनोंके दुत्कार हुए थे। सूर्योदयसे पहले भोंसलेने एक ऊंचा दुर्ग हथियाया था। उसे आशा थी कि नीचे फैली विशाल भूमि उसीके पंजेमें आ जायगी, पर उत्तर और पूर्वसे उफनती हुई मुगल सेना आ धमकी। हजारों तलवारें चमकीं, टापोंकी ध्वनिसे पहाड़ियां चौंक उठीं और सैकड़ों बंदूकें भूँकने लगीं। इन्होंने उस वीरको पीछे धकेला और दृढ़ मराठोंने चुपचाप पहाड़ीमें वापिस जाना शुरू किया। कभी-कभी उनकी पिछली पंक्ति नारे लगाती हुई शत्रुके दलोंपर कूद पड़ती थी, पहाड़ीमें छिपकर उसे कुछ देर रोक लेती थी। सारे मैदानमें जहां-जहां लड़ाई जोरोंपर होती, वहीं बाजीप्रभु मुगल सेनाकी उत्ताल तरंगोंका सामना चट्टानकी तरह करनेके लिये पहुँच जाते थे।

वे रायगढ़के रास्तेपर बाघके गले-सी क्रूर गहरी घाटीतक आ पहुँचे। पहाड़ियां करीब आते-आते तंग हो चली थीं और उनकी ऊंची चट्टाने ढलानको डरा देती थीं। भोंसले वहीं रुके। उनकी गीध-दृष्टि घाटी, चट्टान और मैदानमें तैरती हुई सांवले युवक सूर्याजी मालसुरेपर जा टिकी। तेजस्वी दीप्त नेत्रोंवाला वह युवक

घुड़सवार हर्षविभोर होकर उनके पास आया। उसका दिल बल्लियों उछलने लगा। उसका दिल पिछली पंक्तिमें जानेको मचल रहा था जहां हजारों तलवारोंकी हंसी-में मौतका गीत सुनायी देता था। नेताने कुछ सोचते हुए कहा, "सूर्याजी ! पिछली पंक्तिमेंसे बाजीप्रभुको बुला लाइये।" हुकुम पाते ही सूर्याजीके घोड़ेकी टापें घाटी-के नीचे भागी चली गयीं। वह तुरन्त टीलेपर जा पहुँचा जहां सेनाका लौह-हृदय टूट रहा था। फिर भी वह उग्र शान्तिमें लड़ती और मरती जाती थी। प्रभुके पास जाकर उसने कहा, "बाजी, तुझे सेनापति बुला रहे हैं।" एक शब्द बोले बिना बाजीने अपने घोड़ेको एड़ लगायी और चट्टानपर शिवाजीके सामने चुपचाप खड़ा हो गया। "बाजी, तुम असंख्य बार मेरे और दुश्मनके बीच एक जीवित ढालकी तरह खड़े होकर लड़े हो, किन्तु आज तुम एक मनुष्यके जीवनको नहीं, अपने देशके भविष्य-को बचाओ ? यह घाटी देखते हो ? संकरी, क्रूर, बाघके गले-सी चमचमाती घाटी ! उसके पथरीले पंजे शिकारको पकड़कर निगलनेके लिये तड़प रहे हैं। यह ऊंची चट्टान हमलेको रोक लेगी और उसकी दोनों भुजाएं चढ़नेवालेको नीचे धकेल देंगी। यहीं-पर मुट्ठीभर पुरुष-व्याघ्र एक पूरी सेनाको रोक सकते हैं। बाजी, मैं रायगढ़ जाकर बस दो घंटोंमें लौट रहा हूँ, तुम देख ही रहे हो कि हम कितने कम हैं। हमारी सेना अफगानिस्तानकी बर्फकी तरह पिघल-पिघलकर खूनके गड्ढे भरती जा रही है।" बाजी सोच ही रहे थे कि नेताके पीछे लौहपुरुष तानाजी मालसुरे तलवारकी तरह कौंध उठा, इतने छोटेसे कामके लिये प्रभु ! मुझे बस पांच सौ सैनिक दे दें। मैं आप-की वापिसीतक घाटीपर डटा रहूँगा।" शिवाजी चुप रहे। उनकी विशाल, शांत दृष्टि बाजी प्रभुपर टिकी रही। तब क्रोधसे पागल मालसुरे भवें टेढ़ी करते हुए बोले, "वीर ! अब भी क्या सोच रहे हो ? तुम जैसे पुरुषोत्तमको शायद हमारे जैसी छुट-पुट तलवारोंकी जरूरत नहीं। सबेरेसे शामतक तुम अकेले ही आगरेसे राजस्थान और काबुलतक शत्रुको रोके रहोगे, क्यों ?" बाजीने उत्तर दिया, "तानाजी माल-सुरे ! पुरुषका पौरुष हाड़-पंजरमें नहीं है। सर्व-शक्तिमान् हमारे अन्दर बैठा शासन करता है। वही नरपुंगव ब्राह्मण, शूद्र और कुत्तेतकमें समान रूपसे विराजमान है और अगर चाहे तो उस समानताको दिखा भी सकता है। वही हम सबपर शासन करता है। महानता मनुष्यकी नहीं होती। बाजी या मालसुरे सिर्फ नाम हैं, एक चोला है जिसके अन्दर वह सर्वशक्तिमान् छिपा है। हमारी सारी शक्ति भवानीकी ही है। वह चाहे तो इस एक हाथको ही तूफान और आंधीसे भी भयंकर बना सकती है। मुझे बस पचास सैनिक चाहियें।"

मालसुरे प्रसन्न होकर बोले, "बाजी ! वापस आकर मैं तेरे लिये किसीने न

देखी हो ऐसी चिता खड़ी करूंगा। सारा दक्षिण उसके आलोकसे प्रकाशित हो उठेगा। लोग कहेंगे, "प्रभु बाजी जल उठे हैं।" मुस्कुराते हुए बाजीने कहा, "तू मुझे जला न पायेगा। इस पांच हाथकी कायाको सियार खायें या चिताकी ज्वालाएं भस्म करें इसकी दूसरे भले चिन्ता करें, पर बाजी को उसकी परवाह नहीं।" दीप्त शांत दृष्टि-से देखते हुए शिवाजी बोले, "मित्र! इहलीला समाप्त करके हम दोनों मांकी गोद-में आवश्य मिलेंगे।" यह कहते हुए अपने उन्नत हीरे-मोतीसे सुशोभित राजचिह्न-को लेकर उन्होंने बाजीके सिरपर रखा और प्रिय मित्रको एक बार बाहुओंमें कसके सेनासहित टांपोंकी ध्वनिमें विलीन हो गये। अबतक मुगलवाहिनी आ चुकी थी और बाजीका सैन्य स्तब्ध घाटीमें चुपचाप प्रतीक्षा कर रहा था। नियतिके विरुद्ध लड़नेवाले मराठोंके पास न समय था न हथियार। मुसलमान वाहिनी थकी-मांदी थी फिर भी इक्के-दुक्के सैनिकोकी दीवारको तोड़नेके लिये आगे बढ़ी। एक साथ बंदूके दगने लगी। एक-एक कदम करके शत्रु निकट आते गये। समुद्रकी तरंगोंकी भांति वे ऊपर उठे, रुके और उन्हींकी तरह थककर पीछे जा गिरे। गर्दके बादलके पीछे उस भयंकर घाटीकी चोटीपर घायल और मृत शरीरोंके ढेर लगने लगे। शत्रुने मराठा अवरोधकी परवाह नहीं की। उत्तरसे तरंगपर तरंग आती गयी। राज-पूत, मुगल, पठान एक काला जबरदस्त हुजूम बनाकर चिल्लाते, आग उगलते आ धमके। गोलियां पहाड़ीपर बरसने लगीं, पर बाजीकी दृढ़ मूक सेना पेड़ों और पहाड़ि-योंमें छिपी खड़ी रही। धीरे-धीरे आततायियोंका सारा जोश पेड़ों-पत्थयोंसे टकरा-टकराकर ठंडा पड़ गया। संकरी घाटीतक आकर वे असमंजसमें पड़ गये। अचानक बंदूकें गरज उठीं, गोलियां उड़ने लगीं। इस हमलेसे बहुतसे पीछे हटे और कई क्रोध-में भरकर आगे बढ़ गये। इस तरह पीछे हटने और आगे बढ़नेवालोंके बीच दुविधामें पड़े हुए सेनानियोंको गोलियोंने चुन-चुनकर गिराना शुरू किया। पेड़ोंपर, पहाड़ि-पर मृत शरीर गिरते गये। पहला हमला बेकार गया। सेनाके बचे हुए नेता परामर्श करके फिर आगे बढ़े। इस बार प्यादे दृढ़ और मजबूत कदम बढ़ाते आये, उनके पीछे भरपूर, कदावर पठानोंकी पंक्ति, उनके नीचे मजबूत राजपूत सेना और उनके बाद आगरेके विख्यात घुड़सवार आये। अब बाजी बोले, "यही पहला हमला है। अभी-तक तो मौतकी बौछार ही आयी थी। शिवाजीकी चुनी हुई भवानीकी तलवारो! आकाशमें देवता तुम्हारा स्वागत करनेके लिये खड़े हैं। हम मरेंगे तो जरूर पर देवता-ओंका आशीर्वाद लेकर, ताकि हमारा देश स्वतन्त्र रह सके।" उनके बोलते-बोलते मुगल सेना घाटीमें आ पहुँची और सावधानीसे आगे बढ़ने लगी। लेकिन उस साव-धानीसे कुछ लाभ न हुआ। जो जहां बढ़ा वहीं ढेर हो गया। फिर भी सेना आगे

बढ़ती गयी। बड़े-बड़े वीर मरकर या घायल होकर गिरते गये। बहादुरोंकी जानपर खेलकर सेना आगे बढ़ती गयी। धीरे-धीरे मृत शरीरोंने ही घाटीको अपनाया और जीवित लोग लड़ते और टूटते गये। अब मौतके साथी राजपूतोंने शाही कदम बढ़ाते हुए बड़े दुःसाहससे काम लिया। राजस्थानी सपूतोंने आग उगलती भूमिपर पांव रखा। मर्त्य शरीरमें अमर वीरता भरकर वे तलवार हाथमें लिये ललकारते हुए आगे बढ़ने लगे। उन्होंने न तो गोलियोंकी तरवाह की, न उनका जवाब देनेकी सोची, बस गोलियोंकी वर्षामें भी आगे बढ़ते गये और निचली चट्टानको हथिया लिया। वे आगरेकी प्रचंड आंधीकी तरह आये। उनपर आगके परदेमेंसे गोलियां बरसने लगीं। एक जबरदस्त धक्का खाकर बहुतसे लोग गिर पड़े। और गिरते-गिरते चढ़नेवालों-को भी ले गिरे। आगे बढ़ना असम्भव था और पीछे हटनेमें बदनामी थी और मौत तो दोनों ओर जीभ लपलपा रही थी। एक क्षणके लिये राजपूत ठिठक गये। अस-मंजसमें पड़े लोगोंमें हठात् राठोरोंके सरदार तलवार उठाये आगे आये। गोलियां कुछ न कर सकीं। उनकी हिम्मतने कवचका काम दिया। मरतोंको पीछे फेंकती हुई, घायलोंको धकेलती हुई सारी सेना आगे बढ़ी। बाजी अपने पचास तलवारियों-के साथ आगे निकल आये। उनपर तीन हमले हुए और उन्होंने तीनों बार शत्रुको पीछे ठेल दिया। अब राठोर सरदारने सीधे बाजीपर हमला किया, सारी सेना उसके पीछे आती गयी। चारों ओरसे मराठा हथियार बज उठे। एक हमला नाकाम रहा, इतनेमें पीछेसे दूसरी लहर आ गयी। लड़ाई चलती रही। दोनों सेनाएं नजदीक आतीं गयीं। तलवारे तलवारोंसे टकरातीं और आसपास चिनगारियां नाच उठतीं। नारोंसे घाटी गूँज उठी। बन्दूकका धुँआं अंधेरा करता जा रहा था। राजपूत और मराठा कराहोंसे घाटी भर गयी। इस जीवन और मौतके युद्धको देखती हुई आगरेकी वाहिनी चुपचाप अन्तकी प्रतीक्षामें खड़ी रही। युद्ध चलता गया। बाजीने राठोर सरदारकी ओर बढ़ना शुरू किया। जैसे बढ़ती हुई नावके सामने लहरें फट जाती हैं वैसे ही बाजीके सामनेसे लोग हट गये। उनकी तलवार चमकी और असावधान राजपूतके सिरको धड़से अलग कर दिया। भव्य चिनार वृक्षकी भांति वह मराठा जमीनको जकड़ता हुआ गिर पड़ा। आश्चर्यचकित आगरावाहिनीने देखा, निश्चित विजय पराजयमे बदली जा रही है। अब पठान सेना आगे बढ़ी। सरदार चिल्लाये, "पहाड़ी चूहोंको खतम कर दो। थककर चूर मराठा सेना खड़ी-खड़ी भी लड़खड़ा रही है। चारों ओरसे घेर लो। फिर रायगढ़ जाकर शिवाजीको समझ लेंगे।" इस बीच मराठे भी चुप न थे। टेकड़ियों और पेड़ोंमें छिपकर वे एक-एक पगके लिये एड़ी-चोटीका जोर लगाये उत्तरकी दीवारके पीछे जा छिपे। भागी आती पठान

सेनापर मोन बोल उठा। मौत दायें-बायें कोलाहल मचा उठी। तूफानमें गिरते पेड़ोंकी तरह लम्बे-लम्बे पठान धराशायी होते गये। भयग्रस्त सेना तितर-बितर होने लगी। कोई चिल्लाया, 'आगे बढ़ो,' कोई बोला, 'पीछे हटो', इस भागदौड़में हमला छितरा गया। गोलियोंने भागनेवालोंका पीछा किया और आगे बढ़नेवालों-का स्वागत! इस भयंकर कांडको देखकर सरदार सोचमें पड़ गये कि घाटीको छोड़ चलें या उसकी पूरी कीमत चुकायें।

विचलित सेनानायक प्रभुके पास आया, "प्रभु, गोलियां खतम हो चलीं, बारूद कबकी चुक गयी।" प्रभुने मुड़कर अपने गिरे हुए साथियोंको देखा। मराठे पहाड़ी-के पीछे थे इसलिये जनहानि कम ही हुई थी जब कि शत्रुके सैकड़ों शव घाटीमें बिछ गये थे। डूबते हुए सूरजकी आगको देखते हुए प्रभु चिल्लाये, "भाइयो! अपनी आत्माको फौलाद बना लो। जबतक शिवाजी विजयको लिये वापिस न आयें हमें भवानीकी सहायतासे पराजयको दूर रखना है।" सब निस्तब्ध खड़े रहे, सारा वाता-वरण गंभीर मौनसे भर गया। चारों ओर पहाड़ियां थीं। जमीन मुर्दोंसे भरी हुई थी। आकाशमें पक्षी मंडरा रहे थे। हवा हौले-हौले बह रही थी। कभी एकाध सिसकी सुनायी देती थी। बाजीके सैनिक उनकी ओर ताक रहे थे और बाजी डूबते सूरजका ध्यान कर रहे थे। उधर सूरजने क्षितिजको छुआ और इधर हलचल मच गयी। सबने सावधान होकर, तलवारें कसकर पकड़ लीं। इस बार न राजपूत आये, न पठान — कलाबत्तूनकी वरदीसे लैस आगरेकी प्रख्यात सेना आगे बढ़ी। उसे विश्वास था कि बढ़ते ही अंधाधुंध गोलियां बरसेंगी पर यह क्या? चारों ओर नि-स्तब्धता थी। मराठों की नयी चालके भयसे वे ठिठक गये। फिर वातावरणके मौन-को सुनकर वे उत्साहित हो उठे और नारोंका जाल फैलाते हुए आगे बढ़ने लगे, मैदान पार किया और आश्चर्यचकित, वे इधर-उधर ताकते हुए पहाड़ीपर चढ़ने लगे। छोटी-छोटी झाड़ियोंके सहारे वे ऊपर उठने लगे। अदृश्य तलवारोंने चुपके-चुपके उनकी उंगलियां तराश लीं और उनके सीनोंको ढूंढ़ लिया। सेना बिना रुके आगे बढ़ती गयी। और आखिर चोटीपर जा पहुँची। भीषण परन्तु नीरव मारकाट चलती रही और भव्य शरीरोंका किला बनता गया। आगरेके असंख्य शाही सैनिकों-के सामने कुछ मराठा सैनिक युद्ध-कौशल और आत्मशक्तिके सहारे लड़ते रहे। शत्रु-सेनाको दिनमें ही तारे दीखने लगे। हठात् प्रभुके शरीरमें देवीने प्रवेश किया और क्षुधार्त वनराजकी हुँकार करके वे आगे लपके। देखते-देखते उनका शरीर बढ़ने लगा और भीषण वेगसे शत्रुदलपर टूट पड़ा। बादलोंमें खेलती बिजलीकी नाईं उनकी तलवार कौंध जाती थी और सामने डटे शरीरोंसे सिरोंको अलग करती जाती थी।

उनके दाएं बाएं मराठा सैनिक वार झेलते और सिरोंकी फसल काटते बढ़ते जाते थे। अचानक उफनती नदीकी तरह हमलावरोंका उफान भी उतर गया और आगरेकी सेना जहां थी वहीं पहुँच गयी। शोणितसे लाल धरती सोने, शव, जवाहर और चमचमाते रेशमी कपड़ोंसे ढके शवोंसे पट गयी। पर आगरा इतनी आसानीसे हार माननेवाला न था। उसने फिर हमला किया। प्रभुकी आत्मामें भीषण आक्रोश जाग उठा। उन्होंने इनका अन्त करनेकी ठान ली। इस समय भी एक शांत नीरवता छायी हुई थी। दिव्य आवेश उनके हृदयमें व्याप्त हो गया। उनके शरीरसे अलग होकर एक महान् तेजस्वी रूप सामने खड़ा दिखायी दिया। लहराते बालोंसे आकाशको आच्छादित करती हुई, अपराजय हाथोंमें तलवार, फूल लिये, अभय दान देती हुई और रक्तरंजित सिर लिये खड़ी थी लोहितवसना भवानी। यही भवानी चिरकालसे भारतकी रक्षा करती आयी है। देवी अदृश्य हो गयीं। ढलते सूर्यकी रोशनी चारों ओर फैली थी। उसी समय एक बरछा बाजीके कंधेमें धंसता जा रहा था थोड़ेसे मराठे एक संगीन दुर्गम चक्र बनाकर बाजीके इर्द-गिर्द हो गये। आह भरकर बाजीने कहा, "मोरो देशपांडे ! उस ओर जाकर देखो, पश्चिमसे कोई आ रहा है ? रायगढ़की भेरी सुनायी देती है क्या ? मेरा समय आ पहुँचा। चलनेसे पहले यह जान लूँ कि मेरा काम पूरा हो गया।" भवानीका जयनाद करके वह फिर शत्रुसे जूझ पड़े। उनके दायें बायें मराठे और मुगल गिरते गये, उनका शरीर खूनसे लथपथ हो गया फिर भी वह लड़ते ही चले जा रहे थे। अचानक उनके सामने आंखोंमें मौतकी छाया लिये हुए, फिर भी उल्लसित मोरोपन्त देशपांडेका घावोंसे भरा हुआ शरीर आकर खड़ा हो गया। अपनी आवाज चारों ओरके शोरसे भी ऊंची करके वह चिल्लाया "बाजी ! मैंने रायगढ़के भाले देखे हैं, मुझे उनकी भेरी सुनायी दी है", यह कहता हुआ वीर वहीं मुगल शरीरोंपर ढेर हो गया। अपलक रुद्र दृष्टिसे आग बरसाते हुए चारों ओर देखकर बाजीने अपने रक्तसने हाथसे आंखोंका खून पोंछा। पचासमेंसे सिर्फ पन्द्रह सैनिक बचे थे। चारों ओर आशापाशसे बंधी मुगल सेना खड़ी थी। नरशार्दूलने फिरसे धावा बोला, बचेखुचे साथियोंने सहारा दिया और मुगल सेनाको रास्ता देना पड़ा। किन्तु ऊपर पहुँचते-पहुँचते आठ ही बच रहे और उनमें भी कोई ऐसा न था जो लहू-लुहान न हो।

साहसी सैनिक मृत्युका वरण करनेके लिये चट्टानकी चोटीपर इकट्ठे हुए। इस ऊंचाईसे बाजीने पीछे की पहाड़ीके कगारपर घुड़सवारोंकी पंक्तिको चढ़ते हुए देखा। सरपट दौड़ते हुए घुड़सवारोंके सरदारके सिरका ताज अस्त होते सूर्यकी रोशनीमें चमक उठा। बाजीने मैदानपर सरसरी निगाह डाली और दूर, बहुत दूर उसे एक किला दिखायी दिया, वही था रायगढ़। युद्ध चलता रहा। एक-एक करके बाजीके साथी

गिरते गये। अन्तमें तीन बच रहे। हठात् बाजी अचल हो गये, और धीरे-धीरे उनका शरीर जमीनपर लुढ़क गया। आंखोंकी आग बुझ गयी, हाथ संज्ञाहीन पड़ गया। अपराजित घाटीपर बाजीका शरीर अचेतन पड़ा रहा।

बाजी प्रभुके गिरते-गिरते घाटी घोड़ोंकी टापसे गूँज उठी और उसके छोटे-से मुखसे गोलियां फिरसे बरसने लगीं। विजयोल्लाससे दक्षिणकी भेरी मत्त हो उठी। भग्नांश आगरेकी सेना पीछे हटी। दृढ़निश्चयी मराठे उनके पीछे दौड़े।सूर्याजी स्वामी रामदासके भजनकी कड़ी गाते-गाते उल्लसित हो शत्रुको काट रहे थे। और शिवाजी......वे बाजीप्रभुके निर्जीव शरीरके पास सन्नसे खड़े थे, पास ही तानाजी मालसुरे थे। तानाजी धीरेसे बोले, "हे वीर सुयशी ! तू तैंतीस द्वारोंसे स्वर्गमें प्रवेश कर रहा है। मुझे भी ऐसा सौभाग्य प्रांप्त हो। मैं भी स्वामीके लिये यश लूटता चलूँ।"

शिवाजीने मृत शरीरके ऊपर एक धुँधली, विराट् छाया देखी। उसके एक हाथमें तलवार थी, दूसरे हाथसे उसने बाजीके रक्तरंजित सिरका रत्नखचित मुकुट उठाया और धीरेसे महाराजके सिरपर रख दिया। वीरोचित बलिदानसे रंजित छाया जब चली तो शिवाजीने देखा उसके घुंघराले बालोंपर एक स्वर्णमुकुट शोभा दे रहा था।

राक्षस

राक्षस

(राक्षस —— उग्र गतिज अहंकार —— पाशविक आत्माका स्थान लेकर संसार पर प्रभुत्व पानेके लिये दावा करता है। उसके बाद बारी आती है पुनरुद्धारहीन परंतु नियंत्रित और बौद्धिक अहंकार वाले असुरकी। इस प्रकारकी हर जाति चेतनाके अपने स्तरपर भगवान्‌को अपने ही स्वरूपमें देखती है। जगज्जननी अपने भिन्न-भिन्न रूपोंसे इन्हें प्रकृतिमें संभाले रखती हैं।)

"मनुष्य जिस किसी चीजकी कामना करता है, जंगली जानवर जिन-जिन चीजोंका भोग करते हैं उन सबको, प्रताप, महानता, जीवनका आनन्द, शक्ति गर्व, विजयी शक्ति, स्त्रियोंके शरीर, पुरुषोंके प्राण, इन सबको मैं अपना राज्य मानता हूँ। अपना अधिकार प्रमाणित करनेके लिये मेरे अन्दर शक्ति है। मैं बिना कमाये किसी मुकुटकी चाह नहीं करता और अधिकारके बिना कोई प्रभुत्व नहीं चाहता। हे मनुष्यके स्रष्टा ! तू जो तपस्या चाहे करवा ले, रक्त या श्रमका उत्सर्ग, वर्षोंका आश्चर्यजनक ध्यान, तेरी वेदीपर मनुष्यों या पशुओंकी बलि, तू जो मांगे प्रस्तुत है। और अगर तेरी कृपा सोना देकर खरीदी जा सकती है तो मैं तेरी उपलब्धियोंके लिये और तेरे पुजारियोंके लिये बहुमूल्य भेंटोंकी भरमार कर सकता हूँ। मेरे अन्दर किसी भी महान् बलिदानके लिये हृदय और भुजाएं हैं। मेरे प्रचण्ड मनोभावमें आग्नेय धैर्य है। मैं आत्मसमर्पण करता हूँ। लेकिन मुझसे विनीत मौन या मानवताके रंग-से वंचित, विवर्ण, बद्ध आत्माकी मांग न कर। मुझसे कांपनेवाले हृदयकी, क्षमा करनेवाले हाथकी मांग न कर। मुझसे वह मांग जो शक्ति दे सकती है, दुर्बलता नहीं।"

"हे रुद्र ! हे शाश्वत महादेव ! तू भी भयंकर और महान् है, कोपसे भरा हुआ और साहसी है। तेरे नथुने हवामें बलिके रक्तको खोजते रहते हैं और तू बड़े क्रोध-के साथ साष्टांग प्रणत जगत्‌पर शासन करता है। हे सर्वशक्तिमान् राक्षस, मेरे ऊपर, अपने सभी राक्षसोंके अधिपति रावणपर, नजर डाल, मुझे अपने शत्रुओंपर प्रहार करनेकी आज्ञा दे। लेकिन सबसे बढ़कर मैं तेरे भक्तोंको पीड़ा दूंगा, उन्हें खदेड़कर नष्ट कर दूंगा। वे तेरे बारेमें मिथ्यापवाद फैलाते हैं और तुझे प्रेमका देवता बताते हैं, ऐसा मधुर बताते हैं जो शासन करनेमें असमर्थ है। मेरे अन्दर ज्ञान है, मैं जानता हूँ कि तू क्या है और अपने-आपको भी जानता हूँ क्योंकि मैं और तू तो एक ही हैं।"

लंकापतिने यह प्रार्थना की। स्वर्गमें बैठे मानवजातिके मित्र श्री कृष्ण मुस्कराए और बोले, "हे द्रष्टा ज्ञानी मनीषियो, तुम लोग अपने विचारोंसे मानव जातिकी सहायता करनेमें मुझे सहायता देते हो। सुनो, रावण तारोंके उस पारसे क्या चिल्ला रहा है, वह सारी धरतीको दायके रूपमें लेना चाहता है। सलाह दो क्या उसे यह वर दे दिया जाय?" और एक आवाज उठी "वह धरतीसे ब्राह्मणोंको निर्मूल कर देगा, मानव मात्रपर अपना भयानक योग आरोपित करेगा और प्रचण्ड हृदय तथा लौह भुजाओं-को सबका स्वामी और प्रभु बना देगा।"

श्री कृष्णने उत्तर दिया, "वह मेरे अन्दरसे ही निकला है और मेरा ही संकल्प पूरा करनेके लिये निकला है। उसने झूठ नहीं कहा, उसे ज्ञान प्राप्त है। वह और मैं एक हैं फिर मैं उसे कैसे मना करूं? आप लोग वेदज्ञ हैं क्या वेदोंने यह नहीं कहा है कि जो उसको जानता है वह जिस चीजकी इच्छा करेगा उसे पा लेगा?" तब अत्रि मुनिने कहा "तब उसे एक अवधितक राज कर लेने दीजिये और बादमें उसका संहार हो जाय।"

फिर सबसे अधिपतिने कहा, "हे मनीषियो, तुम मेरा आशय कुछ-कुछ जानते हो, लेकिन पूरा नहीं जानते। बहुत पहले आदेश हो चुका है कि राक्षस मनुष्योंसे बसी धरतीपर राज करेगा। वह अपने अन्दरके क्रूर पशुको ही मनुष्य मान लेता है और उसे ही नैवेद्य चढ़ाता है। अपने प्रतापी विचारों और उग्र अभीप्साओंके द्वारा वह नियंत्रण करता है, वह जातिके पिशाचको शुद्ध करता है और जब मारता है तो क्रूरता-से नहीं क्रोधमें आकर मारता है। वह कुछ समयमें वानरको संसारसे बाहर कर देता है, मनुष्य जातिको वैभव और श्रेष्ठताका अभ्यस्त बना देता है। वह प्रकृतिके पैशाचिक तत्त्व इफ्रीतको अस्वीकार कर देता है। अगर उसे अपने कालसे वंचित किया जाय तो मनुष्यकी प्रगति न हो सकेगी। लेकिन चूंकि वह अपने अन्दर मुझे देखनेकी जगह अपने आपको 'मैं' समझ लेता है और प्राण और शरीरको ही सब कुछ मान बैठता है इसलिये वह स्थायी नहीं हो सकता। इसलिये अत्रिकी सलाह स्वीकार है।"

यज्ञके आतंकमें रक्त टपकाती हुई तलवार लिये, समस्त संसार को भस्म-सी करती हुई भयंकर आंखोंवाली, कृष्ण वर्ण, दिक्‌वसना राक्षसी कालीका ज्वालाओं-मेंसे प्रादुर्भाव हुआ। उसने कहा 'वर मांग,' और सब देवता थर्रा उठे। राक्षसने चिल्लाकर कहा "सारी धरती मुझे सुखके लिये प्रदान कर और यहांके सारे देव मेरी शक्ति और गर्वके गुलाम हों।" देवीने कहा 'तथास्तु।'

रावणने पूछा "तो यह शाश्वत होगा न?" देवी गरज उठी "नहीं, न तो तू सर्वोत्तम और अन्तिम है और न मैं। मेरा स्थान लेनेके लिये आसुरी का उदय होगा

और असुर तेरी सन्तानको अपदस्थ कर देगा। तेरे विकासमें एक युग लगा है और तू एक युगतक राज्य करेगा। लेकिन मैंने तेरी एक इच्छाको अस्वीकार कर दिया है इसलिये और एक वर मांग ले।" "तो फिर मुझे यह वर दे कि जब मेरा अन्त आये तो किसी पशु, पिशाच, मनुष्य या असुरके हाथों नहीं, किसी निम्न प्राणीके हाथों नहीं स्वयं भगवान्के हाथों मेरा पतन हो।" तब कालीने भयंकर मुस्कानके साथ कहा 'यह स्वीकृत है' और वह भयंकर मुस्कानके साथ चली गयी। इधर रावण यज्ञ-वैदीसे उठ खड़ा हुआ।

मृतकोंका वार्तालाप

मृतकोंका वार्तालाप

दीनशाह, परीजादी

दीनशाह –– परीजादी, ईरानके कुंज हमारे माजिन्दरान शहरके इन कुंजों जैसे शीतल और मधुर नहीं थे। यहां शान्तिकी सरिताके तटपर लहलहाते हुए बागोंमें कहीं अधिक सुन्दर और सुगन्धित फूलोंकी चादर बिछी है, यहां प्रत्येक वृक्षपर जो पक्षिगण गान करते हैं और अपनी कलरवमय स्वर-संगतिके अपार्थिव आनन्द-के द्वारा दिनको संगीतमय बनाते हैं, उनके पंख और रंग इतने विभिन्न प्रकारके हैं कि उनकी कोमलता और शोभासे ही आंखें तृप्त हो जाती हैं, उनके नाम और जाति जाननेकी इच्छा ही नहीं होती। यहां दो हजार वर्षोंसे हम देवदूतोंकी आनन्द-सुधा पान कर रहे हैं, पर न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगता है कि ईरानकी स्मृतियां मेरे दिलमें वापस आ रही हैं। जिहूनका जल और तातारोंके खीमे जहां अफ्रासियाबके दल घूमते हैं, समृद्धशाली दमिश्क और हमारे अपने शहर, जहां हम दोनोंके माता-पिताके मकान पास-पास थे और हम दोनों छज्जेपरसे झुककर मन्द-मधुर स्वरमें बातें किया करते थे,––मुझे फिर उनकी चाह उठती मालूम होती है।

परीजादी –– अपने पुराने स्थानोंमें लौटनेमें मुझे भी आपत्ति नहीं होगी। यह बात नहीं है कि मैं माजिन्दरानसे ऊब गयी हूँ, पर कोई चीज फिर मुझे उसका उपभोग करनेके लिये बुला रही है जो मर्त्य और क्षणिक होता है, पर जिसमें शीघ्र छीन लिये हुए और परिपूर्ण आनन्दका तीखा भाव रहता है। फिर भी, दीनशाह, दो हजार वर्ष बीत चुके हैं; जिन स्थानोंको हम प्यार किया करते थे वहां जानेसे पहले क्या हमें यह नहीं सोच लेना चाहिये कि वहांकी अब क्या दशा होगी? हो सकता है कि अब वहां अन्य लोग आ गये हों, अन्य भाषाएं बोली जाती हों, अन्य रीति-नीतियोंका अधिकार हो गया हो, और हम अपरिचितोंकी भांति एक ऐसे जगत्में जा पहुँचें जिसके साथ हमारा मेल न बैठता हो।

दीनशाह –– मैं जाकर देखूँगा। तुम मेरी प्रतिक्षा करो, परीजादी।

–२–

दीनशाह –– परीजादी, परीजादी, हम पृथ्वीपर वापस नहीं जायेंगे, बल्कि हमेशा माजिन्दरानमें ही रहेंगे। मैं पृथ्वीको देख आया हूँ, वह अब बदल गयी है। तुम कितनी बुद्धिमती हो मेरी देवी !

परीजादी –– तुमने क्या देखा या सुना, प्रियतम ?

दीनशाह –– मैंने एक ऐसा जगत् देखा जो सौन्दर्यसे रहित था। वहांकी इमारतें या तो भद्दी और हीन कोटिकी थीं या उनमें आडम्बर और झूठा सौन्दर्य भरनेकी कोशिश की गयी थी। मीलों ईंटोंकी कतारें हैं, कहीं-कहीं मुश्किलसे थोड़ी-सी हरियाली दिखायी देती है, बस ये हैं वहांके शहर। इन शहरोंमें हमेशा कर्कश कोलाहल मचा रहता है, भट्ठियोंकी ज्वाला उठती है, झनझनाहट सुनायी देती है, घना, गन्दा धुँआं आकाशमें छाया रहता है, वहांके बाग जले हुए हैं और उनमें कोई सौन्दर्य नहीं। वहांके मनुष्य भयावह पोशाक पहनते हैं जो उनके उदास चेहरों और बेडौल अंगोंसे भी अधिक भद्दी होती है। वह तो जंगलियोंका जगत् हो गया है; ऐसा लगता है मानो सूरजकी रोशनीमें काम करनेके लिये पातालसे भूत-पिशाच निकल आये हों।

परीजादी –– दीनशाह, यह तो दुःखदायी खबर है, क्योंकि जाना तो हमें होगा ही। क्या तुम नहीं जानते कि हमारे दिलमें जो चाह उठ रही हैं वह इसीका संकेत है ?

दीनशाह –– हां, मेरी परीजादी, पर हमारे हृदयोंने हमें उस भयावनी जगहमें नहीं, बल्कि ईरानके प्रासादों और उपवनोंमें जानेके लिये प्रेरित किया था।

परीजादी –– पर, दीनशाह, हो सकता है कि, संसार पहले जैसा था फिर वैसा हीं –– सौन्दर्य, संगीत और आनन्दका धाम –– बनानेके लिये हम वहां जायं। जिस जगत्का वर्णन तुमने किया है उसमें यदि हम प्रवेश करें तो निश्चय ही हम उसे वैसा ही नहीं रहने देंगे। जबतक हम उसे अपनी इच्छाके अनुसार बिलकुल बदल न डालें तबतक हमें संतोष न होगा।

दीनशाह –– मुझे भी लगता है कि तुम ठीक कहती हो परीजादी ! तुम्हारी बात हमेशा ठीक होती है। तो फिर चलो चलें।

तूरियु, ऊरियु

तूरियु –– स्वर्गलोकसे उतरती हुई देवी लेडा, उषःकालकी स्वर्णिम आभा बिखेरते

हुए तेरे चरण कितने सुन्दर दिखायी देते हैं! पृथ्वीके गुलाब लाल हैं, पर तेरे चरण सिंदूरी स्पर्शसे स्वर्गको रंजित करते हैं वह और भी अधिक लाल है,— वह है प्रेमकी लालिमा, अनुरागकी श्रीशोभा।

देवी लेडा, करुणाभरी आंखोंसे मनुष्योंकी ओर देख। युद्धका निनाद शांत हो गया है, तीरोंकी सनसनाहट बन्द हो गयी है, भीषण आक्रमणके जोश-में अब ढालें एक-दूसरीके साथ नहीं टकरातीं। अपनी तलवारोंको हमने अपने मकानकी दीवारोंपर लटका दिया है। युवकगण अनाहत लौट आये हैं; एसिलोनकी युवतियां खेतोंमें मधुर और उच्च स्वरमें अपने प्रेमियोंके हृदयों-का आह्वान कर रही हैं।

देवी लेडा, हंसीकी देवी, आनन्दकी देवी! तू आ प्रेमके कक्षोंमें, विवाह-के गीतोंमें, तू आ बागोंमें और सुहावने झरनोंके तटपर जहां लड़के और लड़कियां एक-दूसरेके आंखोंमें आंख गड़ाकर देखते हैं, तू आ और धीमे स्वरमें हृदयसे बातें कर। घृणाको निकाल फेंक। प्रेम इस जगत्‌का आलिंगन करे और संघर्षके लिये उत्सुक आत्माको चुँबनोंसे शांत कर दे।

ऊरियु — तूरियुका गान सुन्दर है, पर ऊरियुका मंत्रोच्चार शक्तिशाली है। टेनिथ का मन्त्र सुनो। टेनिथ, भयंकरी मां! कपालोंकी मालासे शोभित, मृत्यु-की चीखसे भरी वेदीपर अपने शिकारोंका रक्त पीनेवाली शक्तिशालिनी और निर्मम मां!

टेनिथ, तू युद्धके आवेशमें रहती है, तेरा भीषण निनाद बहुत ऊपर उठता है और रथोंकी घरघराहट और युद्धकी तुमुल ध्वनिको डुबा देता है; तू, रक्त-रंजित, उत्सुक और भयावह, निर्मम, विराट् और क्षिप्र है; तू अद्‌भुत है पूज्या माता!

मेरी बात सुन! मैं, जो तुझसे डरता नहीं, मैं, जो तुझसे प्रेम करता हूँ, तुझसे पूछता हूँ: क्या तू थक गयी है? क्या तू शत्रुके रक्त और शिकारके मांस-से तृप्त हो गयी है? भला शक्तिमानोंकी भूमि एसिलोनमें युद्धका वज्रनिर्घोष शान्तिमें क्यों डूब गया है?

मैं नहीं थका हूँ, मैं नहीं तृप्त हुआ हूँ। मैं तेरा आह्वान करता हूँ, तू जाग और मुझे फिरसे हत्याका आनन्द दे; अहंकारसे फूली हुई और जयध्वनि करने-वाली सेनाओंको तीरोंसे तितर-बितर करते हुए मैं भूपतित शत्रुके मुखमंडल-को पददलित करूं, यह भूल जाऊं कि ऊरियुने अग्रभागमें रहकर युद्ध किया था।

मां, उठ! लेडाके लिये उसके उद्यान और रमणीक भवन, एसिलोनके

बालकोंके सुन्दर और स्निग्ध मुखमंडल और स्त्रियोंका आनन्ददायी सौन्दर्य छोड़ दे। मैं मंत्रणा-गृह और संग्राममें ही बूढ़ा हुआ हूँ, मेरे बाल सफेद हुए हैं। लेडाके पास मेरे लिये कुछ भी नहीं; मैं भला उसका शान्तिका वरदान और प्रेम और सौन्दर्यकी प्रेरणा लेकर क्या करूंगा?

मां, उठ! हे भयावनी टेनिथ! तू अपनी फुफकारसे जगत्को हिला दे, तू स्वर्गमें छा जा, मनुष्योंके हृदयको रक्तकी पिपासासे पागल बना दे, मृत्युके आनन्द और हत्याके हर्षसे उन्मत्त बना दे। हम तुझे मनचाहे बन्दी देंगे, तेरी वेदीपर स्त्रियों और पुरुषोंकी बलि चढ़ायेंगे।

टनिथ, मृत्युकी देवी, युद्धकी रानी! मृत्युके संघर्षमें भी एक सुख है जो स्त्रीके मधुर आलिंगनके सुखसे भी बड़ा है, पीड़ामें भी एक सुख है जिसे स्त्रीके होठोंका स्पर्श नहीं दे सकता; भालोंसे बिंधा हुआ शरीर स्त्रीके चमकीले हीरोंसे सज्जित गौर अंगोंसे बहुत अधिक सुन्दर लगता है। टेनिथकी मुँडमाल तेरे वक्षस्थलपर पड़ी पुष्पमालासे कहीं बढ़कर है, हे लेडा!

तूरियु — युद्ध और गीतमें दक्ष हे ऊरियु, तुम्हारा यह गान महान् है, पर मेरा गान भी सुन्दर है। एसिलोनके मन्दिरों और बाजारोंमें मिले हमें बहुत दिन हो गये हैं। युग-युग बीत चुके हैं और पृथ्वी भी बदल गयी है, हे आसाके राजकुमार।

ऊरियु — मैं महान् वीरोंके स्वर्गमें रह चुका हूँ जहां हम सारे दिन लड़ते और शामको भोजनमें एकत्र होते हैं।

तूरियु — और मैं प्रेम और संगीतके उपवनोंमें रह चुका हूँ, जहां फूलोंसे शोभित तटपर समुद्र मन्द गतिसे लहराता है। किन्तु अब समय आ रहा है जब मुझे नीचे उतरना ही होगा और मर्त्य सुखके स्थानोंमें फिरसे संगीत और मधुरिमाका स्रोत बहाना होगा।

ऊरियु — मैं भी नीचे उतरूंगा, क्योंकि योद्धाकी भी आवश्यकता है, केवल कवि और प्रेमीकी ही नहीं।

तूरियु — जगत् बदल गया है, हे आसाके राजकुमार ऊरियु! अब तुम्हें हत्या और निर्दयताका आनन्द नहीं मिलेगा। मनुष्य अब सदय हो गये हैं, उनमें कोमलता और सुकुमारता भर गयी है।

ऊरियु — मैं नहीं जानता। टेनिथ जो कुछ मुझे करनेको कहेगी वही करूंगा। यदि उसकी बनायी दुनियामें निर्दयता न हो, भयानकता न हो तो फिर मेरी पुकार नहीं होनी चाहिये।

तूरियु —— हम एक साथ नीचे उतरेंगे और देखेंगे कि जिस जगत्‌में करोड़ों वर्षों बाद हमारी मांग हो रही है वह आखिर कैसा है।

मैजिनी, कावूर गेरिबाल्डी

मैजिनी —— आज इटलीकी अवस्था इस बातका प्रमाण है कि मेरी शिक्षाकी आवश्यकता थी। मकियावेलिका सिद्धान्त कावूरकी नीतिमें फिर उठ खड़ा हुआ और अपने प्रयत्नोंके शीघ्रतासे आते हुए फलोंको अत्यधिक आतुरताके साथ ग्रहण करनेके कारण इटली उस स्पष्ट ज्ञानको खो बैठी है जो मैंने उसे दिया था। इसीलिये अब वह कष्ट भोग रही है। हमें फलके लिये काम तो करना चाहिये पर फलके प्रति हमें इतनी आसक्ति नहीं होनी चाहिये कि उसे जल्दीसे पानेके लिये हम अपने सच्चे साधनोंका बलिदान कर डालें, क्योंकि ऐसा करनेसे अन्तमें हम अपने सच्चे लक्ष्यका ही बलिदान कर बैठते हैं।

कावूर —— इटलीकी अवस्था इस बातका प्रमाण है कि मेरी नीति कितनी पक्की थी। मैजिनी, तुम अभीतक आदर्शवादीकी भान्ति, धारणाओंसे बने मनुष्यकी भांति बातें करते हो। राजनीतिज्ञ आदर्शोंको मानता है, पर धारणाओंसे उसका कोई सरोकार नहीं होता। वह सदैव अपने प्रधान लक्ष्यबिन्दुपर चोट करता है और इसके लिये ब्योरोंकी बहुत-सी चीजोंका बलिदान करनेको तैयार रहता है।

मैजिनी —— तुम्हारा कहना ठीक है पर यहां बलिदान ब्योरोंका नहीं बल्कि मूल बात-का ही हो गया है।

कावूर —— इटली एक है, इटली स्वतन्त्र है।

गेरिबाल्डी —— एकता मैंने स्थापित की थी। मैंने न तो मेकियावेलिका सिद्धान्तका व्यवहार किया और न राजनीति या शासन-नीतिपर ही भरोसा किया। मैंने अपने देशको छिन्न-छिन्न करके स्वतन्त्रता नहीं खरीदी। बल्कि मैंने राष्ट्रकी आत्माका आवाहन किया और राष्ट्रकी आत्मा जगी और वह स्वयं महान् आत-तायियों और तुच्छताके जुएको दूर फेंककर मुक्त हो गयी। कावूरको तो भरोसा करना चाहिये था इटलीकी आत्माकी वीरता और राजोचित गुणों-पर, प्राचीन रोमनों, एट्रूसकनों और सेमाइटोंके फ्लोरेन्स, रोम और नेपल्स-के पुनर्जागरणपर, न कि राष्ट्रों और छोटे-छोटे राज्योंके उस झूठे सौदागर लुई नेपोलियनपर।

मैजिनी -- इटली एक है, इटली स्वतन्त्र है, परन्तु केवल शरीरमें, आत्मामें नहीं। गेरिबाल्डी, तुमने एकताबद्ध इटली एक आदमीको दे दी, राष्ट्रको नहीं दी।

गेरिबाल्डी -- मैंने इटली दे डाली उसके प्रतिनिधिको, उसके राजा और वीर पुरुषको। मैं अब भी यह नहीं समझता कि मैंने बुरा किया। राष्ट्रने कहा, "वह हमारा प्रतिनिधि है", और प्रजातन्त्रवादी होनेके नाते मैंने राष्ट्रकी आवाजके आगे सिर झुकाया।

कावूर -- वह तुम्हारे जीवनका सर्वश्रेष्ठ अनुप्रेरित कार्य था। यदि अभीतक हल करनेको समस्याएं बाकी हैं, यदि अब भी राष्ट्रतन्त्रके अंग रोगग्रस्त हैं, तो इसकी आशा हमें करनी ही चाहिये थी। केवल एक स्वप्नद्रष्टा ही इतनी लम्बी और क्षयकारी बीमारीके बाद शीघ्र स्वास्थ्य-लाभकी मांग कर सकता है। हमने शल्य-क्रिया कर दी, अब शान्तिके साथ और बिना दिखावेके चिकित्सकका काम किया जा रहा है।

मैजिनी -- इटलीने अपना निर्दिष्ट काम अभी पूरा नहीं किया है। जब मैं उसे देखता हूँ तो मेरा हृदय दुःखसे भर जाता है। जिस इटलीको मैं दुनियाका नेतृत्व करनेकी शिक्षा देता वही अब एक क्षुद्र राष्ट्र है और स्वार्थी तथा बेईमान टयूटनोंका सहारा खोज रही है। जिस इटलीको नये सिरेसे अपने शासनतन्त्र और समाजको एक ऐसे सांचेमें ढालना चाहिये था जो स्वाधीनताके युगकी भावनाओंके उपयुक्त हो, वही फिसड्डी बनकर गौल और सेक्सन जातियोंके पीछे-पीछे पैर घसीट रही है। जिस इटलीको एक नवीन यूरोपीय संस्कृतिका उद्गम होना चाहिये था वही मानवजातिके नेताओंके बीच स्थान पानेमें असमर्थ है। आज अर्द्ध-एशियाई मस्कोवाइट लोग रोमनोंके वंशजोंकी अपेक्षा कहीं अधिक मानवजतियके लिये कार्य कर रहे हैं।

कावूर -- राजनीतिज्ञको धैर्य रखना चाहिये, अपने लक्ष्यकी ओर जानेके लिये चुपचाप काम करना चाहिये, और जैसे-जैसे आगे बढ़े वैसे-वैसे प्रत्येक पगको सुदृढ़ बनाते जाना चाहिये। जब इटलीके आर्थिक कष्टोंका निराकरण हो गया है और चर्चने प्रगतिमें बाधा देना बन्द कर दिया है तो अब मैजिनीका आदर्श पूरा हो सकता है। इटलीका मस्तिष्क और कृपाण फिर भी नेतृत्व कर सकते हैं और प्राचीन कालकी भांति यूरोपको गढ़ सकते हैं।

मैजिनी -- परन्तु कोई कूटनीतिज्ञ और समयका दास उस महान् परिणतिको नहीं ला सकता, बल्कि उसे वीर आत्मा और शक्तिशाली मस्तिष्क ही ला सकता है और जो कालको परिचालित करता और सुअवसरकी सृष्टि करता है। मैंने

इटलीको रोमन ढांचेमें ढालनेकी चेष्टा की थी। मैं जानता था कि यूरोपको अब तीसरे इलहामकी आवश्यकता है और उसके लिये भगवान्‌का चुना हुआ माध्यम है इटली। यही बात मुझे उस समय बतायी गयी थी जब मैं पूर्व-पुरुषोंकी इस दुनियामें मनुष्योंके अन्दर फिरसे जन्म लेनेके लिये नीचे उतरा था। "इटलीने दो बार यूरोपको नई सभ्यता दी है, अब तीसरी बार भी वही देगी।" जब हम नीचे भेजे जाते हैं तब जो वाणी सुनायी देती है वह झूठी नहीं होती।

कावूर — ठीक है, पर हमेशा फल तुरन्त नहीं प्राप्त होता। कभी-कभी लम्बी तैयारी-का, धीमें पवित्रीकरणका दुःखदायी काल आता है, और निर्दिष्ट वस्तु एक निष्फल स्वप्न जैसी प्रतीत होती है। हमें यह जानते हुए कार्य करना होगा कि फल अवश्य आएगा, उसके आनेमें देर होनेपर न तो हमें अधीर होना चाहिये न दुःखी और निराश। यह सम्भव है कि उस परिणतिको लानेके लिये हमें फिरसे बुलाया जाय। हमने सर्वदा ही इटलीकी सहायता की है; एक बार फिर हम उसकी सहायता करेंगे।

मैजिनी — मैं नहीं जानता, पर इस सुखी लोगोंकी दुनियामें मेरे लिये दिन बड़े लंबे होने लगे हैं। जब हमारी बुलाहट आये, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह विजय पानेके लिये हो, कूटनीतिके द्वारा नहीं वरन् सत्य और प्रदीप्त साहसके द्वारा......

गेरिबाल्डी — मोल-तोलके द्वारा नहीं बल्कि वीरकी तलवारके द्वारा......

मैजिनी — राजकौशलके द्वारा नहीं वरन् मानव-प्रेम और महत् ज्ञानके द्वारा......

कावूर — मैं सन्तुष्ट रहूँगा ताकि इटली विजयी हो।

गेरिबाल्डी — अबीसीनियाने इटलीके हाथोंसे जिस तलवारको काट गिराया था वही तलवार जब फिरसे उठायी जायगी तो मैं उसे उठानेके लिये वहां मौजूद रहूँगा।

शिवाजी, जयसिंह

जयसिंह — हम दोनोंमेंसे किसीकी भी जीत नहीं हुई। एक तीसरी ही शक्ति देश-में घुस आयी है और तुम्हारे कार्यका फल भोग रही है और जहांतक मेरे कार्य-की बात है, वह छिन्न-भिन्न हो गया और मेरा प्रिय आदर्श मिट्टीमें मिल गया है।

शिवाजी — फलके लिये मैंने कार्य नहीं किया था और विफलतासे भी मैं न तो

आश्चर्यान्वित हो रहा हूँ न निरुत्साहित।

जयसिंह —— मैंने भी स्वयं पुरस्कार पानेके लिये नहीं, बल्कि राजपूतोंके आदर्शको ऊंचा रखनेके लिये कार्य किया था। सम्मानपूर्वक युद्धमें अडिग साहस, मित्र और शत्रुके प्रति वीरोचित भाव, अपने चुने हुए सम्राट्के प्रति महान् निष्ठा यही मुझे सच्ची भारतीय परम्परा जान पड़ी, यह चीज मुझे हिन्दू जातियों-की एकता और प्रधानतासे भी अधिक आवश्यक जान पड़ी। इसीलिये मैं तुम्हारे प्रस्तावोंको स्वीकार न कर सका। पर मैंने अपनी परम्पाराको स्वीकार करनेके लिये तुम्हें अवसर दिया और जब मेरे साथ और तुम्हारे साथ विश्वास-घात किया गया तो मैंने अपने सम्मानकी रक्षा की और तुम्हें भाग निकलनेमें सहायता दी।

शिवाजी —— ईश्वरने मुझपर अपनी छत्रछाया फैलायी और मुझे प्रेम और सहायता देनेके लिये एक स्त्रीका हृदय पिघला दिया। परम्पराएं बदलती रहती है। राजपूतोंके आदर्शका भविष्य महान् है, पर इसके सांचेको तोड़ना आवश्यक था ताकि उसके अन्दरकी अस्थायी चीजें दूर हो जायं। अपने चुने हुए सम्राट्-के प्रति निष्ठा अच्छी चीज है, किन्तु अपने राष्ट्रद्वारा चुने हुए सम्राट्के प्रति निष्ठा उससे भी अच्छी है। राजा भगवत्स्वरूप होता है अपने अन्दर अभि-व्यक्त भगवान्की शक्तिके कारण, परन्तु उसमें यह शक्ति इस कारण आती है कि वह प्रजाका चुना हुआ होता है। राजा राष्ट्रके अन्दर विराजमान भगवान्का सेवक होता है। मराठोंके विराट् बिठोवा —— भारतरूपमें अवतरित भवानी ——की शक्तिसे ही मैंने विजय पायी।

जयसिंह —— तुम्हारा राजनीतिक आदर्श महान् था, पर तुम्हारे साधनका मानदण्ड हमारी नैतिकताके लिये घृणित था। छल-कपट, विश्वासघात, लूट-पाट, मार-काट —— ये सब चीजें तुम्हारे कार्य-क्षेत्रसे बाहर नहीं थीं।

शिवाजी —— मैंने अपने लिये नहीं वरन् ईश्वरके लिये और महाराष्ट्र-धर्मके लिये, रामदासद्वारा घोषित हिन्दू-जातिके धर्मके लिये युद्ध किया और शासन किया। मैंने अपना मस्तक भवानीको अर्पित किया और उन्होंने मुझे राष्ट्रकी भलाई-के लिये योजना बनाने औंर युक्ति ढूँढ़ निकालनेके लिये उसे रखनेकी आज्ञा दी। मैंने अपना राज्य रामदासको दे डाला और उन्होंने मुझे ईश्वर और मराठोंके दासके रूपमें उसे वापस लेनेके लिये कहा। मैंने दोनों आज्ञाएं शिरोधार्य कीं। मैंने हत्या की जब ईश्वरने आज्ञा दी; मैंने लूट-पाट की क्योंकि अपने दिये हुए साधनके रूपमें उसीकी ओर उन्होंने संकेत किया। विश्वास-

घाती मैं नहीं था, मैंने तो सामग्री और मनुष्योंकी कमीको छल-छद्म और कौशल-से पूरा किया, शारीरिक शक्तिको बुद्धिकी तीक्ष्णता और मस्तिष्ककी शक्तिके द्वारा हराया। दुनियाने युद्ध और राजनीतिमें छलको स्थान दिया है, और राजपूतोंकी वीरतापूर्ण स्पष्ट नीति न तो यूरोपके राष्ट्रोंमें पायी जाती है और न एशियाके।

जयसिंह — मैंने धर्मको सबसे ऊपर रखा और भगवान्‌की वाणी भी मुझसे उसका त्याग नहीं करा सकी।

शिवाजी — मैंने सब कुछ भगवान्‌को दे डाला और धर्मतकको भी मैंने नहीं रखा। भगवान्‌की इच्छा ही मेरा धर्म थी क्योंकि वही मेरे नायक थे और मैं उनका सिपाही। यही मेरी निष्ठा थी, औरंगजेबके प्रति नहीं, किसी नीति-शास्त्रके प्रति नहीं, वरन् भगवान्‌के प्रति जिन्होंने मुझे पृथ्वीपर भेजा था।

जयसिंह — वही हम सबको भेजते हैं, पर भिन्न-भिन्न कार्योंके लिये, और कार्यके अनुसार ही वह आदर्श और चरित्रका निर्माण करते हैं। मुझे इस बातका दुःख नहीं कि मुगलोंका पतन हो गया। यदि वे अपना प्रभुत्व बनाये रखनेके योग्य होते तो वे उसे खो न बैठते; पर जब वे योग्य नहीं रहे तब भी मैं उनका विश्वासपात्र, सेवक और भक्त बना रहा। अपने सम्राट्‌की इच्छाका विरोध करना मेरा काम नहीं था। जिस भगवान्‌ने उन्हें नियुक्त किया था वही उनका न्याय करते; वह कार्य मेरा नहीं था।

शिवाजी — भगवान् उस व्यक्तिको भी नियुक्त करते हैं जो विद्रोह करता है और अन्यायके शासनको नतमस्तक होकर बनाये रखनेसे इंकार करता है। भगवान् हमेशा शक्तिमानोंके पक्षमें नहीं रहते; कभी-कभी वह उद्धारकर्ता-के रूपमें भी प्रकट होते हैं।

जयसिंह — तब, जैसा कि उन्होंने वचन दिया है, वह स्वयं नीचे उतर आवें। केवल तभी विद्रोहको ठीक माना जा सकेगा।

शिवाजी — किन्तु वह भला आयेंगे कहांसे जब कि वह पहलेसे ही हमारे हृदयोंमें विराजमान हैं? मैंने उन्हें अपने हृदयके अन्दर देखा था, इसी कारण अपना कार्य करनेके लिये मैं यथेष्ट शक्तिशाली था।

जयसिंह — किन्तु तुम्हारे कार्यपर उनके दिये हुए अधिकारका चिह्न, उनकी मुहर कहां है?

शिवाजी — मैंने एक साम्राज्यकी नींव खोद डाली और वह दुबारा स्थापित नहीं हुआ है। मैंने एक राष्ट्रकी सृष्टि की और वह अबतक नष्ट नहीं हुआ है।

लिटिलटन, पर्सिवाल

लिटिलटन — बहुत लम्बे समयके बाद, पर्सिवाल, हम लोग मिल रहे हैं। यह आश्चर्यकी बात है कि पृथ्वीपर तो हमारे पथ इतने समानन्तर और परस्पर-सम्बन्द्ध थे और इस परलोकमें वे एक-दूसरेसे इतने अलग हैं।

पर्सिवाल — यह तुम्हें विचित्र क्यों मालूम हो रहा है, लिटिलटन ? हम जिस अव-जगत्में हैं वह, जैसा कि हम दोनोंने देख लिया है, हमारे पार्थिव स्वप्नोंके मूल सत्त्व और हमारे मर्त्य स्वभावके ताने-बानसे ही बना है। स्थूल रूपमें पृथ्वी-पर हमारे पथ समानान्तर थे। हम कंबरलैंडके पहाड़ोंपर एक साथ घूमते थे या कार्नवालकी चट्टानोंपर समूचे समुद्रको भीषण रूपमें उछलते और टकराते हुए देखा करते थे। आईसिसमें एक ही नावमें तुम डांड़ चलाया करते और मैं पतवार थामा करता। कालेजमें बराबर ही हमारा एक समान मान था और ट्रिपोसमें हमें एक ही विषयमें एक ही श्रेणी प्राप्त हुई थी। बादमें हम पार्लियामेन्टमें एक ही दलकी ओरसे एक साथ आये और भव्य तथा महान् मौनभावके द्वारा अपने देशके कार्य-संचालनमें सहायता करते रहे। किन्तु हमारे शारीरिक ढांचों और नैतिक गठनोंमें जो अन्तर था उससे अधिक अन्तर भला मनुष्योंमें क्या हो सकता है ? तुम थे वाइकिंग कुलके लम्बे, गोरे, तगड़े वंशज; मैं था वेल्सके पहाड़ोंसे आया हुआ काला, दुबला और ठिगना मनुष्य। तुम बुद्धिमान्, व्यावहारिक, सफल वकील थे; मैं था ललित-कलानुरागी और आलोचक; मैं अपने निजी कामोंके अलावा प्रत्येक चीजके बारेमें कुछ-न-कुछ जानकारी रखता और ऐसे प्रत्येक कामको सफलताके साथ करता था जिससे मेरा अपना कोई मतलब न हो।

लिटिलटन — फिर भी हम एक साथ लगे रहे; हमारी रुचियां प्रायः एक ही दिशा-में रहा करतीं; हमारी स्नेह-वृत्तियां एक-सी थीं, यहांतक कि हमारे पाप भी हमें एकत्र ही रखते थे।

पर्सिवाल — मैं समझता हूँ, हम एक-दूसरेके पूरक थे। हमारी रुचियां बहुत अलग-अलग होनेपर भी मिलती-जुलती थीं। हम एक ही पुस्तक पढ़ते, पर तुम उसका सार थोड़ेमें कुशलताके साथ खींच लेते और फिर उसे उठाकर अलग फेंक देते, और तुम्हें सन्तोष हो जाता कि तुमने मृत व्यक्तियोंको भी अपने लिये उपयोगी बना लिया; और मैं उसके अर्थके मर्मस्थलमें सांपकी भांति घुस जाता और उसमें तबतक सिमटकर बैठा रहता जबतक कि मैं उसके साथ एक न हो जाता

और उसके बाद उस आत्मासे परिपूर्ण होकर और उसकी प्रिय स्मृतिको साथ लेकर मैं फिर बाहर निकल आता जिसने मुझे तबतक आश्रय दे रखा था। जहां-तक हमारे पापोंकी बात है, हमें उनकी चर्चा नहीं करनी चाहिये। मृत्युके बाद उनसे हमारा ऐसा परिचय रहा कि हमारा जी थक गया और अब उन्हें याद रखनेकी चाह नहीं रही। पर वहां भी हममें अन्तर था। तुमने पाप किये लोभके साथ, बलके साथ और रसके साथ, पर तुममें हृद्गत भावकी बहुत कमी थी; मैंने भूल की भावाधिक्यके कारण, अपनी स्मृतियोंकी स्पंदित होनेवाली तीव्रताके कारण मैं अपनेको संभाल न पाया।

लिटिलटन —— जरा सुनाओ तो, जबसे अलग हुए तबसे तुम्हें कौन-कौनसे लोकोंने आश्रय दिया।

पर्सिवाल —— बल्कि तुम्हीं अपने अनुभव मुझे सुनाओ।

लिटिलटन —— सिंहावलोकन करते समय ब्योरेकी बातें धूमिल हो जाती हैं और उन्हें नहीं कहा जा सकता। मृत्यु-जैसे कष्ट देनेवाले कुछ अवसर आये, और प्रत्येक-का अपना-अपना भौतिक परिपार्श्व था। मैं उन्हें भूल जाना चाहता हूँ, पर भूल नहीं पाता। उनमेंसे कुछ अवसरोंपर विचित्र ढंगसे यूनानी और कैथो-लिक ग्रंथोंमें वर्णित नरकोंकी याद हो आयी थी, पर सादृश्य 'प्रकार'में था, ब्योरेमें नहीं। मैं यमलोकके रक्षसों (Harpies) का शिकार हुआ,मेरा पीछा किया गया, मैं चीरा-फाड़ा गया और निगला गया; मैंने उन मनुष्योंकी यातना-ओंका अनुभव किया जिन्हें मैंने जान-बूझकर दी जानेवाली निर्दय यातनाका भागी बननेके लिये अपने जेलोंमें भेजा था, जिनका मैंने धन या मान छीन लिया था। मेरे जीवनकी सफलताएं फिर सामने आयीं और मैं उनकी स्वार्थ-परता, रूक्षता और कठोरतासे ऊब उठा। धन मेरे हाथोंमें जलता लोहा हो गया, विलास लपलपाती आग बनकर मेरे शरीरसे लिपट गया। मुझे ऐसे-ऐसे प्रदेशोंमें रहना पड़ा जहां प्रेम अज्ञात था और जहांके निवासियोंका अंतस्तल लोहेका जैसा सख्त और मजबूत तथा सहाराके रेगिस्तान जैसा शुष्क और निरानन्द था। पर्सिवाल, हे पर्सिवाल, मैं जब फिर पृथ्वीपर जाऊंगा, मैं प्रेम-को पहचानूंगा और दयाके साथ बर्ताव करूंगा।

पर्सिवाल —— क्या तुम्हें विरामका समय नहीं मिला? क्या तुम सुखके किसी प्रदेश-में नहीं गये?

लिटिलटन —— मेरी समझमें, वह अभी आगे आनेवाला है।

पर्सिवाल —— मुझे भी तुम्हारे जैसे अनुभव हुए यद्यपि उनका स्वरूप और प्रकार कुछ

भिन्न था। मैं अपने जीवनकी बार-बारकी स्वार्थपरता और दुर्बलतासे ऊब गया हूँ, मैंने अपने अन्तःकरणमें उन लोगोंके कष्टोंका अनुभव किया है जिन्हें मैंने चोट पहुँचायी थी। अब मैं समझ सकता हूँ कि ईसाई लोग नरकको शाश्वत क्यों मानते हैं; यह अन्तरमें उन यंत्रणाओंकी नैतिक अनन्तताकी स्मृति है। किन्तु मुझे छुटकारा भी मिला। मैं स्वर्गमें रहा हूँ, मैं अमर पुष्पोंके बागोंमें घूमा हूँ। और अपने उन सुखदायी अनुभवोंके द्वारा मैंने अपने प्रेमकी शक्ति और गुणको गंभीर बनाया है, अपने भावोंकी तीक्ष्णताको तीव्र बनाया है, अपनी रुचि और बुद्धिको परिमार्जित और विशुद्ध किया है।

लिटिलटन — यह कौन-सा जगत् है, जहां हम अभी मिल रहे हैं?

पर्सिवाल — यह सहयोगियोंका स्वर्ग है।

चित्रांगदा

चित्रांगदा

मणिपुरमें चित्रांगदाने पूर्वीय पहाड़ियोंपर उषाको तटस्थ रूपसे झांकते देखा। वह पुकारको समझ गयी। उसके हृदयमें पाण्डुरताके साथ सन्नाटा आ गया । और वह आनेवाली धूमिल वास्तविकताओंसे परिचित हो गयी। उसने उठते ही, डरते-डरते, खुलते संसारको देखा। उधर अर्जुनने अपनी पकड़को खाली पाया। उनकी बाहें प्रेयसीसे खाली थीं। उन्होंने धूसर, अनिच्छुक अंधकारमेंसे चित्रांगदाका चेहरा ढूँढ़ निकाला और बोले 'वहां उस धुँधले प्रकाशमें क्यों खड़ी है मानों तुझे सब सुखोंसे वंचित कर दिया गया हो। तेरे लिये तो आनन्द सुनिश्चित है। उस उदास जगहको छोड़कर इधर आ जा।' वह आ गयी। अपनी आंखोंमें विचित्र दुःख भरे चित्रांगदाने झुककर कहा 'तुम्हें सचमुच बहुत अधिक प्रेम है। तुम्हारी नींद इस जरासे बिछोह-से अधीर हो उठी। लेकिन यह रिक्तता शीघ्र ही कितनी आसानीसे भर जायगी। तुम तारेकी भांति नगरों और प्रदेशोंमेंसे होते हुए अपनी भव्य, आग्नेय दौड़के लिये चल पड़ोगे। जैसे नक्षत्र बिना किसीके कहे सूर्यके चारों ओर घूमते रहते हैं वैसे ही पुरुषोंका पूजा भाव और स्त्रियोंके हृदय तुम्हारे पीछे लग जाएंगे । तुम अपनी वीरता भरी शक्तिके मदमें स्मितके साथ स्वीकार कर लोगे जैसे कोई देव किसी मर्त्य रमणी-को अभी भुजाओंमें लेकर अपने अमर मुखका उसके साथ परिणय करे। फिर तुम्हारी नियति तुम्हें आ पकड़ेगी और तुम आकाशसे गुजरती हुई महान् ज्योतिकी तरह चले जाओगे और अपने पीछे केवल शक्ति और आगकी स्मृति छोड़ जाओगे। कोई भी छोटा-मोटा काम तुम्हें नहीं बांध सकता। हे वीर! तुम्हारा पार्थिव जन्म स्वर्गके बीजसे हुआ था और उसका उद्देश्य क्या है? तुम्हारे अन्दर रणको भरना, भव्य विपदा-ओं और राजसी क्षतियोंको अपनी बाहोंमें लेना और सुखोंका अपनी प्रकृतिके साथ मेल कराना, और अन्तमें साम्राज्य किसी महान् रणक्षेत्र में मृत्युके साथ जूझते हुए तुमसे आ मिलेगा। तुम भी उस पवनकी न्याई हमारे नहीं हो जो क्षणभरके लिये हमारे बालोंको छूनेके लिये ठहर जाता है और फिर अपनी राह लेता है।'

अर्जुनने चुपकेसे दुलारते हुए कहा 'प्यारी चित्रांगदा, सूर्यका आलोक आनेसे पहले खिड़कीमेंसे चीजोंके अधकचरे रूप देख-देखकर फिरसे हवाई किले न बनाना। भगवान् उषासे पहलेके समयको धुँधले निस्तेज जगत्के नजदीक रखता है। जो व्यक्ति

मानव जातिकी ऊष्माभरी, घरोंमें सुरक्षित, मैत्रीकी चहार दीवारीसे घिरी हुई सीमा-ओंसे निकल कर बाहर झांकता है वह अनन्त स्मृतियोंमें खिच जाता है जिन्हें वह भली-भांति पकड़ नहीं पाता, ऐसी अनन्त लालसाओंमें फंस जाता है जिनका कोई रूप नहीं बना यहां तक कि मौलिक विशालता और विस्तारकी भावना जाग उठती है जो आनन्द-दायी ब्योरोंसे शून्य और उदासीसे भरी होती है, वहां एक विशाल अधूरे जगत्का परिश्रम होता है। उस गंभीर नीरवतामें मत झांको, आनन्दके द्वारा अपनी रक्षा करो। जब तक सूर्यके साथ-साथ भगवान्का उदय न हो उन धुँधली, उदास पुकारों-से आत्म-रक्षा करनेके लिये मेरी भुजाओंमें शरण लो। सूर्यकी जाज्वल्यमान ज्योति मर्त्योंके लिये मैत्रीपूर्ण होती है। अपने नानाविध कार्यों और विविध आशाओंके लिये उठने वाली धरतीका उल्लास भरा कोलाहल बहुत मैत्रीपूर्ण होता है। यह धूसर घड़ी नीरव गुफाओंमें रहनेवाले तपस्वी और मृत्युके क्षण गिनते हुए व्यक्तिके लिये पैदा हुई थी जिसका हृदय अपनी स्पन्दनशील तंत्रियोंको ढीला कर देता है।'

चित्रांगदाने उत्तर दिया 'इस धूमिल क्षणमें हम वस्तुओंके नीरव सत्यके ज्यादा नजदीक होते हैं। सुननेवाले हृदयको सुखी प्रकाश या आनन्दमग्न ध्वनियां धोखा नहीं देती, महारात्रि निःशस्त्र नहीं करती और विचार मग्न मां दिलासा देनेके लिये सुला नहीं देती। अपनी प्रसन्नताके लिये तुम्हें क्षणभरके लिये बांधना भी मेरे लिये सुखकर नहीं है। तुम्हारे महान् जीवनका आवेश तुम्हारे ऊपर आंधी तूफान बनकर आयेगा और तुम्हें संघर्ष, युद्ध और अनर्थकारी कार्यों और उस दानवाकार मनोव्याथा-की ओर उड़ा ले जाएगा जो संसारको बनाए रखती है। ये सब चीजें तुम्हारे लिये वैसी ही सहज, स्वाभाविक और प्रतिरोधरहित हैं जैसे शेरकी कूदमें शक्ति, सौंदर्य और भयंकरता या नारियोंके लिये प्रेम — हालांकि वे जानती हैं कि इसका अन्त दुख और कष्टमय होगा फिर भी प्रेम करती हैं। आह ! तेजीसे निकल जाओ, तुम यहां व्यर्थमें क्यों समय खोओ। एक नारी हृदयको उसके उड़ते हुए क्षणोंमें शान्त करने-के लिये ठहरनेमें तुम भगवान्का कौनसा उद्देश्य पूरा कर लोगे, शायद इस बीच तुम जीवनके कुछ ऐसे महान् क्षणोंको खो बैठो कि जो एक बार उपेक्षित होकर फिर नहीं लौटते।' कहते-कहते वह रुक गयी।

महान् अर्जुन पिघल गये। उन्होंने कहा 'क्या मेरी पकड़ ढीली पड़ गयी है या तूने मेरे चुम्बनमें आवेशकी कमी पायी है ? मैं जब बड़ी-बड़ी नदियोंके देश बंगालसे होता हुआ पूर्वकी ओर केवल साहस और तलवारको साथी बनाये हुए बिना सोचे-समझे घोड़ेको एड़ लगाता हुआ इधर आ निकला था तब मैं यह न जानता था कि गौर चित्रांगदाकी काली अलकों और छोटे-से सुगन्धित शरीर जैसे फूल यहां मार्गके किनारे

चुने जानेके लिये तैयार खड़े हैं। मुझे उस दिनकी अपेक्षा आज तेरी बहुत अधिक जरूरत है। इस बलवान्, बर्बर जातिपर निश्छल आंखों और मृदु सुकुमार हाथोंसे शासन करनेवाली हे सुन्दर युवा साम्राज्ञी, क्या तुझे याद है ? क्या तुझे मालूम था ? क्या तू अपनी अन्तरात्मामें मेरी प्रतीक्षा कर रही थी ? निश्चय ही तेरे हृदयकी पहली धड़कनने ही अपने स्वामीको पहचान लिया था। पहाड़ोंकी रानीने बड़े ही आनन्दके साथ अपने विशाल सिंहासन, कठोर शासन तथा प्राचीन अभिजात अधिकारको न्यौच्छावर करके बदलेमें क्या लिया ? मेरे चरणोंपर सिर रखनेका अधिकार और मुकुटकी जगह चुम्बन। प्रेमसे सन्तुष्ट होकर तूने सब कुछ दे डाला। और अब तो विचारों और कष्टोंसे परिपक्व हुए मनकी तरह तू दुखभरी आवाजमें बोलती है।

आवेशसे भरी चित्रांगदा बोली 'क्या मुझे याद है ? हां मुझे याद है और जब तक विस्मृति न आ जाय तब तक मैं और क्या याद कर सकती हूँ ? आह ! वे अनन्त क्षण, वे वर्षाकी रिमझिम करती रातें — और, ऐसे समय तुम मुझसे दूर होगे और वह असह्य, कठोर, धूसर प्रभात जब कि मैं अकेली ही नींद से जागूँगी ! लेकिन तुम्हारा यह वर्ष तो अन्ततक मेरा है। बाकीपर देवताओंका दावा है। मैंने तुमसे पूरी तरह प्यार किया है, अपनी पूरी सत्ताके साथ प्यार किया है। अन्य स्त्रियोंकी तरह थोड़ा-थोड़ा करके, अनमने भावसे नहीं। मेरे पूरे हृदयमें, मेरी पूरी सत्तामें मेरे सूर्यदेवके स्पर्शसे अचानक वसन्त ऋतु आ गयी, हरीतिमाके साथ-साथ फूल खिल उठे। मेरी सारी सत्ता तुम्हारे चरणोंमें अर्पित हो गयी। मैं अपने पिताके बुद्धिमत्ता-पूर्ण और दूरदर्शी प्रेमकी प्रशंसा करती हूँ कि उन्होंने बर्बर, अमंगल विधि-विधानोंसे घिरे होनेपर भी, इन कठोर पहाड़ोंपर मुझे जगत्की दृष्टिसे, तुम्हारे लिये अयाचित छिपाये रखा। मरते हुए मनुष्यके चारों ओर, एक खम्बेसे दूसरे भयानक खम्बे तक मशाले जल रही थीं। अस्पष्ट दीवारोंपर अनियमित लालिमामें निर्दय देवोंके भाव-शून्य चेहरे दिखाई दे रहे थे। उस अस्थिर चकाचौंधमें मेरे चेहरेका संगमरमरी फीका-पन बड़ा विचित्र और अजाना-सा लग रहा था। अजीब-अजीब हथियार लिये, अपने पूजनीय देवों जैसे ही भयंकर और गुर्राते चेहरोंवाले मणिपुरी सरदारोंके चेहरे स्वप्न जगत्की भ्रांति मालूम हो रहे थे। मैं गंभीर विशाल (मण्डलाकार) दृष्टि डालती हुई, उनके रूक्ष ठाटबाट और जंगली प्रतापके दृश्यको अपने मरणासन्न पिताके चारों ओर देख रही थी। मेरे चारों ओर ऊंचे पूरे, भयानक, बलशाली गठीले पेड़ों जैसे या उकड़ू मीनारों जैसे लोगोंका घेरा था, ऐसा लगता था मानों पशु-बलका मानव गढ़ बना हो। वे चमचमाते, सतर्क भाले लिये मेरे भविष्यकी चौकसी कर रहे थे। मेरे पिताने उन लोगोंको सौंपा, उनमेंसे प्रत्येकको बुला-बुलाकर उनके हृदयोंसे मेरे

सिंहासनतक पहुँचनेकी सीढ़ी बनायी। उनमेंसे प्रत्येक नामको एक बड़ी जंजीरकी कड़ी बनाया —— एक कंगूरेदार फाटक बनाया जो मेरे राज्यकी रक्षाके लिये खड़ा था। उनमेंसे हर एकका हृदय श्रद्धा विश्वासका घर और निष्ठाकी मुहर था। इस तरह उनके विचारोंमें समाधान किया गया और उनकी कट्टर राज-भक्तिको पक्का किया। मेरे पिता बोले। उनमें बाहरी शक्ति तो न थी लेकिन उनकी आवाज स्पष्ट-युद्धके बिगुल जैसी थी। उन्होंने कहा "हे मेरे पूर्वके सिपाहियो, लो अपनी इस शुभ्र वक्ष रानीके चारों ओर अपने बलकी मेखला डाल दो। देवताओंके उद्देश्यको भ्रष्ट करनेके लिये मानव जीवनके भवनका चक्कर लगानेवाले प्रारब्धके लुटेरोंसे इसकी रक्षा करना, मेरा समय हो गया है और अब छाया पड़ रही है। यही वह तना है जिससे तुम्हारे भावी राजा उपजेंगे। इसकी भली-भांति रक्षा करना, धोखेमें आकर नियति देवताओंके अजेय बीजकी जगह किसी अयोग्यको इसके भविष्यपर कब्जा न कर लेने दे। प्रकृतिके इस निषिद्ध सुनहरी फलको हथियानेके लिये कोई पराये व्यक्ति यहां छल-बलसे प्रवेश न कर पायें। सभी विदेशियोंके प्रवेशका विरोध करो। आततायी के सामने अपनी ढालें खड़ी किये रहो। अतिथिकी प्रार्थना और अनुनय-विनयकी ओरसे अपने कान बन्द कर लो, निर्दय बन जाओ। इस पुरस्कारके लिये स्वर्गका दुलारा, भाग्यका लाडला ऐसा व्यक्ति ही आ सकता है जो संकटोंका तिरस्कार करे और मौतको ठुकरा सके। इसके लिये चाहे इक्ष्वाकु वंश एक नये रामको जन्म दे या राजा भोज इसके सौन्दर्यके बारेमें सुनकर इस तरफ चढ़ाई करें या कोई हस्तिनापुर-की मांदसे निकला हुआ वृष्णिकुलका सिंह-शावक हो जो दोनों लोकोंपर दृष्टि गड़ाए हुए विजित धरतीसे स्वर्गकी ओर छलांग मार रहा हो, जीवनके गौरवको स्वर्गके मुकुट-से द्विगुणित कर रहा हो।" यह कहकर मेरे पिताने इस पार्थिव जगत्से आंखें बन्द कर लीं और उनपर अन्तिम मौन छा गया। प्राण निकलनेतक वे नाम जपके सिवाय और कुछ न बोले।

'निष्ठुर सरदार अपना नृशंस मौन भूल गये। हमारी रानीका नारा लगा और मैं बेतहाशा प्रेममें जकड़ ली गयी। सारी भीड़ मुझपर टूट पड़ी। सब मेरे हाथ और पैर चूमकर प्रेमकी नीरव शपथ ले रहे थे। इस बीहड़ निष्ठावान, बर्बर देशपर, यहांके अनगढ़, कठोर हृदयोंपर मैं अपनी दुर्बलतासे ही राज्य करती रही। मैं उनकी छोटीसी श्रद्धास्पद रानी थी। और आखिर तुम आ गये। तुम्हारे रथके आगे-आगे अफवाहें और खतरेकी घंटियां चल रही थीं। पराजय और मृत्यु तुम्हारे अग्र-दूतके रूपमें आये और एक चीख सुनायी दी "मणिपुर वासियो, मणिपुर वासियो, हथियार उठा लो। कोई क्रुद्ध देव तुमपर आक्रमण कर रहा है। यह निश्चय ही कोई

क्रुद्ध और विनाशक देव है क्योंकि उसके धनुषकी टंकार टूटते हुए भुवनों जैसी है, उसके बाण शेषनागके क्रुद्ध होकर जागनेपर होनेवाली प्रलयकी हिम-वर्षा जैसे हैं।" चीख पुकारके पीछे शत्रुके आनेका धमाका हुआ। तुम्हारा रथ कीचड़ और रक्तमें सना हुआ था। उसकी छत युद्धमें फट गयी थी। तुम्हारे घोड़ोंके मुखसे झाग निकल रहा था, और वे मीलोंकी दौड़के बाद भी तेजी और युद्धके लिये लालायित होकर हिनहिना रहे थे। रथमें तुम्हारा भव्य और प्रतापी शरीर सामान्य मानव आकारसे बहुत अधिक बढ़-चढ़कर दीख रहा था। तुम्हारी आंखोंमें विजयकी चमक थी जहां गर्जन अपने जनक विद्युतके ऊपर दुबका बैठा था। मेरे सिपाही झट हथियार लेकर उछल पड़े, वे कातर परन्तु निष्ठावान् थे तुरन्त मेरे चारों ओर लोहेकी बाड़ उग आयी। हवाके साथ बातें करते हुए तुम्हारे तुरंग हांफते, झाग गिराते आये और धमाकेके साथ रथ-को हमारे पत्थरके फर्शवाले भवनके पास ला खड़ा किया। वे बहुत जोरसे रुके। उनके खुरोंकी टाप अपनी गर्जनसे सारे स्थानपर अधिकारकी घोषणा कर रही थी। अर्जुन, तुम झन-झनाते हुए नीचे कूद पड़े, गाण्डीव तुम्हारी भयावह मुट्ठीमें था। मैंने तुम्हारा चेहरा देखा। मैं उठ खड़ी हुई। मैंने अपनी भुजाएं पसार दीं, मैं यह सोचने-के लिये भी नहीं रुकी कि कौनसे देवने मुझे अपने सिंहासनसे उठनेपर बाधित किया था। मेरे और उन आकस्मिक नेत्रोंके बीचमें युद्ध खड़ा था। मेरे जंगली सरदारोंमें-से एक-ने, जो औरोंसे अधिक निर्भीक था, तुमसे पूछा " सुन्दर चित्रांगदाके राज्यमें इस तरह धृष्टतापूर्ण चुनौती देते हुए घुसपैठनेवाले तुम कौन हो? तुम कौनसे अमर देवोंके देशसे उल्लसित चक्रोंपर आकर चढ़ाई कर रहे हो? आर्यवीर! लोग इतनी तेजीसे मृत्युकी ओर नहीं दौड़ा करते।" वीर, तुम्हारा चेहरा शान्त था, उस दुर्जेय चेहरेपर क्रोधका चिह्न तक न था। तुमने कहा "हां, मैं मृत्युकी ओर तेजीसे दौड़ रहा हूँ पर अपनी मृत्युकी ओर नहीं। यह न समझना कि मैं दुर्भाग्यका मारा हूँ क्योंकि तुम्हारा अकेला ही सामना कर रहा हूँ, मेरा नाम, उन हजारों निस्तेज लोगोंसे पूछो जिनका द्रुतगामी भय उन्हें मेरे अकेलेके आक्रमणसे न बचा सका। मेरे घातक मार्ग पर पड़नेवाले पहाड़ों और बंजरोंमें खड़े अपने उत्साहहीन सरदारोंसे पूछो। लेकिन मैं इस प्रदेशमें युद्धके लिये नहीं आया हूँ और न मानव सम्बन्धसे इन्कार करने वाले असत्कारशील, अमंगल लोगोंको मृत्युसे सज्जित करने आया हूँ। और भयकी आवश्यकताके बिना यदि भयसे मेरा परिचय होता मैं अकेला मनुष्य मनुष्योंसे मिलने आया हूँ। मेरे आनेकी सूचना रण-भेरियोंने नहीं दी और न सेनाओंने तलवारें चमकाई हैं। मैं वही लेने आया हूँ जो सामान्य मानव सम्बन्धोंसे स्वीकृत है।"

विदुला

15-21

विदुला

(महाभारतके उद्योगपर्वका विदुला आख्यान बहुत प्रसिद्ध है। श्रीअरविन्द-ने उसके आधारपर अंग्रेजीमें विदुला नामक एक लम्बी कविता लिखी है जिसका अपना ही सौन्दर्य है। हम श्री अरविन्दकी कविताके आधारपर यह आख्यान दे रहे हैं)

युवारूपेण सम्पन्नो विद्ययाभिजनेन च।
यत् त्वादृशो विकुर्वीत यशस्वी लोकविश्रुतः॥
अधुर्यवच्च वोढष्यो मन्ये मरणमेव तत्।

(महाभारत उद्योगपर्व)

"तू रूप, यौवन, विद्या और कुलीनतासे सम्पन्न है, यशस्वी तथा लोकमें विख्यात है। तुझ जैसा वीर पुरुष यदि पराक्रमके अवसरपर डर जाय, भार ढोनेके समय बिना नथे हुए बैलके समान बैठ जाय तो मैं इसे तेरा मरण ही समझती हूँ।"

सुनो, पुराने समयमें युवक संजय और उसकी अपराजिता मां विदुलाकी बात-चीत सुनाता हूँ।

राजोचित रूप और चरित्रसे विभूषित, अग्नि-शिखा-सी, निर्भीक, आंधी-
जैसे अबाध हृदयवाली इस राजरानीकी कीर्तिसे राजसभाएं गूँजती थीं।
गौरव शालिनी, वाक्पटु और विदुषी होनेके साथ-साथ वह क्रांतदर्शी भी थी।

सिन्धुराजसे पराजित, सिंहासनसे वंचित संजय, निराश और उदास होकर लेटा हुआ था। अग्निमूर्ति विदुलाने जलते हुए नेत्रोंसे पुत्रकी ओर देखा और उसे उठनेकी आज्ञा दी। आगकी चिनगारी-से शब्दोंके कोड़े मारने लगी। "बेटा, वह मेरा पुत्र नहीं, जो अपनी मांका हृदय आनन्दित न करे! देख, तेरे दुश्मन हंसी उड़ा-उड़ाकर विजयमत्त हो रहे हैं, यह देखकर भी तू जीना चाहता है? तू अपने वीर पिता-की संतान नहीं है, न मैंने ही तुझे धारण किया है; न जाने कहांसे भूली-भटकी एक क्षुद्र कायर और अस्थिर आत्मा निराशाभरे जगत्से यहां आ गयी है। हे उत्साह-विहीन अधम, निर्भीकता और साहसभरे संकल्पोंसे वंचित, पुरुषार्थहीन शक्तिहीन पामर, तू पुरुष कहलाने योग्य नहीं। तूने अपने पौरुषको लज्जित किया है। युद्धके हिनहिनाते उत्तम अश्वकी भांति उठ और अपनी धुरीको धारण कर। भयसे व्याकुल होकर तू शत्रुको महान् बना रहा है। तेरी भयभीत आंखें उसको आनंदित करती हैं।

तू एक राजाका बेटा है। क्या तू कभी भयसे कांप सकता है ? उठ, अन्तर्मनसे राजा बन, बड़े वेगसे चलते हुए पवनके विरुद्ध उड़ते हुए गरुड़की भांति उड़। उठ कापुरुष, उठ, इस तरह जमीनपर मत पड़ा रह। गौरवहीन होकर शत्रुकी खुशीको बढ़ाते हुए, मित्रोंको लज्जित करते हुए इस तरह मत कराह। छोटी-सी नदी जरा-सी वर्षामें उफनने लगती है, छोटा-सा चूहा एक दानेसे संतुष्ट हो जाता है; कायर जल्द ही साहस-से मुँह मोड़ लेते हैं। उठ, सांपके फनको अपने हाथोंसे कुचल दे। रोते हुए कुत्तेकी भांति सीधा मौतके मुँहमें मत जा, आकाशमें विचरते गरुड़राजकी भांति चुपचाप अवसरकी प्रतीक्षा कर या ललकारकर शत्रुको युद्धका आवाहन दे। वज्रपातसे, आहत-की तरह क्यों लेटा है ? उठ, कापुरुष ? उठ, चारों ओर शत्रु ताना दे देकर तेरा उपहास कर रहे हैं। लेटे रहनेका समय नहीं है। दुःखसे कातर होकर दोस्तोंकी सहानुभूति मत ढूँढ़। तलवारकी झनझनाहटसे दुनियाको चकित कर दे। भूल मत कि तू स्वामी है। सर्वोच्च स्थानपर तेरा अधिकार है। दासत्वको कभी न अपना। कुछ क्यों न हो, स्थिरतासे सहता चल। दहाड़ता हुआ अपने शिकारियोंपर झपट पड़। मशालकी भांति एक घड़ीके लिये ही क्यों न हो, प्रज्वलित हो उठ, मृत्युके डर-से धीरे-धीरे धुँआं उगलती हुई भूसीकी तरह मत सुलग। युद्धक्षेत्रमें कूद पड़। ऐसे शुभ कार्य करते समय हिचकिचाया नहीं करते। इस तरह लड़कर ही मनुष्य भगवान्के समक्ष बेझिझक खड़ा हो सकता है और आत्मग्लानिसे बच जाता है। विशालहृदय पुरुष मुकुट खोकर भी निराश नहीं होता, शरीरके अस्तित्वको तुच्छ जानकर वह लड़ता रहता है। ईश्वरको साक्षी रखकर स्वर्ग प्राप्त कर। तू वीर कहलानेके लिये जन्मा है। चमकती तलवारके प्रहार से अपना पौरुष दिखला। कापुरुष ! किस-लिये जिन्दा है ? तेरा यश नष्ट हो चुका, तेरे आनन्दविलासकी जड़ें कट चुकीं, तेरी पशुबलि और तेरे कुंए खोदनेके सत्कार्य निष्फल हो गये। मरना ही है तो आखिरी दम लेते-लेते दुश्मनकी जंघा पकड़कर उसे भी अपने साथ मौतके घाट उतार। रथ-के अश्वको युद्धक्षेत्रमें देख। जब रथ जमीनमें धंस जाता है तब वह क्रुद्ध होकर आत्म-गौरवसे हिनहिनाता और ऊपर उठनेकी चेष्टा करता है ? तू भी इस अवनतिसे उठने-का उसी तरह प्रयास कर। तेरा कुटुंब तेरी गलतीसे अपमानित और भ्रष्ट हो रहा है, तू उसका तारनहार बन। जिसके दैवी कामोंकी जनसाधारण आश्चर्यचकित होकर बातें नहीं करते उसके जीनेका अर्थ ही क्या है ? वह तो जमीनके ऊपर मिट्टी-का लौंदा-भर है। वह न पुरुष है, न स्त्री। जिसका अदम्य उत्साह और श्रम धनो-पार्जन, ज्ञान, सत्य या उदारतामें लगकर दुनियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक गुँज उठे वही पुरुष कहलाने योग्य है। द्वार-द्वारपर हाथ फैलानेवाले बेशर्म भिखारीकी

तरह दीन मत बन। ऐसी जिन्दगी रास्तेके कुत्ते जैसी, कायरतापूर्ण निकम्मी और क्षुद्र होती है। दयाद्र होकर लोग ऐसे प्राणीके आगे टुकड़े फेंकते हैं। मेरा बेटा क्षुद्र चीजोंसे संतुष्ट होनेवाला, राज्यसे वंचित, दुर्बल और निर्वीय न होगा। प्रेमहीन स्थानों-में भटकते हुए पराये दरवाजोंपर लोटते हुए अपने बीते जीवनके सुखके सपने देखना तुझे शोभा देगा ? एक बारके विख्यात कुलको अंधेरेमें डुबो देगा ? सचमुच मैंने मृत्यु और कलंकको ही जन्म दिया था पर मातृ-प्रेमवश यह सोच बैठी कि यह मेरा पुत्र है। जो प्रसववेदना सहकर भी धीर-वीरको जन्म न दे सके, केवल निर्वीय का-पुरुषसे ही अपनी कोखको लजाये ऐसी स्त्रीका वन्ध्या रहना ही उचित है।

"संजय ! संजय ! धधकती आगको धुँएंमें लुप्त न कर। भूखे शेरकी तरह भयंकर बनकर शत्रुका सत्यनाश करनेके लिये झपट पड़। पराजयका सामना करना, अपमानके प्रति असहिष्णु होना ही पौरुष है। जो दुःख झेलता है और दुःख देनेवाले-को क्षमा कर देता है, चुपचाप अपनी गर्दन को जुएके नीचे कर देता है वह नर कहलाने-के लिये अत्यन्त दुर्बल है और नारी कहलानेके लिये अति नीच। अस्थायी मन उठती लक्ष्मीको दबा देता है, झूठा आत्मसंतोष उसे जालमें जकड़ देता है, डर लक्ष्मीके पंख पकड़ लेता है और अति दयासे द्रवित हृदयमें निवास करना उसे पसन्द नहीं है। अपनी सामर्थ्यसे इन विघ्नोंको कुचल दे, गुलामीके रास्ते मत जा। हृदयको लोहे-जैसा दृढ़ बना, जो सचमुच तेरा है, जिसपर तेरा अधिकार है उसे प्राप्त कर। युद्धक्षेत्रमें कूद पड़। स्त्रियों जैसी दुर्बलता दिखाकर अपने पौरुषको लज्जित न कर। समुद्र-सा धीर-वीर जीवनके पथपर वैसे ही गर्वसे टहलता है जैसे सिंह पहाड़ी रास्तेपर, और नियति उसके पीछे-पीछे चलती है। विधिके अनुसार जब वह अपने निर्मित स्थान-पर पहुँचता हे तब उसकी प्रजा उसके महान् कार्योंके शिखरपर चढ़कर सुख और शक्ति पाती है। राजाको चाहिये कि आमोद-प्रमोदको ठुकरा दे, अपने क्षेम-कुशलसे मन हटा ले और शिकारीकी भांति प्रजाके लिये सौभाग्यका शिकार कर लाये। सुयोग्य मंत्री उसकी मदद करेंगे और हजारों उसके आनन्दमें भाग लेंगे।"

लड़का आश्चर्य और क्रोधके साथ बोला, "मां, अगर सारी दुनिया तेरी हो जाय पर मैं न रहूँ तो क्या तू खुश हो सकेगी ? सुन्दर वस्त्र, आभूषण, पकवान आदि तेरे पुत्रके अभावमें तुझे सुख दे सकेंगे ?" मांने उमड़ते आवेगके साथ उत्तर दिया, "जो अवसरको गंवाते हुए कहते हैं 'आज ही क्यों ? अभी समय नहीं आया' वे नरकमें जानेवाले ढीले-ढाले और डरपोक मेरे शत्रु भले बनें, मेरे मित्र नहीं हो सकते, जो अपने अन्दर बैठी आत्मा और उसके गौरवको पहचानते हैं और उच्चाशय लोगोंके साथ रहते हैं वही मेरे हो सकते हैं। आत्मगौरवसे वंचित, दूसरोंके टुकड़ोंपर पलनेवाले

क्या जीवित हैं ? ऐसा दीन जीवन मत अपना, मनुष्योंका सरदार बन, स्वामी बन। जैसे सब मनुष्य जीवनदाता इन्द्रकी ओर ताकते हैं वैसे ही ब्राह्मणोंको तेरी ओर ताकना पड़े। अपने बाहुबलसे जो मिल सके वही ले। जैसे हरे-भरे वृक्षपर तरह-तरहके पक्षी आ-आकर बैठते हैं वैसे ही जिसकी छायामें तरह-तरहके मनुष्य सुख-शांतिके लिये आते हों वही पृथ्वीपर ख्याति पाता है और परलोकमें इन्द्रकी भांति चमकता है। हाय, संजय ! तेरी बुरी दशा है ! तू यदि अपने पौरुषको खो दे तो तेरी हालत अधमों सी होगी और तेरा रास्ता सीधा नरकमें जा पहुँचेगा। दैवने जिस वीर कुलको एक दिव्य अग्नि प्रदान की थी उसी कुलका एक बालक क्या अपने महान् कार्योंके द्वारा उस अग्निकी ज्वालाओंको ऊंचा नहीं उठाना चाहेगा ? क्या तू सारे समय इस शरीर-को ही पकड़े हुए बैठा रहेगा। यह तो चोरी होगी क्योंकि वह आग्नेय शक्ति पृथ्वी-की गरिमा बढ़ानेके लिये दी गयी है। संजय ! मेरी बात सुन। सिन्धुराज पराजित देशपर जबर्दस्ती राज्य कर रहा है। प्रजाका हृदय उसके सामने झुका नहीं है। वे परदेशी धुरीसे घृणा करते हैं। दुर्बलतावश द्वेषसे भरे दुःखी व्याकुल बने बैठे हैं। मुक्तिकी आशा न देखकर दुःखोंके समुद्रकी खिन्न मनसे प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"विश्वासपात्र मित्रोंको इकट्ठा कर, बहादुर वीरोंको बुला। देशमें उग्र विरोध उत्पन्न कर और अपने हाथोंको और भी मजबूत बना। बीहड़ पहाड़ियोंपर चढ़ जा, जान-मालको ठुकरा दे, अपने मित्रोंको साथ लेकर गभीर घाटियोंमें आततायी दुश्मन-को मजा चखा दे। याद रख, न वह अमर है, न उसकी सत्ता हमेशा बनी रहेगी। क्या तुझे याद नहीं है कि दूरदर्शी सदियोंको भेदकर देख सकनेवाली दृष्टिवाले वृद्ध ब्राह्मण-ने कहा था कि तू गिरकर भी फिर उठेगा और संपत्तिका स्वामी बनेगा ? तेरा नाम संजय है, उसे सार्थक कर। मेरे पुत्र ! जिसकी विजयसे सबका कल्याण हो, देशकी उन्नति हो, वह हार नहीं सकता, क्योंकि उसके कदम भगवान्‌के संकेतपर उठते हैं, और हर कदम नियतिके साथ चलता है। पुत्र, ! लड़ते समय यह सोचना कि मेरे पूर्वजोंकी पंक्ति मेरे साथ चल रही है, सारी प्रजाके हुतात्मा वीर मेरी ओर ताक रहे हैं। क्योंकि मेरा गौरव उनका गौरव होगा और मेरी गुलामी उनका सिर नीचा कर देगी। संजय ! युद्धसे मुँह मत मोड़। समझ-बूझकर युद्धके लिये तैयार हो।

"कलकी सूखी रोटी कहांसे आयेगी, या कल खाना मिलेगा या नहीं यह न जानना—क्षत्रियोंके लिये इससे खराब या गर्हित स्थिति नहीं हो सकती। यह पत्नी या सन्तानकी मौतसे भी ज्यादा बुरी हालत है; क्योंकि वह विपत्ति आकर चली जाती है परन्तु यह जीवित मृत्यु-सी मन्द-मन्द चलती ही रहती है।

"मैंने एक महान् राजकुलमें पहली सांस ली थी। ध्वजा-पताकासे सुसज्जित

नौका जैसे एक समुद्रसे दूसरे समुद्रमें प्रवेश करती है वैसे ही मैंने विवाहकी लहरके साथ दूसरे कुलमें साम्राज्ञी बनकर प्रवेश किया। बड़ोंके आशीर्वाद मेरे साथ थे, मैं आनन्द-से भरपूर थी और अपने स्वामी द्वारा पूजित। मेरे संबन्धी मुझे संपत्तिवान्, आभू-षणोंसे लदी, कीमती वस्त्रोंमें लिपटी और मित्रोंसे घिरी देखकर खुश होते थे। क्या तू मुझे दीन और लाचार देखकर निश्चित होकर सांस भी ले सकेगा? जब तेरी पत्नी आंसू बहायेगी तो क्या यह घृणित जीवन सुखकर लगेगा? हमारे आचार्य और गुरु हमारा गृह त्याग देंगे और तू देखता रह जायगा? हमारे दास, सेवक जीविका-के अभावसे तुझे छोड़ देंगे तब तुझे कैसा लगेगा?

"वत्स! तेरे उच्च, गौरवशील कार्योंसे ही मैं जीवित हूँ। अगर वे समाप्त हो गये हैं तो मेरे हृदयकी शान्ति भी जा चुकी है, मेरा हृदय अन्तमें टूट कर रहेगा।

"जब ब्राह्मण देवता मेरे पास जमीन, सोना या चांदीका दान लेते आयेंगे तो क्या मुझे उन्हें खाली हाथ लौटाना पड़ेगा? तब लज्जासे मेरे हृदय-तंतु टूट जायेंगे। संजय! तेरे पिताके रहते तेरी मांके यहांसे गरीब खाली हाथ नहीं लौटे। हम हमेशा दूसरोंको शरण देते आये हैं। क्या अब हमें दूसरोंपर आश्रित होना पड़ेगा? मैं पाताल लोककी शान्ति पसन्द करके जीवन ही छोड़ दूंगी। सुन ले, मैं न दूसरोंके घर पांव रखूँगी, न उनकी भिक्षापर जिऊंगी।"

* *

"हाय बेटा! हमारी नौका मझधारामें डगमगा रही है, तू ही उसे किनारे लगा। हमारे असहाय नसीबको बचा। हम ऐसे मुर्दे हैं जिनमें जीवनका तार बाकी है। तू ही हमारा मुक्तिदाता बन; हमें इस जीवन्मृत अवस्थासे बचा।"

* *

"हे वीर, मरनेके लिये कृतसंकल्प हो। तब कोई भी शत्रु तेरा मुकाबला न कर सकेगा। दीनता और दुर्बलताको वर्षोंतक ढोते रहना कौन पसन्द करेगा? त्वरित मृत्यु उससे कहीं अच्छी है। सबसे शक्तिमान् शत्रुओंको चुन-चुनकर उनपर विजय पा जैसे इन्द्रने अनेक लोकोंके स्वामी वृत्रको जीतकर स्वर्गका प्रभुत्व पाया था। देख बेटा, सिंहके समान दहाड़ता हुआ वीर युद्धके कोलाहलमें भी अपने नामकी गर्जना करता हुआ आगे बढ़ता है। शत्रु-सेनाके व्यूह तोड़ता हुआ वह उनके नेताका संहार

करके सूर्यके प्रकाशकी-सी कीर्ति पाता है। उसके शत्रुओंके हृदय व्यथित हो उठते हैं और बिना चाहे भी उनके सिर झुक जाते हैं क्योंकि वीर अपना जीवन प्रचंड वेगसे युद्ध-क्षेत्रमें झोंकता है और मृत्युके सिरपरसे लम्बे डग भरता हुआ विजयकी ओर कूच करता है। डरपोक और दुर्बल उसकी प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये तरह-तरहके उपहार, सुगन्धित द्रव्य आदि ले-लेकर आते हैं।"

* *

"तू मृत्युसे डरता है? संजय! राजाओंका पतन हिंसक होता है क्योंकि समझदार विजेता चोट करनेके लिये दुश्मनके हाथको छोड़ नहीं देता या उड़नेके लिये उसके पंख सुरक्षित नहीं रखता। शत्रुके आतंक संजय! मैं तुझे रोते-बिलखते मित्रों, दहाड़ते दुश्मनों और धीमे कापुरुषोंसे घिरा हुआ नहीं देखना चाहती। राजाकी संतान! तेरी मुट्ठीमें स्वर्ग और साम्राज्य दोनों हैं। निडर होकर घमंडी शत्रुपर उल्का बनकर गिर। उसके हजारों बहादुरोंको भूमिपर सुला दे। संजय, राजा बनना स्वर्गीय सुख है और सत्ता शक्तिमान्‌के लिये अमृत है।

"सिन्धुराजकी कन्याओंके हंसी-मजाकका सामान बननेके लिये अपने राजकीय चिह्नको छोड़ न दे। पहलेकी तरह यौवनमत्त बनकर सिन्धुराजके मोतियोंको लूटकर उनसे अपनी रानीको सजा, उनकी कुलीन कन्याओंको रानीकी दासियां बना। राजकुलके लायक रूप और यौवनसे विभूषित, सुसंस्कृत महान् राजाओंके मित्र होते हुए तू अपने ओजस्वी, साहसिक स्वभावसे कैसे स्खलित हो सकता है? तू राजा होकर धरतीके राज्यके जुएको धारण करनेकी जगह मुट्ठीभर पराये अन्नके लिये औरोंके सामने मधुरभाषी बनेगा? उनके आगे दीनतासे सिर झुकायेगा? मैंने तेरा ऐसा पतन देखा तो यही समझूँगी कि मेरा पुत्र मर चुका है।

"नहीं मैं इस देशके राजाओंको पहचानती हूँ। वे इन पर्वत-श्रृंखलाओंसे भी अधिक दृढ़ और मजबूत हैं और हमारे पूर्वज ऐसे ही थे और जबतक धरतीपर गंगा बहती रहेगी तबतक हमारी संतानोंका स्वभाव भी ऐसा ही रहेगा। मैं जानती हूँ कि ऐसा एक भी वीर राजकुमार इस भूमिमें नहीं जन्मा जिसने दीन होकर, झुक-झुककर अपनी आजीविका कमायी हो। विशालकाय वृक्षकी नाईं वह टूट सकता है; झुकना नहीं जानता। अगर वह झुकता है तो साधु-संतोंको मान देनेके लिये, न्याय और धर्मके ही वश, वह किसी मनुष्यके वशमें नहीं रहता। यह ऊंच या नीच सभीके साथ दृढ़तासे व्यवहार करता है। मुसीबत बढ़ानेवालेको कठोर दंड देता है।

वह जो है वही रहता है, न झुकता है, न अपनी पताका गिराता है। मदोन्मत्त हाथी-सा वह पृथ्वीपर विचरण करता है और महान् पराक्रमसे नियतिको भी जीत लेता है। उसे कभी परवाह नहीं होती कि वह एकाकी है या सहायकोंसे घिरा।"

* *

"माँ, माँ, पाषाण-हृदयी, भगवान्ने काले क्रूर लोहेको लेकर उससे तेरा हृदय घड़ा है। मेरी साहसिक माँ, हमारे राजकुलकी नीति भयंकर, कर्कश और माधुर्य-विहीन है। तू मेरी माँ होकर भी मुझे युद्धमें ऐसे धकेलती है जैसे मैं किसी दूसरी स्त्री-की सन्तान हूँ। क्या मैं तेरा पुत्र नहीं? मेरे सिवा तेरा कोई और भी है? तेरी भाषा कर्कश और कठोर है। यदि समरांगणमें मेरा शरीर ठंडा पड़ जाय और इधर तू समस्त पृथ्वीकी स्वामिनी बन जाय तो क्या तेरा प्रज्वलित हृदय सुख पा सकेगा? तब जीवनके वैभव और सुन्दर वस्तुओंका क्या मूल्य होगा? जब तेरी दुःखी आंखें मुझे ढूँढ़ती फिरेंगी, तब क्या ऐश्वर्यके समस्त पदार्थ तुझे सांत्वना दे सकेंगे?"

परन्तु मांने अपनी अग्निस्वरूप आत्माको वाणी दी ——

"मेरे प्रिय पुत्र! दुःख-सुख जीवनके दो पहलू हैं; अपने कर्मोंको धर्मके अनुसार निभाना चाहिये। धर्म और काम दोनोंके अनुसार तुझे इस राहपर चलना चाहिये। तेरे जीवनकी उत्तम घड़ी आ गयी है। तू डरसे या दयनीय दशाके कारण इसकी अव-हेलना करेगा तो तेरे सौन्दर्यको कलंक लगेगा, तेरे सामर्थ्यका अपमान होगा।

"क्या तू आशा करता है कि जब तेरे माथेपर कलंकका टीका लगेगा तो मैं तुझे सांत्वना दूंगी? तब तो मेरा प्रेम मूढ़ खच्चर-सा अंधा और जंगली आवेग ही होगा। ज्ञानी लोग मूर्खों, कायरों और पापियोंकी राहसे घृणा करते हैं। उस राहपर मत चल।

"लोगोंकी आंखें स्नेहकी भापसे बन्द रहती है परन्तु मेरी आंखें बन्द नहीं हैं। तेरा धीर, वीर स्वरूप ही मुझे प्रिय है। तेजोहीन, अपूर्ण आत्मावाला, उच्चाकांक्षा-को समझनेमें असमर्थ पुत्र या पौत्र पिताके मनमें जुगुप्सा उत्पन्न करता है। उसे पुत्र-प्राप्तिका श्रम बेकार लगता है। जो झुकते हैं वे दुष्ट हैं, उनके लिये स्वर्गके द्वार नहीं खुलते, उनके लिये इस जीवनमें भी सफलता नहीं है।"

"संजय! क्षत्रियोंको उनके ईश्वरने इस दुनियामें इसलिये भेजा है कि वे युद्ध करें और विजयी हों या फिर मृत्युका वरण करें। अपने स्वभावसे ही अखंड श्रम और कठोर हृदयसे वे जनताके कल्याण-कार्यमें लगकर विजयी होते या मर जाते हैं। दोनोंसे ही वे इन्द्रकी दीदीप्यमान पुरीमें जाते हैं, फिर भी साहस और विजय, संघर्ष-

की आंधी, दुश्मनको पैरोंके नीचे कुचलकर जीवनके आनन्दकी मदिरा पीना, यह सब वीर पुरुषको इन्द्रपुरीसे भी अधिक प्रिय है।

"वह जबतक अपने कलंकित शरीरको फेंक नहीं देता या दुश्मनको कुचल नहीं पाता, उसका हृदय जलता रहता है, बदला लेनेके लिये तरसता रहता है। शान्तिके लिये यही एक मार्ग है।

"तू मुसीबतों और दुःखोंसे घबरा जायेगा ? वे तो पुरुषको शक्ति प्रदान करते हैं। जैसे गंगा समुद्रकी लहरोंमें विलीन होकर सुख पाती है वैसे ही आत्मा भी आनन्दके बिना नहीं रह सकती। और संघर्षके बिना उसे राहत नहीं मिलती। थोड़ेसे सुखके लिये भी दुःख उठाना पड़ता है।"

राजा संजयने हिचकिचाते-सकुचाते हुए फिर एक बार प्रयास किया।

"माँ ! तुझे ऐसी सलाह नहीं देनी चाहिये। आखिर मैं तेरा बेटा हूँ। औरोंकी तरह चुप रह। तू अपनी दया-मायाकी ओर देख; राजाके कठोर स्वभावकी ओर नहीं।"

"अगर तेरे विचार मेरी तरह गिद्ध दृष्टि रखते तो मुझसा सुखी संसार-भरमें कोई न होता। तू मुझे, स्त्रीको कोमलता सिखाता है ? मैं तेरे अन्दर पौरुषका गौरव जगाना चाहती हूँ। तू जब दुर्द्धर्ष संघर्षके बाद विजयको झड़प लायेगा, जब सिंधुराजकी सेना तेरे हाथों जीवन खो देगी तब मैं समझूँगी कि तू मेरी सन्तान है, तब मेरा वात्सल्य तेरी ओर झुकेगा।"

राजा संजय फिर बोला, "किन्तु मेरे पास एक भी आदमी नहीं है। मैं अकेला क्या संघर्ष कर सकता हूँ ? असहाय, दीन पतित अवस्था देखकर मेरा मन व्यर्थकी मेहनतसे भर गया है। पापी स्वर्गकी आशा न देखकर उसका विचार ही छोड़ देता है; वैसे ही मैंने धन, जन और हथियारके अभावमें प्रयासका विचार भी छोड़ दिया है। किन्तु माँ ! अगर तेरी ज्ञानशक्ति इस जालमेंसे निकलनेका कोई उपाय देखती है तो मुझे बता। मैं तेरी आज्ञाका पालन करूंगा।"

* *

"अपनी पराजयके लिये ग्लानी मत कर; बहादुर बन, हृदयमें आत्मगौरव जगा। सौभाग्य हमें ढूँढ़ता हुआ आता है और छोड़कर चला भी जाता है। जो लोग सारे समय सोच-विचारमें पड़े रहते हैं, अवसर आनेपर उसे झड़प नहीं लेते, किसी पूर्णताकी आशामें दिन गंवाते हैं वे मूर्ख हैं। जिससे सुनिश्चित परिणामका विश्वास हो ऐसा कोई कार्य दुनियामें है भी ? यहां अनिश्चितता ही निश्चित है। किसी

उच्च प्रलोभनके लिये मनुष्य पुरुषार्थ करता है; उसे जीतता है या प्रयासमें ही मृत्यु-की शरण चला जाता है। जो प्रयास नहीं करते, कार्य नहीं करते वे शून्यवत् हैं और उनको तिरस्कारका फल मिलता है। भाग्यकी पुकारको त्यागना निष्क्रियताका स्वभाव है। दुधारी तलवार-सी अभीप्सा या तो जीवनके सिंहासन पर बैठती है या सब कुछ गंवा देती है। जीवनको क्षणभंगुर समझते हुए उसकी अनिश्चिततामें विश्वास रखकर भी योद्धा प्रतिस्पर्धाके लिये दौड़ता है और अपनी ख्यातिको बढ़ाता है। पुरुष कहलाने योग्य व्यक्तिको निद्रामेंसे जागना होगा, उठना और संघर्ष करना होगा। मुक्त और महान् बननेका निश्चय करके भाग्यके भयंकर मुखसे मत डरो। तुम विजयी होनेका संकल्प करो, ऐसी प्रबल इच्छाशक्ति नियतिको जीती हुई वधूकी तरह अपने पास खींच लाती है। देवोंके आशीर्वादका आवाहन कर, ब्राह्मणोंकी कुशाग्र बुद्धिसे काम ले, राजाओंको हरावलमें रख, और तू लड़ता जा, तू लक्ष्यतक अवश्य पहुँचेगा।"

* *

"राज्यमें महत्त्वाकांक्षी वीर पुरुष क्रोधसे भरे हुए बैठे हैं, कई घमंडी कर्मठ मनुष्य हैं और कइयोंका परदेसी आततायीने अपमान किया है, फिर कई उच्च आत्माएं भी हैं। शान्त, साहसिक, ठंडी हिम्मतवाले, और अग्नि जैसे उग्र मनुष्योंको अपना, जिनके घर-द्वार लुट चुके हैं उनको साथ ले। शत्रुके विराट् सैन्यसे दब मत, उसके हथियारोंकी परवाह न कर।

"इन छोटी-छोटी चिनगारियोंसे सहायता ले। एक दिन जब हवा जोरोंसे चलेगी और तूफान आ जायेगा तब यही सब प्रचंड अग्नि बन जायेंगी; उनका सम्मान कर, जब वे मिलने कायें तो उठकर उनका स्वागत कर, उनसे मधुर वाणीमें बोल, वे तुझे अपना नेता बनायेंगे और तेरे लिये सब कुछ करेंगे।"

* *

"अजगर ग्रसनेके लिये दौड़ता है तब मनुष्य सांस खींचकर खड़ा रहता है, तेरा जालिम भी तुझे मृत्यु-भयसे मुक्त और युद्धके लिये तुला हुआ देखकर कांप उठेगा। वह तुझे शान्त करनेकी या दमनसे दबानेकी कोशिश करेगा। तू उस के जुल्म या कपटसे बच निकले तो वह शान्तिके लिये आदान-प्रदानसे समझौता कर लेगा। इससे

तुझे थोड़ा और समय मिलेगा और तेरा नाम भी होगा। तू थोड़ा धन इकट्ठा करके सैन्यको बढ़ाना। मित्र और सहायक धन-संपत्तिवान्के पास चारों ओरसे आते हैं, गरीबकी क्षीण स्थिति देखकर उसे छोड़ देते हैं; वे कहते हैं, 'उसके पास धन कहां है, उसके पास किसी कृपाकांक्षीपर उपकार करनेका अवसर ही कहां है?' जब तेरा शत्रु तेरे साथ नये-नये करार करके तेरा मित्र बनेगा तब तू देखेगा कि राज्य वापिस लेना कितना आसान है।"

* *

"नसीब कितना ही निराशापूर्ण क्यों न हो, भले मृत्यु नजदीक खड़ी हो पर राजाको, नेताको सिर न झुकाना चाहिये। अगर उसकी आत्मा निराश हो जाय तो उसे अपनी दुर्बलताको अपने अन्दर कैद रख, बाहरसे मुख प्रसन्न रख, और वीर बननेका अभिनय करना चाहिये। अगर सरदार ही डर जाय तो उसके अनुयायी भी डरेंगे,अतः राजाको हमेशा निर्भीक दृष्टि और शान्त स्वस्थ दिमाग रखना चाहिये।

'इस समय यह देश, इसकी सेना और इसके नीतिज्ञ दोनों ओर खींचे जा रहे हैं। कई परदेसी जालिमको मानते हैं, कइयोंने उसे छोड़ दिया है और अभी और भी लोग उसके अपमान और घमंडसे तंग आकर उसे छोड़ेंगे। कई ऐसे भी हैं जो तेरे मित्र हैं पर वे बेचारे शत्रुकी सेवामें हैं, उसका अन्न खाते हैं। वे तेरे दुःखसे दुःखी हैं और तेरे मंगलकी कामना करते हैं परन्तु रस्सीसे बंधे मूक प्राणीकी तरह अनिच्छा होते हुए, बाधित होकर उसकी सेवा करते हैं। तेरे कई पुराने साथी जिनका तूने सम्मान किया था, जिनसे स्नेह रखा था, वे जानते हैं कि राजा दुर्बल और हतोत्साह है फिर भी उनको देशकी अस्मितामें विश्वास है। ऐसे वीरोंको तिरस्कार करते हुए जाने मत दे। संजय! डर मत। मेरे योद्धा संजय, उठ, जीतनेकी आशा लेकर उठ। मैंने तेरे सोते हृदयको जगानेकी कोशिश की है, तेरे आवेश, तेरे सामर्थ्यको पुकारा है। तू भी जानता है कि मैंने जो कुछ कहा है सत्य है, निराश न हो।

"मेरे पास बहुत-सी संपत्ति है, बड़े-बड़े खजाने हैं जिनको मैंने छिपा रखा है; मेरा सब कुछ तुझे समरांगणके लिये मिलेगा। तेरे बहुतसे सहायक और मित्र छिपे हुए अवसरकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे ऐसे ही भीषण लक्ष्यके लिये मर-मिटनेको तैयार हैं। कोई दुःख उन्हें पीछा न ठेल सकेगा।"

इसी तरह अनेक प्रकारसे विदुला हिम्मत बंधाती रही और निराशाकी छाया संजयसे दूर हटती गयी और अन्तमें उसकी दुर्बलताकी जड़ता उसे छोड़ गयी।

"हे दृढ़निश्चयी माँ! तेरी वाणी सुनकर निर्बलतम आत्मा भी अपने अन्धकारको भगा देगी, तेरे शब्द उसे फिरसे पैरोंपर खड़ा कर देंगे। भूत और भावी तेरी आंखोंके इशारेपर निर्भर हैं। मैं तुझे गुरु बनाकर फिरसे अपने देशके गिरते भाग्यको उठाऊंगा। मेरा मौन और इन्कार सिर्फ ढोंग था। मेरे मौनसे उत्तेजित होकर तू ज्यादा-ज्यादा आग उगलती गयी और मैं तेरे एक भी दैवी शब्दसे वंचित न रहना चाहता था। असहायको सहानुभूति करनेवाला मित्र अमृतवर्षा-सा सुखकर लगता है। अब मैं शत्रुका ध्वंस करनेके लिये उठता हूँ और उसका अन्त किये बिना न रुकूँगा।"

युद्धका घोड़ा घायल होकर और भी स्फूर्तिसे दौड़ता है, उसी तरह गर्व और शक्तिसे भरा हुआ संजय भी मैदानमें निकल आया। मांके शब्दबाणोंसे बिंधा हुआ संजय उसकी आज्ञाका पालन करता हुआ शत्रुको भगा सका; अन्तमें अपनी प्रजाको परदेसी राजाके चंगुलसे छुड़ाया।

यह प्रख्यात और शक्तिशाली काव्य मनुष्यको देवता-तुल्य शक्ति देगा; उनमें युद्धक्षेत्रका वह्निमय आनन्द प्रकट करेगा। जब राजा राज्यको खोकर निराश और दुःखी हो जाय तब उसके मित्र और शुभेच्छुकोंको यह काव्य सुनाना चाहिये। जिनको उत्तम कार्यके लिये शक्ति चाहिये वे इसे रोज पढ़ें। वीर पुरुष इसे पढ़कर अग्निस्वरूप धारण करेगा और शत्रुका निकंदन करके अपना नाम अमर करेगा। गर्भवती स्त्री इसे रोज-रोज सुनेगी तो वीर-प्रसविनी होगी और शक्तिशाली पुत्र पायेगी जो औरोंकी सहायता करेगा या सद्गुणी पुत्रकी माता बनेगी या आत्मबल वाले महान् तारकको जन्म देगी। परन्तु एक राजरानी या वीरपत्नी पढ़े तो युद्धक्षेत्रमें अजय, दुर्दम, दीन-दुखियोंके त्राता किसी मानव-नक्षत्रको ही जन्म देगी।

उलूपी

उलूपी

सर्ग १

ऊंची उदास पूर्वीय पहाड़ियोंके नीचे पातालका प्रवेशद्वार है। वहां सूर्यके प्रकाशसे अपरिचित नदी भोगवती अपनी कुटिल लहरोंके साथ उठती है। उदास छायासे ऊब कर और सूर्यसे वंचित नरकोंके पासकी अनर्थकारी गुफाओंसे उकताकर उलूपी यहांकी विचित्र चमकती हुई बालूपर आया करती थी। वह ऊंची-ऊंची घासमें फिसलती हुई-सी चलती थी और उसका फन घासकी हरी नोकोंके ऊपर संकटपूर्ण सौन्दर्यसे चमकता था। बहुत बार वह लहरदार जलमें तैरती हुई दिखायी देती थी। उसके केश निरानन्द श्यामवर्णके थे और कपोलोंपर अरुणिमाका नामतक न था। एक कंधेकी लालिमा पानीमेंसे झलकती थी और दूसरा शुभ्र वक्ष आंखोंसे ओझल होता। तैरते हुए वह पश्चिमकी ओर देखते हुए सुदूर देवभूमि आर्यावर्तके बारेमें सोचती जहां रोज धूप खिलती है, जहां हल्की वर्षाको बुलाने वाले फूल होते हैं, तारों-भरी रातें, एक मैत्रीपूर्ण अन्धकार और ऋतु परिवर्तन होते रहते हैं। कई बार एक अस्पष्ट-सी आशाके साथ वह दक्षिणकी ओर टकटकी लगाये रहती थी।

पूर्वीय पहाड़ियोंमें बसी अपनी मणिपुर नगरीमें चित्रांगदा जागी और उषाको निरानन्द प्रभातकी भविष्यवाणी करते देखा। अपने कोमल अरुण-शुभ्र अंगोंको अर्जुनकी बांहोंसे छुड़ाते हुए उसने बाहरकी दुनियापर नजर डाली। सब कुछ उदास, धुंधला और आकारहीन था। उसके मनोभावोंमें उदास उत्तरी पहाड़ियोंकी भावना छा गयी, उसके वक्षपर आतंक छा गया, उसका हृदय अन्तर्दृष्टिके लिये खुल गया। उसने जलकी कराह सुनी और पीड़ाकी याद हो आयी। निस्तेज ज्योतिषियोंकी मनस्ताप देनेवाली भविष्यवाणियां उसपर मंडराने लगीं। अर्जुनको अपनी पकड़ खाली लगी। एक हाथके बल उठते हुए उसने धुंध और अन्धेरेमें उस चेहरेको खोजते हुए धीरे-से उसका नाम लेकर कहा 'प्रिये अनजन्मे दिनने तुम्हें कैसे बुला लिया? तुम इस धुंधले प्रकाशमें इस तरह गूंगी बनी हुई खड़ी हो मानों तुम्हारा आनन्द तुमसे बहुत दूर हो। आ जाओ इधर।' वह चुपकेसे आ गयी और झुककर अपना गाल उसकी छातीपर रख दिया। अर्जुनने आश्चर्यके साथ उसके आंसुओंको अनुभव किया। चित्रांगदाने कहा 'तुम मुझसे प्रेम करते हो और एक क्षणभरकी अनुपस्थिति तुम्हें कष्ट देती है, तुम नींदसे जाग उठते हो और इस तरह रिक्तताका अनुभव करते हो?

लेकिन हे भगवान् यह रिक्तता कितनी आसानीसे शीघ्र ही भर जाएगी ! तुम नगरोंमेंसे भव्य ज्वालाकी तरह घूमोगे और प्रदेशोंमें नक्षत्रकी भांति चमकोगे। अपनी वीरतापूर्ण शक्तिके मदमें मस्त सुन्दर आर्यावर्त देशमें रमते फिरोगे। नारियां तुम्हारा चेहरा देखकर कुतूहलके साथ तुम्हारे पौरुषपर मुग्ध हो जायेंगी और तुम्हारे चरणोंपर आ झुकेंगी। तुम उनके लिये एक ऐसे लापरवाह प्रतापके रूपमें आओगे जो स्त्रियोंके हृदयको ऐसे ले लेता है जैसे कोई रास्तेके पेड़का फूल तोड़ता हो। तुम्हारी ऊष्माभरी मुस्कान ऐसी होगी जैसे कोई देवता किसी मर्त्य कुमारीको अपनी बांहोंमें ले ले और अपने अमर मुखका उसके साथ परिणय कर दे। तब तुम्हारी नियति तुम्हें पकड़ लेगी और तुम आकाशकी किसी महान् ज्योतिकी नाईं अपने पीछे केवल अग्नि और शक्तिकी एक अद्‌भुत स्मृति छोड़ते हुए आगे निकल जाओगे। तुम अपनी आत्माको युद्धसे भर लोगे और भव्य विपत्तियों और भयंकर क्षतियोंको गले लगाओगे। तुम महान् हर्षातिरेकका अनुभव करते हुए अन्तमें किसी जगजाने सुदूर क्षेत्रमें साम्राज्य खड़ा करोगे या सब कुछ गंवाओगे और यह सब करते हुए निमिषमात्रके लिये भी मेरे भूले-बिसरे चेहरेको यादतक न करोगे।'

चित्रांगदा चुप हो गयी और रोने लगी। अर्जुन उसके बालोंपर हाथ फेरते हुए बोले -'चित्रांगदा, प्रकाश और अन्धकारके बीच बनते हुए धुँधले आकारोंकी ओर देखते हुए खिड़कीके पास खड़ी किस चिन्तामें मग्न थी ? फिरसे ऐसा न करना। उषासे पहलेकी घड़ी आनन्दहीन और भयानक होती है। जो अपने मधुर, ऊष्माभरे, प्रसन्न मानवीय कक्षमेंसे उस ओर झांकता है उसमें से ऐसी भयावनी स्मृतियां जाग उठती हैं जिन्हें वह पकड़ नहीं पाता, उसमें आकारहीन महान् दुःख सिर उठाते हैं, एक मौलिक उदासी-भरे बिस्तार, आनन्दहीन श्रम और दुःखपूर्ण अधूरे जगत्‌के भाव आने लगते हैं, फिरसे इन सबमें न पड़ना। अगर तुम अचानक इस अशुभ घड़ीमें जाग उठो और इस पांडुर दृश्यको अपने कमरेमें झांकते देखो तो मेरे वक्षसे अधिक सट जाना और अपनी आत्माके चारों ओर आनन्द लिये हुए चुम्बनोंके साथ जागना, तबतक सूर्यके साथ भगवान्‌का भी उदय हो जायगा। जीवित सूर्यका महान् तेजस्वी प्रकाश मर्त्य लोगोंके लिये मैत्रीपूर्ण होता है परन्तु यह पांडुर घड़ी धीरे-धीरे मरनेवालोंके लिये बनी थी जिनकी एकाकी उदास आत्मा उस उदास मटमैलेपन और मूक मित्रहीन सियापा करनेवालोंके नजदीक जा पहुँचती है।'

चित्रांगदाने कहा 'मैंने उषाकी ओर देखा तो मुझे एक स्वप्न नजर आया। तुम मुझसे दूर चले गये थे। मैं उन घोड़ोंकी टापोंसे भली-भांति परिचित थी, ऊपरमें तुम्हारे रथका विजयनाद दूर-दूरकी चीजोंके हृदयको कंपा रहा था। मैं यहां अपनी

इस विवर्ण खिड़कीपर अकेली बैठी अपनी नगरी और इन परिचित नीची पहाड़ियोंको देख रही थी। लेकिन ये तो केवल रंगे हुए चित्रों जैसे लग रहे थे। मैंने अपने चारों ओर उदास कुहासेवाले उत्तरी पहाड़ देखे जिन्हें दुःखभरी वर्षा अपनी भुजाओंमें लिये थी। मैंने मन्थर, सूर्यके आलोकसे अपरिचित अशुभ सरिताके जलको टेढ़ी-मेढ़ी धाराओंमें, भंवर बनाते हुए, उदास ध्वनिमें गिरते हुए सुना। मैं जानती हूँ कि तुम मेरे हाथसे निकल जाओगे और मेरे अन्दर सामर्थ्य हो तो भी मैं तुम्हें न रोकूँगी। अगर आज मैं तुम्हारे पैर पकड़ भी लूँ तो ऋतुओंके बदलनेके साथ तुम्हारे ऊपर शक्तिशाली जीवनका आवेग आयेगा और आंधीकी तरह तुम्हें प्रेमकी ओर, युद्ध और अनर्थकारी कार्योंकी ओर तथा उन घोर मनोवेदनाओंकी ओर ले जायेगा जो संसारको बनाये रखती हैं। ये चीजें तुम्हारे लिये उतनी ही सहज हैं जैसे हृष्ट-पुष्ट चीतेके लिये सुन्दरता और भयंकरता या स्त्रियोंके लिये प्रेम। वे भली-भांति जानती हैं कि प्रेमका अन्त होता है दुःख, फिर भी प्रेम किये बिना नहीं रह सकतीं। हां, तेजीसे बढ़ जाओ। तुम यहां व्यर्थमें क्यों अटके रहो। एक नारीके हृदयको दिलासा देनेके लिये तुम कुछ क्षण अधिक ठहर भी जाओ तो इससे तुम्हारे अन्दर भगवान्का जो आशय है वह कैसे पूरा होगा ? हो सकता है कि इस कारण तुम्हें अपने जीवनका कोई अमूल्य क्षण खोना पड़े जो एक बार उपेक्षित होनेके बाद फिर वापिस नहीं आता।' यह कहकर वह चुप हो गयी और पूरे वेगसे आंसुओंको रोकनेकी कोशिश करने लगी।

अर्जुन कुछ क्षण चुप रहे फिर उस धुँधले-से गौर वदनपर आंखें जमाते हुए बोले 'छोटी-सी प्यारी बच्ची, पहले तो तू प्रेम करने और चुम्बन पानेमें ही सुखी रहा करती थी लेकिन अब तो तू दुःख मना रही है। एक रातमें इतना परिवर्तन हो गया! तुझे उषाकालसे पहले मेरी भुजाओंसे निकलनेकी या दुःखभरे सपने देखनेकी आदत न थी। तू मेरे वक्षके लिये उत्सुक रहा करती थी और ताकता हुआ प्रकाश तेरी जबर्दस्त पकड़को मुश्किलसे ही छुड़ा पाता था। लेकिन अब तू मेरी अनुपस्थितिकी बात बड़ी आसानीसे करती है। क्या मेरा प्रेम मुरझा गया है ? प्रिये, क्या तुझे मेरी भुजाओंकी पकड़ ज्यादा ढीली लगती है ? नहीं, बलवान् और भयानक जातिपर अपने शुद्ध नेत्रों और सुकुमार मृदु हाथोंसे राज करने वाली हे मधुर युवा साम्राज्ञी ! तू जानती है कि जब मैं एक घुमक्कड़ राजकुमारके रूपमें केवल अपने साहस और अपनी तलवारको साथी बनाए हुए दूरसे इस पूर्वी मणिपुरमें आया था और यहां आकर तुम्हें पाया था, तबसे मेरा प्रेम कम नहीं हुआ, बढ़ा ही है। तुम मेरे बुलाते ही बिना ननुनचके आ गयीं, अपने महान् आसन और कठोर अधिकारोंको छोड़कर मेरे चरणोंमें रहनेके लिये और अपनी अलकोंपर मेरे चुम्बन पानेके लिये नीचे उतर आयीं, तुमने मेरी सीधी

सी भुजाओंके लिये अपनी राजसी करधनीका परित्याग कर दिया। हे सुन्दर युवा रमणी, तेरा प्रेम निष्कपट, विनीत और स्पष्ट था। जैसे फूल सूर्यकी ओर खिलते हैं उसी तरह तेरा प्रेम अपनी सुगन्धके साथ मेरी ओर खुला था, तूने अपना सर्वस्व मुझे अर्पित कर दिया। और अब तू विचारों और दुःखोंमें पगे मनकी-सी दुःखभरी बातें कर रही है।'

अपने हाथोंसे चित्रांगदाके वक्षको ढकता हुआ वह चुप हो गया। चित्रांगदा हकलाती-सी रुक-रुककर बोली 'जब तुम दूर होते हो तो क्षणोंका भी अन्त नहीं आता, रातें दुःखसे पीड़ित होती हैं। हाय, मेरा और उस पाण्डुर उषाका भाग्य, जब मैं धूसर घड़ीमें जागूँगी और अपने-आपको सदाके लिये अकेला पाऊंगी। लेकिन कैसा आनन्द और सौभाग्य है! हे वीर राजकुमार! हे धरतीके प्रबल समर्थक! हे विश्व-विजेता! स्वर्गमें भी जलते हुए अमर अधरोंने तेरे पैरोंका चुम्बन किया है, किन्तु मैंने तो तुमपर अधिकार जमाया है। भगवान् जानता है मैंने तुम्हारे साथ प्रेम किया है! साधारण स्त्रियोंकी तरह रुक-रुककर, अनिच्छासे थोड़ा-थोड़ा अर्पण करते हुए नहीं बल्कि एक बारमें ही पूरी खुशीसे झरनेकी तरह अपने-आपको अपने विजेताके चरणोंमें फेंका है। हे भगवान्! जब मैंने तेरे सौन्दर्यको देखा तो मैंने झट तेरे उज्ज्वल आकर्षणके हाथों अपने-आपको सौंप दिया, मुझे तुम्हारा चेहरा चन्द्रमाकी नाईं लगा जो समुद्रको अपनी ओर खींच लेता है। तुम मेरी सशस्त्र राज्य-सभाके आगे एक खम्बेका टेका लगाकर धनुष हाथमें लिये खड़े थे। तुम्हारी केशराशिमें पताकाकी शान थी। तुम आशाभरे और लापरवाह-से खड़े थे। तुम्हारा भव्य बलवान् चेहरा किसी देवताकी तरह चमक रहा था। जैसे कोई पुकारे जानेपर उठता है उसी तरह मैं भी आधी उठी। सारी मौन सभामें एक मर्मर ध्वनि फैल गयी। एक आवेश और गतिके साथ चिल्लाते हुए मेरे बर्बर सरदार अपनी भयंकर श्रद्धांजलि लिये तेरी ओर बढ़े। मैं अकेली परित्यक्त-सी बैठी रही। मुझे एक आहत-सी उदास प्रसन्नता हो रही थी, तुम्हारे प्रतापके लिये प्रेम उमड़ रहा था। मेरी हालत उस युवा सैनिक-सी थी की जो युद्धमें अपने श्रद्धास्पद वीरसे हार जाये। तुमने मेरा हाथ पकड़ लिया और ऊंचे मंचपर रखे प्राचीन सिंहासनसे नीचे ले आये। मैं आंखोंमें विनम्रता और आज्ञाकारिता लिये सकुचाती हुई चली।'

पराक्रमी अर्जुन बोले 'प्रिये, क्या उन राजाओंपर शासन करनेकी अपेक्षा एक नारीके लिये अपने प्राणनाथसे मिलनेवाला आनन्द ज्यादा मधुर नहीं है? क्या तू अछूते, अचेतन अंगोंकी अपेक्षा यह ज्यादा पसन्द न करेगी कि तेरा शरीर मेरे चुम्बनोंसे जाग उठे। तो फिर तुझे ऐसे स्वप्न लेने ही क्यों चाहिये जिनमें प्रेम बीचमें ही कट

गया हो और आनन्द परिणामहीन हो। इसकी जगह यह स्वप्न ले कि तेरा युवा अनुराग मातृत्वमें ऊष्माके साथ खिल उठे। जब मैं किसी बड़े युद्धसे तेरी भुजाओंमें लौटूं, तो तू आंखोंमें मातृत्वका मौन विस्मय लिये मेरे सामने हमारी अपनी रचनाको रख सके।' चित्रांगदाने एक धीमी-सी सिसकी लेते हुए कहा 'भगवान् करे ऐसा ही हो! मैंने तुम्हारे साथ प्रेम किया है पर मैं हमेशा जानती थी कि मैं तुम्हारे बड़प्पनकी, तुम्हारे गौरवकालकी सच्ची संगिनी नहीं हूँ। मेरा वह वक्ष है जिसपर युद्धके लिये जानेसे पहले तुमने टेका लिया था, वह चेहरा है जिससे तुमने प्यार किया था और फिर पीछे छोड़ दिया था। वीर, अपना धनुष उठा लो! योद्धा, उठो! और महान् लक्ष्यकी ओर बढ़ो। बहुत सी महान् आत्माओंमेंसे तुम्हें ही चुना गया था और तुम एक क्षणिक सुखके लिये तीव्र व्यथा और मुकुटका त्याग नहीं कर सकते। मैं तुम्हारे सुदूर प्रतापको देखा करूंगी, और शायद एकदम अकेली भी न होऊं। जैसे चरवाहे शान्त पत्तोंके नीचे ठहरकर सेनाकी विस्मयकारी यात्राको देखते हैं, घोड़ोंकी कर्णभेदी हिनहिनाहट, तेज रथ, कूच करते हुए प्यादे और शंखध्वनिको देखते-सुनते हैं और राजाओंकी आग बरसाती आंखोंको निहारते हैं उसी तरह मैं भी तुम्हारे पराक्रमोंको देखा करूँगी। शायद तुम्हारी विशाल नियतिकी कोई लहर तुम्हें यहां भी ले आये या फिर सब ही समाप्त हो जाये। वस्तुओंके लम्बे चक्रमें हम पहलेकी तरह फिर भी बदले हुए, एक-दूसरेके हाथमें हाथ डालेंगे और एक-दूसरेकी आंखोंमें विचित्र चिनगारियां और प्रेम की गहराइयां देखकर आश्चर्य करेंगे।'

वह मौन हो गयी। क्षणभरके लिये अर्जुनने अपनी आंखोंके आगे विशाल आर्यावर्तको अंकित देखा, उसकी नदियां, गगनचुम्बी पहाड़ियां, आकाश जैसे पुराने नगर देखे फिर चित्रांगदाकी ओर मुड़कर उसे अपने बक्षकी ओर खींचते हुए और उसे अपनी प्रशान्त शक्तिमें लपेटते हुए कहा - 'हां, यह सम्भव है लेकिन हे नारी, हे आनन्द, आनन्द मनाना न भूल! प्रिये, फूल मरते हैं, फिरसे जिन्दा होनेके लिये। इसलिये प्रेमको पकड़े रह, प्रेममें खिलते हुए अपने जीवनको मजबूतीसे पकड़े रह। स्पष्टतामें खिलनेवाला अत्यन्त सुकुमार फूल भी आत्माकी प्रगतिकी नियतिके गढ़नेमें सहायता देता है। इसलिये स्त्रीकी भूमिका भगवान्के अत्यन्त निकट है क्योंकि वह अमर नक्षत्रोंकी तरह एक ही गति बनाये रखती है और जिसके साथ प्रेम करती है उसमें स्थिर बनी रहती है। हमारी आत्माओंके भाग्यमें ही लिखा है कि वे अपने उज्ज्वल भागोंकी खोजमें हमेशा घूमती-फिरती रहें। उन्हें पाकर सशक्त हृदय अपने अन्दर संजो लेते हैं। मेरी आत्मा भले आकाशमें विचरते नक्षत्रोंकी तरह किन्हीं साहस-यात्राओंपर दूर चली जाय परन्तु हे शैलकुमारी, मैंने तेरे साथ जो प्रेम किया है, जिस तरह तेरे चरणों-

को चुम्बनोंमें फांस लिया है, वह व्यर्थ न जाएगा। जो कुछ पकड़में आ गया है उसे हाथसे न जाने दो। जो भाग्यके सामने झुकता है, जो भाग्यके या दुर्बलताके आगे झुकता है वह अपने महान् लक्ष्यको खो बैठता है। मैंने अपने हृदयमें तेरी स्थापना कर दी है और हे नवल नागरी, अब मैं तुझे आसानीसे न छोड़ूँगा। भले काल हमें एक दूसरेसे दूर करता चले और विचारोंकी परतें धीरे-धीरे शान्त और मधुर पारस्परिक सत्ताको ढक दें फिर भी पुराना आनन्द ठीक वैसे ही बना रहता है जैसे वाल्मीकि टीलेमें गड़कर भी, संसार द्वारा भुलाये जानेपर भी नाम-स्मरणमें लगे रहे थे। इसलिये चित्रांगदा, प्रेम करनेका एक क्षण भी न गंवाओ। आज एक क्षण खोनेपर पीछे पछताना पड़ेगा। जिस नियतिने एक बार मिलन करवाया था वही विछोह भी करवा सकती है लेकिन वह इन ऊष्माभरे चुम्बनोंका अर्थ नहीं बिगाड़ सकती।' यह कहते हुए अर्जुनने उसे पूरी तरह अपनी बांहोंमें लेकर आनन्द-विभोर कर दिया। उस समयके लिये छाया भाग गयी और आनन्द अपना अन्त भूल गया।

लेकिन एक उदास सवेरे चित्रांगदा उठी। उसका चेहरा पीला था। सुनसान धूसर रास्तेसे उतरती हुई वह अपने अस्तबलमें पहुँची और अपने छोटे-छोटे निपुण हाथोंसे अर्जुनके वायुवेगसे चलने वाले घोड़ोंको रथमें जोतने लगी। उनके हिनहिनाते मुखोंमें लगाम लगायी, जोतको ठीक किया, बागडोरको संभाला और फिर उन्हें उदास अन्धेरेसे आंगनमें ले आयी। फिर आंसुओंको रोके हुए, घोड़ोंको थाप दी और विचित्र प्रेम और घृणा मिश्रित दृष्टिसे देखती हुई बोली 'हे नियतिमें जुते घोड़ों, तुम ही उसे यहां लाये थे और तुम ही यहांसे ले जाओगे। तुम कितनी बार हमें धोखा देकर, अपने अयाल हिलाकर, नारियोंके हृदयोंको अपनी गरजती टापोंसे कुचलते हुए युद्धकी ओर ले जाओगे? और शायद तुम्हारी सन्तान उसे मेरे बुढ़ापेमें वापिस ले आये।'

इतनेमें अर्जुन आ गये। उनका कवचित अनुनादी पग उसके हृदयमें गूँज उठा। उनका कवच शीत आकाशमें चमक उठा, उनकी वीरोचित विशाल काया चारों ओरकी पहाड़ियोंके साथ मेल खाती हुई प्रतीत होती थी। उनके संगमरमरके चेहरे और प्रतापी नेत्रोंमें उनकी विस्मयकारी विशाल नियतिकी ज्योति महान् सूर्योदयकी भांति जगमगा रही थी। अपने-आप शान्त रहते हुए उन्होंने उसके कांपते हुए शरीरको छातीसे लगा लिया और एक भी शब्द बोले बिना, भाव-शून्य साक्षी आकाशके नीचे उसके विवर्ण ओठोंको चूम लिया और अपने रथपर चढ़ गये। वह बिलकुल नहीं रोयी, चुपकेसे चुम्बन लिये और दिये। अर्जुन चल पड़े। उनके रथके बड़े-बड़े पहिये प्रांगणके पत्थरोंपर गड़गड़ा रहे थे और वातावरणको रणनिनाद और विजय-ध्वनिसे भर

रहे थे। बाहर नगरके सरदार प्रतीक्षामें खड़े थे। उन्होंने रथको आते देखा तो अपने राजाके आगे झुक गये, वे एक शब्द भी नहीं बोले, बड़े संयमके साथ खड़े देखते रहे। उनकी कठोर बर्बर आंखोंपर कुहरा-सा छाया था। वे उन्हें इस तरह देखते रहे जैसे अन्धेरेमें रहनेवाले उस प्रकाशको जाते देखते हैं जो उनके जीवनमें थोड़ी देरके लिये आनन्द उंडेल गया था। वे घरोंकी ओर लौट पड़े परन्तु चित्रांगदा तबतक खड़ी ताकती रही जबतक अन्तिम गड़गड़ाहट भी विलीन नहीं हो गयी और युद्ध-पताका सुदूर पहाड़ी पर फहराकर शिखरके नीचे नहीं चली गयी और तब वह धीरे-से अकेली अपने कक्षकी ओर चल पड़ी।

ऋषि

ऋषि

सृष्टिके प्रारम्भिक युगोंमें, जब उत्तरी ध्रुव भूखण्डका अस्तित्व था, महाराज मनु, ध्रुवके ऋषिके पास ज्ञानकी खोजमें जाते हैं। ऋषि उन्हें ज्ञानके दूसरे परस्पर विरोधी पहलू दिखाकर चक्करमें डालते हैं और अन्तमें मानवके लिये विशेष रूपसे जानने योग्य ज्ञान प्रकट करते हैं।

मनु —— इन पुरानी पर्वत श्रृंखलाओंपर समाधि और सुषुप्तिमें, इन्द्रियोंकी अनुभूति या गतिसे मुक्त, हे ऋषि, आप आत्माके शुद्ध परमानन्दमें सुरक्षित रहकर स्वप्न देख रहे हैं! मेरी आवाज आपके अतल विश्रामस्थलतक पहुँचकर आपकी अगाध निद्राको भंग करे। सुनिये! आपकी हिमशीत विराट् शैयापर घनीभूत हिम-शिखर, और आपके ऊपर छाए हुए उदास, निर्जन और कठोर आकाश इतने तीक्ष्ण नहीं हैं कि आपके उष्ण अंग उनके कठोर उच्छ्वासको न सह सकें। वे इतने विशाल नहीं है जितनी जीवन और मृत्युके प्रति आपकी दृष्टि। उनकी रिक्तताको आपका तेजस्वी शान्त मानस पीछे छोड़ जाता है। लेकिन हमारे मन अंधाधुँध गतिमें ही मग्न हैं और हमने आपके प्रकाशको त्याग दिया है।

ऋषि —— हे सूर्य से महिमा-मण्डित वीर, तू कौन है? तेरी चालमें साम्राज्य है, और तेरी आंखोंमें प्रभुत्व।

मनु —— मुनिवर, आर्य प्रजाओंका स्वामी, राजा मनु आपका अभिवादन करता है।

ऋषि —— राजन्, मैं तुझे पहचानता हूँ, तेरी सतत जाग्रत तलवारको पृथ्वी दायके रूपमें मिली थी। महान् सूर्यके सुदूर प्रभामण्डलने सत्ताके क्षितिज पर तुझे जन्म दिया था जहां उत्तर ध्रुवकी ज्योतिवाला मंथर आकाश प्रभातका मार्गदर्शन करता है, जहां प्रदीप्त उषाएं स्वर्गकी सीमापर चकराती घूमती और बल खाती हैं; उसी उत्तरी ध्रुवकी गरजती लहरोंने तेरा जन्म देखा था। तेरी नियति यही थी कि तू परवर्ती भाग्योंका निर्माण करे, मानव-जातिको नया रूप दे। हे उद्दाम पहाड़ोंके साथ हिमाच्छादित मैदानोंके प्रहरी, मैंने भी तुझे अपनी सुषुप्तिमें देखा था, उस समय भी जब ध्रुवपर धीरे-धीरे पाण्डुर प्रकाश बढ़ता गया और तब भी जब अन्धकार एक जंगली जानवरकी तरह धीरे-धीरे टोह लेता हुआ आगे बढ़ रहा था और अपनी मन्द नीरव गतिसे आत्माको भयभीत

कर रहा था। राजन्, मैं तेरा उद्देश्य जानता हूँ क्योंकि नीचे से मानवको भगवान्-के साथ मैत्री-पूर्ण आलाप किये असंख्य रिक्त युग बीत चुके हैं। तुम नया जन्म लेकर व्यग्र मानवजातिके लिये, इस धुँधले, और असहाय पापोंसे पीड़ित युग-में खोई हुई ज्योतिको ढूँढ़ रहे हो। इस उत्तर ध्रुवीय प्रदेशकी तरह मृत्युने हमारी सत्ताके उन शीत भव्य प्रदेशोंको, जहां भगवान् निवास करते हैं, सुषुप्ति-के साथ मिला दिया है। विचारोंके कदमोंको ढकेल दो। हे राजन्, मैंने भी उस भगवान्को आंधियोंमें और ज्वार-भाटेमें ढूँढ़ा है, गरजती सेनाओं में और जहां समस्त प्रजाजनोंके ऊपरसे मृत्युकी सवारी निकलती है वहां भी उन्हें ढूँढ़ा है। क्रिया, विचार और शांतिसे प्रश्न किये, निद्रा और जाग्रत अवस्थामें पूछा, किंतु मुझे न उनसे सुख मिला, न गहन चिंतनसे। दया काफी मधुर या शुभ न थी कि मेरा संकल्प उसे रख सकता। कभी-कभी क्षणभरके लिये भगवान्को पा लेता तो आश्चर्य-चकित हो जाता था पर वे तुरन्त खिसक जाते थे। मैं उस परम आनन्द और शक्तिको अपने मानव बंधुओंके लिये रख न सका। अब सौन्दर्य मेरे हृदयको प्रसन्न न कर सकता था, चमक-दमक व्यर्थमें मुझे उस ज्योतिके दर्शनकी याद दिलाती थी जो सूर्योंके पीछे दीप्तिमान है। मुझे गुलाबकी समृद्ध सुगन्धसे नफरत हो गयी, थका हारा मैं, सूर्य और तारोंसे भी उदासीन हो गया। तब टूटे मनके साथ मुझे निगलती ज्वालाओंसे बचानेके लिये आयी अरुचिकर व्याधि, और मैंने पहाड़ोंके इन वीरान शिखरोंपर और हिमाच्छादित समुद्रोंके पास डेरा डाला। राजन्, आंखोंको चौंधियानेवाली इन अन्धी बरफों-ने मुझे नम्र बना दिया, मेरी उद्विग्नता ठंडी कर दी। अभिमान मेरे पीछे यहां न आ सका और चंचल इच्छा-शक्ति भी आना जाना न कर सकी; मेरे अन्दर मन बरफ जैसा पवित्र, शान्त और निश्चल बन गया।

मनु —— ओ तुम, जो दुर्जेय रथों और धनुषके साथ रह चुके हो! क्या इस शीत, शब्द-हीन, श्वेत और अपरिवर्तनशील पहाड़ीके पास मानवजातिसे अधिक समर्थ उपस्थिति और अधिक गहरे रहस्य हैं? क्या जनसमूहोंकी, नगरों और गावों-की ऊष्माभरी मर्मर ध्वनि, सूर्य और वर्षा, पानी भरनेके लिये जाती गावों-की कन्याएं, सन्तुष्ट गायोंके झुँड, ग्वाल बालोंकी ध्वनि, असंख्य पक्षियोंका कलरव, क्या ये सब हृदयके साथ अधिक स्पष्ट वाणीमें नहीं बोलते, अधिक सूक्ष्म शब्दोंका वहन नहीं करते? यहां तो बस मूक महारात्रि और अचेत, मृत और भयानक दिवस है।

ऋषि —— बहुतोंकी आवाजें सुननेवाले कानोंको भर देती हैं और दिमागको विचलित

कर देती हैं। वह एक मौन है, हम हिम-शिखरोंपर मौनका पदचाप सुनते हैं।

मनु —— हिमाच्छादित मैदानपर त्यौरियां चढ़ाती चट्टानोंसे आपने क्या पाया?

ऋषि —— हे राजन्, मैंने इस शरीरके मरणकी अवज्ञा की। एक छिपी हुई शक्ति थी, जिसने मुझे ऊपर उठा लिया। हमारी कामनाओं द्वारा निर्मित मोहक बाधाओंसे उन्मुक्त हो, मेरी आत्मा नक्षत्रोंमें उड़ती हुई भगवान् को खोजने लगी।

मनु —— ओह, तो क्या भगवान्, मिल गये? मार्ग के किस उज्ज्वल क्षेत्रमें मिले?

ऋषि —— स्वर्गीय घुमक्कड़ोंसे मैंने भगवान्का निवास-स्थान पूछा।

मनु —— क्या ओजस्वी शनि और उनकी रंगीन कलाएं आपकी उड़ानका निर्देशन कर सकीं?

ऋषि —— सूर्य कुछ न कह सका, और न कोई नक्षत्र ही अपने प्रकाशके स्रोतको जानता था। मुझे ज्ञान प्राप्त न हुआ हालांकि मैं धरतीके पार, शून्यमें भी ताकता रहा। मैं कालकी पतली ध्वनिको भी लांघ गया, शेषशायी दिव्य प्रभुके अनन्त समुद्रतक जानेकी कोशिश की, किन्तु युग और काल भगवान्से अंधाधुंध टूट निकलते हैं, और देश अपना उद्गम भूल जाता है। तब मैं लौटकर वहां आया जहां अमर अजरकी स्वर्गीय जाति ज्योतिर्मय विश्राम करती है।

मनु —— देवोंने आपको बताया? क्या वरुण देवने परम प्रभुका मुख देखा है?

ऋषि —— वे लोग भगवान्का पता कैसे देंगे जो पाप पर आश्चर्य करते हैं और दुखपर मुस्काते हैं?

मनु —— क्या भगवान्ने आपका भार हल्का करनेके लिये अपने आनन्दमग्न देवदूतोंको नीचे नहीं भेजा?

ऋषि —— देवदूत जो उनके तेवरोंसे डरते हैं, उन्हें नहीं पहचानते। उनकी निश्चित धारणाएं हैं।

मनु —— क्या सनातन प्रकाशका कोई स्वर्ग नहीं है जहां ईश्वर प्राप्त हो सके?

ऋषि —— त्रिमूर्तिके स्वर्गोंमें तेजस्वी जीव रहते हैं। उनके द्वार गोल हैं। मैंने उन धन्य प्रदेशोंकी, उन विख्यात पहाड़ोंकी यात्रा की है। विष्णु भगवान्के बैकुंठमें मेरे पांव पड़ चुके हैं जहां विशाल प्रेम अपना नीड़ बनाता है।

मनु —— क्या वे ही परम तत्व नहीं हैं? क्या वही नीले पंखोंवाले शान्तिके कपोत और शुभके जनक नहीं हैं?

ऋषि —— न, ब्रह्मा भी नहीं, यद्यपि सूर्यों और पर्वतोंको तथा समुद्रोंको उनकी संतान कहा जाता है।

मनु — तो क्या ईश्वर एक स्वप्न है ? क्या स्वर्गीय तट मृग-मरीचिका मात्र है ?

ऋषि — मैं शिवके शिखरपर गया; उड़ते भूत मुझे अन्दर घसीट ले गये।

मनु — तो फिर भगवान् वही है जिसे तिरस्कृत, परित्यक्त पापके प्राणी ढूँढते हैं ?

ऋषि — वे सत्ताके महिमा-मंडित शीर्ष-स्थानपर विराजमान थे, वह अग्निका एक विशाल शिखर था।

मनु — क्या वे आंसुओंसे और कामनासे छुटकारा पानेका रहस्य जानते हैं ?

ऋषि — उनकी शांत दारुण ध्वनि ही वह आखिरी फुसफुसाहट है जो नीरवताके कानोंतक पहुँचती है।

मनु — तो क्या मौन ही हमें बुलाता है और हमें घेर लेगा ?

ऋषि — हमारा सच्चा आवास यहीं है और इस मनोरम मन्दिरमें उन्होंने भगवान्‌की प्रतिष्ठा करना पसन्द किया है।

मनु — तो आपने व्यर्थ ही असामान्य नक्षत्रोंकी यात्रा की और गगन-मंडलको छाना।

ऋषि — राजन्, व्यर्थ में नहीं। मैंने जाना कि वे उबानेवाले बन्धन जिनसे मैं भागा था, उसीकी भुजाएं थीं जिसे मैं ढूँढ रहा था। मैंने देखा कि धरती उनकी सत्तासे कैसे बनी। मैंने उस सत्य, ऋत् और बृहत्‌को भी जाना जहांसे हम आये हैं और जो हम हैं। मैंने युगोंको अपना इतिहास फुसफुसाते सुना और उस शब्दको भी जाना जो सूर्योंकी रचना करनेके लिये अनगढ़ क्षमताओं और सामर्थ्यमें ढाला गया था। अनन्त आकाशमें और कालके लौह पंखोंपर एक ताल चलता रहता है और हमारे जीवन उसीके पीछे चला करते हैं। जो राग अब भी कराहता हुआ, लड़खड़ाता हुआ चलता है, वह जबतक सपूर्ण न हो जाय, तबतक हमें इस हरियालीपर मिलते रहना होगा, और इसी तालपर चलना होगा।

मनु — क्या पृथ्वी भगवान्‌का आसन है ? यह अशक्तिरूपसे निर्मित शरीर उनकी तुच्छ कारा है ?

ऋषि — मैंने भौतिक तत्वको एक जीर्ण वस्त्रकी तरह दूर फेंक दिया। भौतिक तत्व मर चुका था।

मनु — ऋषियोंने सबके पीछे स्थित प्राणशक्तिकी बात बतायी है। क्या वही भगवान् है ?

ऋषि — प्राण-शक्तियां मनुष्योंके अन्दर घूमती हैं किन्तु हवाकी तरह।

मनु — तो क्या मन ही सम्राट्‌की तरह सुख और दुखका नियंत्रण करता है ?

ऋषि — मन भगवान्‌का मोम है जिसपर वे नाम-रूप लिखते हैं और मिटाते हैं।

मनु — क्या विचार ही वह नहीं है जिसकी अमर आंखोंको काल निष्प्रभ नहीं कर

सकता ?

ऋषि —— महाराज, उस निःशब्द ध्वनिने मुझे विचारके स्वच्छ स्वप्नसे भी ऊपर उठनेका आदेश दिया। ज्योतिर्मय रहस्यकी गहराईमें, चीजोंकी मूक गहनता-में, जहां न वीणा या मुरलीकी लहरें स्पंदित होती हैं और न गानकी कोई ध्वनि उठती है। वहां न तो प्रकाश है और न हमारा अन्धकार ही है, न चमकती चपला है न घन-गर्जन। शुभ्र प्रज्वलित आनन्दके स्थिरगहन मर्मस्थलमें, उस दिव्य गुफामें जिसे लोग स्वर्ग कहते हैं, वह हमारे सबके अन्दर ही निवास करता है और किसीमें भी नहीं है।

मनु —— ऋषिवर, आपके विचार धधकते सूर्य-से हैं जिन्हें आंखें देख नहीं पातीं। तब हमारी आत्माएं उस ओजस्वी महिमावान्की ओर निहारनेकी आशा ही कैसे कर सकती हैं, जो अपनी नित्यतासे कुछ किरणें देकर सारे संसारको आलोकित करता है ?

ऋषि —— तो, हे आर्य, अपने-आपको देखनेकी हिम्मत करो, तुम ही वह हो। न तुम हो, न मैं हूं, मैदानके पशु-पक्षी या मनुष्य भी नहीं हैं। सब अनेक कोणोंवाली ढालपर चलते-फिरते चित्रपट मात्र हैं। इसीके पंख हैं और यही जहरीली जीभसे फुंफकारता हुआ कुंडली मारे बैठा है। हम अपने-आपसे प्रेम करते हैं, और अपने-आपसे ही घृणा करते हैं, हम दुख-दर्द और नीरस परिश्रम द्वारा तोड़ते-मरोड़ते जाते हैं,कष्टोंसे अपनी हत्या करते हैं या अपनेसे जीतकर परछाई-सी सफलता पा लेते हैं और इन सबके बीच, इस कोलाहल और शोरगुलके बीच आवाजें चक्कर काटती रहती हैं; कभी-कदास वीणाकी ध्वनि और समुद्रके ज्वार भाटेकी आवाजें आती हैं और हमारे सहज आकर्षणको वापस घरकी ओर बुलाती हैं। अनेक पांसेदार मनपर नाना प्रकारकी परछाइयां आती जाती हैं। परछाइयां अन्य परछाइयोंको देखती हैं। व्यर्थ आडम्बर ऊपर नीचेकी ओर चक्कर काटता रहता है, जब कि सबके हृदयमें एक सर्वशक्तिमान् भगवान् जिसे कोई नहीं पहचानता, अपना सिर हिलाकर बहुरूपी सेनाका संचालन करते हुए सब कुछ इस रूपमें देखता रहता है मानों एक ज्योतिर्मय दीवारपर क्षणिक, अर्ध-कल्पित सत्योंकी दौड़ लगी हो।

मनु —— हाय ! तो क्या जीवन मिथ्या है ? हमारे सुदर्शन, फुर्तीले लम्बे-चौड़े युवक, हमारी प्यारी सुन्दर स्त्रियां जिनकी कोमल आंखें तारोंसे भी अधिक चमकती हैं, मुनियोंके ध्यान, भव्य युद्ध, रक्तपात, आग उगलते संघर्ष, जकड़े हुए मृत हाथ, छितरी हुई आबादी, सैकड़ों देशोंमें नाना प्रकारके श्रम, ये सब

किसी उदासीन दर्शकको खुश करनेके लिये रचे गये मनोरंजन हैं ? जिस तरह एक गुलदानमें कमलिनी और गुलाब एक साथ, सफेद और किरमिजी की तरह घुलमिल जाते हैं और क्षणभरके लिये एक साथ दमकते रहते हैं, फिर कोई बिना परवाह किये मुरझायी पंखुड़ियोंको बाहर मिट्टीमें फेंक देता है, क्या उसी तरह सदाचारी अन्यायीके साथ रख दिया जाता है, क्या यही हमारी नियति है ?

ऋषि — हे राजन्, दृष्टि मिथ्या नहीं है, न शब्द ही मिथ्या हैं। डबरीमें तैरते घास-फूस और सूर्योंके महिमामंडित चक्कर, सभी सनातन विचारोंके रूप हैं। मनुष्य जिन चीजोंकी प्रशंसा करता है, और जिनसे बचकर रहता है; महिमावान् पदार्थोंमें और नीच पदार्थोंमें भगवान्का चक्र हमेशा घूमता रहता है। हे राजन्, कोई विचार व्यर्थ नहीं है हमारे स्वप्न तक ठोस और सारगर्भित हैं, हम कल्पना-में जिस प्रकाशको देखते हैं, वह किसी सुदूर नक्षत्रमें चमकता है।

मनु — ऋषिवर, क्या हम स्वप्न और वास्तविक दोनों हैं ? पास भी हैं और दूर भी ?

ऋषि — राजन्, हम स्वप्न नहीं हैं। हम स्वप्न देखते हैं, इसलिये डरते हैं और प्रयास करते हैं, हम सदा कवियोंकी तरह एक अद्भुत विचारोंकी सृष्टिमें रहते हैं, जिनके आकार हमारे अन्दर जन्म लेते, निवास करते और बढ़ते हैं। जैसे कवि अपने विशाल और क्रियाशील मनसे एक ज्योतिर्मय जीती-जागती सृष्टिको उत्पन्न करता है जो आकांशमें विचरती है, जिसके पात्र द्वेष करते हैं और प्रेम करते हैं, हंसते हैं, रोते हैं, मौज करते हैं, लड़ते-झगड़ते और चिल्लाते हैं, उसमें राजा, स्वामी और रंक, सुकुमार कन्या और किशोर, शत्रु और मित्र होते हैं, उसी तरह भगवान्का कवि मन अपने प्राणियोंको एक ठोस रूप देता है। जैसे, भागवत कवि प्रेरणाकी ज्वालासे अन्धा होकर, जबतक वह प्रेरणा समाप्त न हो जाय, अपने आपको भूला रहता है और अपने बनाये हुए आकारों और रूपों-में ही जीता है। उसी तरह उस परमकी आत्मा झंझा उत्पन्न करनेवाले पवन-की तरह प्रलयमेंसे तारोंको रूप देती है और व्यवस्थित आकाशमेंसे हरी-भरी भूमि और बर्फीले ध्रुव, तथा सागर और नेत्रोंसे भरे गगनको पैदा करती है और मधुर ध्वनियां सुनायी देती हैं। इसी भांति द्वेष और प्रेमसे भरी अद्भुत आत्मा वाले मानवको और पशु-पक्षियोंको, जन्म देती है। इन सारी सृष्टि-योंको और इस वृहद् आकाशको भगवान् एक ही शब्द द्वारा रचते हैं। ये सब चीजें उन्हींका रूप होनेके कारण सत्य हैं, फिर भी वे हैं स्वप्नवत् क्योंकि यहां भगवान् अपनी उस सत्तामें जागते हैं जिसे वे अपने सर्जक रूपमें भूल चुके थे। लेकिन, राजन्, कुछ भी मिथ्या नहीं है, अनेक घूँघटोंके पार आत्माकी यह

ज्योति झलकती रहती है। भगवान्‌के स्वप्न सत्य हैं और उन्हींकी जय होती है। इसलिये राजन् भागवत कालमें अपने आपको सजाये रखो, और भगवान् में ही आश्रय लेनेवाले मनुष्योंसे प्रेम करो।

मनु -- जैसे भगवान्‌के आदेशसे नीलमणिकी तरह स्तब्ध समुद्रसे अलौकिक लहरें उठतीं और जब वह चुप हो जाय तब शान्त हो जाती हैं, हे ऋषि, क्या छिपी हुई परम सत्ता भी पदार्थों और मनुष्योंसे ऐसा ही करती है ?

ऋषि -- अब सत्य सुनो। आंखोंसे दिखते इस दृश्य जगत्‌के पीछे एक दूसरा जगत् खड़ा है और हमारे मुड़े हुए दिवा-स्वप्न उसकी तहोंमें सोते रहते हैं। स्वप्न अधिक वास्तविक हैं, लेकिन जब तक हम यहां जागते रहते हैं तबतक अवास्तविक दिखते हैं। हम वहींसे अपना मर्त्य जीवन और विचार लिया करते हैं। उसकी छुट-पुट किरणें यहां दृढ़ और ठोस बनायी जाती हैं जब कि उस जगत्‌में ये एक क्षणभंगुर कुहासेमें तैरते रहते हैं। राग एक परम स्वरपर उमड़ता हुआ गीतिमय भूल-भुलैया बना रहता है, मुग्ध दृष्टिको जकड़नेके लिये सौन्दर्यका सौन्दर्यपर अस्तव्यस्त ढंगसे ढेर लग जाता है और एक विचार दूसरे महत्तर विचारोंपर आलापता हुआ नक्षत्रों तक जा पहुँचता है। यह जगत् वही स्वप्नलोक है जहांसे हमारी मानव जाति आयी थी। शरीरों की बाधाओंमें जकड़े, आवारा कदमोंसे चलते हुए, चिन्ताओंके भारसे झुके हुए, हम, उस परम उल्लासको व्यक्त करनेके लिये भगीरथ प्रयास करते हैं। उस परम सौन्दर्य, संगीत, विचारका एक छोटा-सा अंश भी बड़ी मेहनत कर के ला सकें, और अगर उसकी एक छोटी-सी स्वर-लहरी भी पकड़में आ जाय तो पृथ्वीपर हमें महान् परितोष मिलता है और वह तैरती, उड़ती सृष्टि क्षणभर के लिये रुकती है और हम उसमें पूर्ण स्वर और कर्कश स्वरको गले मिलते देखते हैं -- और फिर वह आगे चल पड़ती है। इस तरह हम आगे बढ़ते जाते हैं और अपनी यात्राके हर योजनको उत्सुक आंखोंसे देखते रहते हैं। हम विप्लवों और प्रतिक्रियाओंकी झंझा, मारकाट और दुःखोंके संघर्षके बीच आगे बढ़ते रहते हैं। हम मेहनतका फल नहीं पाते, हमें सफलता नहीं मिलती जैसे तूफानी समुद्रमें फड़फड़ाते पालवाली नाव किनारेकी ओर जी-जानसे जानेका प्रयत्न करती है, समुद्रका क्रुद्ध रूप उफन पड़ता है, फिर शान्ति छा जाती है, अनुकूल हवाएं चलने लगती हैं, फिर भी बन्दरगाह संध्याके धुँधले प्रकाशमें दूर चला जाता है और समुद्र युद्ध पर तुला रहता है : बस, इसी तरह का है मानव-जीवन। इस बातकी गांठ बांध लो कि यह महत् लीला, यह ओजस्वी संघर्ष तबतक चलता रहेगा जब तक

कि हम पूर्व निश्चित उद्देश्य को नहीं पा लेते। हमारा यह जहाज सदियोंसे इस लिये नहीं चल पड़ा है कि एक दिन चट्टानोंसे टकरा कर चकनाचूर हो जाय, या लहरोंमें डूब जाय। इसलिये, राजन्, राजा बनो, वीर बनो, और हवाओं-के थपेड़ोंमें, और गड़गड़ाते, गूँजते मेघ-गर्जनोंमें, तूफानी झंझाओंके बीच, पवन और लहरोंके प्रहारोंपर हंसते-हंसते आगे बढ़े चलो। बन्दरगाहतक पहुँचना ही होगा, हम चितासे उठते हैं, कब्रसे निकलते हैं, हम अपना भविष्य विगतकी इच्छाओंसे गढ़ते हैं, हम तोड़ते हैं, बनाते हैं। हम जिस संगीतको न ढूँढ़ पाते थे उसे खोज लेते हैं और उस विचारको परिपूर्ण कर लेते हैं जिसे अधूरा छोड़ा था। और मनसे उस अद्‌भुत उज्ज्वल समूहको निष्कासित करके उसे जीवित रूप देते हैं। अपनी शंकाओंको समाप्त कर दो। घावोंपर आंसू न बहाओ और उद्दाम तूफानोंसे डरो मत क्योंकि दुःख और दर्द मेघाच्छन्न आत्मा-की भूलें हैं। उसके पीछे रहनेवाले जीवपर इनका दाग नहीं लगता क्योंकि वह उन भूलोंके प्रति अन्धा होता है। यातनाएं, घृणा, पराजय और दुःख उसे शक्ति और उल्लास देते हैं। आनन्दके लिये ही उसने यह जीवन अपनाया है और अगर उसमें दर्दकी मिलावट भी होती है, तो उस रातमें जिसे हम दिन कहते हैं। राजन्, योगी जो अपनी सामर्थ्य से मनकी कल्पनाओंके परे यात्रा कर चुका है उन स्वप्न-सृष्टियोंको जानता है। क्योंकि वे सृष्टियां भी मात्र पर-छाइयां हैं, उनका भी अस्तित्व नहीं है — उनका आभास-मात्र है। उनके पीछे एक महान् उल्लासमय दिवस है जहांसे वे प्रवाहित होती हैं। वे लाखों सम्प्रदायोंके स्वर्ग हैं जो आनन्द और ज्योतिर्मय विश्रामसे भरे हुए प्राणियोंसे आबाद हैं। यही टकसाल है जिसकी हम आखिरी मुद्राएं हैं, ऐसे प्रतीक हैं जिन्हें दोहरे अक्षरोंमें छापा जाता है। वहां कोई यातना नहीं जकड़ती और न आनन्द अपने प्रवाहको सीमामें बांध सकता है,——मर्त्य सूर्यसे महानतर सूर्य-की स्वर्णिम हवामें अमर लोकोंके प्राणी उड़ते रहते हैं। किन्तु हमें मनको पूर्ण सुषुप्तिमें नीरव रखनेका साहस करना चाहिये। परम उल्लास के रखवाले सुवर्ण द्वार खोलें उससे पहले हमें इस स्थूल भौतिक हाड़-चामकी मांदको छोड़ना चाहिये जिसे हमें हमेशा रखना है। यह हमारा घर है और वह, हमारी छिपी आशा, जिसे हमारे हृदय खोजते रहते हैं। हम सब उन स्वर्गोंको धरती-पर उतारनेके लिये नीचे आते हैं और मानव जन्ममें उसके अंशोंपर प्रभुत्व पा सकते हैं। कभी-कभी युग संपूर्ण होते हैं और फिर, हठात् मधुर अन्तमें हम सारा-का-सारा रहस्यमय स्वर्ग धरतीपर बिखेर देते हैं। फिर ऊपर उठते-उठते

समस्त मानव जाति को परम उल्लासमय प्रेमके सदनकी ओर ले चलते हैं, उस तेजोमय महामानवकी ओर, जिसे हम ईश्वर कहते हैं। जिसकी ओर हम अपनी कमजोरियों, बुराइयों और दुःख-दर्द के बावजूद बढ़ते चले जाते हैं। वे स्वप्नकी सृष्टियोंके पीछे खड़े हैं, वे हैं और वे ही रहेंगे तब भी जब ये सृष्टियां व्यक्तिगत सुखों की ओर अन्धी हो चुकी होंगी क्योंकि राजन्, ये सृष्टियां भी परछाइयां ही हैं और उसी परम प्रकाशमें घुल-मिल जायेंगी जिससे निकली थीं। हम उस परम पूर्ण अग्निके स्फुलिंग मात्र हैं, उस समद्रकी लहरें हैं। हम भगवान्से आये हैं, भगवान्की ओर जाते हैं और सदा उन्हींकी कामना करते हैं। और जब तक उनकी इच्छा है हमारे पृथक् जन्म हैं और होते रहेंगे। हे आर्य, जीवनसे पीछे मत हटो, जबतक भगवान् कूचका आदेश न दें, आमोद-प्रमोदके साथ भगवान्के दिये अच्छे-बुरे, पाप-पुण्यको स्वीकार करो। लेकिन जबतक जीवित हो, अपनी भूमिका पूरी तरह निभाओ। पृथ्वीको मंच समझो और अपने-आपको समर्थ अभिनेता। और यह समझो कि नाटक भगवान्-का है। कर्मरत रहो· किन्तु कर्म-फल भगवान् ही के हैं जिनकी एकमात्र सत्ता है। कार्य करो, प्रेम करो, ज्ञान प्राप्त करो —— इसी तरह तुम्हारी जीवात्मा अमर-आनन्दको प्राप्त कर सकेगी। मनुष्यसे प्रेम करो, भगवान्से प्रेम करो। डरो मत प्रेम करते हुए। हे राजन्, भोग करनेसे मत डरो क्योंकि मृत्यु बस एक रास्ता है और शोक मूर्खोंको तंग करनेके लिये कपोल-कल्पित वस्तु। अपने-आपसे भाग निकलो और एकमात्र प्रेममें ही उच्चतर आनन्द खोजो।

मनु —— हे ऋषि, मेरा राज्य विशाल है और धरती मेरी आज्ञाका पालन करती है, और स्वर्ग अपनी स्वर्णिम दृष्टि सूर्यके उस पार खोलता है। किन्तु मैं उस निश्चल, पूर्ण एकमेव को ढूँढता हूँ, मैं सूर्यको खोज रहा हूँ उसकी किरणोंको नहीं।

ऋषि —— भगवान्को धरतीपर ढूँढो उन्होंने तुम्हारे लिये, उस मनुष्यकी सफलता-की गरिमाके लिये जो अपना ध्येय ढूँढता है, सृष्टियोंके शिकंजेमें आना स्वीकार किया। अपनी मानव सामर्थ्यको पूर्ण करो, जातिको सर्वांग संपूर्ण बनाओ। क्योंकि, हे राजन्, तत्त्वमसि, तुम वही हो। तुम्हारी अपनी इच्छासे तुम्हारी आत्मापर केवल रात छायी हुई है। उसे हटाओ और वह शान्त पूर्णता प्राप्त करो जो कि तुम वास्तव में हो, और तब प्रेमी मनुष्यको उसके चरम लक्ष्य, भगवान्के पास तक उठाओ।

-श्रीअरविन्द

उर्वशी

उर्वशी

सर्ग १

असुरोंके साथ संग्राम समाप्त हुआ। पुरूरवस अपार आकाशमेंसे होता हुआ स्वर्ग से धरती की ओर आते हुए तारेकी तरह चमकता हुआ, धीरे-धीरे पृथ्वीकी ओर चला। उसने मर्त्य-लोककी हवामें सांस ली, स्फुलिंग बिखेरते हुए दिव्य खुर चले, उनकी आवाज उनसे भी आगे चल रही थी। हरी-भरी वृहत् धरती उनका स्वागत करनेके लिये तेजीसे बढ़ी। उषाकी पहली किरणोंके साथ उसने बीहड़ चोटियोंको छुआ परन्तु वहां रुके बिना उन निचली चोटियोंपर आकर आराम किया जो वर्षा-के क्षेत्रमें पड़ती हैं। वहांसे उत्तरकी ओर देखते हुए उसने उन दानवाकार बरफीली चढ़ाइयोंको देखा जो आकाशसे बातें कर रही थीं। उसने एक विशाल नीरवताका अनुभव किया। उसके कानोंमें पीछे हटते हुए युद्धका कोलाहल, पहियोंकी गड़गड़ाहट, नरसिंघोंका प्रचण्ड नाद और सेनाओंकी अनिष्टकर कूचकी ध्वनियां गूँज रही थीं। इसलिये उसने बड़े आनन्दके साथ पर्वतोंकी इस अछूती अगम्य निस्तब्धताका माँके स्तन्यके रूपमें पान किया। जब वह इस मौनको सुन रहा था तो उसके मनमें एक विचार कौंधा और उसने मुड़कर पूर्वकी ओर निहारा जहां दिवसका जन्म हो रहा था मानों धुँधलेपनमेंसे किसी महान् काव्यकी एक पंक्ति धीरे-धीरे आदर्श वाणीमें प्रकट हो रही हो। बादलोंके पीछेसे धुँधला-सा स्वच्छ प्रकाश फिर से मोतियोंका रंग लेकर खिल उठा और धरती फिरसे प्रांजल हो उठी। आदिम उषाकी नवीनता फिरसे आ गयी, जीवन तीव्र शक्तिसे भर गया मानों स्वर्गसे उतरती हुई धारासे पुनरुज्जीवित हो उठा हो।

उसने विस्तृत होते हुए प्रभामण्डलमेंसे गति करता हुआ प्रभातका चेहरा देखा उसका रहस्यमय शरीर मानो ज्योतिकी भविष्यवाणीसे आवेष्टित था, वह पूर्ण भव्यता और दीप्तिसे भी अधिक समृद्ध था। सकल जीवनकी जननी और फिर भी निष्कलंक उषा उपस्थित थी। अरुण कपोलोंवाली उषा मधुर नीरवतामें आयी, नववधूकी तरह मन्द स्मितके साथ, उसका वक्ष फूलोंसे भरा था, प्रातः समीर उसकी केशराशिसे खेल रहा था और उसके चारों ओर सुनहरी आभा थी। वह अकेली नहीं आयी, उसके साथ सुन्दर खिलखिलाते चेहरे थे, स्वर्गकी कन्याएं थीं जिनका सौन्दर्य युद्धसे क्लान्त देवोंके श्रमको हरता है। वे पौ फटनेसे पहले सोना उछालती जा रही थीं। उनका

जन्म अमर सागरके यौवनमेंसे हुआ था और वे भी यौवनसे भरपूर और अमर थीं। उनके चरणोंमें समुद्रकी लहरें थीं और वाणी फेन-सी ताजी थी और उनकी आत्माओं-में प्रेमका सागर भरा था। वे हंसती हुई बादलोंमें दौड़ीं। उनकी अलकावली और उनके परिधान समीरमें झंझा ला रहे थे। उनसे सारा आकाश महिमान्वित हो उठा, उनके चरण अविराम रमणीयता थे और उनकी उत्फुल्ल आंखोंसे प्रभात झांकता था। उनके दिव्य चेहरे पवनके उद्धत चुम्बनोंके लिये पीछेकी ओरको झुके हुए थे। वे ओसकी नन्हीं बूँदोंकी तरह नाच रही थीं। मेनका, मिश्रकेशी, मल्लिका, रम्भा, नीलाभा, शीला, नलिनी, ललिता, लावण्या, तिलोत्तमा आदि उनकी सुखद नामावली थी। उनमें वह भी थी।

उसे देखते ही महाराज पुरूरवस कांप उठे मानों सौभाग्य और आनन्दसे डर रहे हों। जैसे महान् सागर आते हुए तूफानको देखकर आघातकी प्रतीक्षामें ऊपर उठता है उसी भांति राजा पुरूरवसका विशाल हृदय उसके आननकी प्रत्याशामें उमड़ने लगा। जैसे सूर्य अपने प्रचण्ड तेजमें छिपा रहता है उसी भांति यह चेहरा भी अपनी दिव्यतामें छिपा था, लहराती केशराशिमेंसे अपनी झांकी दिखाता था।

फिर कुछ समयके लिये राजा व्यथित होता हुआ मौन खड़ा रहा और उसके मधुर आगमनको, धरतीपर फैलते हुए उसके हास्य और आनन्दको देखता रहा। अन्तमें उसका आवेग वाणीमें फूट पड़ा जिसे वहांकी नीरवता ही सुन सकी। हे शक्तिशाली देव, तुम कौन हो जो मुझे आग्नेय हस्तोंसे पकड़ रहे हो और मेरी आत्मामें रंग भर रहे हो। मैंने सोचा था कि पहाड़ भले हिल जाएं, सनातन तारे अपने अपरिवर्तनीय चक्रों-को बदल डालें परन्तु पुरूरवस अपने मार्ग से न डिगेगा। परन्तु देखो, मैं गिर रहा हूँ। मेरी आत्मा अनजाने भंवरमें फंस गयी है और मैंने आश्चर्य के साथ बेलगाम घोड़ोंकी टापें सुनीं। लोग मेरे बारेमें कहते थे राजा पुरूरवस मनुष्योंसे ज्यादा विकसित होते जाते हैं। वह अपनी उच्चात्माको नील गगनतक उठाते हैं। अब मैं लुभावनी धरतीकी ओर क्यों गिरता जाता हूँ? और तू, कौन है, हे रहस्य, हे स्वर्णिम आश्चर्य, हे हृदयस्पर्शी मोहिनी! क्या तू उन मधुर मंगलकारी संध्याओंका भाग न थी जो मुझे बहुत प्यारी थीं? क्या मैंने तेरे सौन्दर्यको बादलोंमें, ज्योत्स्नामें, तारोंके प्रकाश-में और आगमें नहीं देखा? क्या तू ऐसा फूल है जिसकी द्युति कष्टकर होती है, एक ऐसा चेहरा है जिसकी स्मृति चित्रकी भांति हमेशा मेरे साथ रहती है, एक विचार है जो था तो मेरा पर खो गया है। तेरी वाणी किसी उपवनकी कुमुदनी और उसपर मधु-मक्खियोंके झुंडोंकी बातें करती हुई वसन्तकी ध्वनि है या चन्द्रिकामें स्नान करता हुआ नीरव जल है। निश्चय ही किसी पिछले जन्ममें मैंने तेरे नामसे प्यार किया होगा

और अब उसकी एक-एक मधुर ध्वनिको याद करनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

ऐसा लगता है कि सभी दृष्टिगोचर वस्तुओंका लालित्य, मौन, एकाकी बरफ और जलते हुए कठोर मध्याह्न, नगर, घाटियों और पहाड़ी हवाओंका —— धरतीकी सभी चीजोंका सौन्दर्य तेरे अन्दर मौजूद है, आत्माकी सभी राजसी अनुभूतियां तेरे अन्दर हैं। क्या तू इसलिये आ रही है कि मैंने शुचिताके लिये तेरी मोहिनीका परित्याग किया था ? क्या तू सौन्दर्यके द्वारा अपना बदला लेने आ रही है ? आ, अपने-आपको ज्योतिके अवगुंठनसे मुक्त कर, हे असीम लावण्य, अपने आपको सीमित कर ताकि मैं तुझे पा सकूँ, पकड़ सकूँ। मैं अपने हृदयकी गहराई में जानता हूँ कि तेरा नाम कुछ इस तरहका है जो स्वभावत: मेरे नामके साथ मेल खाता है और मैं देख सकता हूँ कि हमारा परिणय जादुई रूप से इतना ही अनिवार्य है जितना वेदकी ऋचाका सम्पूर्ण होना। हे देवी, मेरे हृदयमें अपने चरण रखो, हे नारी,मेरे वक्षकी ओर बढ़ो। हे उर्वशी, मैं पुरूरवस हूँ।

जैसे सपनोंको भूलकर आदमी सवेरेके धुँधलेपनमें उठता है और जीवनसे जरा खीजते हुए अपने चिरपरिचित विचारोंसे घृणा करते हुए, सामान्य सुख और चिन्ता-ओंको हटाते हुए स्वप्नके आनन्दातिरेकको पानेकी कोशिश करता है और व्यर्थ संघर्ष करते हुए उसके कष्टकर विचार अपरिचित मार्गोंमें भटकते हैं, अचानक बिजली-सी कौंध जाती है और दृश्य मस्तिष्कमें चमक उठता है, उसी तरह पीड़ित राजाके ध्यानमें वह नाम चमक उठा। वह खुशीके मारे चिल्ला पड़ा और अपने घोड़ोंको चाबुक लगाया। वे पिछले पैरोंपर खड़े होकर ऊंचे हिमालयसे कूद पड़े और दक्षिणकी हवा-को रौंदने लगे। सुन्दरियोंकी भीड़मेंसे भय और कातर आश्चर्यकी एक चीख उठी। बाजके अनिवार्य पंजोंको देखकर, भयंकर पंखोंकी आवाज सुनकर जैसे पेंडुकियोंका दल घबरा कर सिमट जाता है —— उनकी वही दशा थी। उन्हें राजाका डर न था, उसपर तो अभी तक नजर न गयी थी। भय उत्तरकी ओरसे आ रहा था। पुरूरवसने दूरसे बादलोंकी हल्की सी गरज सुनी। उसे जरा क्रोध आ गया। सुदूर वायव्य दिशा-में गगन स्तब्ध खड़ा था, विषाद सघन हो रहा था, अन्धकार अन्धकारमें छिपा था, मानो एक अमंगल आकाशसे दूसरे अमंगल आकाशपर बादल छाते जा रहे थे मानो वे सारे प्रकाशको दफना कर रहेंगे। इस ओरसे उस ओरतक कड़कती फुसफुसाहट फैल गयी और बिजली थरथरा गयी —— एक हिंस्र पीलापन छा गया। भयभीत मलयानिल रुक गया। उदात्त, विशाल, नीरव मेघ क्षणभरके लिये वर्षाकी चुनरी ओढ़े हुए, वज्रको अपने अन्दर संभाले खड़ा था। हृदय कबका शान्त था, कान सुनने-के लिये कान लगाये थे। जैसे गति-शून्य सेनामेंसे निकल कर घुड़सवारोंकी टुकड़ी

तेजीसे छितरा जाय उसी तरह उस सुरमई पुंजमेंसे एक नाजुक-सा हल्का मेघ आकाश-को चीरता हुआ निकला। उसके पीछे हरिताभ रेखाओंमें मूसलाधार वर्षा चली आ रही थी। स्वर्ग के महान् गरुड़की तरह तमकी सुन्दर सराहनीय अराजकता तेजीसे बढ़ी और बढ़कर टूट पड़ी। वह वर्षा के गर्जन और कोलाहलके साथ, पवनके पंखोंपर सवार होकर, पराजित क्षितिजको जकड़े, घन-गर्जन और तड़िच्छटासे शरीरको तोड़ती हुई आंखोंके बीच असह्य विद्युत लिये हिम-रहित पहाड़ियोंपर टूट पड़ी और एक ही झपट्टेमें उषाको लील गयी। पुरूरवस विस्मय के साथ बढ़ती हुई उत्तेजनाको देखता रहा। उसे लहराती केशराशि, जंगली चेहरे, भयावनी हिंस्र आंखें परिचित-सी लगीं। उसने फिरसे नजर डाली तो पता चला कि यह तो केशी राक्षस था जो सैकड़ों लड़ाइयों-में उसके साथ टक्कर ले चुका था। लगता था कि अभी कल ही तो उसने लड़ाईकी लहरोंमें इसके साथ क्रोधभरी आंखें चार की थीं। वह वर्षा के धुँधले केशमें आवेशसे भरा हुआ, सारे प्रदेशको अपने वृहदाकारसे भरता हुआ तूफानकी तेजीसे आया। स्वर्गकी वधुओंके पास खड़ा राक्षस असीम– सा लग रहा था। वे हवाके झोंकोंसे इधर-उधर बिखरते हुए फूलोंकी तरह चारों ओर छितरा गयीं। वह उस जादुई सुन्दरता पर झपटा और जैसे आंधी कुमुदको उठा लेती है उस तरह उसे लेकर तीरकी तरह ऊपर चला। वह इस देवी को लिए कांपते हुए पूर्वकी ओर बरफसे ढंकी चोटियों और उठते हुए बादलोंकी तरफ निकल गया। लेकिन राजा पुरूरवसने उससे भी अधिक तेज गतिसे, स्वर्गको भी पीछे छोड़ते हुए उसे जा लिया। दैत्य पीछेको मुड़ा। वह इन विजयी पहियोंकी आवाजसे भली-भांति परिचित था। मनुष्यके चेहरेका तेज दैत्योंके लिये सभी ज्योतिर्मय देवोंके चेहरोंसे ज्यादा भयंकर होता है। दैत्य खड़ा हो गया। उसने आकाशके आर-पार फैली हुई भुजा उठाकर अपना विस्मयकारी भाला ऊंचा किया। लेकिन अपनी तेज गतिके कारण और भी बड़ा लगता हुआ महा-राज पुरूरवसका विशाल रथ पुरूरवस जैसे दुर्जेय सारथीको पाकर अपने चक्रोंमें रण-नाद भरे टापोंकी प्रतिध्वनि फैलाता हुआ बढ़ता चला आया। दैत्य रुका। उसने पूर्ण अवज्ञा, आवेश और निराशा भरी आंखोंको घुमाकर अपनी भुजाओंमें पड़ी मूर्छित देवी और इस प्रतिशोधीकी ओर देखा। हिंसा और भयने क्षणभरके लिये उसे भाग्य-कीं लहरोंपर ला खड़ा किया। उसके एक ओर थी आरोही मृत्यु और दूसरी ओर लज्जा और कलंक। अपने विशाल विक्षुब्ध वक्षमें एक आर्तनाद करते हुए उसने स्वर्ग-के उस अपहृत पुष्पको बरफपर पटक दिया और अपने आप पूर्वकी कालिमा में भाग गया।

उदास, अमंगल बादलोंमेंसे भरा-पूरा नया आसमान फिरसे निकल आया।

विस्तृत नील-नभ सूर्यकी ज्योतिमें उभर आया। महाराज पुरूरवसने दैत्यका पीछा छोड़कर दौड़ते हुए रथको शान्त बरफपर रोक दिया और अपने-आप कूदकर वहां जा पहुँचा जहां, वह देवी अपने बिखरे बालोंके बीच ऐसे पड़ी थी जैसे थपेड़े खाए हुए तेजस्वी कुमुदिनी हो। राजाने घुटने टेक दिये और सिहर उठा। चमकीले वस्त्रों-मेंसे उसका एक कंधा झलक रहा था, ऊपरकी ओर फैली एक सुनहरी भुजा उसके स्वर्णिम निर्वस्त्र वक्षको ऊपर उठा रही थी। चकाचौंध पैदा करने वाली बरफ पर मानों एक ऊष्माभरी प्रचुर भव्यताकी रूपरेखा बनी थी। उसका चेहरा मानों बरफ-पर गिरा हुआ चन्द्रमा था। यह देखकर राजा पुरूरवसके सभी अंगोंमें लालिमा दौड़ गयी। वे जिस प्रेमसे डरते थे और फिर भी अपने अन्दर संजोए हुए थे, उसी प्रेमसे पागल हो उठे। राजा स्तब्ध और आतंकित थे, सांस भी मुश्किलसे चल रही थी। वे बहुत देर तक घुटने टेके बैठे रहे मानो आकस्मिक भय और आवेशने महानताको पत्थर बनाकर रख दिया हो। प्रेम आग्नेय प्रयाससे उन्हें खींचकर यहां उसके पास तक ले आया था परन्तु भयने उसके ओठोंको उन अनिन्द्य अलकोंसे वंचित रखा। अन्ततः उसने बिना चूमे ही उस शरीरको उठाकर अपने द्युतिमान रथमें रखा और अपने-आप भी नजदीक ही जा बैठा। उसकी एक भय-मिश्रित उल्लास-भरी भुजापर नारीका ढुलका हुआ सिर सहारा ले रहा था और दूसरी बांह रथ संचालनमें लगी थी। एक हाथ भले रथ-संचालन कर रहा था पर उसकी दोनों आंखें उसीपर लगी थीं, उसकी बन्द पलकों और उसके हृदयकी धड़कनोंकी ओर देख रही थीं और उसके अन्दर छिपी आत्माकी मधुरताके बारेमें अनुमान लगा रही थीं। शीघ्र ही उसका शरीर हिला। वे अद्भुत प्रशस्त मण्डल मानो ध्यानमग्न अवस्थामें उसके अन्दर चुप-के से उदित हुए। उनके अन्दर मन्द मनोरम आश्चर्य सरसराने लगा और फिर उससे भी कहीं अधिक मनोहर, प्रेम और आनन्दकी मूर्ति, वह अपने-आप उठ बैठी। जैसे एक बालक तूफानी दिन बन्द खिड़कीमेंसे थकी हुई वर्षाको देखते हुए बिना जाने ही सो जाता है और बहुत देरतक सोनेके बाद धीरेसे पुरानी चांदनीको देखता हुआ उठता है, चिक उठते ही पहले उसकी आंखें उसी उल्लासमय जगत्के विचारोंसे भरी रहती हैं जिनमें उसकी आत्मा नींदके समय यात्रा कर रही थीं। उसके बाद मानव व्याकुलता और निराशा धीरेसे आती है और अन्तमें बड़ी बड़ी आंखें चमक उठती हैं और बदले हुए जगत्को पहचानकर आनन्द-विभोर हो जाती हैं। इसी भांति उर्वशी प्रेमके प्रति जाग्रत हुई।

उनकी आंखोंके बीच अन्दरकी आलोकमय उषा आनन्दका सेतु बना ही रही थी कि वहां हंसी फूट पड़ी और लौटती हुई पृथ्वी आ गयी। बरफमें खड़ी कुमुदिनी

अत्यन्त सम्मोहक चक्रोंके उत्तरमें हंसी और संगीतमय वाणीमें बोली। विगत भयके कारण वह आनन्द और संकोचमें खड़ी थी। बाकी सब भी फूलोंकी तरह वहांका प्रकाश बढ़ाती हुई आ गयीं। तूफानके चले जानेके बाद उसे याद करते हुए धूपमें उठनेवाली लहरोंकी तरह उनके प्रसन्न वक्ष तेजीसे धड़क रहे थे। सबसे पहले मेनका ने सकुचाते हुए मुस्कराकर कहा, राजन्, अपनी विजयश्रीको कहां लिये जा रहे हो? क्या उसे अपने सदनमें स्वर्णिम विजयोल्लासके चिह्नके रूपमें रखोगे? लेकिन यह तो तुम्हारी संगमरमरकी नारी मूर्तियां या कठोर द्वारोंसे भिन्न रंग रहित पवित्रता है। उसकी आंखोंमें अपनी महिमा और प्रशंसा पढ़नेकी बहुत कोशिश न करो। तुम जिस आन्तरिक नीरंग धारासे अपने श्रेष्ठ अनिन्द्य कर्मोंको जाननेके अभ्यस्त हो क्या वह अब भी उपयोगी नहीं हो सकती? उसे लौटा दो, हमारी बहन हमें वापिस कर दो और बदलेमें अपने-आपको पूरा-पूरा ले जाओ।" अरुण कपोलों वाली मुस्कराती हुई मेनकाकी बात सुनकर महान् पुरूरवसने अप्सराको उसकी तेजस्वी बहनकी बाहोंमें सौंपा और कुछ देरके लिये तीव्र अनिश्चयमें कांपता हुआ प्रचण्ड रूपसे शान्त खड़ा रहा।

तब दैवी तिलोत्तमाने कहा "हे राजन्, मर्त्य होते हुए भी तुम देवोंसे अधिक शक्तिशाली हो। देवता अपने बलको नहीं बदलते, वे पुराकालके और प्राचीनोंके जैसे हैं। मनुष्य उनसे कम होते हुए भी, आत्मविकास करता हुआ महान् हो सकता है, अपने अनुभवोंसे आवेशको निकालकर, अपनी नाना क्षमताओंको पूर्ण करता हुआ, अपनी प्रकृतिको अधिकाधिक विस्तृत करता जाता है और भगवान्‌के साथ एक हो जाता है। जो अपनी आत्माकी अभागी उष्ण कातरताको वशमें कर लेता है और अपने चारों ओर वातावरणकी न्याईं आनन्द और शान्तिकी नीरव पूर्णताका अनुभव करता है वह वर्ष भरके एक मात्र सूर्यमुखीकी तरह जिस भगवान्‌की ओर अभिमुख होता है उसीकी प्रतिमा बन जाता है। हे राजन्, उसी तरह तुम भी मनुष्योंमें अनन्य प्रतिमा हो। और आज तुमने एक महान् कार्य पूरा किया है। पहले तुमने सौर-मण्डलके महान् देवोंको विनाशसे बचाया और उनके साथ सभी नक्षत्रोंकी रक्षा की। और आज तुमने जिसको बचाया है उसके बिना सारा संसार या तो अधोलोकको चला जाता या सब कुछ जल जाता। दोनों ही अवस्थाओंमें उसका जीवन तो समाप्त हो ही जाता। राजन्, सारे सौर-मण्डलके जीवनकी रक्षा करनेके लिये तुमने अपनी जान जोखोंमें डाली, अपने-आपको शुभसे पीड़ा पहुँचाई। तुम्हें अद्‌भुत पुरस्कार मिलेंगे, असीम हानिमेंसे असीम लाभ होंगे जिनमें सबसे छोटा लाभ होगा अनन्त ख्याति। आज लौट जाओ, धीरे-धीरे पककर तैयार होनेवाले भाग्यको मत तोड़ो। जो धैर्यशील देवोंके साथ

जल्दबाजी करता है उसका मुकुट भस्म हो जाता है, उसके राज्यका दुखद अन्त होता है। अन्धे दानव अपनी उग्र आत्मामें बिना देखे-भाले ऐसा चुनाव करते हैं कि क्षणिक वैभव और प्रतापके बदले सुन्दर धरतीको खो बैठते हैं।''

यह कहकर वह चुप हो गयी। राजाने उत्तरमें एक शब्द भी न कहा। उसने अपने घोड़ोंकी रास सम्भाली और सुनहरी दलको छोड़कर तेजीसे चल पड़ा। उसका रथ धरतीके नीरव हिमालयके द्वारोंसे होता हुआ हमारे जीवनसे पहलेके सुनसान, महान् और निष्ठुर जीवनको पार करता हुआ, आर्तनादके साथ आंधीमें उतर गया। उन मृत, गहरी उतरती हुई सीधी चट्टानोंमें वह एकमात्र छोटा-सा ज्योतिर्मय जीवित प्राणी था जो असीम, चुँधियानेवाले जगत्से आया था जहां आंखें पथरा जाती हैं और सुनने वाले कान अमानव एकान्तका अनुभव करते हैं। वह गंगोत्रीके भव्य शिखरों, कठोर हिम नदियों और शुद्ध गुफाओंकी ओर चला जहांसे हमारी पवित्र शीतल गंगा माता उछलती आती है। मानव उपत्यकाओं और मधुर वैभवमें प्रवेश करनेसे पहले महाराज पुरूरवसने अपने विशाल हृदयके आवेगमें पीछे मुड़कर देखा जहां वह खड़ी थी। वह एक अलग शिखर पर उड़ते हुए परिधान और अलकोंके प्रभामण्डलमें खड़ी थी। उसकी प्रकाशमय गंभीर आंखें कोमल विस्मय के साथ जाते हुए पुरूरवसको देख रही थीं। एक हाथ लहराते परिधानपर था और दूसरा आंखोंपर छाया किये था मानों उसे जो दृश्य दिखायी दे रहा था उसे सहना उन अमर आंखोंके लिये भी कठिन था। उसके कंधोंको पीछे हंसते हुए प्रकाशमय चेहरे घेरे हुए थे। पुरूरवस आहत व्यक्ति की न्याईं लड़खड़ाया फिर लगाम खींचकर अनन्त अन्तरिक्षमें दौड़ते नक्षत्रकी तरह उड़ लिया। उसके अन्तरमें तूफान मचा था। अपने उतावले रथको नीचेकी ओर मोड़ता हुआ दूर-दूर तक लहराती हवाके साथ इलाकी शान्त नगरीमें आया।

सर्ग २

तड़के ही पहाड़ों से विदा लेते हुए उर्वशी प्रसन्न और चकित-सी थी। यह पहले-की लापरवाह किरण न थी। वह अपने निरंकुश लावण्य और तरंगी सौन्दर्यपर एक ऐसे भव्य प्रतिबन्ध का अनुभव कर रही थी जो उसके लिये अपरिचित था। उसके लिये परिचित चीजें अपरिचित हो गयी थीं और आंखों के आगे मर्त्य दृश्यों का धुँध आ रहा था। उसमें प्रेम का निवास था परन्तु यह वह स्वर्गीय प्रेम न था, वह शाश्वत अतिथि न था जो अप्सराओं के उभरते वक्षों के बीच अपना सुनहरा सिंहासन लगाता है। यह प्रेम हर्षोन्मत्त, पीड़ित और आत्मलीन था। एक प्रतापी मानव सत्ता, जिससे वह प्रेम करती थी, जिसे देखकर आश्चर्य करती थी — उसके हृदयकी गहराइयों-में छिपी हुई थी। चाहे वह अमर देवों के यहां नृत्य करते हुए तरंगें उठाती हो या उसकी उंगलियां सूर्य किरणों की तरह स्वर्गीय वीणाओं को चमका रही हों, चाहे श्वेत उषा-कालमें स्वर्गकी सरिताओं में स्नान करने जा रही हो या नन्दन-कानन में भ्रमण कर रही हो या फिर स्वर्णिम संध्या में शान्त डालियों के नीचे बैठी हो — स्वर्ग के सभी क्रिया-कलापों में, विचारों में और उसके अपनेपनमें, सब में परिवर्तन आ गया था। उसके तौर तरीकोंमें उसकी चाल-ढाल में एक उल्लासमय पीड़ा थी। उसकी ललित बौरौनियां भार से झुकी आई थीं, उसके दैनिक कार्य-कलाप मानों जीवनकी नकल करने वाली मूर्ति जैसे थे, शक्तिशाली देवों जैसे एक हृदय नहीं। दिन बीतते जा रहे थे और देवों की शान्त ग्रीष्म ऋतु थी। स्वर्ग में गान बढ़ गये और मल्लिका के मुकुट से भूषित बहुविध सुन्दरियां नृत्य में थिरकने लगीं। और बहुत बार महान् इन्द्र के दरबार में सभी अमर देव दिव्य समारोह और स्वर्गीय नाटक देखने के लिये उपस्थित होने लगे। क्योंकि ललित कलाएं और भव्य अनुकृतियां केवल धरती पर ही नहीं होतीं। इनके पूर्ण आदि-रूप स्वर्ग में हैं।

उस दिन देवों की सभा में लक्ष्मी स्वयंवर मंचपर खेला गया था। उर्वशी सागर-कन्या, देवी लक्ष्मी बनी थी और मेनका वारुणी थी और दूसरी कन्याएं प्रत्याशी देव बनी थीं। नाजुक अभिनय बड़े ही मधुर रूप से चल रहा था। चन्द्रवदनाएं युद्धमें थकी महान् आत्माओं की नीरव शक्ति का अभिनय कर रही थीं और छोटे-छोटे हाथ पराजित साम्राज्यों के अधिकार-पत्र थामे थे। सारे जगत् को हिलाने की शक्ति

थी उनमें। अपनी भव्य भुजा की एक सुनहरी लहर, देवों की समर-समिति-सी लगने वाली देव-परिषद की ओर बढ़ा कर और अधखुली बरौनियों से उस जगह की ओर इशारा करते हुए, जहां सुदर्शन-चक्रधारी विष्णु मेघ की तरह विराजमान थे, मेनका ने पूछा- "हे सागर-कन्या, बहन, सारा स्वर्ग तुम्हारे लिये आतुर है। तुमने सभी अमर शक्तिशाली देवोंको और उनके भयानक सौन्दर्य को छान मारा है, उनके सुखद नाम सुन लिये हैं। अब निर्भीक होकर इन सुनने के लिये आतुर चेहरोंके सामने कह दो कि सब देवों से बढ़-चढ़ कर, धरती और आकाश से बढ़ कर, स्वर्ग की सरिताओंसे भी अधिक तुम्हें कौन प्रिय है?"

उर्वशी की आंखें खुली थीं पर देख नहीं रही थीं। विचार-मग्न अवस्था में कहीं दूर से उसकी आवाज आयी "राजा पुरूरवस"। पत्तों में सरसराते पवन की नाईं एकत्रित देव समाज में हास्य का झोंका आ गया –– ग्रीष्म की एक मधुर ध्वनि सुनायी दी। लेकिन स्वर्ग के महान् नाट्यकार भरत अपने नाटक को इस तरह बिगड़ते देखकर, सुन्दर दृश्यों के कल्पना-जाल को टूटते हुए देखकर बहुत प्रसन्न न हुए। उन्होंने कहा - "तू स्वर्ग के पवित्र समारोह में मर्त्यों का श्वास ले आयी है, भगवान् ने तुझे जिस कार्य के लिये, जिस एकमात्र उद्देश्य के लिये रचा था उसे छोड़कर तू और लक्ष्यों को अपना रही है और अपने विभक्त व्यक्तित्व से मानव असफलता को यहां लाकर तूने मेरी महान् कृति को बिगाड़ा है इस लिये हे उर्वशी! मैं तुझे शाप देता हूँ कि तेरे हृदय की इच्छा पूरी हो। स्वर्ग की सरिताओं और यहां के सुनहरे काननों से दूर कहीं धरती की गंगा के किनारे या उदास तेजस्वी पर्वतों या अशान्त नगरों में अपने प्रेम का रस भोग। लेकिन शान्ति के लिये निर्मित इन प्रदेशों में उन देवों के सुख-चैन की आशा न कर जो अपनी प्रकृति में स्थिर रहते हुए अपने नियत कड़े परिश्रम से भव्य संसारको जीवित रखते हैं।"

वे चुप हो गये। देव मौन थे। अप्रसन्न किन्तु फिर भी मुस्कराते हुए इन्द्र ने कहा- "भरत, जो स्वर्ग का ही भाग है उसे अनन्त काल के लिये स्वर्ग से निकालना न तो ठीक ही है और न विधाता से स्वीकृत। क्या तुम उसे सरिताओं और काननों के सुख से निकाल दोगे और इस अलकापुरी को उसके स्मितों से वंचित कर दोगे? उसके बिना इन सरिताओं और काननों में कौन सा सुख रह जाएगा? तुमने उसके भावावेश का दण्ड दिया है लेकिन क्या अपनी कृति के व्यर्थ हो जाने पर भावावेश में आकर तुम इस सुन्दर जगत् को बिगाड़ नहीं रहे, महाकवि?" कठोर भरत ने उत्तर दिया– "मेरे मुख से एक बार जो शाप निकल गया वह अटल हो गया। नियति भी गान से पैदा होती है, अगर तुम अवधि की बात करते हो, तो जिस प्रकृति ने वर्तमान सुख से

बिछुड़ने की अवधि ठीक की है वही अनिवार्य रूप से उसके नियत अन्त को भी लाएगी। नियति, वह धुँधली महान् सत्ता अपने अटल अनिवार्य परिणामोंके रूप में प्रकृति ही है। इसे पवित्र गंगा के पावन तटों की राह लेने दो। वहां यह देश-निकाले का समय बिता सकती है। यह देश-निकाला पूर्व निश्चित है, इसके मधुर परिवर्तन के द्वारा धरती पूर्णता प्राप्त करेगी। जब यह लौटेगी तो इसके बदले हुए चरणों के कारण, ऐसे चरणों के कारण जो बदले तो होंगे पर अपने उपकार के कारण ज्यादा सुन्दर लगेंगे — यह स्वर्ग दमक उठेगा और अधिक सुन्दर बन जायगा। वह लौटेगी तो माता जैसे कपोलोंके कारण ज्यादा कोमल होगी और पति की भुजाओं में से आने के कारण और ऊष्मा भरी सुखद धरती के स्पर्श से मानव आशीर्वाद प्राप्त करके अधिक लाल हो उठेगी।"

भरत की बात पूरी हुई और उर्वशी मौन स्थान से और देवों की चिन्तनपूर्ण उपस्थिति से विदा लेकर स्वर्ग की हवादार दुपहरी की ओर चली। अनाम फलों से लदी सुपरिचित हरी डालियों के नीचे से और फूलों से सजी हरी-भरी घास पर से होती हुई चक्कर काटते हुए रास्तों से वह पत्थरों पर से बहती हुई स्वर्गंगा तक पहुँची। यहां से उस का तट नीचे की ओर चलता है। उसने एक सुनहरे हाथ से अपने कपड़ों को घुटने से ऊपर उठाया और दिव्य पारदर्शक पानी को पार करती स्वर्ग के दरवाजे तक जा पहुँची जहां से ढलवां रास्ता धरती की ओर जाता है। वहां से उसने लालायित आंखोंसे सीमाहीन अन्तरिक्ष की ओर देखा। उसके पीछे हरे सुखद शिखर, जंगलों की कांपती हुई फुनगियां थीं और नील गगन के शान्त निरभ्र कांपते हुए चरम बिन्दु थे। सारा स्वर्ग उसके पीछे था परन्तु उस ने शाश्वत आनन्द के इस धाम की ओर एक दृष्टि भी न डाली, उसने सूर्य की किरणों के साथ ही साथ अपनी नजरें भी नीचे डालीं जहां हिमाच्छादित पर्वत, धरती की सुनसान और कठोर पहाड़ियां, विशाल अछूते वन, महान् बाल-सरिताएं, इतिहास के वीरतापूर्ण उषा काल में कठोर पहाड़ियों पर बसे युवा नगर देखे। प्रसन्न पलकों में से उसकी दृष्टि इन सब चीजों की ओर गयी। उसके सामने स्वर्ग की दीप्तिमान तिलोत्तमा खड़ी थी। उसने धीरे से इसके हाथ पकड़ लिये और बोली "चलो बहन।" तब वे सुनहरी नारियां प्रतीक्षा करते हुए जगत् में उतरीं। फिर मूक पहाड़ों में से होती हुई उर्वशी बद्रिकेश्वर की मौन बरफ पर चुपचाप पुरूरवस से आ मिली।

पुरूरवस अपने राज्य की गलियों में या मनुष्यों की प्रसन्न भीड़ों में नहीं बल्कि निर्जन, एकान्त पहाड़ियों पर निवास करता था। वह उकताई दीवारों, महलोंके भारी-भरकम पत्थरों को उठाए हुए चमकदार नक्काशी वाले खम्बों, लम्बी-लम्बी

गलियों, विचारपूर्ण विशाल मन्दिरों, भव्य पवित्र स्थानों को अपनी आवाज से पवित्र रखने वाले करतालों, राजाओं के दरबारों, युद्ध के आवारा लोगों, तेज हथियारों से कौंधनेवाली बिजली, रथों की घड़घड़ाहट, वेदपाठ, व्यापारियों की चमकती दुकानों, लुहारों के हथौड़ों से निकलने वाले संगीत, धैर्यवान हलों को चलाते हुए मध्याह्न के भयावह श्वास में भी अजेय लम्बे चौड़े मनुष्योंसे ऊब गया था। राजगद्दी की तड़क-भड़क, उसके कठोर लौह परिश्रम, एक हाथ में ढाल लेकर प्रजा के सुख-चैन की रक्षा करना और दूसरे में तलवार लेकर बिना थके शत्रुओं पर प्रहार किये जाना, न्याय की शीत डंडी को समान रखना, कठोर अनुशासन के द्वारा हितकर, सदय कार्यों में सामंजस्य रखना, पिता का चेहरा, पुरुष का हृदय और शक्तिशाली लौह-बुद्धि इन तीनों का सम्मिश्रण, निद्राहीन रातों के बाद और भी अधिक बड़े पुरस्कार के लिये खून-पसीना एक करना, बहुधा आने वाली असफलताएं और उग्र विजएं और प्रजा की सन्तान-सुलभ आवाजें —— ये सब चीजें पहले उसका जीवन थीं पर अब उनकी परवाह नहीं रही। अब न तो इन चीजों की इच्छा थी और न उनके लिये उसके जीवन में जीती-जागती जगह बाकी थी। अब ये भूतकाल के विवर्ण प्रेत दुखमय सम्मोहन द्वारा उसे ऊष्मा भरे जीवन और स्वर्णिम आतप भरे भविष्य से अलग करते थे। उसके हृदय और उसके चिन्तनशील नेत्रों में बरफ पर पड़ती हुई रोशनी दिखायी दे रही थी, पूर्व के अछूते मौन पर लालिमा के साथ एक तूफान दिखायी दे रहा था। इसलिये राजा ने अपने नगर और उन मैदानों को छोड़ा जिन में से वीर तरुणी गंगा, उद्योगी जातियों की वह द्रुतगामी माता पूर्व की ओर बहती है और आगे चलकर उत्साही गंभीर बंगाल में चिन्तनशील आयु को पहुँचती है। वह शीत उत्तर की ओर चलता चला गया, कठोर पर्वतोंको लांघते हुए बद्रिकेश्वर के भी पार हो गया। अपनी कठिन यात्रा के छठे महीने में वह एक नीरव स्थान पर पहुँचा जहां का विशाल क्षेत्र ढलवां पहाड़-पहाड़ियों से भरा था, जिनके ऊपर असीम बरफ जमी हुई थी। चोटियों पर बरफ थी, दर्रों पर बरफ थी, स्वर्ग की ओर उठते हुए कष्टदायक मार्गों पर बरफ फैली हुई थी। वहां दूर स्थित घाटियां और दुर्दान्त शैल हैं, सर्वत्र फैली हुई शुभ्रता में काली चिरी हुई दानवाकार खड़ी चट्टानें और अन्त में एक रहस्यमय दर्रा है जो किसी गुप्त लोक में ले जाता है। राजा ने उस फैले हुए आश्चर्यजनक प्रदेश में डेरा डाला। प्रभात-तारा और सांध्य-तारा उसके ऊपर चमकते और अस्त हो जाते और निबिड़ अन्धकार मौन एकाकी पर्वतों को, चन्द्रिका के प्रफुल्ल चमकते चिन्तनों और शीत तटों और शिखरों पर चमकते दिवस को अपने में लपेट लेता। लेकिन दिन चढ़ने से पहले वीर भावोन्मादी उषा की ओर अमर शिखरों पर चढ़ता और ढलते दिन के साथ नीचे उतर आता और पड़ा-

पड़ा विस्मयकारी आकाश को निहारा करता। नींद अपने कोमल पंख उसकी आंखों पर फड़फड़ाती रहती पर वह न बुलाता, उसे भोजन की भी जरूरत न रह गयी थी, वह बढ़ कर देव बन गया था।

अपनी लम्बी प्रतीक्षाके सातवें महीनेमें उसने पहाड़ियों और चोटियोंपर चढ़ना छोड़ दिया। चारों ओरकी नीरवताको बढ़ाता हुआ चुपचाप गतिहीन होकर बैठ गया और अन्धेरे अथाह दर्रेकी ओर ताकता रहा। वह छः दिन तक इसी तरह बैठा रहा और सातवें दिन मूक दर्रेसे उनका प्रवेश हुआ। स्वर्गका एक झोंका सा आ गया, एक सनसनी हुई और नन्दन-काननकी बालाएं चन्द्रकिरणों जैसे चरणों से कठोर पहाड़ों और चमकती हुई बरफकी चमक-दमकको कम करती हुई, अधखुली अलकोंवाली, सुकुमार मोहक परिधान पहने हुए स्वर्गकी पूर्ण सत्ताएं, राजाकी ओर आयीं और सूर्य किरणोंकी प्रतीक्षा करते हुए फूलोंकी तरह थोड़ी दूरी पर खड़ी हो गयीं। राजा हिला तक नहीं। वह निःशब्द, इस अलौकिक दर्शनमें लीन बैठा रहा जैसे मनुष्य क्षणभरकी निद्रामें अपने प्रिय स्वप्नके अन्तकी सम्भावना देखता है, वह जानता है कि यह स्वप्न है फिर भी चुपचाप इस भंगुर सुखके टूटने या मुरझानेके लिये तैयार बैठा रहता है।

दिव्य तिलोत्तमा बहन का हाथ पकड़े आगे बढ़ी और इस मौन प्रतिमा के सामने खड़ी हो गयी। बहन जरा पीछे रुकी हुई थी,किसी धरती की नारी की तरह नहीं जिसके कपोलों पर लालिमा फैल जाती है और पलकें झुक जाती हैं बल्कि जैसे अध्यवसाय से बुलाये गये लोग परम आनन्द के आगे ठिठक जाते हैं। जरा सा भय होता है, जरा सन्देह होता है और स्वर्गमें घुसते कुछ डर सा लगता है क्योंकि वह बहुत अधिक ज्योतिर्मय लगता है। वह इसी तरह अपने आनन्द के आगे मन्द सी पड़ गयी। लेकिन उसकी बहन ने एक चमकती भुजा उठा कर कहा- "पुरूरवस, तुम जीत गये, मैं तुम्हारे जीवन में स्वप्न नहीं उर्वशी लायी हूँ।" यह नाम सुनते ही बलवान् पुरूरवस अन्धे की तरह झूमता लड़खड़ाता उठा या यूँ कहें जैसे जब कवि के मस्तिष्क में एक महान् विचार कौंधता है तो कवि एकदम चौंक पड़ता है और जोर से चिल्ला पड़ता है मानों किसी आवाज पर चिल्ला रहा हो, इसी तरह राजा उठा और सुनने लगा। दिव्य तिलोत्तमा ने धीरे से कहा- "हे इला के पुत्र! एक मनुष्य है और दूसरी स्वर्ग की अप्सरा, सागरकन्या, उसकी सत्ता सागर की तरह असीम है। अप्सराएं एक प्रभु को अपना सर्वस्व समर्पित नहीं करतीं, एक ही चेहरे में सारे विश्व को सीमित नहीं करतीं अपितु मीठी बयार, अस्वामिक जल और सुन्दर सर्वसामान्य प्रकाश की तरह अबाध समर्पण में भी पवित्र ही रहती हैं। हम धरती पर प्रकृति के सभी अध्यवसायी मार्गों और श्रम

करते हुए नक्षत्रों में, महान् साहसी आत्माओं में पवित्र भावावेश और आनन्द भरती हैं जिससे वे असीम सर्जक वेदनासे भर जाते हैं और यदि तन-तोड़ मेहनत के बाद कभी किसी शुष्क ऋतु में हमारे स्वर्णिम वक्ष उनके हाथों के बीच उदय हो सकें या हमारी आवेश भरी उपस्थिति उन पर लहर की तरह दौड़ जाय तो वे बहुत आनन्दित होते हैं। स्वर्ग में हम उज्ज्वल अंगोंवाली अप्सराएं देवों का शारीरिक रूप से आलिंगन करती हैं और मनुष्यों की अन्तरात्मा को गले लगाती हैं और पवन तथा पुष्पों के साथ स्वाधीनता को जानती हैं। लेकिन तुम्हें हम से या पवन और पुष्पों से क्या मतलब ? राजन्, तुम इतने अधिक शुभ्र थे क्या तुम अपने पवित्र और एकाकी श्रेष्ठता और उत्कर्ष को सुरक्षित रखते हुए सदा तारे की भांति प्रभात की ओर आगे न बढ़ते रहोगे ? या जैसे तुम्हारी पार्थिव गंगा घरों और मनुष्यों के आवेशपूर्ण कार्यों के बीच में से बहुत सी नौकाओं के साथ बहती जाती है, पतवारों के कारण सफेद लगती है फिर भी उस सारे जीवन से बिलकुल अलग रहती है, उसका जीवन सागर के लिये ही प्रवाहित होता है, उसी तरह तुम भी मनुष्यों की तरह काम करते हो,एक बलवान राष्ट्र का निर्माण करते हो और उसके लिये महान्, और आवश्यक काम करते हो फिर भी अपने कर्म से अछूते रहकर अमर पवित्र चरम बिन्दु की ओर चढ़ते चले जाते हो।"

लेकिन राजा मानों चुँधियाने वाले स्वप्नों से अन्धा हो रहा था। उसने धीमी आवाज में कहा- "मेरा ख्याल है कि हम सुदूर पवित्रता, शुभ्रता और मानव आत्मा में स्थित भगवान् की बात करते हैं। एक समय था जब ये चीजें मेरे साथ थीं। लेकिन अब तो मैं सुनहरे बालक वसन्त और लहलहाते खेत ही देखता हूँ। सभी सुन्दर चीजें नजदीक खिची आती हैं। मैं नारी के भव्य वक्ष पर स्वप्न देखता हूँ, ओस कणों को निहारता हूँ और चिड़ियों के साथ प्रसन्न रहता हूँ। मैं सांप की सुन्दर कुण्डलियों पर मुग्ध होता हूँ और जलते हुए वृक्षों के साथ चिल्लाता हूँ। मैं वांछित तट की ओर जाने वाली एक लहर हूँ। मैं इन सबकी ओर आकर्षित होता हूँ और उसके वक्ष की ओर बढ़ता हूँ और उनकी आंखों की ओर बढ़ता हूँ जिनमें यह सब ही एक स्वप्न है। भला भगवान् से या उसकी महिमा से मुझे क्या लाभ होगा ? मैं तो उसकी सारी सृष्टि से बढ़ कर एक छोटे से मुखड़े से प्यार करता हूँ।"

राजा अपने ही शब्दों से जाग पड़ा। उसके शब्द जो पहले एक निर्जीव लहर जैसे थे अचानक झाग बन गये और उसने उर्वशी को खड़े हुए देखा। उसकी नजर तेज हो गयी। वह एक लहर की तरह उसके लिये ललक उठा। उर्वशी ने आंखों ही आंखों-में उसे इस तरह स्वीकार किया जैसे धरती वर्षा को ग्रहण करती है। तब तेजस्वी तिलोत्तमा ने उन पर महिमा और तेज की वर्षा करते हुए कहा - "हे आनन्द विभोर

प्रेमी और भाग्यवान् प्रेयसी ! तुम्हें खोकर प्रेम और भी स्वर्गीय बन जाता है। लेकिन देवगण कोई अपरिवर्तनीय, अटल उपहार नहीं दिया करते, हे पुरूरवस, वे अपने सब से अधिक कृपा-पात्र लोगों को भी बिना शर्त के परम आनन्द नहीं प्रदान करते। आत्मा का रक्षण होते हुए भी तुम्हारे गहरे आनन्द को एक भय की छायामें कांपते रहना पड़ेगा। एक वर्ष के लिये तुम पहाड़ों की त्रोटियों पर, पर्वतों के एकान्त विस्तार में बरफ से ढके क्षेत्रों में इसका परिचय प्राप्त करोगे, और एक वर्ष के लिये हरे-भरे जनाकीर्ण वनों में, सूर्य के आलोक में, सुखद सरिताओं के तट पर तुम इसका सुख भोग करोगे और एक वर्ष के लिये ऐसे स्थानों पर जहां सदा मनुष्यों का आना-जाना लगा ही रहता है तुम इसे प्रेममय मानव देख-रेख से वश में रखोगे। उसके बाद भी जब तक तुम एक नियम का पालन कर सको, उसे अपने लिये बचाये रख सकोगे। हे राजन्, मनुष्य और अप्सरा ज्ञात रूप से एक साथ नहीं रह सकते। या तो अप्सरा अदृश्य आनन्द के रूप में हो या मनुष्य ही रहस्यमय शरीर और रहस्यमय अन्तरात्मा हो। इसलिये हे कुमारी इला के पुत्र, अपना नग्न रूप उसके आगे प्रकट न करना और न कभी उसकी आंखों के आगे अपने निरावरण शरीर पर प्रकाश ही पड़ने देना वरना तुम्हारी सुख-शान्ति पर कभी अरुणोदय न हो पायेगा।"

यह कहकर तिलोत्तमा मध्याह्न के सूर्यलोक में चमकती हुई गायब हो गयी। पुरूरवस झंझा और बिजलियों से पहले की शान्ति की तरह चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसके अंग-प्रत्यंग में यौवन और सौन्दर्य कौंध गया। धरतीकी सारी ऊष्मा और उसका आनन्द उसके लिये आरक्षित था। वह हिला, वह उसकी ओर आया, उर्वशी आते हुए पवन के झोंकों के आगे एक पत्ते की तरह नजदीक के पेड़ों में दुबक गयी। प्रसन्न-चित्त पुरूरवस एक महान् आनन्द के सागर की तरह ठाठें मारता हुआ बढ़ता और सुनहरी बालू को निगलता हुआ आगे आया। उसने एक जोर के नाद के साथ उर्वशी को पकड़ लिया और कांपते शरीर से पुलकित होते हुए उसे अपनी भुजाओंमें कस लिया। उसकी अद्भुत केशराशि खुल गयी और हवा ने उसकी अलकों को बहाते हुए पुरूरवस के कंधों पर फैला दिया। उसके कपोलों ने भी उन का कोमल स्पर्श पाया। उर्वशी हांपती-कांपती, अस्पष्ट ध्वनियां करती तूफान में गिरे हुए पतले से पेड़ की तरह पड़ी थी। उसकी निर्वस्त्र भुजा राजा की गरदन को पकड़े हुए थी। उसके कपोल और सुनहरी कंठ फिरे हुए थे उसकी बड़ी-बड़ी आनन्द से चकित आंखों में पीड़ा व्याप्त थी। उसकी आंधी में बहती अलकों में दोनों चेहरे मिले। उर्वशी के मधुर अंगों के साथ उसके सब अंगों का समागम हुआ। राजा के धबकते हृदय ने उसके उत्तेजित वक्ष का अनुभव किया। राजा ने स्वर्ग की लालसा के भव्य मुख का पान किया। दोनों आपस

में इस तरह बंधे थे जैसे समुद्र में टूटे हुए जहाज से बच निकलने वाले यात्री। फिर बलशाली पुरूरवस ने अपने देवोपम नेत्रों से उसके नेत्रों को वश में करते हुए कहा - "प्रिये, अपनी गंभीर, आनन्दप्रद वाणी के व्यवहार में कृपण, एक शब्द तो बोल, एक शब्द में कह दे कि तू भी प्रेम करती है।" उर्वशी उसके वक्ष पर बिखर गयी, उसके अन्दर का देवत्व राजा के आवेश में बह गया था। उसके रुद्ध वक्ष से एक कराह-सी निकली, उसने कहा - "मेरे स्वामी, मेरे प्राणनाथ !"

सर्ग ३

इस तरह मर्त्य भुजाओंने एक देवीको पा लिया। राजाने बारह महीनों तक पर्वत शिखरोंपर हिमाच्छादित एकान्त प्रदेशोंमें, धुँधली घाटियों, अन्धेरे दर्रों और निर्जन अन्तरिक्षसे ढकी बरफ पर, खड़ी चट्टानों पर जिनके नीचे गरुड़ मंडराते थे, जहां हिम नदी पहरा देती है या ऐसी चोटियोंपर जिनके नीचे झरने बहते हैं, उसे रखा। उसके बाद मनोहर नीची पहाड़ियों पर राजाने उस भुवन-मोहिनीके सौन्दर्य का आनन्द लिया। धरती भर के सभी उदात्त नीरव स्थान उसके रक्त में स्थान पा गये और उसके विचारों का अंश बन गये। बारह महीने जनाकीर्ण हरे-भरे जंगलों में काटे। वहां आनन्दप्रद नदियों के किनारे सूर्यालोकमें भाव-विभोर रहकर आनन्द बढ़ाता रहा। हरे-भरे सरसराते कुंज, पक्षियों से श्वेत बनी हुई एकाकी सरिताएं, पोखरों का झलकता पानी, सूर्यालोक में नहाती शाखाएं जिन्हें मोर चार चांद लगा रहे थे, पेंडुकियों के चमकदार वक्ष, वन में विचार-मग्न दिवस और जंगली जानवरों की आवाजों से भरी बड़ी-बड़ी रातें –– प्रतापी युगल के चारों ओर यही नन्दन-वन था। फूलों से लदे, प्रेम की तीसरी वसन्त ऋतु में स्वर्णिम उर्वशी ने एक बालक को जन्म दिया। जब देवी ने प्रसूति-पीड़ा से छुटकारा पा कर अपने बालक का मधुर मुखड़ा देखा और उसके छोटे-छोटे हाथों को अपने वक्ष पर इधर-उधर टटोलते हुए पाया तो उस नये आनन्द की विचित्र उत्तेजना में आवेश के साथ बोली - "हे पुरूरवस, हम सुखद मानव-जीवन के कितने दिन इस तरह व्यर्थ नष्ट करते रहेंगे ? इन जीवन-हीन जंगलों और लहरों में क्या आनन्द है ? मैं मनुष्यों के घरों में जाना चाहूँगी। नगरों का कोलाहल सुनना चाहूँगी, सभाओं और हाटों की ओर जाते हुए चेहरे देखूँगी और धरती की प्रफुल्ल बालिकाओं को देखूँगी, छोटे बच्चों की आंखें चूमूँगी और अपने पैरों के नीचे चिकने पत्थरों के फर्श और चारों ओर दीवारों के बन्धन का अनुभव करूंगी। राजन्, मैं मनुष्यके बनाए हुए बरतनों में से धरती के भोजन कर, कलशों से धरती का ठंडा पानी पियूँगी और उस प्रसन्न, कार्यव्यस्त जगत् के श्रम और आनन्द को जानूँगी।

उर्वशीने यह सब कहा तो पुरूरवस आनन्द-भरे स्मितके साथ राजी हो गया। वे दोनों पवित्र गंगाके पास कुमारी इलाकी नगरीमें आये। जब वे नियत परकोटेके पास पहुँचे तो राजाकी कुमारी मांने अपने पवित्र मन्दिरमें से उन्हें देखा। एकदम

बड़े जोरसे शंख-ध्वनि हो उठी। पुरूरवसकी प्रजा हर्षोन्मत्त होकर सिंहद्वारकी ओर ओर चल पड़ी। इस प्रसन्न-चित्त भीड़में बनिये और ब्राह्मणमें भेद करना मुश्किल था। तरह-तरहके व्यापारी, अच्छे -से-अच्छे कारीगर अपना दैनिक काम छोड़कर आ गये थे। मूर्तिकार अपने औजार फेंककर, और डाढ़ीमें हंसते हुए दानवाकार लुहार अपने हथौड़े फेंककर आ गये। छोटे बच्चे फूलोंपर दौड़ रहे थे और उषा-सी सुन्दर लड़कियां नूपुरोंकी ध्वनि करती हुई चली आ रही थीं। विवाहित स्त्रियां और पुरोहित, वेदपाठ करते हुए भूसुर, इधर-उधर दृष्टि डालते हुए आये। भीड़ उन्हें प्रणाम करनेके लिये इधर-उधर बंट गयी। भयंकर धनुष लिये, तलवारोंकी झंकार करते हुए, चमकदार कवच पहने यजमान (लॉर्ड ऑफ सैक्रिफाइस), युद्धसे विरत बड़े-बड़े वीर वृद्ध सरदार भारी डग भरते आये। ये सब भेरी, नरसिंघे आदिके तुमुल नादके साथ आये और आकाश तक पहुँचनेवाली हर्ष-ध्वनिके साथ उन्होंने अपने राजाका स्वागत किया, युद्धसे लौटे विजयी वीरोंकी तरह उस पर भी पुष्पवर्षा हुई। सबने उसकी स्वर्गिक दुलहनको देखकर दांतों तले उंगली दबा ली और सहमे-से उसकी आराधना करने लगे। बहुत-सी जवान लड़कियां आयीं, महान् योद्धाओंकी बेटियां, बड़े घरोंमें ब्याही युवतियां, मधुर चेहरे वाली आनन्दमय हास्यसे भरी ललनाएं उसके मुस्कराते मुखपर मुग्ध हो गयीं और उसके सौन्दर्यकी जोरोंसे प्रशंसा करने लगीं। उन्होंने रानीको गले लगा लिया और उसका मुख चूमने लगीं। उन्होंने उसकी अमर कोमल कलाइयां फूलोंसे बांधीं और फिर प्राचीन वीरोंकी परिपाटीके अनुसार बड़े-बड़े धनुषोंको झुकानेका व्यर्थ परिश्रम करती हुईं, चमकती हुई तलवारें लपलपाती हुईं, दुलहिन-सी सजी हुई वीथियोंमें बालिकाओंका झुंड आगे बढ़ा। नरसिंघे, तुरही आदि बजाते हुए जय-घोषके साथ प्रसन्नचित्त प्रजा अमर देवोंकी कन्याको उसके पार्थिव सदनकी ओर ले आयी। मजबूत दरवाजोंमेंसे उठाकर पार्थिव फर्शपर पहुँचाया। उसके चमकते अवयवों परसे स्वर्गिक परिधान ढीला करके नीचे खिसका दिया गया फिर उसके मधुर, असह्य, ललित शरीरपर मर्त्योंका वेश, एक चिपकतासा चोगा पहनाया गया। उसके बालोंपर दुलहिनका घूँघट खींच दिया गया। इस भांति सारे संसारके प्रेमको एक मनुष्यके घरमें बन्दी बना दिया गया। हे अत्यधिक सौभाग्यशाली मर्त्य, जो उन भव्य आनन्दोंके साथ हमारी सुख-दुख भरी मानव पीड़ाओंको मिला मर्त्य, जो उन भव्य आनन्दोंके साथ हमारी सुख-दुख भरी मानव पीड़ाओंको मिला सकता है, तूने आकाशकी एक सुन्दर देवीको सामान्य दैनिक कामोंमें, सेवामें, घरके काम-काजसे अभिभूत करके, सामान्य दैनिक बातचीत और प्रेम भरे चुम्बनोंसे गृह और गृहिणी शब्दोंको सार्थक किया। स्वर्णिम उर्वशी मनुष्य बन कर धरती पर रहने

लगी और पुरूरवसको प्रतापी बालकोंकी एक जाति प्रदान की जिनमेंसे हर-एक एक प्रतापी देव था। उसे वह महान् और सरल प्राचीन जीवन, वह संगमरमर की रूप-रेखा वाला, प्रबल प्रेम और शुद्ध वातावरण वाला, अन्तरात्माके चारों ओर स्थित प्रेम-भरा गुलाबी और आशासे भरा जीवन बहुत प्रिय था। उस पवित्र नगरीने अपने अन्दर ज्यादा सुन्दर जीवनका अनुभव किया, पवित्र कवियोंके श्वासमें ज्वलन्त प्रेरणा भर गयी। वास्तुकारोंने अपनी धारणाओंका लालित्य और कल्पनाके साथ मेल मिलाया, अनगिनत वीर प्रतिस्पर्धा के भावके साथ आगे बढ़े और आनन्द भरे घमासान युद्धोंमें बर्बर जातियोंकी सरहदको पीछेकी ओर लुढ़काते गये और युद्धक्षेत्रमें चमकते गये। सन्तोंने अपनी अन्तरात्मामें भगवन्के दर्शन किये। पुरूरवसकी नगरीसे चारों ओर उच्च प्रकारके प्रभाव फैले। गंगा और सिंधु के बीचके सुनहरे मैदान उनके साथ विकसित होते गये और पूर्ण आदेश प्राप्त करते रहे। पूरे सात वर्ष तक धरती उर्वशीमें आनन्द लेती रही।

उधर अपने भाग्यशाली स्वर्गमें बड़े-बड़े देवता दुखी-से रहने लगे। उन्होंने अपनी बाह्य प्राचीन शान्तिके नीचे छिपे अवर्णनीय आनन्द और रोमांचको खो दिया। वे बहुत ज्यादा सहनशील नहीं होते। उन्होंने अपने वृहद् सभा-भवनमें उर्वशीकी सबसे प्रिय सखीसे चिल्ला कर कहा—हे मेनका, आखिर एक मनुष्य कब तक स्वर्ग और उसके पूर्णतम आनन्दके बीचमें दीवार बना रहेगा? तुम नीचे जाकर उसे ले आओ, हमारी प्रसन्नचित्त तेजस्वी उर्वशीको ले आओ। तब फिरसे हमारे सभा-भवन आबाद हुआ करेंगे।

मेनकाने उनकी बातें सुनीं और अपना सरसराता वायवीय परिधान लेकर दिव्य द्वारकी ओर चल पड़ी। वहांसे उसने धरती पर नजर डाली। छोटीसी सुदूर पृथ्वी पर इलाकी दानवाकार नगरी सूर्यालोकमें चमकते पत्थर जैसी लग रही थी। सागर-कन्या कौंधते हुए स्वर्गके एक शिखरसे नीचे उतरी और एक हांपती हुई शामको पुरूरवसकी नगरीमें जा पहुँची। उसके बहुत पीछे तक हवा उसके सौन्दर्यसे प्रदीप्त रही। वह पुरूरवसके महलपर छायामें खड़ी हो गयी। अभी कुछ रोशनी बाकी थी और राजवंशके लोग चुपचाप बैठे थे। युवा कवि उर्वशी और बलवान् पुरूरवसके, ज्योतिर्मय, प्रेममय, हेमांगिनी उर्वशी और कुमारीके पुत्र शक्तिशाली पुरूरवसके गीत वीणापर गा रहे थे। "हे धरती, तुम्हें पुरूरवसके लिये स्वर्ग बनाया गया है, स्वर्ग उर्वशीके बिना धरती बन गया है। पुरूरवस, अधिकार करते हुए आनन्द मनाओ, और उर्वशी, तुम भी अधिकृत होकर प्रसन्न होओ। यज्ञके जनक यजमानोंको देखो उनके मिलनसे उनकी भुजाओंमें सुन्दर जातवेदने जन्म लिया है। धरती और आकाश-

के बालकोंको देखो। जब वे मिले तो उनमें प्रेम उत्पन्न हुआ और फिर आलिंगनकी बारी आयी और उनके आलिंगनसे एक रमणीय सत्ताका विकास हुआ। हमने सुना है कि पुरूरवस पिताके बिना पवित्र कुमारीसे जन्मा था और मनोहर उर्वशी माताके बिना उत्पन्न हुई थी। पुरूरवस क्या तुम स्वर्गसे यज्ञाग्नि नहीं लाये हो? —— ऐसी अग्नि जिसे न तो प्रदीप्त किया गया है और न शमित किया जा सकता है। तुम आनन्द-प्रद उर्वशीको नहीं लाये? यज्ञाग्नि हमेशा ऊपर को उठती है, वह स्वाभाविक रूपसे खोये हुए स्वर्गके लिये अभीप्सा करती है। प्रेमकी अन्तरात्मा भी गगनकी ओर उठती है। चिनगारी तो वहींसे आयी थी परन्तु उसका लौटना बहुत कठिन है क्योंकि उसके पंख प्रचण्ड अग्निसे दबे हैं। हे सुन्दर दम्पति, इस ऊष्मा-भरी धरती पर आनन्द करो, जिस हरी-भरी दृढ़ सशक्त धरतीने पुरूरवसको जन्म दिया था; हे मनोहर दम्पति, इस प्रफुल्ल धरती पर आनन्द करो, उस धरती पर जो उर्वशीसे परिपूर्ण है। बलवान् पुरूरवसका प्रेम उस विद्युच्छटा जैसा है जो हृदयमें मनोरम भय पैदा करती है और जैसे कुचले फूलसे मीठी सुगन्ध निकलती है वैसे ही हे उर्वशी, तेरे मर्दित वक्षसे प्रेम निःसृत होता है। ऐसे गानोंसे हृदय हुलसित हो उठा। संगीत खतम हुआ और राजघरानेके सभी लोग उतरकर अपने-अपने घरोंके लिये सफेद लम्बी सड़कोंपर चल पड़े। शीघ्र ही हर आवाज चुप हो गयी और आकाश तथा मुट्ठीभर चमकदार सितारोंने धरती-पर अधिकार कर लिया। धरतीकी उस अन्तिम मधुर आवेशमय रातको पश्चिम-की ओर एक अन्धेरे नीरव स्थानपर अमर देवी और मर्त्य वीर लेटे थे। अब भी विजयी प्रेम उनपर मरमरमें भी छेद करनेवाले बाणोंकी वर्षा कर रहा था, हमारी झट बुझ जानेवाली आगकी तरह नोक पर फूल लगे बाणोंकी नहीं। उनका प्रेम आकाशकी तरह निरावरण, विशाल और चिरस्थायी था।

दोनों एक बहुमूल्य शानदार बिस्तर पर लेटे थे और दो मेष उनके पास ही थे। ये मेष उर्वशीको सूक्ष्म, ज्योतिर्मय गंधर्वोंने उपहार में दिये थे और अब अविस्मृत आकाश-के एकमात्र चिह्न थे। वे हमेशा उसके साथ बड़े दुलारसे रखे जाते थे। स्वर्गके रेवड़-मेंसे चुने हुए ये दो प्राणी शायद उसे अपने बालकोंके सुकोमल चेहरोंसे भी ज्यादा प्रिय थे।

राजा और उर्वशी प्रेमके भयंकर बाणोंकी वर्षामें पड़े थे। बलवान् पुरूरवस-की भुजाओंमें वे प्रिय अंग फिरसे लिपटे हुए थे —— धरती पर शायद अन्तिम बार। सोनेसे पहले उर्वशीके स्वामीने उसे अपने साथ जकड़ लिया और उसके क्लान्त अधरों-से एक चुम्बन प्राप्त कर ही लिया लेकिन उसके आवेशमें विदाईकी अनुभूति न थी। धुँधले-से नगर पर रातका अन्धकार छा गया और धीरे-धीरे बादल छाने लगे और

बादलोंमेंसे होकर बिना गर्जनके कौंधती बिजलीकी तरह सूक्ष्म रहस्यमय गन्धर्व सुदूर स्वर्गके शिखरोंपर उतरे। गड़गड़ाहट होने लगी और प्रकाशके भयंकर वेगके साथ स्वर्गके चोर दीवारोंमेंसे अन्दर घुस पड़े और मेषोंको चुराकर उसी तरह प्रकाशके साथ वापिस लौट गये। स्वर्गकी निर्वासिता कांपती हुई जाग पड़ी और उसे अपनी क्षतिका पता चला। दुखसे चिल्लाती हुई वह अपने प्रभुकी ओर मुड़ी और रोते-रोते बोली - "उठो पुरूरवस, वे मेरे हिम श्वेत आनन्दको मुझसे चुराये लिये जा रहे हैं।" राजा नींदमेंसे चौंक पड़ा। ऐसी स्थितिमें स्मरण-शक्ति दूर रहती है और मनुष्यकी प्रकृति अबाध रूपसे राज करती है। अत्याचारकी बात सुनते ही राजा नियति और अपने परम आनन्दकी अवधिकी बात भूल गया और अपनी महान् राजसी प्रकृतिमें प्रतिष्ठित हो गया। बड़े क्रोधके साथ एक तेज छलांगमें वह अपने धनुषतक जा पहुँचा। लेकिन धनुष उठानेसे पहले वह कांप उठा। उसकी सारी सत्ता एक आक्रामक भयसे आहत हो गयी। वह डरके मारे उर्वशीकी ओर मुड़ा। अचानक सारा कमरा एक अभिव्यक्त सौन्दर्यसे जगमगा उठा। चारों ओर प्रकाश फैला था। उस भयंकर प्रकाशमें सुन्दर, वीर पुरूरवस एक राजसी इंगित वाली प्रतिमाकी तरह खड़ा रह गया उसके निरावरण शरीरका अंग अंग भव्य लग रहा था। प्रकाश दिनसे भी ज्यादा तेज था। एक देदीप्यमान क्षणके लिये राजाने सुपरिचित स्थानको अच्छी तरह देखा। खम्बोंपर तराशी हुई भीमकाय प्रतिमाएं, ऊंची-ऊंची महाकाय दीवारें, नीरव फर्श और उस फर्शपर मनोहर रीतिसे पड़ा झलकता हुआ वेश जो अब फिर कभी उर्वशीके सर्वांग सुन्दर शरीरको न छू सकेगा। मजबूत सेजकी प्रत्येक सुन्दर गोलाई, स्वर्णिम शरीर और फूल जैसे मुखड़ेकी एक-एक लकीर बड़ी नजाकतके साथ दिखायी दे रही थी। उसके पास ही दिखायी दी वह दूसरी मधुर मुस्कान और वह छोटा सा हाथ जो उसकी तेजीके कारण उड़ी हुई चमकती अलकोंको पीछे कर रहा था। फिर सब कुछ अदृश्य हो गया।

आकाशमें खुशीके नगाड़े बजने लगे। काफी देर तक राजा वहीं खड़ा रहा। उसका धड़कता हुआ हृदय अपनी क्षतिके बारेमें अर्ध-चेतन था। राजा खड़ा-खड़ा मानों एक और चमककी प्रतीक्षा कर रहा था, वह उस धुँधलेपनमें उस सुन्दर रूप-रेखा-को खोज रहा था ज़ो बहुत दूर जा चुकी थी। एक मन्द स्मितके साथ वह लौटा और जहां अभी-अभी वह लेटी थी उस जगह दोनों हाथ रख दिये। उसने वहां मधुर उरोजों-की आशाकी थी पर स्थान एकदम रिक्त था। वह चुपकेसे लेट गया और धीरेसे अपने-आपसे बोला -"वह जल्दी उठ कर अपना चमकता वेश पहन कर लता मण्डपसे अपने स्वर्गिक मेषोंके लिये ठंडा मीठा पानी लाने गयी होगी। शायद वह कुछ क्षण बाहर

ही रातका आनन्द लेती रहेगी और फिर लौटकर उन्हें पानी पिलायेगी और चुपचाप मेरे पार्श्वमें आ लेटेगी। अब मैं उसे पौ फटनेपर ही देखूँगा।" वह सो गया। धूसर प्रभात आया और उसकी पलकें खोलीं। राजाने उर्वशीके लिये अपनी बांह फैलाई। अब उसे पता चला कि वह अकेला था।

फिर भी राजा निराशा को स्वीकार करनेके लिये तैयार न था। उसने सोचा वह थोड़ी देरके लिये सुदूर मौन अन्तरिक्षमें अपनी स्वर्णिम बहनोंसे मिलने गयी होगी, वह उन सुपरिचित सरिताओं और अपार्थिव लोकोंको देखने गयी होगी और जल्दी ही वापिस आ जायेगी। उसका हृदय भले ढील करे पर मेरा हृदय उसे जरूर वापिस खींच लायेगा। वह लौटकर अपनी छोड़ी हुई चीजोंके बारेमें बातें करेगी, बच्चोंको अंकमें भर लेगी और मधुर सैर-सपाटे और दैनिक कार्य शुरू करेगी, वह उन कमरोंमें वापिस आयेगी जो उसे इतने प्रिय थे। वह दृढ़ता से महान् नियतिवाली प्रजाके बीच राजकाजमें लगा रहा। वह पवित्र सभाओं और शान्त समितियोंमें दीर्घदृष्टिवाली सलाहें और उदारतापूर्ण आदेश देता रहा –– ऐसे आदेश, जो कालके आगे पत्थरकी लकीर बन कर रह सकते हैं। और न्याय वेदीसे निष्कलंक निर्णय या विस्तृत समाधान देता रहा। उसने वांछित वर्षाके लिये पवित्र अग्नि प्रज्वलित की और शक्तिशाली मनुष्यों या सुखद जन-समूहोंके अधिवेशनोंमें गया या शक्तिशाली सेनाओंके बड़े खेलों-में विजय प्राप्त की। लेकिन इन सबके होते हुए उसके एक-एक क्षणमें रिक्तता थी। जब आदमी अनिवार्य नियतिके विचारको पूरा जोर लगाकर अपनेसे दूर रखनेकी कोशिश करता है और इसके लिये अपने-आपको वर्तमान सुखोंसे अन्धा करना चाहता है तो प्रायः जरा-सी आवाजसे, दरवाजे पर जरा-से खटकेसे, अचानक निकले हुए किसी शब्दसे या बिना कारण ही उसका हृदय आकस्मिक भयसे कांप उठता है और उस भयंकर भविष्यका डरावना रूप खिड़कीमेंसे उसे ताकने लगता है। वह कांपता हुआ चुप-चाप बैठ जाता है। पुरूरवसकी यही अवस्था थी। पवित्र संघोंमें, युद्ध-समितियोंमें, अकेले, बातचीत करते हुए या बैठे हुए अचानक एक भयंकर भय तेजीसे उसके जीवनको बिजलीकी कौंधकी तरह निरावरण कर देता था। उसकी सारी सत्ता थरथरा उठती थी। उसकी बलवान् काठी मानों सन्निपातमें कांपने लगती थी, उसकी आंखें अन्धी हो जाती थीं। वह शीघ्र ही लम्बे-लम्बे सांस लेकर अपने-आप पर काबू पा लेता था।

राजा बहुत दिनोंतक यह सब सहता रहा। लेकिन जब भयके आघात, कठोर सूर्यकी ज्योतिर्मय यात्रा और पुरानी स्मृतियोंके साथ गुत्थम-गुत्था करती निद्रारहित रातोंने अदृश्य रूपसे उसके हृदयको खा डाला तो वह निराश होकर निरुद्देश्य, निर्विचार उस धुँधली-सी पश्चिमी जगह पर गया। वहां उसका परिधान देखा, लेकिन उसमें

वह न थी। उसका परित्यक्त बिस्तर देखा, उस ठंडे फर्शको देखा जहां लेटकर वह दोपहरको उसके जीवनमें अपनी वाणीसे मधु घोला करती थी। जैसे कभी ऊंचे स्थानों-पर बने प्राचीन आर्य राजाओंके तालाब धीरे-धीरे अपने किनारोंको काटते रहते हैं और एक दिन अचानक भयंकर नादके साथ किनारे ढह जाते हैं, आसपासकी पहाड़ियां गूँज उठती हैं और नीचेके सुन्दर नगरोंमें पानी भर जाता है, उसी तरह बलवान् पुरूरवसकी हिम्मत, स्मृति, पीड़ा और असह्य आनन्दके विचारोंकी लपेटमें आकर ढह गयी। उसकी आंखोंसे आंसू झरने लगे। अजित वीर बांहें पसार कर रो पड़ा। आगेसे उसका जीवन इसी कमरेके साथ रहेगा।अगर वह बड़े अधिवेशनोंमें, युद्ध-समितियोंमें या प्रसन्न जन-समूहोंमें जाता था तो लोग उसे ऐसे देखते थे मानों वह नीरव मृतक हो। वह ज्यादा ठहरता भी न था। जरा ठहर कर इन निस्तब्ध मौन कमरोंमें आकर उर्वशीके छोटे-मोटे अवशेषोंको निहारने लगता था। उसने पहले जिन चीजों-को शायद देखा भी न था उन्हें प्रायः गलेसे लगाता और चूमता था, उनसे ऐसे बातें करता था मानों वे जीते-जागते मित्र हों। वह प्रायः ही सोते हुए बच्चोंके पास मंडराया करता था। उसने न तो दिन गिने और न दुबारा रोया ही। वह अश्रुहीन नेत्रोंसे प्रभातकी ओर ताका करता था। उसकी प्रजा उसे देखकर दुखी होती थी। लोग उसे चुपचाप देखा करते थे। और कभी-कभी उनमेंसे कोई बोल उठता था - "यह वह नहीं है, यह हमारा प्रतापी वीर, महाराज पुरूरवस नहीं है। यह कुमारी इला का पुत्र, हमारा राजा नहीं है जो अपनी प्रचण्ड आत्माको बड़ी शान्तिके साथ एक कुशल सारथीकी तरह वशमें रखता था। अब अगर शत्रुओंका रणनाद हमारे दरवाजोंपर सुनायी देने लग जाय और सारे वातावरणमें फैल जाय तो निश्चय ही वह उठ खड़ा होगा और धनुषबाण लिये रथमें बैठकर उन पर इस तरह टूट पड़ेगा मानों समुद्रका वेग आ रहा हो। उसकी विजय होगी और शायद वह अपने असली रूपमें आ जायगा। प्रजाजन दुख करते हुए ऐसी बातें करते थे।"

उत्तरायणके साथ धरती स्वस्थ हो गयी तो राजाको अपनी सुन्न आत्मामें फूलों-का स्पर्श हुआ। वह दुखमेंसे जरा-सा उभरा और तारोंकी ओर नजरें उठायीं। उसने धीमी आवाजमें कहा - "मैं इतनी जल्दी निराश होनेका अभ्यस्त न था। क्या तूने मुझे छोड़ दिया और अपने-आप चमकते हुए क्रूर गोलार्द्धोंके बीच प्रकाशमें खो गयी? लेकिन मैं वहां भी अपने आनन्दका पीछा करूंगा। भले सभी महान् अमर देव पूरी सतर्कतासे अपनी ढालें लेकर उसकी स्वर्णिम कायाके चारों ओर घेरा डाल दें तो भी मैं उन्हें भेद सकूँगा या मेरा दृढ़ धैर्य मेरी प्रियाको सुदूर नक्षत्रोंमेंसे उतार लायगा। मैं अब भी इलाका पुत्र पुरूरवस हूँ, भले आवेशहीन और शुद्ध शक्तिसे वंचित

होऊं, भले आज मैं वह सशस्त्र प्रतापी व्यक्ति न रहा होऊं।" यह कह कर वह सभा-भवनकी ओर महान् राजाकी तरह लम्बे डग भरता चला। संगमरमरके भवनमें चौड़ी दानवाकार कमानें थीं। राजाने विचार-मग्न खम्बोंपरसे एक शंख उठाया और जोरसे नाद किया। वह नाद नगरकी गली-गलीमें तूफानकी तरह घूम गया। चारों ओरसे गौरवशाली भवनों और प्रसन्न घरोंसे लोग निकल पड़े। आगे-आगे बड़े-बड़े सरदार, शक्तिशाली सेनानी, वृद्ध विख्यात पुरुष और बड़े कवि थे। उनके पीछे इलाकी प्रजा मूसलाधार वर्षाकी तरह आयी और वह विशाल सभाकक्ष पूरी तरह भर गया। उनके बीचमें प्रतापी राजा खड़ा हुआ। उसकी आंखोंमेंसे अमरता-का अद्‌भुत पूर्वाभास चमक रहा था।

राजाने कहा - "मेरे प्रजाजन, मैंने ही तुम्हें बनाया था। मैं तुम्हारे पाससे जा रहा हूँ। हे इलाकी प्रजा, मैं तुमसे क्या कहूँ तुम मेरे प्रताप और मेरे दुखके बारेमें सब कुछ जानते हो। अब मैं उसके अभावमें उन बड़े-बड़े निर्जन कमरों और बगीचोंको नहीं सह सकता। मैं जाऊंगा और उसे कहीं अक्षय वृक्षोंके नीचे या सरिताओंकी पीछे छिपा हुआ पाऊंगा। मैं जा रहा हूँ, एक नियतिवाले युवा राष्ट्रको अनिश्चित उषाओं-के नीचे छोड़कर अपना काम पूरा किये बिना जा रहा हूँ इसलिये मैं तुम्हें उसका पुत्र आयुष भेंट करता हूँ। वह सौन्दर्य और बलमें अतुलनीय है। वह यहां राज करेगा। मैंने धरतीमें सत्कर्म बोये हैं और विशाल आकाशको अपना स्मारक बनाया है। मैं स्वर्गसे अनन्त अग्नि लाया था और युद्ध करते हुए देवोंके बीच स्वर्गमें युद्ध किया है। मेरे प्रजाजन, तुमने पार्थिव जीवनके कुछ वर्षोंमें किये गये मेरे सत्कर्मोंमें भाग लिया है। मैंने जो युद्ध लड़े थे, जो महान् सदुदाहरण रखे थे, जिन पूर्ण संस्थाओंको खड़ा किया था, जितने भी महान् काम किये थे उन सबमें तुम्हारा हाथ था। सब काम हमने मिल-कर किये थे। प्रजाजन, अब मैं जा रहा हूँ। देवोंने मेरे पुरस्कारको छीन लिया है, मैं उसे वापिस लेनेके लिये जा रहा हूँ।"

राजा बोलता गया और सारी प्रजा गूँगी बनी सुनती रही। तब उर्वशीकी कलीको लाया गया। वैदिक मंत्रोच्चारणके साथ गंगा जलसे उसका अभिषेक किया गया। मुकुटके साथ-साथ साम्राज्य भी उसकी अलकोंपर स्थापित कर दिया गया। पुरूरवस मौन प्रजा और चमकते शस्त्रोंके बीच होता हुआ खेतों और धुंधली घास-स्थलीपर सूर्यास्तके अन्तिम बादलकी तरह चला गया। इलाकी चट्टानमेंसे, कुमारी इलाके मन्दिरसे एक अद्‌भुत तेज उठा और विदा होते हुए राजाके चारों ओर चमकने लगा। उस प्रकाशमें राजाने मुड़कर जगमगाती विशाल नगरीको देखा जो अपने विराट् रूपमें स्वर्गकी ओर बढ़ रही थी। मन्दिर, महल और रास्ते,दुखी चेहरों और

रोती आंखोंका सागर बन गये। उसने क्षण भरके लिये नजर डाली और फिर प्रकाशमें-से वनमें घुस गया। फिर प्रतिष्ठानसे जोरसे रोने चिल्लानेकी आवाज सुनायी दी मानों बर्बरोंका झुंड गलियोंमें आ गया हो और वहांके सभी बड़े मन्दिरोंसे भयानक आगकी लपटें स्वर्गकी ओर उठने लगीं। लेकिन राजा सुनी-अनसुनी करके अन्धेरे-में चलता चला गया।

सर्ग ४

वह अंधकार और अत्यधिक धुँधली रातमें नजदीक आते हुए पेड़ोंकी भुतहा छायामेंसे गुजरता रहा और सारे दिन हरे पत्तोंके बीच बढ़ता गया। यहां तक कि वह आबाद जंगलमें जा पहुँचा जहां शोर मचाती हुई सरिताएं और शानदार चमकते हुए मैदान हैं। पहले वह इन स्थानों पर अपनी प्रिया उर्वशीके साथ रह चुका था। ये सब उसके लिये परिचित घरेलू चेहरोंके जैसे थे। वह हवामें झोंके लेते हर पेड़, हर पृथक् खेतको जानता था और हर नदी नालेको उसकी ध्वनि और उसके विशेष बहावसे पहचानता था। वह रही वह मधुर छाया जहां लेटकर वे कानाफूसी किया करते थे। ये रहे वे कुछ-कुछ चमकतेसे कुंज जो अब भी दोपहरको पवित्र ध्वनिसे गूँजते हैं और ये रहीं वे सरिताएं जो उसके सौन्दर्यसे चमकती थीं। वहां राजा तटों और पेड़ोंके पास रुक-रुककर, खेतों और वनोंमें भटककर हर परिचित स्थानसे बातें करता था। उसके लिये वे सब उर्वशीसे भरे थे।

"हे पवित्र अंजीरके पेड़, वह तुम्हारे नीचे रुकी थी, वह अपनी अलकोंमें मग्न थी, उसकी आंखें मधुर और गंभीर थीं। हे मधुर छाया, तूने उसके चरणोंसे उल्लास पाया था, हे शीत, गहरे हरे आश्रयदाता, आदर्श स्थान, देखो सभी डालियां फूलोंके भारसे धरतीपर झुक आयी हैं। यहीं वह अपनी भुजाएं पीछे की ओर करके मेरे सामने मुस्करायी थी और उसके ओठोंपर, उसकी आंखोंपर और उसके खुले वक्ष पर फूलोंकी वर्षा हुई थी। यहां एक गुप्त रहस्यमय खुला ओसीला स्थान है जहां वह संकीर्ण सांध्य प्रकाशमें प्रतीक्षा कर रही थी। उसके चारों ओर सब कुछ हरा-हरा था मानों मर्कत लोकके लिये निमंत्रण हो। हे नदी, वह तुम्हारे पाससे ही वनपथकी ओर गयी थी। वह भीगी हुई थी और वर्षासे धुले नग्न पुष्प जैसी लग रही थी। और हे महान्, पवित्र वनपथ, तूने उसके मातृवदनको अपने बच्चे पर झुकते देखा था।"

ऐसी बातें कह-कहकर राजा चुप हो जाता और रुककर उत्तर पानेके लिये कान लगाता था मानों उसकी बाट जोह रहा हो। लेकिन चारों ओर सन्नाटा था। कहीं चमकते पंखों वाली कोई चिड़िया चौंककर उड़ जाती और कहीं भूरा सांप चमकदार पत्तोंमेंसे सरसराता हुआ निकल जाता। इस तरह राजा भटकता हुआ हर जाने-पहचाने स्थान पर स्मृति-पटलसे मिटे हुए दृश्योंको याद करता था। ये दृश्य उसके

मनमें ऐसे कौंधते जाते थे जैसे रातके लौटनेपर सितारे निकल आते हैं। राजा अपनी हृदय-गुहामें छिपी घटनाओंको निकाल-निकालकर आंखोंके आगे जिन्दा कर रहा था। उसकी अनिश्चित मनोवृत्तियां, उसके चेहरेकी झलकें, उसकी अद्भुत, सुन्दर क्षणिक मुद्राएं, उसके सुख और हृदयको खिलाने वाले अश्रुओंके छोटे कुहरे –– उसके आगे नाच रहे थे। वह अपने स्वप्नोंको साकार करता हुआ उसके शरीरको पकड़-सा लेता था। उसके और उस भावुकता-भरी विजयके बीच हमेशा अपूर्णताका भाव खिसक आता था। आखिर असन्तुष्ट होकर उसने कहा - "वह यहां नहीं है। हालांकि हर रहस्यमय वनपथ और सूर्यालोकमें नहाता चरागाह उसी की सांस ले रहा है और उसकी उपस्थितिसे स्पंदित हो रहा है। मुझे उसके अंग नहीं मिल रहे उसका वदन नहीं दिखायी दे रहा। लेकिन मैंने यह स्वप्न देखा था कि मैं उसके भगोड़े पैरोंको या उसके चोगेको यहां निश्चित रूपसे पकड़ सकूँगा। आह! एक समय था जब वह इन सबकी प्रकाशमय आत्मा थी। ग्रीष्म और वसन्त ऋतुएं उसके शरीरमें निवास करती थीं, उसीमें फूल लगते थे और बीज आते थे, उसीमें फल पकते और झड़ते थे। उसीमें सौन्दर्य जंगलों और घाटियोंमें छिपता था और उसीमें सूर्यालोकमें चमकते खेतोंमें फूलों और हास्यमें प्रकट होता था। सभी सुखद मनोभाव, धरतीके सभी प्रणय-मार्ग उसके थे –– स्वयं वह थे। लेकिन अब लगता है कि वे तो उसके परिधान मात्र थे जिन्हें उसने त्याग दिया है। इसलिये हे सागरोन्मुख नदियो, हे जंगलो, तुमने मेरी आशाओंको झुठला दिया है इस लिये मैं तुम्हें छोड़कर तपती कठोर तंग घाटियोंकी ओर जाता हूँ और उसे कड़े तूफानी पहाड़ों पर खोजूँगा।"

अपने-आप अपने राजमुकुटको ठुकराने वाला वीर, पुरूरवस आशाके तूफान-पर बैठकर उत्तरकी ओर उड़ा। वह तेजीसे जलते मैदानोंको पार करके शिवालककी पहाड़ियोंके प्रवेश-द्वारसे निचले पहाड़ों पर जा पहुँचा। सारा स्थान भयानक स्मृतियों-से धबक रहा था। धरतीको छूते हुए महान् आवेशोंसे पुलकित होता हुआ भी वहां अधिक देर न ठहरा। वह कठिन दर्रों और ढालू घाटियोंकी ओर, अन्धेरी दीवारोंके बीच गरजती नदियोंकी ओर, उत्कट इच्छाका मारा चलता चला गया। चलते-चलते वह शिखरोंकी भयानक नीरवता तक जा पहुँचा और ऐसे क्षेत्रोंमें पदार्पण किया जो उसके प्रेमकी न्याईं विशाल और एकाकी थे। उसने कान लगाये शिखरोंकी ओर हाथ बढ़ाकर विश्वासपूर्ण, उदात्त अनुरोधसे कहा - "हे निर्जन, बलशाली हिमालय, तेरे एकाकी शिखर व्योमके साथ एकांत मिलन करते हैं, हे विकराल निस्तब्धता तेरे अन्दर सारे जगत्की आत्माका, ध्यानस्थ सृष्टिका अनुभव होता है, हे पर्वत, तू ही हमारा प्रणय-कक्ष था। हम तेरे ऊपर लेटा करते थे, चन्द्रकी ओर उठते हुए तेरे

शिखर या पड़ोसी तारे हमें अमानव घाटियोंमें देखते थे। सन्नाटा ही हमारा आवरण और हिमनदी हमारा प्रणय-गीत होती थी। वह तुम्हारे मौनमें खो गयी है। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे जैसा सूना और उदास हृदय लेकर आया हूँ। मैं भी तुम्हारी तरह हिमका मारा हूँ और तुम्हारे गंभीर शिखरोंकी ओर उनके सदृश भुजाएं उठा रहा हूँ। लौटा दो मुझे, पर्वतराज, लौटा दो मेरी उर्वशी।"

राजा चुप हो गया। और ऐसा लगा कि शुभ्र हिमालय उसकी ओर झुक आया। ऐसा लगा मानों पर्वतोंने अपने जैसी विशाल आत्माको पहचान लिया जो उन्हीं की तरह स्वर्ग तक पहुँचती थी और अनन्त एकान्तमें रहनेके लिये समर्थ थी। राजा गहरे ध्यानमें डूब गया और पर्वतों पर अपनी आत्माको उवशीके विचारमें घोल देनेकी कोशिश करने लगा। स्वर्गसे बरफ दबे पैरों नीचे उतरी और राजाके कपोलों और उसकी अलकोंका स्पर्श किया। तूफान का झोंका शिखरोंसे नीचे कूद पड़ा और राजा पर प्रहार किया पर उसे जगा न सका, सफेद बूँदें उसकी अलकोंमें जमीं और उसके सभी कपड़ों पर पपड़ी जमा दी, लेकिन सब व्यर्थ। राजा केवल अपने आवेश भरे हृदयमें जी रहा था।

लेकिन जब पर्वतों पर महीने धीमे, अलक्षित पगोंसे बढ़ते गये फिर भी न तो मदमाता वसन्त आया, न ओसोंसे नहाया पतझड़ तो अन्ततः हमारे आकाशसे भिन्न कहीं सुदूर स्वर्गसे एक आवाज आयी। राजा प्रेरित व्यक्तिकी तरह उठा और विशाल शिखरोंको छोड़ता हुआ उत्तरकी ओर आया। वह दुनियासे बहुत ऊंचे कुछ अन्धेरे-से प्रदेशमें पहुँचा जहां उत्तरी कुरु रहते हैं जो संसारके प्राचीन वासी हैं और आज भूले हुए धुंधमें अदृश्य हैं। वह धुंधमें अदृश्य नगरोंकी अनुभूति लिये घूमता रहा, उसे न कोई शब्द सुनायी देता था न कोई चेहरा दिखायी देता था परन्तु एक विशाल परम्परागत जीवनकी धड़कन और ऐतिहासिक स्वप्न उसकी चेतनामें मंडरा रहे थे। राजके जाते ही प्राचीन राजकीय स्मृतियोंमें उफान आ गया। बड़े-बड़े साम्राज्यों-का आरम्भ और उनकी स्थिरता, भावपूर्ण भीमकाय सर्जन, पत्थरमें साकार होती हुई राष्ट्रीय भावनाएं और प्रेरणाएं उसके सामने आयीं। और अन्तमें धुंधके दूर खिसक जानेपर उसने आदियुगीन चट्टानोंको नीचेकी वादियोंमें धंसते देखा और विचार-मग्न विशाल गुंबदों और असीम परकोटोंको आलोकमें उभरते देखा और उनके बीच भव्य नेत्रों वाले संसारके पूर्व पुरुष गौरवमय चालसे चलते दिखायी दिये। राजाने सूर्यदेवके पास ही नजर डाली और वहां शिखर पर सिंहासनासीन सागर-कन्या देवी इन्दिराको देखा जिसकी राजसी केशराशि उसके सिरका मुकुट बनी हुई थी और राजो-चित वेश लहराता हुआ चरणों तक पहुँच रहा था। वही साम्राज्य प्रदान करती है,

उसके कर-कमलोंके बीच सारे सौन्दर्य, समस्त ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धन-वैभव और निखिल शक्तिका निवास है। कठोर और सुन्दर देवीने अपना सिर झुका कर पूछा - "हे इलाके पुत्र पुरूरवस ! कौनसी धुन तुम्हें मेरी महान् राजधानीमें, इन विस्मृत कोहरोंमें प्राचीन लोगोंके बीच, आर्य जातिके पितरोंके पास ले आयी है ? तू विजयके मोहमें पड़कर आया है या अपने लोगोंके लिये साम्राज्य मांगने ? लेकिन तेरे चेहरे पर कोई और ही सौन्दर्य दिखायी देता है यह प्रकाश भी मेरा नहीं है। तू अपने लिये ही कुमारीके पेटसे पूर्ण नहीं जन्मा था, देवोंके वायवीय मार्ग तेरे पैरोंके लिये खोल दिये गये — लेकिन यह भी उनके अपने लिये नहीं, वेद-प्रतिपादित मार्गके लिये। राजाओंके प्रतापी और विकराल मुकुट आलोकमय सुख या कठोर परिश्रमके लिये उनके सिर पर धार्मिकभावसे रखे जाते हैं। हे इलाके पुत्र पुरूरवस, क्या तू भावोन्मादके लिये कठोर भव्यता और उत्कर्षका, एक देशके भाग्यका त्याग कर रहा है। तुझे दुख-भरी नरकके अन्धकारमें कराहती हुई पाताल गंगाका डर नहीं लगा ?"

प्रशान्त आंखों-वाले वीर इला-पुत्रने उत्तर दिया - "हे देवी, हे आर्यस्थानकी अधिष्ठात्री, वट और कमलसे प्रीति करने वाली देवी, मैं नरकके भयसे या स्वर्गकी आशासे अच्छे या बुरे काम नहीं करता। राज्य करते समय मैंने अपने ऊपर भी शासन किया और राजसी आत्माके साथ राजसी काम किये। अब एक असीम विस्तृत कामनासे परिचालित होता हुआ अस्पष्ट धुँधले देशों और बरफ पर भटकता फिर रहा हूँ।" और वीणाकी झंकार की तरह लक्ष्मीने उत्तर दिया - "हे चन्द्रवंशी, तुम्हारे अन्दर तुम्हारे पूर्वजोंका दोष विद्यमान है। लेकिन तुम्हारा प्रेम ऐकान्तिक रूपसे महान् है इसलिये निःसन्देह तुम पूर्णकाम होगे। लेकिन तुमने भविष्यको पंगु बना दिया है और आर्य-जातिको सिंहासनसे अपदस्थ कर दिया है। यद्यपि इलाकी सन्तान हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ जैसे भावी नगरों पर राज करेगी और मेरी प्रजाको एक ही राज-सत्ताकी ओर खींचेगी, लेकिन अन्तमें उनकी शक्तिका, सौन्दर्यकी बहुलताके कारण पतन हो जायगा। पुरूरवस यह सब तेरे ही प्रेम और सौन्दर्यके पापके कारण होगा। यह भागवत देश पराये तटोंके बर्बरोंकी पकड़में आ जायगा।"

देवी चुप हो गयी। विस्मृतिके बादल नीचे उतर आये। शक्तिशाली अपदस्थ वीर पुरूरवस अपनी महान् कामनाका स्वप्न लेता हुआ पूर्वकी ओर चला। जैसे कोई आदमी नींदमेंसे उठकर रातमें चल पड़ता है और तारोंके नीचे, अन्धेरे स्थलोंमेंसे गुजरता है, न तो उसे अपने पैरोंकी खबर होती है न यह मालूम होता है कि वे उसे कहां लिये जा रहे हैं। कोई विकराल अदृश्य सत्ता उसके साथ रहती है और उसके निर्भ्रान्त चरणोंको किसी अलौकिक वन या भयानक पहाड़ीकी ओर ले जाती है। वह अचानक

जाग पड़ता है। उसकी संत्रस्त आत्मा अनजाने पराये स्थानोंमें कांप उठती है। उसी तरह किसी अज्ञात शक्तिसे प्रेरित पुरूरवस भटक रहा था। वह राजा सुनसान भयानक पहाड़ों पर और निर्जीव बरफ परसे होता हुआ पहाड़ों और झुकते हुए वनोंके बीच एक विशाल सरोवरके नीरव तटपर आया। वहां प्रशान्त पर्वत देखकर उसके विस्मयाकुल हृदयने भगवान्‌के पर्वत कैलाश और स्वर्ण शिखरों वाले मैनाकको पहचाना। हृदयमें भयभीत परन्तु फिर भी लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह आगे बढ़ा, उसकी आंखोंमें मौन आनन्द था। वह उस आदमीकी न्याईं था जो लम्बी यात्रा-से लौट कर पुराने गांव और दरवाजेपर खड़े बच्चोंके चेहरोंको देखता है। एक वन्य परीलोकमें जहां पहाड़ी नदियां धुँधली चट्टानोंमेंसे चमकती हैं और उलझे हुए पेड़ों-से जूझती हुई, काई-भरे ऊबड़-खाबड़ पत्थरोंमेंसे होती हुई सरोवरमें आ मिलती हैं जहां सारा पानी कमलोंसे ढका हुआ है और लहरें पत्तोंके बीचमेंसे झिलमिलाती या फूलोंमेंसे छनती है। वहा आर्योंकी माँ विराजमान थी। उसकी केशराशिके नीचे एक भव्य पाण्डुरिमा थी। प्रशस्त सर्जनात्मक ललाटवाली माँ हल्का सुन्दर वेश पहने थी जो फूलोंसे बंधा था और उसकी घन-अलकावलीसे ढका था। सुनहरे राजहंस उसके पानीमें लटके चरणोंके पास अपने पंखोंका प्रसाधन कर रहे थे। उसका एक हाथ उसके संगमरमर जैसे कपोलको सहारा दे रहा था और दूसरा रहस्यमय कमल को पकड़े हुए था। उसे देखते ही पुरूरवसने झुककर प्रणाम किया। उसने कुछ सोचते हुए धीरेसे कहा - "बेटा, मैं तेरे कदमोंको दूर से ही पहचानती थी। तू मेरा ही था। मैं हर्षातिरेकका अनुभव कर रही थी, चारों दिशाओंसे हवाके साथ बिम्बोंके सागरने मुझ पर आक्रमण किया। मैने भविष्यद्रष्टा मनसे गंगा और सिंधुको देखा। मेरे वक्षसे एक निष्कलंक आवेग झलका और उसने धरती पर सौन्दर्यका रूप धारण कर लिया। मैंने उस महिमामेंसे तेरा प्रादुर्भाव होते हुए देखा और मैं आनन्दमग्न हो गयी। लेकिन अब तो तू अपदस्थ और मुकुटहीन होकर आ रहा है। वत्स, तुझे वह सुन्दर आवेश मुझसे ही मिला था जिसने तेरी आत्माको रंगीन बना दिया। मैं असह्य ऊंचाइयोंके लिये प्रयास कर रही हूँ और उस पवित्र तीव्र ज्योतिके प्रभामण्डलोंसे दमक रही हूँ। देखो! वसन्त और उसके सब फूलोंको देखो, यह सोमरस कैसा चमक रहा है। कैसे सुनहरे आनन्द हैं, क्या सजीव आवेश हैं, कैसे अमर अश्रु हैं! मैं शाश्वत-को छिपाने वाले परदेको उठाती हूँ —— हा, मेरे पलक मूर्छित हो रहे हैं, हाय, इससे तो परदा अच्छा था। मेरे फूल उस ऊंचाई पर मुरझा रहे हैं, मेरा हंस उन पंखोंको नहीं फैला पाता जो अभी तक ललित और मनोहर थे। एक दिन मैं उस महान् काव्य और संगमरमरी अभीप्सासे मुड़कर प्रेमियोंके बारेमें, धन और सुराके बारेमें, ऊष्मा

भरे आनन्द, सुखद कामनाओं और धरतीके बारेमें मधुर गान गा सकूँगी। हे मेरे अपने पुत्र, पुरूरवस, तुम्हारी तीव्र असफलताके कारण मेरा अपने देदीप्यमान आकाश-से पतन हो गया।"

इलाके पुत्रने उत्तर दिया - "हे शुभ्र भुजाओंवाली आर्योंकी माता, मेरे जीवन-की स्रष्ट्री ! विशाल नियति अभिभूत कर देती है। मैं एक लहरकी तरह भटक रहा हूँ, मेरी आत्माको कुरेदने और व्यर्थ करने वाली कामना की कोई सीमा नहीं मिलती।" एक मधुर अमर मुस्कानके साथ माँने उसके चुल्लूमें सरोवरका जल दिया। राजाने उसका पान कर लिया। अब वह अनन्तको समझ पाया। उसने कालको नक्षत्रों-के बीच कुण्डली मारे सांपकी तरह देखा। उसने धरती भी देखी, मर्त्यलोकके दिन-रात उसके लिये क्षण हो गये। उसके अवयव अक्षय और अमिट बन गये और उसके विचार संगमरमरकी तरह सहनशील बन गये।

देवीने दिव्य भाव वाले वीरसे कहा - "हे शक्तिशाली अमर, अब अपने आनन्द-की खोजमें लगो। पहले तुम कैलाशके शिखर पर चढ़ो। वहां माँ महाशक्ति विराज-मान हैं, उनकी प्रभुतामयी वाणी ही तुम्हारी भावी यात्राके लिये स्वीकृति देगी।" यह कह कर माँने अपने दिव्य अधरोंसे राजाके माथेको चूम लिया और प्रफुल्ल पुरुरवस निर्जीव स्तब्ध शिखरोंकी ओर चढ़ने लगा। वहांसे गहरी गुप्त गहन महिमामें स्थापित एक आवाज सुनायी दी। जैसे किसीकी आंखें बहुत समय तक अन्धेरेकी अभ्यस्त रही हों तो वे धीरे-धीरे ही प्रकाशको सह पाती हैं उसी तरह राजाने स्पष्ट रूपसे शान्त करुणामय चेहरे, आकाशसम विशाल भाल और सारे जगत्को धारण कर सकने वाले सशक्त अंगोंको देखा। उसकी भविष्य सूचक गहरी आवाज सुनायी दी। "हे द्युति-मान आत्मा, तू असफल रहा, लेकिन भगवान् न तो दोष देते हैं और न दण्ड। वे निष्पक्ष भावसे हर उपयोगी आत्माको उसका चुना हुआ पुरस्कार देते हैं। कोई भी कार्य, चाहे वह कितना ही विकृत क्यों न हो बेकार नहीं जाता। कर्मके महान् योगफलमें शक्तिकी चाहे जितनी छोटी राशि क्यों न जोड़ी जाय, वह अपना ठीक-ठीक परिणाम लानेसे नहीं चूकती। तेरे वंशमें साम्राज्य रहेगा और सशक्त मस्तिष्क पैदा होते रहेंगे। भव्य और प्रतापी आत्माओंके शासनकी असीम प्रेरणाएं हमेशा आती रहेंगी। विशाल मानस, और महान् व्यक्ति युद्धके द्वारा, शौर्यके द्वारा और तूफानके द्वारा आर्यों-के इतिहासमें युगोंकी वाणीको ज्वलंत अक्षरोंमें मुद्रित करेंगे। तेरे वंशमें परम आत्मा एक मानव रूपमें सारी सृष्टिको अपने साथ बांध लेगी। मथुरा और द्वारिकाके सागर-में आत्माके पार्थिव रूपसे पूर्ण हो सकनेका उदाहरण मिलेगा। तेरे ही वंशका एक पुत्र और प्रशंसक, स्वर्णिम काव्यका महान् और प्राँजल कवि होगा, जिसके गानका

विस्तार सारे जगत्को अपनेमें ले लेगा। और ये सब प्रयास एक विशाल दृढ़ धर्मी, उग्रता और आवेश भरे असंयमके कारण बिगड़ जाऐंगे। अगर शुद्ध रहे भी तो उनका काम बादमें आनेवाले उपद्रवी हाथोंसे अछूता न रहेगा और उसपर उनकी कीर्तिमें लोक गाथाओंसे दाग लग जायेगा। इक्ष्वाकुकी सन्तान ही मेरी ऊंचाइयों पर भगवान्-की हवामें श्वास लेते हुए आकाशकी तरह मजबूत और शुद्ध पवित्र रह सकती है। स्वर्गकी पूर्ण प्रशस्ति और धरतीके अद्वितीय स्तवन उन्हींके भाग्यमें लिखे हैं। लेकिन हे इलाके पुत्र, तुम अपना आनन्द ले सकते हो। तुम्हारे लिये मधुर शाश्वत गंधर्व-लोकमें उल्लास और उर्वशीका मुक्त आंलिगन रहेगा, देवोंकी लम्बी रात शुरू होने तक तुम उसका उपभोग करते रहोगे।"

महान् शब्द नीरव हो गया। बलवान् पुरूरवस अपने बड़े पुरस्कारसे बहुत प्रसन्न था यद्यपि वह था बहुत महंगा। उसे एक अनन्त पतनकी कीमत देकर खरीदा गया था। फिर भी एक दिव्य आधार पाकर राजा संसारसे ऊपर उठ चला। उसने बीचके मधुर प्रदेशोंमें, दूधकी तरह सफेद बरफकी चोटियों पर, मनोहर कोणों और आकर्षक सरोवरोंसे होते हुए, सूर्यालोकसे आलोकित गंधर्व-लोकके मार्ग और द्वार देखे। एक समुद्रसे दूसरे समुद्रकी ओर भटकते हुए किसी जहाजको तटके नजदीक पा कर भी जितना आनन्द न हुआ होगा उतना ही आनन्द धरतीके सफल पुत्रके दुखी हृदय-को अपना सुन्दर लक्ष्य सामने देखकर हुआ। वह गंधर्व-लोकके द्वारकी ओर तेजीसे बढ़ा। एक देवदूत जैसे चेहरे वाला द्वारपाल चिल्लाया - "पुरूरवस, हम तुम्हारे लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं।" उसके संगीतमय कर्णकुहरोंमें कब्जोंकी आवाज आयी। राजाने सूक्ष्म चेहरोंको अपने ऊपर नजर गड़ाये हुए पाया, उसने अमर वीणाकी ध्वनि-के साथ प्रवेश किया। रास्तोंपर उसके आगे उच्च कोटिके वाद्य-यंत्रोंकी रजत-ध्वनि चल रही थी। सभी दिशाओंसे अद्‌भुत संगीतकार अमर-प्रेमीका स्वागत करनेके लिये उमड़े पड़ रहे थे। उनमेंसे एक अधिकारीने, जिसके सुन्दर भालपर गांधर्व सत्ता-का तेज था कहा - "हे इलाके सुविख्यात पुत्र पुरूरवस तुम्हारे भाग्यमें वें आनन्द वदे हैं जिनकी मर्त्य आशा भी नहीं कर सकते! अपनी पवित्र महिमाकी ओर, अपने निश्चित गृहकी ओर बढ़नेवाले नक्षत्रकी तरह बढ़ो और हमारे सबसे बड़े तारेकी तरह चमको जैसे अपनी हरित भूमिपर चमका करते थे।"

वे राजाको रोमांचित संगीतमय प्रदेशोंमेंसे लेकर चले। वे उसे देखकर विस्मय करते थे। उसके उत्कृष्ट शरीर और वदनकी, उसके योद्धाओं जैसे अंगोंकी और उसके वीरोचित लालित्यकी प्रशंसाके गीत गा रहे थे, पर उसने जरा भी ध्यान न दिया। उसकी सारी सत्ता पूरी एकाग्रताके साथ नजदीक आते हुए आनन्दकी प्रतीक्षा कर रही

थी। उसकी आंखोंने, जो हमेशा उर्वशीको ही खोजा करती थीं, बड़े-बड़े पेड़ोंकी एक दीवार देखी। उनमें एक जगह धन्वाकार द्वार-सा बना था। वहां अप्सराओंमें सबसे सुन्दर दो आगे बढ़ीं। उनमें एक प्रसन्न नदीकी भांति उत्फुल्ल और दूसरी गंभीर स्मित वाली थी। दोनोंने राजाका एक-एक मजबूत हाथ अपने नाजुक हाथोंमें लिया और उसे एक ऐसी जगह ले चलीं जो स्वप्निल पत्तों वाले स्वर्गिक वृक्षों, जादुई तटों और पहाड़ियोंके मधुर वर्तुलोंके बीच थी। सब पर जादूकी तरह सूर्यालोक छाया था, वहां उतरनेवाली कलकल करती सरिताके किनारे हरा परदा बनाती हुई शाखाओंके नीचे उर्वशी थी। वह चुपचाप उठी और शान्त विस्फारित नेत्रोंके साथ उसकी ओर बढ़ी। उनकी अमर दृष्टियोंमें एक भव्य गहन भावना थी जिसे प्रकट करना प्रसन्नताके बसमें न था। उनमें यह भाव था कि सारी शाश्वतताको एक पूर्ण क्षणका अनुसरण करना पड़ेगा। तब उस गंभीर स्मितवाली सुन्दरीने कहा - "तुम लम्बे वियोगके बाद मिल रहे हो और ब्रह्माकी रात तक कभी न बिछुड़ोगे। तुमने अपने प्रबल धैर्य द्वारा अनिच्छुक देवोंको झुका लिया अब तुम्हारी आत्माओंको अपरिवर्तनशील आनन्दको सहनेके लिये वैसा ही प्रबल होना पड़ेगा।"

और उस पारदर्शक जगत्‌में वे अकेले छोड़ दिये गये। उर्वशीकी ओर झुकते हुए पुरूरवसको उसकी अपनी सत्ताने आलिंगनमें बांध लिया और गम्भीर आनन्दका अनुभव किया। अपनी प्रेयसी उर्वशीका सुनहरा वक्ष अपने वक्ष पर लेते हुए उस पवित्र चेहरेको जिसके लिये वह इतना तरसा था एक लम्बा चुम्बन देता गया। मधुर स्वर्गमें प्रेम सन्तुष्ट हो गया लेकिन नीचे, बहुत नीचे, नीरव अगाध अवकाशमें अनवरत परिश्रम करती हुई हरी-भरी धरती परित्यक्त होकर असहाय घूमती रही।

मायावी घड़ी

मायावी घड़ी

स्टर्ज मेनार्ड पत्थरकी बड़ी अंगीठीके पाससे उठा और मनुष्यको अन्धा करनेवाले काले-पीले कुहासेको देखा जो लन्दनको अपनी ठोस, विशाल परतोंमें लपेटे था। उसके हाथमें अब भी वह पुरानी पुस्तक थी जिसे वह पढ़ रहा था, उसकी उंगली उसी पृष्ठ-पर लगी थी; मेनार्डका मन लेखकके कल्पना-प्रवाह की ओर खिंचा हुआ था, लेकिन पूरे सन्तोषसे नहीं। क्योंकि जहां लेखककी कल्पना ने उसके कौतुहलको प्रसन्न किया था वहीं उसकी तर्क-बुद्धिको विरक्ति दी। रहस्यवादी और समय तथा स्वभावसे मध्ययुगीन लैटिनपंथीने उन मानसिक रुचियोंका उल्लेख किया था जिन्हें आधुनिक जगत्ने मतदान-कक्ष और गिनती-घरकी दौड़-धूपमें कभीका दूर फेंक दिया है। स्थिर और दृश्य जगत्के ज्ञानका स्वामी, यह युग, जिसके पास कठोर और निश्चित हल हैं बहुतेरी सूक्ष्मताओंसे घृणा करता है, और अपने निरंकुश शासनका विस्तार आत्म-श्रद्धापूर्ण अज्ञानमें गुह्य जगत्की सीमाओंतक फैलानेकी कोशिश करता है। लेखक-का कहना है कि गुह्य कहनेका कारण यह है कि हम उस चाबीको फेंक देते हैं जो हर एकके हाथमें है, और वह है वह खुद।

स्टर्जने सोचा "रहस्योंके ये शुष्क लेखक, ये भ्रांत कल्पनाओंके व्यापारी! क्या यहां बुने हुए बोझिल जालके प्रमाण-स्वरूप सत्य-घटनाकी पतली सी रेखा भी मिल सकती है? ये विचार जिस अनिश्चिततामें घूमनेमें सन्तोष पाते हैं उससे तो बाहर छाया हुआ कुहरा कम स्थूल है।"

जर्मन रहस्यवादीने लेखके एक अनुच्छेदमें असामान्य किन्तु ऊटपटांग बात लिखी थी कि दीप्ति या तेजका तत्व अनवरत क्रियाशीलताके साथ विचारोंकी गतिका साथ देता है। शुद्ध, धुँधले, डरावने या विषादपूर्ण प्रकाशकी कौंध ही इसका भौतिक रूप है। उन्होंने कहा "मनीषियोंका यह सामान्य अनुभव था कि मस्तिष्ककी तीव्र गतिके क्षणोंमें उनका सिर, और प्रायः सारा वातावरण बैंगनी रंगकी बिजलियोंसे जगमगा उठता था। इन अतिशयोक्तियोंपर विस्मय करते-करते उसके मनमें अपने बचपन-की स्मृति कौंध आयी जब वह अपने सिरके चारों ओर इसी तरहका बैंगनी प्रकाश देखा करता था और अपने बाल-स्वैर विहार में उनमें रमा रहता था। फिर सयाने-पनके साथ आश्चर्य आया और फिर अविश्वासने तेजीसे उस चमत्कारका क्षय कर

दिया।"

तब फिर क्या जर्मन लेखककी कल्पनाओंके लिये अनुभवका औचित्य था? उसने आवेगमें आकर इस तर्कका विरोध करनेका असफल प्रयत्न किया। वह खिड़कीके बाहर कुहरेमें आंखें गड़ाये प्रतीक्षा करता रहा। उस क्षण उसे अपने मस्तिष्कमें एक विचित्र हलचलका अनुभव हुआ, मानों उसकी सारी सत्ता एक जगह एकत्रित होकर सभी इन्द्रियोंके साथ आंखोंमें समा गयी। फिर कुहरेमें बैंगनी प्रकाशकी कौंधका दृश्य दिखायी दिया और नाड़ियोंमें उत्तेजना बढ़ती गयी जिसे एक विचित्र और असामान्य रूपसे शान्त मस्तिष्क देख रहा था। चमत्कारिक दृश्यों, अद्भुत ध्वनियों-की एक सृष्टि, भूत और भविष्यके अनुभवोंकी दुनिया निश्चित रूपसे उसपर दबाव डालती जा रही थी, सम्पर्कमें बाधक होनेवाले किसी व्यवधानपर उमड़ती चली आ रही थी। उसकी बुद्धि आश्चर्यचकित थी और बिना किसी घबराहट या उद्वेगके बीचमें रस ले रही थी। और जो हो रहा था उसे अपने-आपको समझानेकी कोशिश कर रही थी। अपने प्रयासको सहायता देनेके लिये उसने फिरसे दृश्यकी पुनरावृत्ति या खण्डनके लिये कुहरेमें अपनी आंखें गड़ा दीं। अब बैंगनी कौंध तो न थी, लेकिन कुछ इशारा हो रहा था, कोई चीज रूप ले रही थी। बाहरकी धूसर कालिमामें किसी वस्तुका आविर्भाव हो रहा था। वह उज्जवल हो गई, वह गोल हो गई और स्पष्ट हो गई। वह कोई मुख था या गोला? भावनाकी निराशाभरी प्रतिक्रियाके साथ उसने देखा कि उसके सामने कोई रूमानी चीज नहीं, एक घड़ी थी। वह मुस्कुराया और अपनी मजबूत, ठोस, दिखती, रहस्यहीन, व्यावहारिक, अंगीठीके ऊपरकी आल्मारी पर रखी घड़ीके साथ तुलना करनेके लिये मुड़ा। उसका शरीर आश्चर्यके झटकेसे तन गया। वहां उसीकी घड़ी थी, आबनूस-सी काली, स्वर्णाक्षरोंमें घण्टों-का अभिलेख रखनेवाली घड़ी, प्रथानुसार बीचमें फादर टाइम और इधर-उधर दो पंखवाली देवियोंके ऊपर नजाकतसे खड़ी थी। उसने ध्यानसे देखा घड़ीकी सुइयां बारह और पांचकी ओर बढ़ रही थीं, अब जल्दी ही घण्टे की आवाज गूँज उठेगी। किन्तु, उसके पास ही, यह मायावी और अस्वाभाविक, साथिन क्या थी? एकदम स्थिर और स्पष्ट मानों वास्तविकताका मुँह चिढ़ाती हो। यह भी आबनूसी शकलवाली थी पर इसके कक्षर चांदीके थे और यह नजाकतसे नहीं ठोस ढंगसे खड़ी थी। यह आठके घण्टेकी ओर उतनी ही वास्तविकतासे इंगित कर रही थी जितनी सच्ची घड़ी पांचकी ओर। उसे यह देखनेका वक्त भी मिल गया कि उस घड़ीमें चार आम रोमन अंकोंमें नहीं लिखे थे बल्कि चारका निशान तिरछी और समानान्तर रेखाओंसे बना था। इसके बाद वह प्रेत-दृश्य अदृश्य हो गया।

बस आंखोंआ भ्रम ! शायद किसी मैत्रीपूर्ण दीवानखानेमें देखी हुई परिचित घड़ीकी तीव्र स्मृति होगी। निश्चय ही, क्या वह परिचितसे भी अधिक न थी ? अवश्य ही वह उस घड़ीको पहचानता था,——उसे देखा था, स्पष्ट रूपसे बार-बार देखा था,—— वही आबनूसी शक्ल, वही रूपहले अक्षर, वही खूब सजी हुई मजबूत पीठिका और वही चारका आकार ! लेकिन कहां और कब ? भूली हुई बारीकियोंकी व्यर्थ खोजमें लगी हुई उसकी स्मृतिके आगे कोई रुकावट आकर उसे परेशान कर रही थी।

अचानक घड़ीने, उसकी अपनी घड़ीने पाँचका घंटा बजाया। उसने यंत्रवत् परिचित आवाजोंको गिना; तीव्र, स्पष्ट और धातुकी प्रति-ध्वनियोंसे गूँजते स्वरों-को गिना। और फिर, कान उस चीजसे पीछे हटें इससे पहले दूसरी घड़ी बज उठी, तीव्र नहीं, स्पष्ट भी नहीं, धातुके स्वरमें भी नहीं, बल्कि मृदु, सुसंवादपूर्ण स्वर और अन्तमें एक संगीतमय झनझनाहटके साथ बजी और टकोरोंकी संख्या थी आठ !

स्टर्ज मेजके पास बैठ गया और पुस्तकको यूँही कहींसे भी खोला। अगर यह इन्द्रजाल था, तो बड़े यत्नसे और बड़ी अच्छी तरह निभाया गया था। क्या कोई उसके मस्तिष्कके साथ सम्मोहनके खेल कर रहा है ? या वह खुद अपने आपको सम्मोहनमें डाल रहा है ? उसकी आंखें पृष्ठपर गईं और वहां मध्ययुगीन लातीनी नहीं, बल्कि पुरातन यूनानी भाषा थी, हालांकि होमरसे भिन्न प्रकारकी षट्पदियां थीं जिनके अक्षर एकदम स्पष्ट थे, अर्थ——सीधा।

"क्योंकि अमर देवगण हमेशा धरतीपर घूमा करते हैं और मर्त्योंके घरोंमें अप्रत्याशित रूपमें आते हैं लेकिन विरली आंख ही उन्हें देख सकती है और ऐसे मन और भी विरल होते हैं जो देवों और उनके छद्म रूपमें फर्क समझ सकें।"

फिरसे सम्मोहन ! क्योंकि वह वृद्ध रहस्यवादीकी मूल पांडित्यपूर्ण भाषाको जानता था, उसका विषय सूक्ष्म था, किन्तु अभिव्यक्ति असंस्कृत, व्यतिक्रमसे भरी हुई, उबानेवाली, अव्यवस्थित, शुरूसे अन्ततक केंकड़ेनुमा लातीनीमें उत्पीड़ित भाषा थी। उसमें कहीं भी यूनानी भाषा न खिली थी, कहीं भी कविताका रूप न था। उसने देखा अभी और भी षट्पदियां थीं। उसने आगे पढ़ा।

"और मनुष्य भी सूर्यके प्रकाशमें छद्मवेश धारण करके रहते हैं और जन्मसे मरण तक कभी तुम उनके मुखौटे को उठते न देखोगे। नहीं, हे पीलोप्स, क्या स्वयं तुमने एक बार भी अपने अन्दर बैठे देवको देखा है ?"

षट्पदियां खतम हो गयीं और दूसरे ही क्षण मूल पृष्ठ अपने सच्चे अक्षरोंके साथ फिरसे उभरने लगा। किन्तु उसके कानोंमें मायावी घड़ी की मधुर, सामंजस्यपूर्ण, स्पष्ट टकोरें फिरसे गूँजने लगीं। और फिरसे एक बार उनकी संख्या आठ थी।

स्टर्ज मेनार्ड उठ खड़ा हुआ और किसी अधिक स्पष्ट चिह्न या इंगितकी प्रतीक्षा करने लगा। क्योंकि अब वह समझ गया था कि कोई असाधारण मानसिक अवस्था, कोई अविस्मरणीय अनुभव आनेको है। उसकी प्रतीक्षाने धोखा नहीं दिया। फिर एक बार घंटा नाद शुरू हो गया, किन्तु इस बार उसे लगा कि उस पूर्णतया परिचित लयके पीछे किसी स्त्रीकी आवाज उसे बड़े आवेशमें बुला रही थी। किन्तु ये दो मायावी आवाजें इस अंग्रेजी भूमि और इसी जन्म की थीं या किसी पिछले जन्मसे उसे चुनौती दे रही थीं? आग्रह और अनुरोधके साथ किसी ऐसे चोलेकी याद दिला रही थीं जिसे उसने पहना और उतार फेंका, किसी ऐसे नामकी जिसे पुकारनेसे वह उत्तर देता था पर अब भूल गया है, और उस समय किसी मर्म-स्पर्शी घड़ीकी याद दिला रही थीं। वह जो भी हो, था उसके नजदीक ही और उसकी हृत्तंत्रियोंको जोरसे छू रहा था। और फिर आठवीं टकोरके एकदम बाद मानों कहीं दूर एक सुस्पष्ट ध्वनि-विस्फोट हुआ, एक आधुनिक रिवाल्वर की ध्वनि सुनायी दी।

स्टर्ज मेनार्डने अंगीठी छोड़ दी और कमरेसे बाहर निकल सीढ़ियोंसे उतरा, हैट और ओवर कोट पहने, और घरके दरवाजेकी ओर बढ़ा। उसके सामने यह स्पष्ट न था कि वह कहां जायगा या क्या करेगा, किन्तु जो भी हो उसे करना अवश्य था। तभी उसे ख्याल आया कि वह कपड़ोंकी आलमारीके एक दराजमें पड़ा अपना रिवाल्वर भूल आया है। वह ऊपर गया, हथियार को लिया, उसे भरा और अपने दायें हाथके पासकी जेब में रख लिया। उसने अच्छी तरह देख लिया कि जेबमें दो चाबियां भी रखी थीं, वह फिरसे सीढ़ियां उतरा और लन्दनके एकदम ठोस कुहरेमें चल पड़ा, उस कुहरेमें जो गीला, दम घोटनेवाला और अभेद्य था।

वह एक ऐसे जगत्‌में घूम रहा था जिसका शायद स्मृति कोषको छोड़कर और कहीं अस्तित्व ही न था। यातायात की तेजी न थी। बीच-बीचमें कभी-कभी कोई गाड़ीवान फटी आवाजसे सावधानीसे प्रगति करती हुई अपनी गाड़ीकी घोषणा करता था। स्टर्ज अपने आगे या इधर-उधर कुछ न देख पाता था,—सिर्फ जब वह किनारे पर आता तो एक कंदीलका खम्बा-सा उसपर मरी-मरी-सी रोशनी डालनेकी कोशिश करता या जब दूसरी ओरसे किसी दीवारके कंकालका टुकड़ा उसकी आस्तीन से घिस जाता था। किन्तु अपने पावके नीचे की पक्की सड़कका उसे विश्वास था, और उसे लगता था कि वह कोई गलत मोड़ नहीं ले सकता। इन्द्रियों और स्मृतिसे अधिक निरापद मार्गदर्शक उसे लिये जा रहा था।

उसने रास्ता पार किया, हाइड-पार्कके फाटकमें प्रवेश किया, कुहरेसे ढके अदृश्य मैदानको सीधी लकीरमें आगे बढ़ते-बढ़ते एक ओरसे दूसरी ओर तक काटा और

मार्बल आर्चसे गुजरते हुए पहली बार ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट पहुँचकर हिचकिचाया। दो स्त्रियां उसे प्रिय थीं, उनमेंसे किसीकी मृत्यु उसके आधे अस्तित्वको वीरान कर सकती थी। उसे किसके पास जाना चाहिये? फिर उसके मनने, या उसके अन्दर किसी औरने उसके लिये निर्णय किया। ये सारी अटकलबाजियां बेकार थीं। उसे अपनी बहन इमोगनके पास जानेकी जरूरत नहीं है। अपने चाचाके सुसज्जित, सुरक्षित, आरामदेह घरमें, निर्दोष रूपसे लापरवाह और अहानिकर सुन्दर वस्तुओंसे भरे इमोगनके सुखद जीवन-चक्रमें कोई अनिष्ट कैसे सम्भव हो सकता है? किन्तु रने! रनेकी बात और थी।

वह परिचित दिशामें चलता चला गया। चलते-चलते उसकी स्मृतिमें यह बात कौंधी कि आज रनेने उसे अपने घर आनेसे मना किया था। उसके पिछले जीवन का कोई जीता-जागता संस्मरण उसके पास आ रहा था, कोई ऐसा व्यक्ति जिसका स्टर्जसे परिचय करानेके लिये वह उत्सुक न थी —— रनेने अपनी साधारण स्पष्टता भरी लापरवाहीसे कहा था; स्टर्ज मिलने न आना। उसने पूछा भी नहीं। रनेके साथ प्रथम मिलनसे ही, स्टर्ज ने कभी न पूछा था, और रने बोरगार्दका भूतकाल उस पुरुष के लिये भी एक शून्यवत् था जिसे वह अपना सर्वस्व दे चुकी थी। उस शून्यमें असामान्य घटनाओंके लिये, और बड़े-बड़े जोखिमोंके लिये स्थान था। अब उसे याद आया कि रनेका विदाई-आलिंगन जोर का तथा उग्रता और क्षोभसे भरा था, उसकी आवाज समझमें न आनेवाली भावुकतासे कांप रही थी। उसने विशेष ध्यान दिये बिना इसका अनुभव किया था, क्योंकि वह अपने ही आवेगमें तल्लीन था। मनके जिस भागने यह निरीक्षण किया था, उसने इस घटना के कारण को साधारण सीमाओं में ही बांध लिया था। पुरुषोंकी आदत होती है कि अस्वाभाविक वस्तु की तबतक अवहेलना करते हैं जब तक वह उन्हें पकड़ कर आश्चर्यमें नहीं डाल देती।

वह चौराहे तक जा पहुँचा और उसने जिस मकान में रने रहती थी उसका दरवाजा अपनी जेब में पड़ी चाबीसे खोला, कोट और हैट उतारे और दीवान-खानेकी ओर कदम बढ़ाये। एक उन्नीस-बीस सालकी लड़की खुले दरवाजे की ओर मुँह किये उठ खड़ी हुई, शान्त और विवर्ण। उस के हाथ का जोरों से कुर्सी के हाथ को जकड़ना, उसके शरीर का आवेग से सामने झुकना एक जबरदस्त भावना और तीव्र प्रतीक्षा का संकेत था। किन्तु जब उसने मिलने वाले को देखा तो उसका मुख लाल हो उठा, हाथ और शरीर ढीले हो गये। रने बोरगार्द दक्षिण फ्रांस की एक फरासी महिला थी, शारीरिक सम्पत्ति में समृद्ध, प्राणशक्ति से भरी, जीभ और आत्मा की स्फूर्ति से भरपूर। उसके उत्तम भरे हुए अंग-उपांग, उसके लहराते कदम, उसके

लाल होठों की चपलता, उसकी मुस्कुराती आंखें –– जीवन से, सफलतासे, सुखसे, और प्रेम से बड़ी-बड़ी मांगें करती थीं। किन्तु आंखों की उस अजेय सुखभरी ज्योति में इस समय दुःखद निराशा की छाया उनके स्वाभाविक भाव को कुरूप बनाती हुई बार-बार आ रही थी। यह स्पष्टतः एक ऐसी स्त्री थी जिसका भूतकाल कुछ विशेष था,–और वर्तमान भी असामान्य था। अब अगर नियति नहीं तो उसका स्वभाव ही किसी अर्थपूर्ण भावी की मांग कर रहा था।

"स्टर्ज !" कहते हुए उसने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। स्टर्ज पत्थर की अंगीठी तक गया और रने का हाथ पकड़ लिया।

"मैं तुम्हारा निषेध भूल गया था और जब याद आयी तो इतना नजदीक आ चुका था कि पीछे लौटना सम्भव न था। और फिर कुहरा भी था; वापस जाने से उदासी आती थी क्योंकि तुम यहां हो।"

"तुम्हें भूलना न चाहिये था" उसने कहा, लेकिन कहकर मुस्कुराई। वह उसके आगमन से खुश थी। फिर से काली परछाई ने उन हंसती हुई आंखों पर कब्जा कर लिया। वह बोली "तुम्हें वापस जाना होगा, ना, अभी नहीं। पाव घंटे के बाद। तुम पाव घंटे तक ठहर सकते हो।"

रने की आंखें घड़ी की ओर घूमी, और उसकी आंखों ने रनेकी आंखों का अनु-सरण किया। उसने आबनूसी घड़ी देखी, रुपहले अक्षरों वाली और ठोस पीठिका पर जमी हुई, चार की संख्या को चार समानान्तर रेखाओं से दिखानेवाली घड़ी देखी, और स्टर्ज अपनी स्मृति की असाधारण चालाकियों पर मुस्कुराया। अब छः बजकर पांच मिनट हुए थे।

"मैं इमोगन के घर जाऊंगा" उसने खूब सोच समझ कर कहा। रने ने उस की ओर देखा, घड़ी पर नजर डाली फिर उसकी ओर झुकती हुई आवेश में बोल उठी "और तुम आठ बजे आओगे और मेरे साथ खाना खाओगे। राकेल मेज पर दो के लिये खाना लगा देगी।" फिर वह पीछे हट गयी मानो निमंत्रण के लिये पछता रही हो।

आठ बजे! हां, वह अपना काम खतम करके रनेके साथ खाना खायगा। व्यवस्था कुछ ऐसी ही लग रही थी, लेकिन रने की नहीं, तो फिर किस की? शायद दानव की, या फिर अन्दर बैठे या बाहर स्थित देव की। वे कुछ देर बातें करते रहे, और उसने अनुभव किया कि उनका वार्तालाप कभी बाहरी तौर से इतना घिसा-पिटा और अन्दर से भावों से इतना ललकता हुआ न रहा था। छह बजकर बीस मिनट पर वह उठा, विदा ली और कुहरे की ओर चल पड़ा; किन्तु रने उसके पीछे दरवाजे तक

आयी और उसे कोट पहनने में मदद दी, वह स्पष्ट रूपसे कांप रही थी। उसके बाहर निकलने से पहले रने ने उसको आलिंगन में बांधा और एक बार चूम लिया, उग्रता से नहीं, बल्कि एक स्थिर शान्ति से, मानों उसने इसी क्षण अपने हृदय में कोई महत्वपूर्ण निर्णय किया हो, जो इस दुलार में व्यक्त हो रहा था।

"मैं आठ बजे तक वापस आ जाऊंगा" उसने शान्तिसे कहा। उसने रने के आलिंगन को स्वीकार किया था किन्तु बदले में उसे आलिंगन में नहीं बांधा।

आठ तक! हां, और उससे भी पहले। लेकिन स्टर्ज ने रने से यह बात नहीं कही। वह कुहरे में झूमता हुआ, हल्के स्वच्छ और लापरवाह मन से, किन्तु हृदय में तीव्र शान्ति लिये अपने चाचा के घर की ओर चला। वह एक बहुत संभ्रान्त प्रतिवेश में जा पहुँचा जहां एक स्थूलकाय दरबान ने उस का अन्दर स्वागत किया। सर जोन बाहर गये हुए थे, शायद सदनमें थे, लेकिन कुमारी इमोगन मेनार्ड घरमें थी। इसके बाद का एक घण्टा स्टर्जने बड़े शान्त और हल्के ढंगसे बिताया; क्योंकि अपनी बहन की रोज की आकर्षक व्यक्तिगत बातें जीवन की सतह पर हौले-हौले दौड़ती जाती थीं, मनोरंजन और रंगमंच, पुस्तकें, संगीत और चित्र-कला राजनीति के साथ अदल-बदल कर रही थीं और सभ्यता से लोकनिन्दा या चुगली की ओर भी संकेत होते जाते थे। उसका हृदय भी अनजाने ही अपना तनाव खो बैठा और सहज अवस्था में वापिस फिसल पड़ा, बाहरी बातोंमें अपना आन्तरिक तत्व भूल गया।

दूसरा घण्टा बीता और थोड़ी देर ज्यादा भी हो गयी। इमोगन मेनार्ड खड़ी हुई और बोली "स्टर्ज, आठ बजने में दस मिनट बाकी हैं। मुझे जाकर कपड़े बदलने चाहिये। तुमने यही ठीक किया है खाना न खाओगे?"

स्टर्ज मेनार्ड ने घड़ी की ओर देखा और उसका हृदय रुक-सा गया। उसने अपनी बहन से उतावली में विदा ली, सीढ़ियों से भागा, हैट और कोट हाथों में लिये और कुहरे में आ गया और चलते-चलते कोट पहनता गया। उसने रिवाल्वर और चाबियों को देखकर अपने आप को आश्वस्त किया और फिर दौड़ने लगा। उसे बहुत बड़ा डर था कि कहीं उतावली में वह मोड़ न भूल जाय और घण्टा बजनेके बाद पहुँचे। किन्तु उस मोड़को भूलना मुश्किल था, पूरे आधे मील में वही तो एक खुला मैदान था। और वह देव या दानव क्या वह केवल भविष्य बताने आया था, बचाने के लिये नहीं?

वह रने के मकान की ओर मुड़ा और, जैसे ही घर में कदम रखा और सीढ़ियां चढ़ने लगा कि सारी उत्तेजना हिरन हो गयी। वह स्थिर श्वास और दृढ़ कदमोंसे दीवानखानेके द्वार की ओर चला। उसने हैट उतार फेंका था किन्तु कोट उतारनेके लिये नहीं रुका। उसका हाथ जेबमें गया और रिवाल्वरका कुन्दा उसके हाथ में था।

दरवाजा खुला था, एक अस्वाभाविक परिस्थिति यह थी कि वह जापानी परदे से ढका था। उसने किनारे पर खड़े होकर कमरे में झांका। कमरा नितान्त स्तब्ध था किन्तु खाली नहीं –– अंगीठी के सामने बिछे कालीन के दो छोरों पर खड़े थे रने बोरगार्द और स्टर्ज के लिये अपरिचित एक पुरुष। अजनवी रने की ओर ऐसे देख रहा था मानों उसकी वाणी सुनने की प्रतीक्षा में हो। वह शान्त, विवर्ण, मौन में दृढ़ संकल्प और भूतकाल का भार आंखों में लिये खड़ी थी। अजनवी की आधी पीठ स्टर्ज की ओर थी और उसके मुख के पार्श्व का एक भाग ही दिखायी देता था, किन्तु अंग्रेज अजनबी की ओर देखते ही द्वेष से कांपने लगा। क्या उसे यही करना था ? उसने रिवाल्वर बाहर निकाला और अपनी उंगली घोड़े पर रख दी। तब उसने घड़ी की ओर नजर की,––घण्टा बजने में चार मिनट बाकी थे। फिर अजनबी की ओर देखा, ––उसके हाथ में भी एक रिवाल्वर था और उसकी उंगली भी घोड़े पर थी। स्टर्ज मेनार्ड मुस्कुराया।

फिर पुरुष की आवाज सुनाई दी "इडाली, तब यह होकर रहेगा" उसने पतली, भयावह, दुःखद आवाजमें कहा। "निश्चय तुमने किया है। मुझ से मन मैला न करना। तुम जानती हो इसके सिवा कोई चारा नहीं। तुम्हें मरना होगा।"

स्टर्जको याद आ गया कि इडाली रनेका दूसरा नाम था, लेकिन रने हमेशा उस नामका उपयोग करनेकी मनाही किया करती थी। पतली आवाज बोलती गयी, इस बार शोकाकुलतामें विचित्र उत्तेजना की ध्वनि थी।

"और फिर तुम सब कुछ मुझ पर थोप रही हो ! इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैंने तुम्हें कैसे पाया ? बादमें मैंने क्या किया, प्रेमी के लिये सब कुछ उचित है। और मुझे तुम से प्रेम था। इडाली, प्रेम से खिलवाड़ करना खतरनाक है, अब तुम्हें पता लगा रहा है।"

स्टर्जने पुरुष की ओर देखा। रनेके लिये कोई खतरा न था, किन्तु इस कठोर, पतली आवाज वाले खूनी के लिये बड़ा भारी खतरा था। इस मनुष्य के लिये जिससे स्टर्ज मेनार्ड शरीर के एक-एक स्नायु से घृणा करता था, मस्तिष्क के एक-एक कोष में जिसके लिये घृणा बसी थी। उसे लगा कि उसका अंग-अंग हत्या के विजयी आवेग में नर-हत्या की शक्ति से बढ़ता हुआ स्पन्दित हो रहा था। बाहर कुहरा छाया था, और क्या कुहरा था वह ! वह आसानी से शरीर को ठिकाने लगा सकेगा। सचमुच यह अच्छी व्यवस्था थी। कभी-कभी भगवान् बड़ी चालाकी से काम करते हैं। वह अन्दर ही अन्दर अपने दम्भ की भयंकरता पर हंसा। फिर भी उसे इस पर विश्वास था। यह भगवान्का काम था, उसका अपना नहीं, फिर भी उसका अपना पूर्व निश्चित

काम —— कब से ? खैर, अभिशप्त आवाज आगे बढ़ रही थी।

"मैं तुझे और एक अवसर देता हूँ, इडाली —— हमेशा, हमेशा अवसर देता आया हूँ। तुम मेरे साथ चलोगी ? तुमने मुझसे बेवफाई की है, अपने शरीर से बेवफाई की है अपने हृदय से बेवफाई की है। लेकिन मैं क्षमा कर दूंगा। मैंने तुम्हें पलायन के लिये क्षमा किया है, इसे भी क्षमा कर दूंगा। मेरे साथ चलो, इडाली। और अगर न चली तो —— रने इडाली मार्दिरान, आठ का घण्टा बजने वाला है, और जब बज चुकेगा, तो मैं गोली मार दूंगा। मेरे इस हाथ के द्वारा देवता ही तुझे मारेंगे —— न्याय के देवता और प्रेमके देवता तूने दोनों को नाराज किया है। चलेगी तू ?"

रने ने सिर हिलाया। पुरुष के ऊपर मानों मृत्यु की सफेदी छा गयी। "तब हो लिया" वह आवेश में बोल उठा, "तूने ही किया है। तुझे मरना होगा।" उसने अपनी रिवाल्वर रने की ओर घुमाई और उसकी उंगलियां घोड़े पर कस गयीं। स्टर्ज बिना हिले-डुले खड़ा रहा। घण्टा बजने से पहले कुछ न होगा। वही नियत घड़ी थी, और विधाताके लिखे को कोई निमिष भर के लिये भी इधर-उधर नहीं कर सकता पुरुष आगे बोलता गया। "जबतक घण्टा न बजे तब तक कुछ न कहना। तब तक समय है। जब तुझे गोली मारूंगा तो राकेल दौड़ी-दौड़ी आयेगी और मैं उसे भी गोली मारूंगा, मैंने दरवाजा इसीलिये खुला छोड़ा है कि वह आवाज सुन सके। इंग्लैंड में मेरे अस्तित्व का किसे पता है ? मैं बाहर चला जाऊंगा,——हां, तुम दोनों के मर जाने के बाद, उससे पहले नहीं। बाहर कुहरा है, आसपास कोई नहीं है, और मैं चुपचाप चला जाऊंगा। न कोई देखेगा, न सुनेगा। भगवान् ने अपने कुहरे से दुनिया को अंधा और बहरा बना दिया है। देखा, इस के पीछे उन्हीं का हाथ है वरना मेरे लिये इतनी पक्की व्यवस्था न हो पाती।"

बड़ी कुटिलतासे मुस्कुराया स्टर्ज मेनार्ड। शायद एक दूसरे से घृणा करने वाले पुरुष, प्रायः एक मन के होते होंगे। शायद इसीलिये वे टकराते हैं। खैर, अगर भगवान् ने किया है, तो वह करुण रसका कलाकार भी होगा और नाट्यात्मक व्यंग्य की काव्यमय सार्थकता को जानता होगा। अपने दुष्कर्म तथा अपनी रक्षा के लिये इस आदमी ने जिन चीजों पर भरोसा किया था जो व्यवस्था की थी, वे सब चीजें उसी के हत्यारे के काम आ रही थीं या आयेंगी। और तब उसे यह चेतना हुई कि यह सब पहले घटित हो चुका था। लेकिन यहां नहीं, इस अंग्रेजी परिवेश में नहीं। हरे रंग का एक बड़ा सा धब्बा घड़ी को धूमिल करता हुआ उसकी आंखोंके आगे आ गया। अचानक एक दृश्य उछल कर सामने आया। हरी-भरी घास, हरे वृक्ष, हरे रंग से ढकी पहाड़ियां, हरा समुद्र, और तृणाच्छादित भूमि पर औंधे मुँह पड़ा एक पुरुष, जिसकी

पीठ पर आघात किया गया था। उसके ऊपर उस का हत्यारा था। कटारी अभी ताजे खूनसे सनी थी। पानी पर एक नाव डोल रही थी; जिसे हत्यारे के बच निकलने के लिये रखा गया था, उसमें एक बंधी हुई स्त्री पड़ी थी। स्टर्ज इन अजनबी मुखों को अच्छी तरह पहचानता था और उसे याद हो आया कि किस तरह वह स्वयं हरी-भरी भूमि पर मरा पड़ा था। उन चीजों को, इस दीवानखाने में आधुनिक आबनूसी भविष्य निर्देशक घड़ी द्वारा भूमध्य-सागर के हरे वृक्षों के आरपार देखना बड़ा अटपटा लग रहा था! लेकिन इस बार उसका अन्त और ही ढंग से होगा।

फिर स्त्री की आवाज गूँज उठी, ठंडी, मजबूत, लोहे की ठन-ठनाहट जैसी "मैं नहीं जाऊंगी" उसने सरलता से कहा। और घण्टा बजा। एक बार बजा, दूसरी बार बजा, तीसरी, चौथी बार। तब स्त्री ने आंखें ऊपर उठाईं और स्टर्ज मेनार्ड को परदे की ओर से आगे बढ़ते हुए देखा। स्टर्ज अच्छा निशाने बाज था। उसके निशाना चूककर रने की हत्या करने की सम्भावना ही न थी। लेकिन फिर भी वह ज्यादा निश्चित होना चाहता था।

स्त्री ने अपनी तीव्रता में अद्भुत आत्म-संयम पा लिया था और वह अब भी अटूट था। न तो वह हिली, न उस ने कोई आवाज की। लेकिन उसकी आंखोंमें एक दृष्टि झलकी जो अपनी पुकार में हृदय-विदारक थी और अपने संकेत में भयंकर। क्योंकि वह जीवन के लिये याचना थी और खून के लिये आदेश था।

दुर्भाग्य-ग्रस्त पुरुष घड़ी की ओर देख रहा था, रने की ओर नहीं; पीछे से आ सकने वाले खतरे की ओर तो उसका ध्यान ही न था। जैसे आठवीं संगीतमय टकोर खतम हुई कि उसने ऊपर देखा और स्टर्ज ने उस की पशु सी चमकती, स्थिर, क्रूर आंखों को जलते देखा। उसने घोड़े पर उंगलियां दबाईं।

"खेल खतम"! आदमी चिल्लाया। उसका बोलना था कि स्टर्ज मेनार्ड ने रिवाल्वर दाग दिया। कमरा गोली की आवाज से गूँजने लगा और धुँए से भर गया। जब धुँआ कम हुआ तो वह आदमी कालीन पर दंडवत् पड़ा था; वह जिस स्त्री को प्राण-दण्ड देने वाला था उसी के पैरों पर उसका सिर पड़ा था।

गलियारे में दौड़ते पांव सुनाई दिये और नौकरानी राकेल ने प्रवेश किया, —जैसा कि धराशायी पुरुष ने पहले से अनुमान किया था। जब वह आयी तो कांप रही थी, किन्तु उसने कालीन पर पड़े पुरुष को देखा, रुकी, अपने-आप को स्थिर किया और मुस्कुरायी "हमें इसी क्षण कुहरे में ही इसे बाहर ले जाना चाहिये" उसने सहज भाव से फ्रेंच में कहा। एक ही आवेग से दोनों, राकेल और स्टर्ज शव के पास गये तभी रने, उत्तेजित होकर बीच में कूद पड़ी, स्टर्ज की ओर दौड़ी और उसके कंधे पर हाथ रख

कर उसे कमरे से बाहर धकेलने लगी। "मैं यह सब कर लूंगी!" वह हांफती हुई बोली" जाओ!"

वह मुस्कुराता हुआ उसकी ओर मुड़ा।

"तुम्हें इसी क्षण जाना चाहिये" उसने दोहराया "तुम्हें मेरी कसम, इस घर में मत रहो। राकेल के अलावा औरों ने भी गोली की आवाज सुनी होगी।"

लेकिन उसने रने की कलाइयां पकड़ लीं, उसे अंगीठी से दूर खींच कर ले गया और कुरसी पर बिठाया।

"हम समय नष्ट कर रहे हैं, साहब" राकेल फिर से बोली।

"राकेल, समय नष्ट करना ज्यादा अच्छा रहेगा", वह बोला, "हम विधाता को दस मिनट देंगे।" और नौकरानी ने सिर हिला दिया और शव के पास जाकर व्यवस्थित ढंग से जख्म को अपने बड़े रुमाल से बांधना शुरू किया। दूसरे दोनों प्रतीक्षा में स्तब्ध बैठे रहे। स्टर्ज सोच रहा था कि अगर किसी ने गोली सुनी हो और वह उन पर आ धमके तो उसे क्या सफाई देगा। लेकिन घर के चारों ओर मौन और कुहरे का राज था।

उन्होंने शरीर उठाया, स्टर्ज ने कहा "अगर कोई देख ले, तो हम कह सकते हैं कि हम एक पियक्कड़ को उसके घर ले जा रहे हैं। उसे सावधानी से ले चलना, कहीं खून के निशान न होने चाहिये।" और इस अंग्रेजी कुहरे में वे उस आदमी को उठा ले गये जो परदेशी भूमि से जीवित आया था। और उसे सार्वजनिक रास्ते पर उस मकान और चौराहे से बहुत दूर जहां वह मरा था, उससे बहुत दूर रख दिया। जब वे कमरे में लौटे तो हत्या के एकमात्र साक्षी रक्तरंजित कालीन और रुमाल को राकेल ने उठा लिया।

"मैं उन्हें नष्ट कर दूंगी" उसने कहा, "और मेम साहब के कमरे से कालीन लेती आऊंगी। और फिर, साहब और मेम दोनों खाना खायेंगे" उसने पहले की सरलता से कहा।

रने कांप उठी और उसने स्टर्ज की ओर देखा। वह बोला "जबतक लोग शरीर को ढूंढ़ न लें तब तक मैं यहीं रहूँगा।" स्टर्ज ने कहा "अब हम हमेशा के लिये एक दूसरे से अविच्छेद्य रूप से जुड़ गये हैं इडाली।" उस अनभ्यस्त नाम पर हल्का सा जोर देते समय उसकी आंखों में एक ऐसी दृष्टि थी जिसका विरोध करने की हिम्मत रने में न थी।

उस रात, जब रने अपने कमरे में चली गयी, तो आग के पास बैठे स्टर्ज को याद हो आया कि उसने रने को उस विचित्र घटना की बात नहीं बतायी जिस के कारण

आज एक करुणांतक घटना घटी और दूसरी रुक गयी। जब वह उसके कमरे में गया, तो वह बड़ी व्याकुलता से उसके पास आयी और उसे आलिंगन में बांध लिया।

"ओह, स्टर्ज !" वह बोल उठी, "अगर तुम अकस्मात् न आ जाते तो अब तक मैं मर चुकी होती। मैं तुम से छीन ली जाती, भगवान् की सुहावनी सृष्टि से छीन ली जाती !"

अकस्मात् ! इस सृष्टि में अकस्मात् नाम की कोई चीज नहीं है, स्टर्ज ने सोचा। लेकिन फिर वह रहस्यमय चेतावनी किस ने दी थी ? उसके हाथ में रिवाल्वर किस ने रखा था ? या उसे हत्या के कार्य के लिये किस ने भेजा था ? इमोगन को ठीक समय पर किस ने उठा दिया था ? दीवानखाने में वह गोली किस ने दागी थी ? अन्तर में बसे भगवान् ने ? बाहर व्याप्त भगवान् ने ? पूर्व के लोग मनुष्य में स्थित भगवान् की बात करते हैं। यह शायद वही भगवान् होगा। और इसके बाद उसकी स्मृति में वे उग्र भाव,— अपने अन्दर उमड़ता हुआ द्वेष, हत्या का आवेग और आनन्द — वापस आये, उन्माद का वह गीत उसकी नाड़ियों में अब तक सनसंना रहा था, क्योंकि एक आदमी जो जीवित था मर चुका था और अब जीवन की ओर नहीं लौट सकता। उसे रने की आंखों का आदेश भी याद हो आया। मनुष्य में भगवान् ? तब फिर मनुष्य में भगवान् हत्यारा था ? उसके अपने अन्दर ? रने के अन्दर ?

"इस प्रकार का सोच-विचार व्यर्थ कौतूहल जैसा है।" उसने निर्णय किया, "किन्तु भगवान् ने अपनी सृष्टि बड़े विचित्र ढंग से बनाई है।"

तब उसने रने को जर्मन रहस्यवादी और मायावी घड़ी की टकोरों की बात सुनायी जिसने उसे दोनों की नियति के करुण क्षण में रने के पास भेजा था। और जब उसने अन्तःस्थित देव या दानव की बात कही तो उसे स्त्री पुरुष से ज्यादा अच्छी तरह समझ सकी।

आबेलार्डका दरवाजा

आबेलार्डका दरवाजा

स्ट्रेडूको गांव पहाड़ीके ठीक नीचे पड़ता था। वह चरागाहोंमें इधर-उधर बिखरे मटमैले ठोस भोंपड़ेका समूह था। ढालानके ऊपर बैठा आबेलार्ड अपनी तिकोनी छज्जेदार, पुराकालीन खिड़कियोंमेंसे रास्तेको बल खाते और दो मील दूर ऑरिंगहम-के छप्परोंमें धीरेसे उतरते देखता रहता था। सदियोंतक उस हवेलीने और गांवने बदलती दुनियाकी ओर अपरिवर्तित मुखसे देखा था, और अपने पुराने चौखटेमें नये लोगों और नये शिष्टाचारको आश्रय दिया था, जब कि सुदूर आंरिंगहमने अपने आप-को समयके अनुकूल ढालकर अपने मध्ययुगीन तमस्को फेंक दिया था। आबेलार्डके स्वामी भूतकालके भार तले जी रहे थे जिसे वे बदलते न पाते थे।

आबेलार्डका स्टीफन आबेलार्ड, अपने कुलका आखिरी पुत्र, पुराने छतदार महलमें पिछले बीस सालसे रहता आया था। वह समान स्थितिके लोगोंके साथ शिष्टा-चारके नाते मिलता रहता था और अपने पदके अनुरूप क्रियाओंको नियम-निष्ठाकी दृष्टिसे अन्तःपरायण हो कर करता आ रहा था, किन्तु उसकी आत्मा अपने चारों ओर बिछी जिन्दगीसे अलग-थलग ही रहती थी। यह हालत तबसे चली आ रही थी जब प्रसूतिमें उसकी पत्नीकी मृत्यु हो गयी और कुछ ही समय बाद वह पुत्र भी विलीन हो गया जिसे जन्म देते हुए उसकी पत्नीने प्राण त्यागे थे। उसकी दो बेटियां, इसाबेल और अलोयसी, बची हुई थीं। स्टीफन आबेलार्डने फिरसे विवाह नहीं किया, उसे सन्तोष था कि उसका प्राचीन कुल नारी पक्षसे चलता रहेगा, और जब उसकी बेटी इसाबेल ने पड़ोसी गांवके एक परिवारमें छोटे बेटे रिचर्ड लेंकेस्टरसे शादी की तो उसने यही शर्त रखी कि पहले, पतिको अपनी पत्नीके पूर्वजोंका नाम धारण करनेके लिये स्वीकृति देनी पड़ेगी। पुराने नामके प्रति यह आसक्ति ही पुरानी हवेलीके स्वामी-के भूतकालके प्रति मोहका एकमात्र चिह्न दिखता था। क्योंकि, स्टीफन आबेलार्ड, अपनी आत्मिक उदासीनताके बावजूद, विचारोंमें आगे चलनेवाला पुरुष था जिसकी स्वतन्त्र बुद्धिको न वर्तमान और न भूतकालकी रूढ़ियां बांध सकती थीं। और अपने ही प्रकाशके अनुसार कार्य करनेका उच्च साहस भी उसमें विद्यमान था।

दुर्घटनाओंकी एक विचित्र श्रृंखलाने इस प्राचीन परिवारको नष्ट-प्राय कर दिया था। पिछले सौ वर्षोंमें कुलकी एक भी पुत्रवधू अपनी पहली नर संतानके जन्मके

बाद कुछ दिन भी जीवित न रह सकी थी। बेटियां जन्मी थीं और कोई नुकसान नहीं हुआ था, किन्तु पुत्र-जन्मके साथ-साथ विपत्ति जरूर बंधी रहती थी। स्टीफनके प्रपितामहके पुत्र थे –हयु और वॉल्टर, और एक लड़की भी थी, बेर्था, जो करुण परिस्थितिमें मर गयी थी। उसकी अपने कमरेमें ही हत्या कर दी गयी थी, किसने की यह कोई नहीं जानता। इस घटनाके बाद ही इस हवेलीमें दुर्घटनाओंने घर कर लिया और लोगोंके अन्ध-विश्वासने इस दुर्घटनाका उस दुष्कृत्यसे नाता जोड़ते देर नहीं लगायी। इस घटनाके समय हयु आबेलार्डके एक पत्नी और दो बेटे थे ही, लेकिन वॉल्टर अविवाहित था। अपनी बहनकी करुण और रहस्यमय मृत्युके एक वर्ष बाद वह अपनी नववधूको आबेलार्ड लाया था और अगले ही वर्ष उसने एक बेटेको जन्म दिया। किन्तु अपनी सन्तानके जन्मके सात दिन बाद ही, मेरी आबेलार्ड अपने कमरेमें मरी हुई पाई गयी, शायद उसके हृदयको कोई आघात लगा होगा, क्योंकि जब वह मरी थी तब सशक्त और तंदरुस्त थी। और वॉल्टर युवा पत्नीके देहावसानसे विक्षिप्त-सा होकर, विदेश चला गया जहां उसका भी अन्त आ गया। गांवकी जीमें यह फुस-फुसानेसे न हिचकिचाई कि उसके जिस अपराध का पता न चल सका था उसीके दण्ड स्वरूप यह विपदा उसपर आ पड़ी थी। ह्यु के बेटे सयाने हुए और उन्होंने भी विवाह किये, लेकिन उनके गंठबन्धन पर भी वही पहाड़ आ टूटा। वे जल्दी ही मर गये और उनके लड़के भी उत्तराधिकार में पायी गयी जायदादका उपभोग न कर सके। तब वॉल्टर आबेलार्डका बेटा पत्नी और पुत्रीके साथ आया और हवेलीको अपने कब्जेमें ले लिया। स्टीफन दो साल बाद जन्मा था और उसके जन्मके तीन ही दिन बाद उसकी माँ भी इस हतभागी हवेली में ब्याही स्त्रियोंके भाग्यकी साथिन बन गयी। इस आकस्मिक दुर्घटनाकी पुनरावृत्तिका रिचर्ड आबेलार्डपर इतना जबरदस्त असर हुआ कि जब उसने फिरसे ब्याह किया तो पत्नीको कभी पूर्वजोंकी हवेलीमें प्रवेश तक न करने दिया। उसने पड़ोस के गांवमें एक घर खरीदा और आखेट-स्थलमें अपनी आकस्मिक मृत्यु तक उसीमें रहा। उसके बाद स्टीफनने बागडोर सम्हाली। वह आधुनिक विचारोंका आदमी, फुर्तीला और साहसी था। पुराने वहमोंका तिरस्कार करके, वह पूर्वजोंकी पुरानी हवेलीमें वापिस आया, विवाह किया और दो लड़कियां भी हुईं। और फिर –– खैर, संयोग आग्रहपूर्वक डटा रहा। एक नर संतान आई और उसकी मां, अपने पतिकी दुलारी , चल बसी। किन्तु इस मृत्युके आसपास कोई गुप्त रहस्य न था। वह बच्चा जननेके बाद शारीरिक दुर्बलतासे मरी थी। कुशल डाक्टरोंने उसकी जान बचानेके लिये लड़ाई की थी, उसकी पतिने रतजगा करके रातोंको उसकी निगरानी की थी। यह एक संयोग ही था इससे अधिक कुछ नहीं।

इसलिये इसाबेल और रिचर्ड लेंकेस्टर आबेलार्ड निःशंक भावसे इस अभागी हवेलीमें रहनेके लिये आ गये। परिवारकी लड़कियां किसी भी दुर्भाग्यसे बच निकलती थीं, इसलिये जब वह गर्भवती हुई तो उसकी मनोहरता और उल्लासके कारण उससे प्रेम करनेवाले असंख्य मित्रों और रिश्तेदारोंके मनमें किसी तरहके वहम और डरने घर नहीं किया। बालकके जन्मकी प्रतीक्षा की जा सके उसके तीन महीने पहले इसाबेलकी बहन अलोयसीने विवाह किया, लेकिन जैसे आबेलार्ड परिवारके लोग करते आये थे उस तरह पड़ोसी परिवारोंमें नहीं, बल्कि सभी प्रथाओंके विपरीत, एक विदेशी युवा डॉक्टरसे जो ऑरिगहममें बस गया था। यह आदमी न सिर्फ विदेशी था बल्कि उसमें एशियाई रक्त भी था। हालांकि डाक्टर आर्मा सियुर्केयी आसपासके लोगोंमें लोकप्रिय था फिर भी गांवको इस सम्बन्धसे एक धक्का-सा लगा था, क्योंकि आबेलार्ड परिवार, चाहे बहुतोंसे कम धनवान भले हो पर था गांवके परिवारोंमें सबसे पुराना। लेकिन आबेलार्ड और उनकी पुत्रीको इन पूर्वग्रहोंकी परवाह न थी। उस युवकने दोनोंको बहुत आकर्षित किया था और विवाह जितना लड़कीकी पसन्दका था उतना ही पिताकी पसन्दका भी।

आर्मा सियुर्केयी दक्षिण फ्रांससे आया था, सिर्फ बालोंका चमकीला काला रंग और उसके चेहरेका ज्यादा चमकता पीलापन ही उसके अ-यूरोपीय मूलकी ओर संकेत करते थे। उसका पितामह, एक मराठा सरदार और महाराजा सिंधियाकी सेवामें रहनेवाले एक फ्रेंच महत्वाकांक्षी की लड़की के सम्बन्धसे जन्मा था। भारत भूमिमें युद्ध और लूट-खसूटसे जो धन इकट्ठा किया था, उसीके बलपर वह प्रोवान्समें जायदाद खरीद कर फ्रांसमें बस गया था। चार्लस दो भाइयोंमें छोटा था और उसने नान्सीमें डाक्टरी सीखी थी। फिर आवश्यकताके कारण नहीं रक्तके साहसप्रिय उछालसे प्रेरित होकर वह परदेसमें भाग्य आजमाने गया। पहले वह बम्बई गया, किन्तु वहां कई अनोखी खोजोंके सिवा और कुछ न किया, उनमें उसके तीक्ष्ण, नास्तिक और अन्वेषक मनको रस तो आया, किन्तु उसकी जेबको कोई सहायता नहीं मिली। बंबईमें वह रिचर्डके भाई जॉन लेंकेस्टरसे मिला था, और उसे एक घातक बीमारीकी पकड़से चमत्कारिक उपचार द्वारा बचाया था। उसने अपने जीवन रक्षकके प्रति कृतज्ञता दिखाते हुए चार्लसको किसी ऐसे अंग्रेजी गांवमें भाग्य आजमानेके लिये प्रोत्साहन दिया, जहां वह अपने स्थानीय प्रभावसे मित्रकी मदद कर सके। बारह महीनोंमें आर्मा सियुर्केयीने अपने लिये व्यापक लोकप्रियता, अच्छा व्यवसाय और अलोयसी आबेलार्डको प्राप्त कर लिया।

इसाबेलकी प्रसूतिके लिये जब अपनी युवती पत्नीके साथ आर्मा सियुर्केयीने

एक महीनेके लम्बे निवासके लिये पुरानी हवेलीमें प्रवेश किया, तो वसन्तके सूर्यमें नहाई उस हवेलीमें उसे ऐसी कोई बात न दिखायी दी जो अशुभ या भयावहका संकेत दे। वह हवेलीकी पुराने-जगत्‌की विलक्षणतासे, पुरानी दीवारोंको ढके हुए सिर-पेंचकी हरी लताओंके प्राचुर्यसे, स्वर्गसे प्रश्न करते छोटे-छोटे नुकीले मीनारोंसे आकर्षित हो रहा था। किन्तु वहां ऐसा कुछ न था जो डरावना या साहसको तोड़ने वाला हो। इसाबेल जल्दी-जल्दी अपने पिताके अध्ययन कक्षमें चली गयी थी और आर्मा अपने साढ़ू रिचर्ड लेंकेस्टरकी अगुआईमें उस कमरेकी ओर गया जहां नौकर उसका सामान ले जा चुके थे।

"तुम अपना काम छोड़कर यहां आये, यह बड़ी मेहरबानी की।" लेंकेस्टरने कहा, "तुम्हें पाकर मुझे राहत मिल गयी। हेरिस बुद्धू है और मैं चिन्ताका आदी नहीं हूँ।"

आर्माने उसकी ओर आश्चर्यसे देखा। उसने अपने हंसमुख, फुर्तीले और सामान्य साढ़ूसे इतनी ज्यादा व्यग्रताकी आशा न की थी।

"क्या कुछ तकलीफ है?" उसने हल्के लहजेमें पूछा। "इसाबेल सशक्त दिखती है। डरनेका तो कोई कारण न होना चाहिये।"

"और, कोई है भी नहीं। लेकिन, मैं तुम्हें बता दूँ, मैं चिन्ताका आदी नहीं हूँ।" और, फिर, विषयान्तर करते हुए कहा — "अपना कमरा कैसा लगा?"

आर्माने कमरेकी ओर ध्यान नहीं दिया था, अब उसने देखा। एक आरामदेह, सुसज्जित कमरा था वह, जिसमें कुछ भी अनाधुनिक न था सिवा इसके कि बलूतकी लकड़ीसे दीवारें ढकी थीं और दो खिड़कियां अस्वाभाविक रूपसे संकरी और लम्बी थीं जो हवेलीके पीछेके मैदानोंमें खुलती थीं। उसकी आंखें अपने दायीं ओर की दीवार-के एक दरवाजे पर पड़ी।

"यहां क्या है?" उसने पूछा। "मैं समझता था कि यह कमरा हवेलीके इस छोर पर अन्तिम है।"

"मुझे कुछ पता नहीं" उदासीन उत्तर मिला। "छज्जे या शौचालयके सिवा और कुछ न होगा।"

दरवाजेने आर्माको विचित्र ढंगसे आकर्षित किया। आबेलार्डमें बलूतोंकी भर-मार थी लेकिन यह उनकी लकड़ीसे नहीं, उससे पतली लकड़ीसे बना था। वह बहुत सीधे-सरल ढंगसे तराशा गया था और आर्माको वह दरवाजा बाकी हवेलीसे ज्यादा आधुनिक लगा। फिर भी वह ठीक आधुनिक दरवाजा न था। अपनी जिज्ञासा को शान्त करनेके लिये वह उसकी ओर बढ़ा, किन्तु हत्था घुमानेके प्रयाससे कुछ परिणाम

न निकला।

"ताला लगा है?" लेंकेस्टरने जरा चकित होते हुए पूछा। उसने भी कदम बढ़ाये और हत्था घुमाया लेकिन बेकार।

"आशा करता हूँ यह भूतोंका डेरा न होगा" आर्मा फिरसे व्यर्थ कोशिश करते हुए बोला। वह लापरवाहीसे ही बोला था और अपने शब्दोंके पीछे आये हुए अस्वाभाविक उफानके लिये तैयार न था। रिचर्डका चेहरा काला पड़ गया, उसने गुस्से में भरकर दरवाजे पर एक लात लगायी।

"यह एक घृणित हवेली है" वह चिल्लाया, "जब बुढ़ऊ स्टीफन मरेगा तो मैं इसे दो पैसेमें बेच दूँगा।"

ज्यादा से ज्यादा अचम्भेमें आकर आर्मा अपने साढ़ूको अच्छी तरह देखनेके लिये मुड़ा। शायद उसकी कल्पनाने ही उससे कहा होगा कि उस युवकका चेहरा रोजसे ज्यादा फीका दिख रहा था, और बीच-बीचमें एक बेचैन उद्वेग भरी दृष्टि उसकी हल्की नीली आंखोंमेंसे उछलती थी। निश्चय ही यह उसकी कल्पना ही थी जो कह रही थी कि रिचर्ड एक ऐसे जानवर-सा लग रहा था जिसे पता हो कि छिपा हुआ शत्रु उसकी घातमें है। उसने कल्पनाको भगा दिया, और दरवाजेके विचारको दूर फेंक दिया।

लेकिन, जब वह मैदानमें दूर तक घूमकर लौटा और उस कोनेसे हवेलीमें अपने कमरे और तालेसे बन्द छज्जे को देखा, तो वह विचार लौट आया।

अपने कमरेकी सीमाके भी बाहर दीवारका हिस्सा आगे झुका हुआ था और धीरेसे गोलाकार होकर ड्योढ़ी बन गया था जिसके सहारे एक छोटा कमरा लगा था जो आठ गुणा बारह फुटका था; कमरेके ऊपर एक नुकीला मीनार था। हवेलीके पुराने नुकीले मीनारोके जैसा बनाने और सामंजस्य रखनेके लिये उस इमारतको ऐसा बनाया गया था, लेकिन जरासे निरीक्षणने डॉक्टरके अन्देशेकी पुष्टि कर दी कि यह बादमें की गयी असंवादी वृद्धि है जो किसी सनक या व्यक्तिगत सुविधा के लिये जोड़ी गयी होगी। इस तरह सिरपेंचकी बैल अस्वाभाविकरूपसे घनी थी और इमारतकी सारी चौड़ाईके ऐसे सुराखोंपर छाई थी जिनसे खिड़कीका काम लिया जाता था। तब तो शायद वहां कमरेकी जगह बन्द छज्जा होगा। उसे हठात् ख्याल आया कि चुपके-से घुस आनेवालेके लिये बाहरसे सिरपेंचकी मोटी मजबूत शाखा पर चढ़कर छज्जेसे होते हुए हवेलीमें घुसना कितना आसान हो सकता है। यह सम्भावना ही दरवाजेपर लगे तालेका स्पष्टीकरण है। न जाने क्यों बहुत आश्वस्त होकर, आर्माने चलना जारी रखा। किन्तु रात आनेसे पहले कई बार यूँ ही दरवाजेका ख्याल हो आया

उस रात जब आर्मा सियुर्कैयी, पत्नीके पास सोया हुआ था तो उसे कमरेके अन्दर या बाहरकी किसी आवाजने जगा दिया। दीया टिमटिमा रहा था, लेकिन कमरेके धुँधलेपनमें कुछ भी हिला-डुला नहीं। उसकी आंखें बन्द दरवाजेपर पड़ीं और एक अरुचिकर आकर्षणसे वहीं गड़ गयीं। उसके नव जागृतभावको उस सीधे-सादे लकड़ी-के आकारमें कुछ डरावना और विभीषक दिख रहा था। कल्पनाको जोरसे दूर फेंक-कर वह नींदको खोजने लगा। उसे जगानेवाली आवाज शायद नींद से माती इन्द्रियों-का जाल थी। उसे पता न चला कि कितनी देर बाद उसकी नींद फिरसे उचट गयी, लेकिन इस बार उस पर ठंडी हवा चल रही थी। उसके अनिच्छुक आंखें खोलनेसे पहले उसे कमरेके दरवाजेके धीरेसे खुलने और बन्द होनेका पता चला। दीया अब भी जल रहा था,——कमरा खाली था। अनजाने ही, उसकी आंखें बन्द दरवाजेको खोजने लगीं। अपने कब्जेपर पूरी तरह पीछे घुमा हुआ दरवाजा एकदम खुला था! अगर बन्द दरवाजेने उसके अन्दर किसी संवेदनशील और युक्तिक भागमें डर पैदा कर दिया था, तो अपने पीछे घुप अन्धेरा लिये हुए खुला चतुष्कोण और भी ज्यादा भयावह लग रहा था!

अपनी इन्द्रियोंको मूर्ख आदी गालियां देकर आर्मा सियुर्कैयी बिस्तर से कूद पड़ा और स्नायविक वितृष्णा को जीतकर, जिसकी उग्रताने उसे आश्चर्यमें डाल दिया था, हाथमें दीया लिये, उस ओरके अन्धेरेकी देहली पर जा खड़ा हुआ। उसके अनुमानके अनुसार ही एक चौड़ा छज्जा था जिसे दीवारबन्दी करके गरमियोंमें रहने लायक दीवानखाना या सोनेका कक्ष बना दिया गया था। और ऐसा लग रहा था कि उसका यह उपयोग हुआ भी होगा क्योंकि एक लोहेका खाली पलंग दीवारके पास उसकी पूरी चौड़ाईको घेरे था, कमरेके दूसरे छोरपर एक पुरानी आराम कुर्सी पड़ी थी जिसपर बदरंग और दागभरी गद्दियां रखी हुई थीं। लेकिन मेहराब पूरी तरह सिरपेंचकी परतोंके परदेसे ढके हुए थे। इसके अलावा कमरा एकदम खाली था। उसने इन खिड़कियोंमेंसे बाहरके ज्योत्स्नामय जगत्को देखनेका निश्चय किया।

किन्तु जैसे-जैसे वह कमरेमें आगे बढ़ता गया उसे अपने स्नायुओंमें बढ़ती गड़-बड़ीका भान होने लगा जिसे वह वशमें न कर पाता था। उसमें इतना डर न था जितनी उग्र वीभत्सता और घृणा, लेकिन किसके लिये, यह बात वह न समझ पाया। उसे लगा कि यह भावना उस खाली पलंग और बदरंग आराम कुर्सी के लिये थी। बहर-हाल कमरेको लांघकर सिरपेंचोंसे ढके मेहराबोंकी ओर जाते हुए उसने उन दोनों चीजोंसे सावधानीपूर्वक दूरी बनाये रखी। हरे परदोंको एक ओर सरकाकर उसने रातकी ओर ताका। एक ज्योत्स्नाप्लावित गहरे हरे रंगकी बड़ी सृष्टि उसकी आंखों-

के सामने आई। फिर उसने आबेलार्डके मैदानमें हाथसे आंखोंपर ओट किये हुए छज्जे-की ओर देखते एक पुरुषको देखा। वह था पुरानी हवेलीका वारिस रिचर्ड लेंकेस्टर आबेलार्ड, जो दरवाजे या छज्जेके विषयमें कुछ न जानता था और तब पुराने फ्रेंच और मराठा योद्धाओंका शक्तिशाली वंशज पीछे हट गया मानों उसे घूंसा लगा हो। उसने फिर कर न देखा वरन् शीघ्रतासे छज्जा पार किया और जाते-जाते दोनों ओर एक बार लोहेके पलंग पर और दूसरी बार अनुपयुक्त आराम कुर्सीपर घृणाकी दृष्टि फेंकता हुआ अपने कमरेमें आ गया। वह प्रायः कसम खाकर कह सकता था कि एक परछाई-सी आकृति परछाई-से तकियोंके सहारे लोहेके पलंगपर लेटी थी, और कोई कुर्सीकी दागभरी गद्दीसे उसकी ओर व्यंग्य भरी दृष्टिसे देख रहा था।

अपने ऊपर आश्चर्य करते हुए आर्मानि ड्रेसिंग गाउन पहनी और एक आराम कुर्सीपर बैठ गया। "मुझे अपनी स्नायुओंको ठीक करना पड़ेगा," वह दृढ़ होकर बोला। "जिस किसीने मेरे कमरेमें प्रवेश किया और दरवाजा खोला था वह, मुझे विश्वास है, उसे बन्द करने आयेगा। मैं प्रतीक्षा करूँगा, उसे देखूँगा और अपनी स्नायु-ओंका साबित कर दिखाऊंगा कि वे कितनी कूढ़मग्ज वहमी और जड़मति हैं। रिचर्ड लेंकेस्टरका चांदनीमें बाहर रहना कोई विचित्र बात नहीं है; निश्चय ही वह सो नहीं पा रहा था और कई निद्राहीन घण्टोंको बितानेके लिये बाहर चहल-कदमी कर रहा था। मैंने उसके अन्दर जो देखा वह चांदनीमें दृष्टिभ्रम मात्र था –– और कुछ नहीं, मैं कहता हूँ, कुछ भी नहीं।"

वह आधे घण्टे तक जागरण करता रहा। वहां बैठे-बैठे उसका मन अपना वर्त-मान परिवेश छोड़कर बम्बईमें किये गये अपने गुह्यविद्याके परीक्षणकी ओर मुड़ा। बचपनसे ही वह बड़ा कल्पनाशील बच्चा था जिसका स्नायुमण्डल प्रायः एक पशुके जितना संवेदनशील था। लेकिन अगर आर्मा सियुर्कैयीका स्नायविक स्वभाव एशिया-के रहस्यवादियोंका-सा था, तो उसका मस्तिष्क अदम्यरूपसे, सन्देहवादी था, केवल भौतिकतापूर्ण फ्रेंच सन्देहवादी नहीं बल्कि निर्दय भारतीय सन्देहवादी, जो एक बार उत्तेजित हो जाय तो अपनी भद्दी यूरोपीय परछाई से कहीं अधिक आग्रही और अन्वेशी होता है। वह प्रत्यक्ष प्रमाण छोड़कर और किसी प्रमाणको माननेके लिये तैयार न था, फिर वह चाहे कितना भी मजबूत क्यों न हो। वह अपनी समृद्ध ज्ञान तंतुओंकी सम्पत्तिके प्रति सजग था। उसने स्वयं गुह्य विद्याके प्रयोग किये थे और यह दुहरा और बेमेल दृढ़ निश्चय किया था कि वह गुह्य जगत्के प्रति कठोरतासे निष्पक्ष रहेगा और अगर उसका कोई अस्तित्व है तो उसे अपने-आपको स्थापित करनेका मौका देगा, और दूसरा निश्चय यह था कि वह अपने परीक्षण की निष्पक्षता और पर्याप्त

जांचसे उस जगत्को हमेशाके लिये नष्ट कर देगा और उसे असत्य सिद्ध कर देगा। उसे इस बातका विश्वास था कि उसके अन्दर निश्चित रूपसे पर्याप्त मात्रामें सच्चे पूर्वाभासकी क्षमता थी। लेकिन उसके विपरीत उसके आगे बहुत-से ऐसे पूर्व-बोध भी थे जो गलत साबित हुए थे; इसलिये उसने उस देन को घटनाओंकी दिशाका पूर्वाभास मात्र समझकर टाल दिया था। उसे इसका भी पता था कि उसके व्यक्तिगत आकर्षण और विकर्षण वस्तुतः अचूक होते थे, किन्तु यह सब होते हुए भी क्या यह चीज मनुष्यके अन्दर उस नैसर्गिक बोधके जैसी नहीं है जो बच्चों और पशुओंको उनके मित्रों और शत्रुओंके बारेमें चेतावनी देता है? हो सकता है कि उसके मराठा पुरखे अपने जोखिम जीवनके कारण, हमेशा हिंसा और धोखेके प्रति सतर्क रहनेके लिये बाधित होते थे। शायद उनका वह सहज बोध आनुवंशिक रूपसे उनकी सन्ततिमें गहराईसे अंकित था। उसने सोचा कि उसने प्रमाणित कर दिया है कि इस अद्‌भुत घटनाका बाकी अंश जो रहस्य वादियोंके लिये मूल्यवान् था, संवेदनशील दृष्टि भ्रम या अस्त-व्यस्त अवचेतन क्रियांएं हैं।

विचारोंमें घूमते-घूमते अचानक वह अपने वर्तमान परिवेशमें लौट आया और उसने चौंककर छज्जेदार-कमरेकी ओर देखा। वह बन्द पड़ा था, सीधा-सादा, गूँगा और इस बातसे इन्कार करता हुआ कि कभी कोई और अवस्था भी रह चुकी है। दरवाजा जो कुछ देर पहले खुला था अब बन्द पड़ा था! आश्चर्यचकित, आर्मा उछल पड़ा, और दरवाजेकी ओर बढ़ा, अन्दरसे आनेवाली मना करती हुई आवाजको अनसुना करके उसने कब्जा घुमाया। लेकिन दरवाजा खुला नहीं: वह केवल बन्द ही न था, उसपर ताला लगा था। क्या यह किसी मनुष्यके लिये सम्भव था कि उसकी आंखोंके के सामने इस तरह कमरेको लांघता हुआ जाय और दरवाजा बन्द करके उसपर ताला लगाये फिर भी उसे पता न चले, तब उसे याद आया कि वह कितने पूर्णरूपसे तल्लीन था और उसका मन अपने अन्दर कितना अधिक रमा हुआ था। "इसमें कोई अद्‌भुत बात तो नहीं हुई!" वह बोला। "कितनी बार जब मैं विचारोंकी लड़ीमें या किसी प्रयोगमें तल्लीन रहता हूँ तो बाहरके समय, दिशा तथा परिस्थितियोंसे बेखबर हो जाता हूँ। आगन्तुकने मुझे आराम कुर्सी पर देखकर यह समझा होगा कि मैं सो रहा हूँ। और वहां धीरेसे चला होगा।" अब उस रातको और कुछ न करना था। वह चकराया हुआ वापस नींदके पास चला गया।

दूसरे दिन सवेरे पहले मिलनेवाला व्यक्ति था रिचर्ड लेंकेस्टर, जिसने अपने सामान्य छिछले प्रसन्नचित्त सौजन्यसे उसका अभिवादन किया। उसकी आंखोंमें या व्यवहारोंमें कलकी व्याकुलताकी छाया भी न थी।

"खूब सोये न ?" आर्माने यों ही पूछा, किन्तु उसके मुखके भावको सावधानी-से देखता रहा।

"पत्थरकी तरह !" रिचर्डने मजेसे कहा। "ग्यारह बजेसे सात बजे तक एक बार भी तकियेसे सिर नहीं उठाया।"

विस्मित-सा आर्मा उसके सामनेसे होता हुआ अध्ययन कक्षमें गया। वहां स्टीफन आबेलार्ड एक पुस्तकके पन्नोंमें खोया हुआ था; उसकी कुहनीके पास ही चाय का प्याला अछूता पड़ा था। पुस्तक सम्बन्धी कुछ सामान्य बातचीतके बाद आर्माने अपने ससुरसे हठात् पूछा -

"हां, याद आया, बाबूजी, मेरे कमरेसे लगा एक और भी कमरा है क्या ? मैंने दोनोंके बीच एक ताला लगा दरवाजा देखा था।"

स्टीफन आबेलार्डकी आंखें कुछ छोटी हो गयीं और जवाब देनेसे पहले उसने प्रश्न कर्ताकी ओर देखा। वह चायका प्याला होठोंतक ले गया लेकिन बिना चखे ज्यों का त्यों वापिस रख दिया।

"घबरा गये क्या ?" उसने तीव्र स्वरमें पूछा।

"एकदम नहीं" आर्माने प्रश्नको उड़ाते हुए कहा "मैं क्यों घबराता ?"

"हाँ, क्यों ? तुम तो गुह्य जगत्पर विश्वास ही नहीं करते ? कौन मानता है ? किन्तु हमारे ज्ञान तंतुओंमें और कल्पनाओंमें हम सब वैसे ही मूर्ख हैं जैसा हमारे पूर्वजोंने हमें बना दिया था। बेहतर होगा कि मैं तुम्हें बता ही दूं।" स्टीफन आबेलार्डने चायकी चुस्कियां लेना शुरू किया और फिर धीरे-धीरे सावधानीके साथ आगे बोलना शुरू किया "जिस कमरेमें तुम सोये थे उसीमें हतभागी लड़की, बेर्था आबेलार्ड रहती थी, जिसके नामके साथ उसके जीवनकालमें बदनामी और मृत्युके बाद वहम और अन्धविश्वास लगे रहे। तुमने 'आबेलार्डपर शाप' की बकवास तो सुनी ही होगी। यहां उस कूड़ेको दोहरानेकी जरूरत नहीं। लेकिन यह सच है कि उसकी मृत्युके बाद छज्जेदार कमरेमें सिर्फ दो ही व्यक्ति सोये थे। एक तो कोई मेहमान था जिसने पहली रातके बाद वहां सोनेसे इन्कार कर दिया।"

"क्यों ?"

"भयातुर कल्पनाएं ! उसे लगता था कि कोई आराम कुर्सीपर बैठा है और उसके वहां रहनेसे नाराज है। लोग क्या-क्या कल्पनाएं नहीं करते ? दूसरा था ह्यु आबेलार्डका सबसे छोटा बेटा और वह......"

हवेलीके मालिकके चेहरेपर एक छाया-सी आ गयी।

"और वह......"

"वह दूसरे दिन लोहेके पलंगपर मरा हुआ पाया गया।"

आर्मा सियुर्कैयी चाबुक खाये घोड़ेकी तरह थर्राया। उसने अपने आपको थाम लिया।

"कोई कारण ?"

हृदयका रुक जाना। आबेलार्डका परिवार हृद्रोगका शिकार रहा है। क्या यही किसी और कमरेमें न हो सकता था ? वास्तवमें एकसे ज्यादा बार ऐसा हुआ भी है।"

आर्माने सिर हिलाया। वंशानुगत हृदयकी कमजोरी ! यह जरूर हो सकता है। किन्तु तब रिचर्ड लेंकेस्टर या उसके जैसा दृष्टि-भ्रम बाहर चांदनीमें क्या कर रहा था ?

"उस मृत्युके बाद पूर्वगृहोंको मान देते हुए छज्जा तालेसे बन्द रखा जाता है और सप्ताहमें बस दो बार ही खुलता है जब रोबर्टस दरवाजेकी चाबी इसाबेलसे लेती है और वहां सफाई करती है। रोबर्टसको कोई भय नहीं लगता। वह भूतोंको तो मानती है, लेकिन दलील यह करती है, "बेर्था मुझे नुकसान न पहुँचायेगी: मैं तो उसके लिये उसके घरको साफ सुथरा रखती हूँ।"

आर्माको गांवके चारों ओर फैली कहानियां याद हो आईं। अफवाहने अपनी बहनकी हत्याका आरोप वॉल्टर आबेलार्डके मत्थे मढ़ा था, कुछ तो बादमें घटी घटनाओंके आधारपर और कुछ इसलिये कि बाहरसे खूनीका इतनी दूर तक घुसना असम्भव था। और मान लो कि घुसा भी तो हत्या करना और कोई निशान छोड़े बगैर बाहर भाग निकलना तो एकदम असम्भव था। क्योंकि सिरपेंचकी बेल तो थी ही। सौ साल पहले अगर वह इतनी मोटी न थी, तो भी एक फुर्तीला और कसरती पुरुष आसानीसे दालानपर चढ़कर मेहराबोंपर जा सकता और अपना काम पूरा करके उतर सकता था।

"अगर तुम्हें रस हो," आबेलार्डने कहा, "तो चलो हम अभी चल कर उस कमरेको देख आएं।" और उन्होंने नौकरके लिये घण्टी बजा कर अशुभ कमरेकी चाबी लाने को कहा।

आर्माने अबतक अपने आपको यह विश्वास-सा दिला दिया था कि रातका अनुभव एक खास सजीव और अरुचिकर दुःस्वप्न मात्र था। वह स्टीफनके पीछे-पीछे इस प्रतीक्षामें,——क्या वह आशा न थी ?——चला कि उसने कमरेको उस कष्टदायक अनुभवमें जैसा देखा था, वास्तवमें वह उससे भिन्न ही होगा। स्टीफन आबेलार्डने दरवाजा खोला और प्रकाश उसके सहज अन्धेरेपर हावी हो गया। आर्माने सबसे

पहले जो चीज देखी वह थी बाहरी दीवार की चौड़ाईका एक खाली पलंग, दूसरी थी अन्दरकी दीवारके सहारे खड़ी एक बदरंग आराम कुर्सी जिसपर दागवाली गद्दी लगी थी। कमरा अन्धेरा था क्योंकि सिरपेंचकी घनी बेल मेहराबोंके छिद्रोंको पाट रही थी। तब यह स्वप्न नहीं वास्तविकता थी। किसीने उसके कमरेमे प्रवेश किया था, एक बार दुर्भाग्यका दरवाजा खोलनेके लिये और दूसरी बार बन्द करनेके लिये। क्या वह नींदमें चलनेवाली श्रीमती राबर्टस थी जो उस दरवाजेकी ओर अस्पष्टतासे खिंची चली आती हो जिसे वह अकेली खोलनेकी आदी थी ? किन्तु रात को उसे चाबी कहां-से मिलती ? क्योंकि, स्टीफनने कहा था कि चाबी इसाबेल आबेलार्डके पास थी। फिरसे, मानों उसे एक घूँसा लगा। अगर चाबी इसाबेलके पास थी, तो रातको रिचर्ड लेंकेस्टर ही उससे पा सकता था, तब सिर्फ रिचर्ड या इसाबेल ही रातको प्रवेश पा सकते थे। जब उसने चांदनी रातमें बाहर झांका था तो रिचर्ड छज्जेके नीचे खड़ा था। क्या हवेलीके उत्तराधिकारीने ही प्रवेश किया, दरवाजा खोला, बाहरसे कमरेको देखनेके लिये उधर चला गया और फिर उसे बन्द करनेके लिये लौटा ? लेकिन किस आवेगमें ? इसकी कल्पना करना मुश्किल था। क्या यह आर्मांके सवेरेके प्रश्नका जवाब, एक स्वप्नाचारीका उत्तर था ? यह बहुत सम्भव व्याख्या थी और परिस्थिति-के एकदम अनुकूल। या क्या उसका कार्य किसी तरह उन भयाकुल विक्षुब्धताओंसे जुड़ा था जो उसके हल्के-फुल्के, आत्मविश्वासपूर्ण और सामान्य स्वभावके लिये नयी और मार्गसे विपरीत थीं। वह एक ऐसी परिस्थिति थी जिसमें उसका सिद्धान्त आसानीसे मेल नहीं खाता था। इस तरह एक गहरी व्यग्रता आर्मा सियुर्कैयी के अन्दर बढ़ने लगी। एक अमानवी रहस्यमें उसे विश्वास न था, किन्तु वह जीवनसे भली-भांति परिचित था और घटनाओंकी सपाट सतहके नीचे छिपे स्वभाविक मानव रहस्योंसे इन्कार न कर सकता था। वह जानता था कि बाहरसे अति सामान्य दिखने वाले पुरुषोंने अपने कार्योंसे अपने रूपको झूठा ठहराया है। उसपर भयानक और विपत्तिजनक घटनाओंका पूर्वाभास छाया था, और उसे याद आ रहा था कि उसके खतरेके पूर्वाभास बहुत बार सच निकलते थे। किन्तु स्टीफन आबेलार्डको उसने कुछ न बताया और उसने रिचर्ड आबेलार्डसे आधी रातके उस भ्रमणके बारेमें कोई बात न की जिसे रिचर्ड ने इतनी सफाईसे नकारा था।

(2)

और एक सप्ताह बीत गया, किन्तु आर्मांके ज्ञान-तन्तु उस अशुभ दरवाजेसे

समझौता न कर पाये थे जो हर रात बेर्था आबेलार्डकी मृत्युके रहस्यको पीछे छिपाये उसको ताका करता था। कोई अस्वाभाविक घटना नहीं घटी। रिचर्ड आबेलार्ड बहुत बार खोया-खोया-सा और उद्विग्न-सा रहता था। यह ऐसी चेज थी जिसके साथ उसका परिचय न था। कभी-कभी उसकी भाषामें चिड़चिड़ाहट होती थी, किन्तु उसके कार्योंमें कोई असामान्य बात न थी। अपनी परिचित आदतोंसे जरा भी हटे बगैर वह चलता-फिरता था, धूम्रपान करता था, बन्दूक चलाता था, घुड़सवारी करता, शिकारके लिये जाता, बिलियर्ड खेलता और अपनी पसन्दका हल्का-फुल्का साहित्य पढ़ता था जो उसे पसन्द था। आर्मानि ध्यानसे देखा कि कई बार वह अपने एकदम पुराने अस्तित्वमें होता था, और तब बड़े सन्तोषके साथ अनिवार्य रूपसे अपनी गहरी नींदका जिक्र करता था जिसका आनन्द उसे सारी रात मिलता रहा। सियुर्कोयीने अन्तमें अपने मनसे दुर्भाग्यके पूर्वाभासको निकाल फेंका। उसने निद्राचारिता के सिद्धान्तको स्वीकार कर लिया। अनिद्रा ही रिचर्डकी स्नायुओंपर असर कर रही थी। इस सरल अनुमानके आधारपर सारे रहस्यने बुद्धिगम्य स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिया।

इस सुखद निष्कर्षपर पहुँचनेके दो रात बाद, खुले दरवाजेके अनुभवके बाद पहली बार, वह रातको जाग पड़ा। वह हर रात निद्राचारीके लिये जगे रहनेकी सोचता था, रिचर्ड लेंकेस्टर जैसी गहरी नींदकी शेखी बधारता था वैसी ही नींद उसके सिर को तकियेसे चिपकाये रखती थी हालांकि सारी जिन्दगी उसे हल्की नींदकी आदत रही थी। इस रात उसकी पत्नी उसके साथ न थी, क्योंकि वह इसाबेलकी एक सनकको सन्तुष्ट करनेके लिये अपने बहनके साथ पुराने बालकक्षमें सो रही थी। आर्मानि करवट बदली, अध-सोये आदमीके आश्चर्यसे पत्नीकी अनुपस्थितिका अनुभव किया। उसने कमरेमें चारों ओर नजर दौड़ाई तो देखा कि उसका दरवाजा जरा-सा खुला था। शुरू-में यह एक अर्थहीन विवरण लगा, फिर परिस्थितिने एक निष्क्रिय अचम्भा जगाया—क्या उसकी नींदमें अलोयसी उसे देखने आयी थी और फिर बालकक्षमें चली गयी ? या फिर निद्राचारी रिचर्ड ताला लगे कमरेके उन्मादसे उत्तेजित होकर आया था ? और फिर, हठात्, मानों बिजलीके धक्केसे उत्तेजित होकर वह बिस्तरपर बैठ गया, और अविश्वासभरी आंखोंसे दरवाजेकी ओर ताकने लगा। उसे याद हो आया कि बिस्तरपर लेटनेसे पहले, किसी अजाने आवेगकी प्रेरणासे उसने दरवाजेपर ताला लगाया था और अपनी इस निरुद्देश्य क्रियापर आश्चर्य करता हुआ लेट गया था। और इस तरह बन्द किया दरवाजा अब खुला पड़ा था, और तालेमें लटकी हुई चाबी उससे स्पष्टीकरणकी मांग कर रही थी। क्या वह स्वयं नींदमें उठकर उसे खोल आया

था ? क्या वह भी नींदमें चलने लगा था ? उसे लेंकेस्टरकी नींदसे मिलती-जुलती अपनी गहरी नींदकी याद हो आयी जो उसके लिये अस्वाभाविक थी और पिछली कुछ रातोंसे उसे विस्मित कर रही थी। तब उसके तीव्र वेगसे चलते मनमें एक ख्याल आया; वह बिस्तरसे निकला, अन्दरके दरवाजेके पास गया और कब्जा घुमाया। दरवाजा खुल गया ! उसने लोहेके पलंगवाले कमरेमें झांका। वहां कोई न था, मात्र पलंग और आराम कुर्सी पड़े थे। फिर उसने दरवाजा बन्द किया, अपने दरवाजे तक गया, उसपर ताला लगाया, चाबी सिरहाने रखी और फिरसे बिस्तरमें चला गया। लेटे-लेटे बेर्था आबेलार्डका मृत्यु कक्षको देखते हुए उसका हृदय कुछ तेजीसे धड़क रहा था। उसके दिमागमें एक सरल स्पष्टीकरण कौंध उठा। ताला लगे दरवाजेसे लौटकर रिचर्ड बाहर से सिरपेंचकी बेलपर चढ़कर ऊपर आया होगा और बेर्थाके कमरेमें प्रवेश किया होगा। किन्तु आज रात इसाबेल रिचर्डके साथ न थी — उसे चाबी कहांसे मिली होगी ? यह हो सकता है कि इसाबेलने भूलसे चाबियां अपने कमरेमें ही छोड़ दी हों, या निद्रा-चारीने पुराने शयनकक्षमें प्रवेश किया होगा और पत्नीके गुच्छेसे जो चाहिये वह निकाल लिया होगा। लेकिन कौन-सा स्थिर जाग्रत विचार था, नींद की कौन-सी अटल सनक थी जिसने रिचर्ड लेंकेस्टरको अशुभ कमरेकी ओर ठेला था, उसे हर बाधाके होते हुए ऐसे वर्जित उपायोंसे प्रवेश करनेके लिये बाधित किया था ? उसे बेर्था आबेलार्डकी मृत्यु कथा याद आई और वे उपाय याद आये जिनसे उसके मतानुसार हत्यारेने प्रवेश किया होगा। आर्मा यह सब सोचकर थर्राया।

जैसी कि उसने आशा की थी, वह जल्दी ही सो गया। सवेरे उठते ही उसका पहला काम था अन्दरके दरवाजेतक जाना और खोलनेकी कोशिश करना। ताला बन्द था ! खैर, यह तो स्वाभाविक था। नींदमें चलनेवाले बहुत बार अपनी जाग्रत चेतनासे भी ज्यादा चौकन्ने और सतर्क होते हैं। और बन्द तालेसे मात खाकर रिचर्ड अपनी आधी रातकी मुलाकातके सब प्रमाण मिटानेके लिये फिर एक बार सिरपेंचकी बेलसे ऊपर चढ़ा होगा।

आधी रातकी मुलाकातके सब प्रमाण मिटानेके लिये फिर एक बार सिरपेंचकी बेलसे ऊपर चढ़ा होगा।

दूसरे दिन यह जाननेके लिये कि वह बेर्था आबेलार्डके कमरेकी चाबी कहां रखती है आर्माने इसाबेलके साथ अकेले रहनेका उपाय ढूँढ़ निकाला। वह उसकी ओर हंसती आंखोंसे मुड़ी।

"तुमपर कोई भूत तो नहीं चढ़ा, आर्मा, ? पर ना ? चाबी हमेशा मेरे पास रहती है, और अगर भूत है, तो उसे ठोस लकड़ीसे होते हुए तुम्हारे कमरेमें आक्रमण

करना पड़ेगा। मैं रातको अपना चाबीका गुच्छा अपने सिरहाने रखती हूँ।"

"कल रात तुम्हारे पास था ?"

"आर्मा ! मुझे पक्का विश्वास है कि मेरी पुरखिन तुमसे मिलने आयी थी। हां, कल रात भी गुच्छा मेरे पास था।" और फिर अचानक बोली "कैसे, नहीं तो, कल नहीं था। कल रात मैंने उस डिब्बेमें रखा था जिसमें अपनी गुड़ियां और खिलौने रखती हूँ। विस्मय मत करो, आर्मा। मैं कई बातोंमें अभी तक एक बड़ी बच्ची हूँ और कल रात चाहती थी कि सब कुछ वैसा ही हो जैसा हमारे बचपनमें था। मैं बहुत सतर्क और सावधान गृहिणी थी और हमेशा सोनेसे पहले अपनी चाबियोंका गुच्छा गुड़िया और खिलौनोंके साथ तालेमें बन्द रखती थी और उस बक्सेकी छोटी चाबीको अपनी रातके पोशाकमें लॉकेटके अन्दर रखती थी। कल रात मैंने वही किया था। अगर भूत आया था, तो मैं उसके लिये जिम्मेदार नहीं।"

"क्या तुमने किसीको बताया था कि तुम क्या करने वाली हो ?"

"जब हम सोने जा रहे थे तबतक तो मैंने यह सोचा भी न था। सिर्फ अलोयसी जानती थी।"

"किसीको तुम्हारी इस बचपनकी आदतका पता था ?"

"सिर्फ राबर्टस और पिताजीको ही। उन्हें भी शायद याद न होगा। मैं खुद मैं भी तो कल राततक इसे भूली हुई थी। आर्मा, तुम्हें कौन-सी बात परेशान कर रही है ?"

"यूँही, एक विचार आया था," उसने उत्तर दिया, और प्रश्नोंसे छुट्टी पानेके लिये अपने और अलोयसीके लिये बनी अलग बैठकमें चला गया।

सारी बात चकरानेवाली थी। निद्राचारी सर्वज्ञ तो नहीं होते। यह असम्भव था कि रिचर्ड आबेलार्डको इसाबेलकी सुदूर बाल्यकालकी इस व्यवस्थाका पता चल गया हो और उसने सोती हुई पत्नीके लॉकेटसे चाबी निकालकर बक्सेसे गुच्छा लिया हो और अपना काम पूरा होनेपर चाबियां वापिस रख दी हों और इतना सब होनेपर भी किसीको आहट तक न मिली हो। इस सिद्धान्तमें ऐसी असम्भावनाओं और अशक्यताओंकी श्रृंखला जुड़ती थी कि उसे अस्वीकार करना ही पड़ेगा। फिर हमेशा-की तरह, एक हल सूझा —— रिचर्ड आबेलार्डने कभी बहुत पहले चाबीकी छाप ले ली होगी और अपने व्यक्तिगत उपयोगके लिये एक चाबी बनवा ली होगी। किन्तु अगर ऐसा है, तो इस प्रकारका छल-कपट कैसी अस्वीकार्य योजना, कैसे लुके-छिपे तिकड़मोंके लिये काममें लाया जा रहा होगा ! रिचर्ड आबेलार्डके इस रहस्यमय और अशुभ प्रवेश और प्रस्थानके लिये कौन-सी न्यायसंगत जरूरत हो सकती है ?

क्या आर्माका यह कर्तव्य न था कि इसके बारेमें स्टीफन आबेलार्डको चेतावनी दे दे। इसमें निश्चय ही कुछ अस्वाभाविक, खतरनाक या आपराधिक बात छिपी थी? लेकिन इसमें यह खतरा भी था कि बात इसाबेलके कानोंतक जा पहुँचे और उसे धक्का लगे। आर्माने उसकी प्रसूति तक प्रतीक्षा करनेका निश्चय किया।

दरवाजेपर दस्तकने उसे विचारोंसे जगा दिया और उसके बुलानेपर स्वयं रिचर्ड आबेलार्डने प्रवेश किया। वह अंगीठी तक आया, और आर्माके सामने पड़ी कुर्सी पर पसर गया। फिर अचानक बोल उठा -

"डॉक्टर आर्मा, तुम रोगोंके निदानमें निष्णात हो। क्या तुम मुझे नहीं बता सकते कि मुझे हो क्या गया है?"

"अपने रोगके लक्षण तो बताइये।"

"कुछ तो खुद तुमने देखे हैं। मैंने तुम्हें अपनी ओर ताकते हुए देख लिया है। किन्तु उसका कुछ महत्व नहीं। बात है मन की।"

"मन का क्या?"

"ओह, मुझे क्या पता? स्वप्न, कल्पनाएं, संवेदनाएं, आवेग। हां, आवेग।" इस शब्दको दुहराते दुहराते वह पीला पड़ गया।

"तुम ज्यादा स्पष्ट नहीं हो सकते?"

"नहीं, स्पष्ट नहीं कर पाता; सारी चीज ही धुँधली और अस्पष्ट है।" वह क्षणभर रुका; फिर उसके नक्श बदल गये, एक गहन दुःखकी छाया आ गयी। "कोई मेरा पीछा कर रहा है," वह बोल उठा "कोई मेरा शिकार कर रहा है।"

अपने साले को देखते-देखते आर्मा सियुर्कीयीपर एक भारी भय और हृदयकी बेजारी छा गयी।

"जरा स्थिर रहो!" वह जोरसे बोला "निश्चय ही यह स्नायुओंकी कमजोरी है, और कुछ नहीं। लेकिन तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो। यह ठीक नहीं है।"

"स्नायु? कहीं यह न कह देना कि मैं पागल हो रहा हूँ! अगर हो भी रहा हूँ तो इसाबेलकी खातिर उसे रोक दो।"

"मैं जरूर रोक दूँगा। लेकिन तुम्हें मेरे सामने एकदम निश्छल और स्पष्ट होना चाहिये। मुझे सब कुछ मालूम होना चाहिये।"

एक स्पष्ट हिचकिचाहटने रिचर्डको कुछ क्षणोंके लिये जकड़ लिया, फिर वह बोला "मैं जो कुछ सोच सकता हूँ, जो कुछ स्पष्ट है, वह सब बता चुका।" तब अचानक अपनी मुट्ठीसे कुर्सीके हाथपर मुक्का मारते हुए उसने कहा "सारी चीजकी जड़ यह घिनौनी हवेली ही है।" वह जोरसे बोला "इसीमें कुछ है! इसमें कुछ ऐसा है जो

न होना चाहिये।"

"अगर तुम यही सोचते हो, तो जब तक तुम्हारी स्नायुएं ठीक नहीं हो जातीं तुम्हें हवेली छोड़कर कहीं चले जाना चाहिये। देखो, जॉनकी नाव लेकर कहीं समुद्र-सैरके लिये क्यों नहीं निकल जाते, ओह, चाहो तो अमरीका तक,—या जापान तक तक हो आओ? जापान तुम्हें ज्यादा लम्बी समुद्री-यात्रा देगा।"

"मैं वही करूंगा," रिचर्ड लेंकेस्टर जोरसे बोला "जैसे ही इसाबेल सही सलामत पार हो जाय, मैं जाऊंगा, आर्मा धन्यवाद।" और चेहरेपर राहत लिये वह उठा और कमरेसे बाहर चला गया।

आर्माको इस खास वार्तालापके बारेमें सोचनेके लिये ज्यादा समय नहीं मिला, हालांकि रिचर्डके कई वाक्य उसके दिमागमें गूँजते रहे; क्योंकि उसी रात इसाबेलको प्रसूतिका दर्द शुरू हो गया और उसने सही सलामत एक लड़केको जन्म दिया। मरते आबेलार्ड परिवारमें एक उत्तराधिकारी जन्मा। प्रसूतिकी श्रान्तिको इसाबेल आबे-लार्ड की अच्छी तंदुरुस्तीने आसानीसे झाड़ दिया। उसके लिये कोई खतरा न था और ऐसा लगता था कि बच्चा मां-बापसे विरासतमें मजबूत शरीर पायेगा। और रिचर्ड, वह प्रसन्न था, आराममें था, और ऐसा लगता था कि आबेलार्डसे भागनेका विचार छोड़ चुका था।

किन्तु प्रसूतिकी तीसरी रातको आर्मा सियुर्कॅयीको क्षुब्ध स्वप्न आये, वह विचित्र विपदाओंमें घूमता रहा; एक पोशाककी सरसराहट उसका पीछा करती रही; भय-कातर वेदना; दुःखकी लहर किसी दूसरे हृदयसे उसके हृदयमें आती-सी प्रतीत हुई, और हवामें एक अट्टहास्य सुनायी दिया जो उसे अच्छा नहीं लगा। शिशिर की सुबह के धुँधलेपनमें अपनी आंखोंमें विचित्र दृष्टि लिये स्टीफन आबेलार्ड उसके सामने खड़ा था।

"उठो, आर्मा, कपड़े पहन लो और चलो। अलोयसीको मत जगाओ।"

तीन मिनटमें आर्मा सीढ़ियोंके बीच तक आ पहुँचा जहां स्टीफन आबेलार्ड दुःख-के चाबुककी मार खाकर इधर-उधर घूम रहे थे।

"इसाबेल मर गई।" उन्होंने संक्षेपमें कहा।

मूढ़ बना हुआ दिमाग लिये जो विचार करनेसे इन्कार करता था, आर्मा पिता के पीछे-पीछे उनकी सन्तानके मृत्युकक्षकी ओर चला। दीवार पर लगा दीया बिस्तर के ऊपर भड़क रहा था। रातका जला दीया जिसे किसीने गुल करनेकी बात न सोची थी, अभी तक श्रृंगारकी मेजपर जल रहा था। बिस्तरसे दूर एक कुर्सीपर बैठा रिचर्ड लेंकेस्टर हाथोंमें मुँह छिपाये हिचकियोंसे कांपते शरीरको झुला रहा था। जब आर्मा

ने प्रवेश किया तो उसने मुँह खोल दिया, उसकी ओर आंसुओंसे भरी आंखोंसे करुणार्द्र दृष्टि डाली फिर लड़खड़ाता हुआ कमरेसे बाहर निकल गया।

आर्मा बिस्तरके पास खड़ा हुआ और मृत लड़कीकी ओर देखा। देखते-देखते उसके हृदयको एक भय और वेदनाने मथ डाला। विविध प्रकारकी मृत्युसे परिचित उसके प्रत्यक्ष बोधने उसे एक भयावह सूचना दी। इसाबेल आसानीसे नहीं मरी थी! तब सिर और गलेकी विचित्र भंगिमाने उसके जगे हुए दिमागको कुछ और भी सूचना दी। वह अचानक नीचे झुका, और उतनी ही तेजीसे सीधा हो गया। उसका फीका सा चेहरा किसी तीव्र भावसे पीला पड़ गया था। वह श्रृंगारकी मेज तक गया वहां से दीया हाथमें लिया और लौटकर इसाबेलके गलेपर रोशनी डाली।

"क्या है?" स्टीफन आबेलार्डने पूछा। वह स्पष्ट अपने-आपको आघात सहनेके लिये तैयार किये अकड़ा-सा खड़ा था। आर्माने सावधानीसे दीया जहां का तहां रख दिया और उत्तर देनेसे पहले बिस्तर तक वापस आया। अपनी खोजके आघात-से वह अपने परिवेशको भूल गया था, उसे यह भी ख्याल न था कि वह किससे बोल रहा है।

"यह हत्या है" उसने धीरेसे, यंत्रवत् कहा।

"आर्मा!"

पिताकी चीखको सुनी-अनसुनी करते हुए उसने कहा "यह हत्या है, मेरी भूल नहीं हो सकती और हत्या भी असामान्य उपायोंसे की गयी है। शरीरमें एक मर्म स्थान है जिसे उंगलियोंसे खोजना पड़ता है, उसपर एक खास प्रकारका दबाव डालने-से मनुष्य अचानक मर जाता है। स्वाभाविक है, कि इतने हल्के प्रायः अदृश्य चिह्न को इस कलामें दीक्षित व्यक्तिकी आंखें ही खोज सकती हैं —– वह चिह्न भी नहीं, एक संकेत मात्र, लेकिन एक सुनिश्चित संकेत है। जापानी पहलवान इस युक्तिको जानते हैं, किन्तु प्रायः सिखाते नहीं। यह उन्हीं लोगोंको सिखाया जाता है जो इतने आत्म-संयमी हों कि दुरुपयोगका भय न हो। यहां वही तरकीब काममें लायी गयी है।"

स्टीफन आबेलार्डने आर्माके कन्धेको तनी हुई, तीव्र पकड़में जकड़ लिया। "आर्मा" वह जोर से बोला "तुम्हारे सिवा हत्याके इस उपायको और कौन जानता है?"

"जॉन लेंकेस्टर जानता है।"

स्टीफनका हाथ एकदम दामादके कन्धेसे गिर गया। कुछ देर बाद उसने एक ऐसी आवाजमें कहा, जो फिरसे शान्त थी "आर्मा, मेरी सन्तान अन्य आबेलार्डोंकी तरह हृदयकी गति रुकनेके कारण मरी है।"

"सबसे अच्छी बात यही है।" आर्मा सियुर्कैयीने उत्तर दिया।

"अब जाओ, आर्मा," स्टीफन शान्तिसे बोलते गये, "जाओ, मुझे अपनी सन्तान के पास अकेला रहने दो।"

आर्मा अपने कमरेमें नहीं लौटा, बल्कि बैठकमें गया, एक मोमबत्ती जलायी और बैठ गया, और तीन दिन पहले जिस कुर्सीपर बैठकर रिचर्ड आबेलार्डने उससे सलाह की थी उसे घूरता रहा। केवल जॉन लेंकेस्टर, ऑरिंगहमके पास रहनेवाला रिचर्डका भाई ही जापानी रहस्य जानता था! जान लेंकेस्टरका, आर्मा सियुर्कैयीके मित्रका, इसाबेल आबेलार्डकी हत्यामें क्या भाग था? क्या उसीके प्रवेशके लिये रिचर्डकी दी हुई पटताली तथा खतरनाक सिरपेंचकी बेल और छज्जेवाले कमरेसे होकर प्रवेशके लिये खतरनाक और विचित्र तोड़-जोड़ होती थी? लेकिन वह उसके लिये घरका मुख्य दरवाजा ही क्यों न खोल देता या निचली खिड़कियोंमेंसे एकके कपाट ही खुले छोड़ देता? यह ज्यादा आसान और कम खतरनाक रास्ता होता। तब उसे याद आया कि ब्रिलिएंट नामक फुर्तीला और बड़ा कुत्ता सीढ़ियोंके नीचे ही लेटा रहता है और घरवालोंको छोड़कर किसीको भी चुनौती दिये बिना ऊपर नहीं जाने देता। जॉन लेंकेस्टर उसका मित्र और हितैषी था, लेकिन आर्मा आदमीको पहचानता था, वह एक दुःसाहसी, तड़क-भड़क वाला, दुराचारी पुरुष, गौरववान आत्म-बलिदानके लिये समर्थ था पर साथ ही साथ क्रूरतम और अति वक्र अपराधोंके लिये भी समर्थ। उसे यह भी याद आया कि उसने जॉनको हत्याकी यह विचित्र जापानी कला कैसे सिखाई थी। एक तरह वह खुद ही इसाबेलकी मृत्युके लिये जिम्मेदार था। प्राच्य लोग अपने कठोर संयममें कितनी समझदारीसे काम लेते थे जब वे केवल तैयार और अनुशासित स्वभावोंको ही रहस्य सिखाते थे जिनका मानवजातिको नुकसान पहुँचानेके लिये दुरुपयोग हो सकता हो! और फिर उसका मन इसाबेल और उसके करुण अन्तकी ओर गया, स्त्रीके आनन्दकी चरम सीमाके क्षणोंमें ही वह उस पति द्वारा मारी गयी जिससे वह प्रेम करती थी। संसारपर शासन करती किस निष्ठुर और अटल शक्तिने, किस नियति, दैवयोग, या विधाताने यह दुर्भाग्य एक ऐसी लड़कीके लिये चुना था जिसका सारा जीवन अपने पास आनेवालोंपर निर्दोष सूर्यालोक बिखेरना था! दैव! वह मुस्कुराया। अब भी ऐसे मूर्ख हैं जो एक अधिशासन करनेवाले दैवको मानते हैं, एक प्रज्ञावान और करुणामय भगवान्पर विश्वास करते हैं। और फिरसे अन-बूझी पहेली उसके मनको अभिभूत करनेके लिये लौट आयी। आखिर किस उद्देश्यने रिचर्डको ऐसा हृदयहीन अपराध करनेकी या जॉनको उसकी मदद करनेकी प्रेरणा दी?

मातमके उस दिन रिचर्ड सारे समय घरसे गायब रहा, और आर्माको उसकी

परीक्षा लेनेका अवसर न मिला। बहुत रात गये, प्रायः ग्यारह बजे वह आया। आर्मा उससे तब मिला जब वह मोमबत्ती हाथमें लिये अपने कमरेकी ओर जा रहा था।

"मुझे तुमसे कुछ कहना है, रिचर्ड।" वह बोला।

भयानक मजेसे अट्टहास्य करता, रिचर्ड उसकी ओर मुड़ा। "कुछ फायदा नहीं, डाक्टर आर्मा। देखा, तुम मुझे बचा न पाये। वह चीज बहुत ज्यादा शक्तिशाली थी। मेरे शब्द याद रखो, वह चीज तुम्हारे लिये बहुत अधिक शक्तिशाली होगी।" और वह आर्माको सीढ़ियोंपर विस्मित छोड़कर कमरेकी ओर लम्बे डग भरता चला गया।

अलोयसीने ठीक किया था कि वह उस रात अपनी मृत बहनके बच्चेके साथ सोएगी। इसलिये फिरसे आर्माने खुदको बेर्था आबेलार्डके कमरेमें अकेला पाया। ताला-बन्द दरवाजेके सिवा उसका कोई और साथी न था और शायद यह दरवाजा उस शोकपूर्ण दुर्घटनाका साझेदार था जिसने सारे घरमें अन्धकार फैला दिया था। उसकी नींदमें फिरसे विघ्न पड़ने लगे और उसने बार-बार बन्द दरवाजेको खुलते और किसीको कमरेमें एक ओरसे दूसरी ओर दुष्कृत्यके लिये, किसी भयंकर कामके लिये जाते हुए देखा। वह चौंककर जाग उठा, उसका हृदय सीसे-सा स्थिर और भारी था और उसे पूरा विश्वास था, जिसे वह ज्ञान मानता था, कि करुण घटना अभी खतम नहीं हुई है। और भी रहस्यपूर्ण और अस्वाभाविक अपराध आबेलार्डकी पुरानी दीवारोंको कलुषित करेंगे। तब उसके विचार अलोयसी तक उड़े। उसने झटपट कपड़े पहने और जिस कमरेमें वह सो रही थी वहां गया। अलोयसी सो रही थी और बच्चेकी नर्स लगभग पांच फुट दूर एक बिस्तरपर सोई थी, लेकिन आर्माने दोनों स्त्रियोंपर उड़ती-सी निगाह ही डाली क्योंकि दो बिस्तरोंके बीच इसाबेलके बच्चेका पालना था और उसपर कोई आकृति झुकी हुई थी, और जैसे उसने खुले दरवाजेकी ओर मुँह उठाया तो उसने देखा कि वह चेहरा रिचर्ड लेंकेस्टरका था भी और नहीं भी था। रिचर्ड झट दरवाजेकी ओर लपका। उसके हिलते ही बचपनके बाद पहली बार आर्माको केवल भयने अभिभूत कर लिया और वह पीछे हट गया। रिचर्ड लेंकेस्टरने उसका मनोभाव समझ लिया और शायद उसे मजा आया और वह जोरसे हंसा। और फिर इस अट्टहास्यमें कोई ऐसी चीज थी जो न तो रिचर्ड लेंकेस्टरकी हंसीमें और न किसी और मनुष्यकी खुशी-भरी हंसीमें सुनायी देती है। जैसे ही रिचर्ड कमरा छोड़कर बाहर गया वैसे ही आर्मा प्रायः दौड़ता हुआ दरवाजेकी ओर गया, उसपर ताला लगाया और आकर पत्नीके बिस्तरपर उत्तेजनासे बेरोक कांपता हुआ बैठ गया। थोड़ी ही देरमें उसने अपनी स्नायुओंपर अधिकार पा लिया, फिर भी उसने कमरे और उसमें

सोए हुए अचेत लोगोंको छोड़ा नहीं। वह चार बजेतक बिना हिले-डुले वहीं बैठा रहा। तब दरवाजेपर हल्की-सी दस्तक ने उसे चौंका दिया। उसने दरवाजा खोला, तो स्टीफन आबेलार्डने प्रवेश किया। उसने आर्माकी उपस्थितिको स्वाभाविक ही माना और शान्तिसे बच्चेके पास गया तथा अपने परिवारके उत्तराधिकारीको निहारता रहा। यह छोटा बच्चा ही इसाबेलकी एकमात्र निशानी था। जब वह पालनेसे हटा तो आर्मा बोल उठा -

"महाशय, रिचर्डके बारेमें कुछ करना होगा आपको।"

स्टीफनने उसको देखा "आर्मा, मेरे कमरेमें चलो।" वह बोला, "हम वहीं बातचीत करेंगे।" स्टीफनके पीछे चलनेसे पहले आर्माने नर्सको जगाया और बच्चेकी निगरानी करनेका आदेश दिया।

"दरवाजेपर ताला लगा दो।" उसने कहा "और जबतक मैं न लौटूं तबतक बन्द ही रखना।" गलियारेसे जाते-जाते वह रिचर्डके कमरेके सामनेसे गुजरा। दरवाजा खुला तो था, किन्तु वहां एकदम अन्धेरा था; फिर भी उसकी अभ्यस्त आंखोंने दरवाजेपर एक आकृतिको खड़े देखा जो उसे देखते ही पीछे हट गयी। यह तो स्पष्ट था कि यह रिचर्डकी आकृति न थी, क्योंकि इसका कद छोटा और शरीर अधिक पतला था। स्टीफनके कमरेमें प्रवेश करते-करते उसे लगा कि उसके अवचेतन मनपर यह छाप लग गयी थी कि वह एक स्त्रीकी आकृति थी। पहली अरुचिकर प्रतीतिके हट जानेपर उसने इस असंगतिको दूर फेंक दिया। शायद ड्रेसिंग गाउन ने ही उसे स्त्रीके वेशका ख्याल दिया होगा। स्टीफनसे संक्षिप्त बात करके दोनों सिगरेटके कश लेने लगे। शायद बच्चे के कमरेको छोड़े आधा घण्टा ही हुआ होगा कि किसीने दरवाजेपर दस्तक दी और नर्सने सामने आकर आर्मा सियुर्कीयीको संकेत से बुलाया। उसके चेहरेपर भयंकर चिन्ताके चिह्न थे जिनके कारण आर्मा लम्बे डग भरता दरवाजे तक आ गया।

"साहब, आप आ सकेंगे?" उसने कहा, "पता नहीं बच्चेको क्या हो गया है।"

"तुमने दरवाजेपर ताला लगाया था?" आर्माने चलते-चलते पूछा।

नर्स कुछ घबराई सी दिखी। "मेरा ख्याल तो यही था कि मैंने ताला लगाया था, हालांकि मैं यह न समझ पायी थी कि आप क्यों ताला लगवा रहे हैं। शायद मैंने चाबी अच्छी तरह नहीं घुमायी होगी क्योंकि दो मिनटकी झपकीके बाद जागी तो देखा दरवाजा खुला पड़ा था।" वह रुकी और बहुत हिचकिचाती हुई बोली, "और मुझे ऐसा लगा, साहब, कि मैंने कमरेमें मोमबत्तीके पास एक स्त्रीको देखा लेकिन मैं बहुत उनींदी थी कुछ भी न समझ पायी। वह स्त्री श्रीमती सियुर्कीयी न थी, क्योंकि उन्हें तो बाद में जगाना पड़ा था।"

"एक स्त्री ! और एक ताला लगा दरवाजा जो खुल गया !" आर्मा मन ही मन कराह उठा, उसकी समझमें कुछ भी न आ रहा था। लेकिन जागी हुई और चिन्तातुर अलोयसीके साथ मृत बालकपर झुकनेसे पहले ही वह जानता था कि वहां क्या दिखायी देगा। बालक इतनी जल्दी और एक ही ढ़ंगसे मांके पीछे कब्रतक चला गया था।

उस दिन सवेरे स्टीफन आबेलार्ड अपने बड़े दामादसे बोला "रिचर्ड, तुम अपने समुद्री सफरके लिये आज ही यहांसे रवाना हो जाओ। ब्रिस्टलसे जॉनकी नाव ले लो। तुम्हें शव-यात्राके लिये रुकनेकी जरूरत नहीं, और लोग क्या कहेंगे उसके परवाह मत करो। तुम्हारी जगह मैं होता, तो अपने साथ नावमें एक डाक्टरको भी ले जाता।"

रिचर्ड लेंकेस्टरने बहुत शान्ति और समझदारीसे उत्तर दिया। "महाशय, आप बोलें उसके पहले ही मैंने तयकर लिया था। मैं बड़ी लम्बी यात्रापर जा रहा हूँ और सीधा ही जा रहा हूँ, ब्रिस्टलसे होता हुआ या नाव लेकर नहीं। जैसा आपने सुझाव दिया है, मैं शव-यात्राके लिये नहीं रुकूँगा और लोग क्या कहेंगे इसकी चिन्ता से परे हो चुका हूँ।"

"डाक्टरको लेना मत भूलना।" स्टीफनने आग्रह किया।

"डाक्टर नहीं आ सकते।" रिचर्ड बोला, "और उन्हें यह सफर पसन्द न आएगा। मैं पागल नहीं हूँ, महाशय, चलिये और भी बुरा भाग्य।" स्टीफन आबेलार्डके दो दामाद घरकी सीढ़ियोंसे एक साथ नीचे उतरे, आर्मा मैदानमें टहलकर अपने उत्तेजित दिमाग और झंझोड़ी स्नायुओंको ठंडा करनेके लिये गया और रिचर्ड अस्तबलकी ओर हो लिया।

जब आर्मा घरकी ओर लौट रहा था तो एक रक्तहीन चेहरेवाला साईस उसकी ओर दौड़ता हुआ आया और आबेलार्डके सामने की भव्य वृक्ष बीथिकी ओर इशारा किया।

"मिस्टर रिचर्ड वहां पड़े हैं," वह हकलाता-सा बोला "उनके गोली लगी है !"

आर्मा क्षण भर पत्थर-सा बना खड़ा रहा, फिर दिखाये हुए स्थानकी ओर दौड़ा। इस अन्तिम करुण घटनाका उसे जरा भी पूर्वाभास न मिला था। यह था क्या ? यह पागल करती, रक्तरंजित उलझन क्या थी ? दुर्बोध नियतिका यह मृत्यु-नृत्य कैसा था जिसने तीस घण्टोंसे भी कम समयमें माता, पिता और बच्चेको मौत के घाट उतार दिया ? उद्देश्य या प्रयोजनकी कोई झलक तक न थी, इस दुःस्वप्नपर प्रकाश डालने वाली किसी बातकी संगति न बैठती थी। आखिर उसकी बुद्धि भूल-भुलैयामें असहाय खड़ी थी। उसने सोचा यह भी बन्द दरवाजा था जो खुलता था किन्तु कुछ भी प्रकट

न करता था। किन्तु उसकी बुद्धि आग्रह करती रही। रिचर्ड आबेलार्ड पागल था, और उसने पागलपनमें ही अपनी पत्नी और सन्तानकी हत्या करनेके लिये उस युक्तिका प्रयोग किया जो जॉनने असावधानीमें उसे सिखा दी होगी। और आत्म-हत्याका अन्तिम कार्य आर्माकी दृष्टि और स्टीफनके भेद खोलनेवाले स्पष्ट शब्दोंसे जागे हुए, व्याकुल दिमागका स्वाभाविक असर था।

मार्गके पास घासपर रिचर्ड आबेलार्ड मरा हुआ पड़ा था, गोली हृदयके आर-पार लगी थी और रिवाल्वर उसके फैले हुए और संज्ञाहीन हाथसे दो फुट दूर पड़ा था। जीवन समाप्त हो गया है या नहीं यह देखनेके लिये आर्मा नीचे झुका और उसने मृत पुरुषके घुटनेके पास पड़े एक कागजका टुकड़ा देखा। जब वह उठा, तो साईसकी ओर मुड़कर बोला "रिचर्ड मर गये। जाओ और मिस्टर आबेलार्डसे कह दो। इन्हें अन्दर ले जानेके लिये आदमी लेते आओ।"

आदमी अनिच्छासे गया और आर्माने झट कागज उठाकर, अपनी जेबमें रख लिया। एक घण्टेके बाद जाकर उसे अपनी बैठकमें कागज निकालने और देखनेका समय मिला। जैसी उसे शंका थी वह रिचर्डके हाथका लिखा हुआ एक पर्चा था उसमें जो लिखा था वह संक्षिप्त, दो-टूक, करुण और डरावना था।

"आर्मा, तुम जानते थे! लेकिन, भगवान् मेरे साक्षी हैं, मैंने नहीं किया, हत्याका अपराधी मैं नहीं हूँ। मैं ज्यादा नहीं कह सकता, किन्तु अलोयसीपर दया करके, अपने आपको बचाये रखो!"

बहुत देर तक आर्मा सियुर्कॅयी मृत पुरुषकी रहस्यमय चेतावनीको हाथमें लिये रहा। फिर उसे आगमें फेंक दिया और सफेदीको कालेपनमें बदलते, झुलसते और राख होते देखता रहा।

अपूर्ण

शैतानका कुत्ता

शैतानका कुत्ता

दिसम्बरके उस दिन सारे समय जोरकी बरफ पड़ती रही थी। चांदनीके-आवरण और बर्फकी चकाचौंधमें रास्ते सफेद और अस्पष्ट थे; कहीं-कहीं खिसका हुआ हिमका ढेर, वहां पड़े हुए कदमोंकी कहानी कहता था। आकाशमें पीछा करने-वाले बादलोंसे भागता हुआ चमकीला चाँद कायरतासे नभोमण्डलमें उठ रहा था; अन्धकारकी बड़ी-बड़ी भुजाएं कभी-कभी उसपर बन्द हो जाती थीं। कभी वह बाहर निकल आता और अपनी शान्त उज्ज्वल होड़को आगे बढ़ाता, दौड़ता, तैरता एक-निष्ठासे, बिना लड़खड़ाये आगे बढ़ता जाता था। पेट्रिक कुरेन, पृथ्वीके सफेद ढुलमुल फर्श पर असावधानीसे पांव रखता हुआ, हिम-संचयमें ठोकरें खाता हुआ, अस्थायी अन्धकारमें ठीक रास्तेकी जांच करते-करते, ऋतु और अपनी नियतिको शाप दे रहा था।

"यह काफी नहीं है," उसने शिकायत की "कि मैं एक निर्वासित भगोड़ा बन कर इस शैतान क्रोमवेलकी पकड़से अपना सिर हर अनिश्चित आश्रयमें छिपाता फिरूं ! मेरे लिये फांसीकी घोषणा तो हो ही चुकी है; यह जीवन मेरे बेचारे बापके आसामियों-की कांपती हुई करुणाका आभारी है; यह काफी नहीं है कि मैं एलिसियाको गंवा दूँ और लूक वॉल्टर उसे पा ले। स्वयं यह चन्द्र और बर्फ और रात, सब मेरे विरुद्ध उसके मित्र बने हुए हैं। जब भगवान् मुझपर इतने कठोर हो चुके हैं, तो आश्चर्य है कि शैतान मेरी मदद करने क्यों नहीं आता — मैं इसी क्षण अपनी आत्मा खुशीसे उसके हाथों बेच दूँगा। लेकिन शायद उसे भी क्रोमवेलका डर लग रहा है।"

"शायद ही यह सम्भव हो" अचानक उसके पाससे एक आवाज बोली।

पेट्रिक कुरेन भीषण रूपसे चौंक पड़ा और अपनी कटारको जोरसे जकड़ते हुए मुड़ा। अन्धेरेमें उसे भान हुआ कि एक अस्पष्ट आकृति ज्यादा स्थिर और आत्म-विश्वासपूर्ण कदम रखते हुए उसके साथ-साथ चल रही थी।

"तुम कौन हो ?" वह कठोर होकर धमकी-भरे स्वरमें चिल्लाया।

"तुम्हारी ही तरह एक राहगीर" दूसरेने कहा, "मैं पृथ्वीपर भगोड़ेकी तरह सफर कर रहा हूँ।"

"किससे भाग रहे हो ?" पेट्रिकने पूछा।

"कैसे कहूँ ?" परछाई बोली "शायद अपने ही विचारोंसे, शायद किसी अत्यंत शक्तिशाली शत्रुसे।"

क्रोमवेलकी हत्या और चार्ल्स स्टूअर्टको फिरसे गद्दी पर बिठानेके षडयन्त्रकी पोल खुलनेके बाद सारा देश राजभक्त भगोड़ोंसे भर गया था। वे दिनमें छिपते और रातको इस आशामें सफर करते थे कि किसी बन्दरगाह तक पहुँचकर वहांसे आस्टनडी या केले के लिये जहाज पकड़ सकेंगे। क्योंकि जनतन्त्रवादी न्यायाधीशोंके न्यायालय आदेशात्मक और विवेकशून्य थे।

"मैं अपनी आत्मा और बाकी रहे आयुष्य शैतानको उपहार-स्वरूप दे दूँगा" उसने अपने आपसे कहा "बस एक बार एलिसियाको अपनी भुजाओंमें जकड़ सकूँ और नरकमें अपने साथ उसके शरीरके आनन्दको ले जा सकूँ, और लूक वॉल्टरको अपने सामने मरा हुआ देख लूँ या आश्वस्त हो सकूँ कि वह मेरे बाद ही नरकमें आ रहा है। ओह, मुझे एक बार इस बातका विश्वास हो जाय, तो भले दूसरे ही क्षण डेक्रीस-का बादामी कुत्ता मुझपर कूद पड़े, मुझे परवाह न होगी।"

"तुम इसका विश्वास रखो" उसके पाससे विचित्र ढंगसे मधुर आवाज बोली, किन्तु वह पेट्रिकके कानोंको भयावह लगी। वह रोमांचित होकर मुड़ा।

"तुम खुद शैतान ही हो", वह प्रायः चिल्लाया।

"शायद मैं सिर्फ ऐसा व्यक्ति हूँ जो तुम्हारे विचारोंको पढ़ सकता है" दूसरेने मधुर अमंगल स्वरमें इस तरह कहा कि युवकको कभी-कभी धोखा हो जाता था कि उससे कोई स्त्री बात कर रही थी। "मैं तुम्हारे बारेमें जो जानता हूँ उसका थोड़ा-सा हिस्सा सुनाऊं तो तुम यह आसानीसे समझ जाओगे कि मैं तुम्हारे विचार पढ़ सकता हूँ। तुम पेट्रिक हो, सर गेरल्ड कुरेनके दूसरे बेटे, जिन्होंने अपनी जायदाद अपनी पत्नी मार्गरेट डक्रेसे पायी थी, बेरोनेटका पद महाराजा जेम्ससे पाया था और मौत क्रोमवेलसे, जिसने उन्हें वोचेस्टरमें बन्दी बनाया और फांसी दे दी। तुम लेडी एलि-सिया नेविलसे ब्याह करने वाले थे, लेकिन तभी उस षडयन्त्रका पता लग गया जिसके अनेक मस्तिष्कोंमेंसे तुम भी एक थे और साथ ही साथ प्यूरीटन अत्याचारी शासकपर प्रहार करनेवाले हाथ भी थे, कर्नल लूक वॉल्टरकी सूक्ष्म-दृष्टि, सौभाग्य और निष्ठुर चालाकीने इसका पता लगाया था।"

राजभक्त युवक चौंक पड़ा और क्रोधसे भरकर एक मोटी-सी गाली दी।

"वही था" दूसरेने कहा "उसमें तीक्ष्ण और कुशाग्र बुद्धि तथा दृढ़ निश्चयी प्रतिभा है। सम्भव है कि क्रोमवेलके बाद वही उसके पदपर आ जाय — अगर प्यूरी-टनोंके भगवान् उसे उतनी लम्बी आयु प्रदान करें।

"मुझे अवसर मिला, तो मैं उसे छोटा कर दूँगा" पेट्रिक कुरेन चीखा।

"और मुझे मौका मिला तो मैं ही।" अजनबीने कहा, "क्योंकि इस समय मैं भी राजभक्त हूँ,। हां, कहानी आगे चलाऊं, तुम्हारी अनुपस्थितिमें ही यह घोषणा कर दी गयी थी कि तुम्हें आततायीकी मौत दी जाय। षडयन्त्रमें फंसे अर्लको अपनी माफी की कीमत बेटीकी सगाई लूक वॉल्टरसे करके चुकानी पड़ी, और शादी आज रात-को ठीक हुई है।"

"आज रातको!" युवक कराह उठा और अपनी जांघपर हाथ मारा।

"वार्नडेलके गिरजामें।"

"लेकिन अगर विवाहकी संसिद्धिसे पहले ही लूक वॉल्टर मारा जाय तो इस विवाहका कोई अर्थ रह जायगा ?"

"उसके लिये मैं वचन देता हूँ" अजनबीने कहा। "यह तुम्हारे अनुकूल नहीं है कि एलिसिया किसी औरसे शादी करे और मुझे यह नहीं सुहाता कि क्रोमवेलका स्थान कोई मजबूत आदमी ले। चार्लस स्टूअर्ट मेरा अच्छा दोस्त है, और मैं चाहता हूँ कि वही इंग्लैंडपर हुकूमत करे। इसलिये, पेट्रिक, यह ठीक सौदा है।"

"तुम पर शैतानकी मार! तुम हो कौन ? फिरसे विस्मित युवक चिल्लाया।

मानों उत्तर देनेके लिये दो क्रुद्ध काले बादलोंके समूहोंमेंसे, धरतीकी तीव्र और उग्र धवलताको प्रकाशित करता हुआ चन्द्र बाहर झांकने लगा। पेट्रिकने अपने पास एक अपूर्व सुन्दर युवकको देखा, जिसका मुख पूरी तरह जाना-पहचाना था, किन्तु उसका नाम याद न आता था।

"जहां तक तुम्हारी आत्मा और जिन्दगीकी बात है" अजनबीने बोलना शुरू किया और जैसे ही दोनोंकी आंखें मिलीं कि पेट्रिक थर्रा उठा। "तुम्हें ये चीजें शैतानको निःशुल्क या सौदेके हिस्सेके रूपमें देनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि वे उसकी हो चुकी हैं।"

उसने एक भयंकर और अशुभ माधुर्य से अट्टहास्य किया, और उसी क्षण पेट्रिक-को याद हो आई। उस अट्टहास्यको वह जानता था, उस मुखसे परिचित था, वे उसके अपने ही थे।

उसी क्षण चन्द्र बादलके दूसरे टुकड़ेमें चला गया। पेट्रिक गूँगा सा खड़ा अपने सामने धुँधली-सी परछाईको देखता रहा फिर वह अदृश्य हो गयी।

युवकको अपने ऊपर काफी काबू पाकर अपनी राह ले सकनेमें कुछ समय लगा। उसने क्षण भरके लिये यह माननेकी कोशिश की कि वह परछाई जॉन डक्रे था, जो सर गरेल्डका, अपनी भाभी मातिल्डा डक्रेसे उत्पन्न अवैध पुत्र था, जो एकदम पेट्रिककी

हूबहू नकल था और साथ ही उसका पक्का मित्र और प्रेमी था। लेकिन वह जानता था वह जॉन न था। वह जॉन का चेहरा न था वह जॉनकी वाणी या जॉनका विचार न था। वह जरूर कोई अत्यन्त सजीव स्वप्न था या जाग्रत अवस्थामें इन्द्रजाल। वह बहुत विचलित हो गया था पर फिरसे हिम्मत बांधकर अन्धेरेमें आगे चल पड़ा।

चन्द्रमा फिरसे चमकने लगा, इस बार आकाशकी खाड़ी उसके सामने स्वच्छ थी। पेट्रिकको अपने सामनेका सफेद सीधा और लम्बा रास्ता दूर तक दिख रहा था और वहां एक बर्फसे ढकी ऊंची झाड़ी उसे चारों ओर फैले उतने ही सफेद और अस्पष्ट प्रदेशसे अलग करती थी।

"चलो, यह अच्छा है, पेट्रिक कुरेनने कहा। बोलनेके साथ ही उसने दूर रास्ते पर एक काले पदार्थको अपनी ओर आते देखा; उसने अपनी चाल धीमी कर दी और काली चीजसे बचनेके लिये रास्तेसे मुड़ना चाहता था। किन्तु वह चीज अलौकिक गतिसे पास आ रही थी। पास आनेपर उसने देखा कि वह एक कुत्ता था। पेट्रिक स्तब्ध होकर खड़ा रह गया। एक कुत्ता! उसमें क्या है? कुछ भी नहीं। उसे जिस चीजका डर था वैसी कोई चीज न थी। किन्तु उसे असामान्य वार्तालाप और अपने हृदयसे उठी वह डक्रेओंके बादामी कुत्तेके सम्बन्धकी अपवित्र प्रार्थना याद हो आयी। वह कुत्ता जो जब कोई डक्रेवंशी मरनेवाला हो, तो हमेशा दिखायी देता है और जब कभी हिंसा द्वारा नाश होनेवाला हो तो उसपर झपट पड़ता है। वह कुछ अनिश्चिततासे मुस्कुराया। फिर चांदनी उस वेगसे बढ़ते प्राणी पर उग्रता से केन्द्रित होती सी लगी और उसने देखा कि कुत्तेका रंग बादामी था।

पेट्रिकने किसी पार्थिव पदार्थको तेज गतिपर इतना प्रभुत्व पाते न देखा था। वह दौड़ता, चौकड़ी भरता, छलांगे मारता गया, और अभागे मनुष्यको उस मायावी दानवके तीव्र आक्रमणको देखकर क्योंकि वह एक दानवाकार मेस्टिफ जातिका कुत्ता था,—ऐसा लगा मानों उसका हृदय रुक रहा था और उसका उष्ण युवा रक्त नाड़ियों-में मानों जमा जा रहा था। अब कुत्ता बीस कदमकी दूरी पर था; पेट्रिकको लगा कि उसकी बड़ी-बड़ी आंखें उसपर गड़ी थीं और कुत्ता उसपर झपटने ही वाला है। वह जोरसे नीचे गिरा, जानवरका भारी शरीर उसकी छातीको दबा रहा था, उसके सिंह-से पंजे पेट्रिकके कंधे पर थे, उसकी गरम सांस उसके चेहरेको गीला कर रही थी। और फिर वहां कुछ भी न था।

यही सबसे भयंकर बात थी कि वह एक आभासके द्वारा, एक अपार्थिव दृष्टि भ्रमके द्वारा शारीरिक रूपसे गिराया गया, एक ऐसी चीजके द्वारा जो अभी थी और अभी नहीं है। पेट्रिक बहुत प्रयास करके पैरोंपर खड़ा हुआ। वह आतंक और संत्रास

से पीड़ित था, उसकी स्नायुएं चीख-चीख कर भागनेके लिये कह रही थीं, इस अभिशप्त रात्रि और डरावनी मुठभेड़ोंके मार्गसे शीघ्र ही दूर निकल जानेके लिये कह रही थीं। लेकिन उसे लगा कि वह पंगु और असहाय हो गया है, एक अमूर्त विनाशने उसे जकड़ लिया है। वह बर्फपर बैठ गया। वह हांपता जाता था और प्रतीक्षा कर रहा था।

कुछ क्षणोंके बाद उसका रक्त-संचार अधिक शान्तिसे होने लगा, हृदयकी धड़कन धीमी हो चली और उसकी स्नायुओंकी बीमार घबराहटका स्थान एक तीव्र-वेगी आग्नेय बाढ़ने ले लिया। वह क्रोधित हो, छलांग मारकर उठ खड़ा हुआ। 'डक्रेओं-का कुत्ता' वह चिल्लाया "बादामी कुत्ता, शैतानका मेस्टिफ ! इसमें कोई शक नहीं कि मेरा रूप धरकर उसका मालिक ही मुझसे बातें कर रहा था। तब तो मेरा सर्वनाश निश्चित है। किन्तु फांसी नहीं। ना, भगवान्‌की कसम, फांसीसे नहीं। भगवान्-की और शैतानकी दण्डाज्ञा है और मैं दोनोंमेंसे किसीका मुकाबिला नहीं कर सकता। किन्तु मनुष्यकी आज्ञा नहीं, क्रोमवेलकी नहीं !" वह रुका और फिर चिल्लाया "आजकी रात ! वार्नडेल गिरजामें ! लेकिन नरक जानेसे पहले एक बार उसे देखूँगा। और हो सकता है कि अपने साथ लूक वॉल्डरको भी लेता जाऊं। शायद शैतान मुझसे यही करवाना चाहता है।"

उसने चारों ओर फैले दृश्यपर नजर दौड़ाई और सोचा कि वह दूरसे वार्नडेल गिरजाके किनारे लगे पेड़ोंको देख रहा था। सीमा उसके सामने ही थी। सामने ही, किन्तु कुछ बाईं ओरको ट्रेवेसम हॉल, एलिसिया नेविलका घर था। वह तेजीसे चलने लगा, लेकिन अब पहलेकी तरह सावधान और शंकाभरे कदमोंसे नहीं, बल्कि साहस भरे बेधड़क लम्बे डग भरता हुआ। और यह स्पष्ट था कि अब वह न तो ठोकरें खा रहा था न बर्फकी राशिमें धंस रहा था।

पेट्रिक जानता था कि अब उसे जिन्दगीकी राहके कुछ छोटे इंच ही चलने हैं; क्योंकि डक्रे रक्तका कोई भी मनुष्य बादामी कुत्तेके झपटनेके बाद चौबीस घण्टोंसे अधिक नहीं जिया था। एक हताश साहस उसके रक्तमें घर कर गया था। वह देखेगा

(अपूर्ण)

सुनहरी चिड़िया

सुनहरी चिड़िया

आसनके जंगलोंमें पहली बार सुनहरी चिड़िया फूलोंसे घिरी झाड़ीसे निकल कर लुइला की चुँधियायी आंखोंके सामने उड़ती हुई आयी थी। आसनका वन — खुला और अभेद्य, नर्तकियोंका गोपन स्थान, और मानव-कदमोंसे अपरिचित, नागों और अजगरोंके कुंडली मार कर बैठनेका स्थान, सिंह और चीते की मांद, भागते हिरण-का दुर्जेय आश्रय स्थान और साथ ही मानवके लिये सुरक्षित हरा भरा स्थान है जहां एक युवक और युवती ज्योत्स्नाभरी रातमें निश्चिंत होकर टहल सकते हैं और उदा-सीनता से कहीं दूर होनेवाले वनराजोंके कलहको सुन सकते हैं। सुनहरी चिड़ियाने मैत्रीपूर्ण और खुले स्थानोंमें पंख फड़फड़ाये थे किन्तु फिर भी वह आयी थी भय और रहस्योंके आश्रय-स्थानसे। मृत्यु और अन्धकारसे उड़कर वह उस जगह आयी जहां लुइला सूर्यालोकमें आनन्दसे इधर-उधर घूम रही थी।

लुइला को खतरेकी इन सीमाओंपर घूमना बहुत अच्छा लगता था, जहां फूलों-से घिरी झाड़ियां शुरू होती हैं और मीलोंतक कंटीली और उलझी हुई चहारदीवारी बनी हुई थी जो आकर्षक होनेके साथ-साथ डरावनी भी थी। उसने कभी अन्दर जानेका साहस न किया था, क्योंकि उसे कांटों और झरबेरियोंसे डर लगता था। उसमें अपने प्रफुल्ल सौन्दर्यके लिये गहरा आदरभाव था; वह सौन्दर्य उसकी अपनी निरंतर पूजा-का विषय और आसनके जंगलोंकी सीमाकी सहज और दयालु भूमिपर मेहनत करके कुछ देर इस धरतीपर वास करनेवाले मनुष्योंके लिये दैनिक आनन्द था। लेकिन वह हमेशा फूलोंकी दीवारके पास मटरगश्ती किया करती थी और उसका मन, अपनी ऐच्छिक अपार्थिवतामें सुरक्षित रहकर, बहुरंगी तितलीकी तरह इधर-उधर उड़ता हुआ उन निषिद्ध प्रदेशोंमें चला जाता था जिन्हें देवोंने इतनी सावधानीसे अलग रखा था। शायद वह गुप्त रूपसे आशा करती थी कि एक दिन फूलोंमें से कोई राजसी और सिंह सदृश सिर बाहर निकल आयगा और उसे मैत्रीपूर्ण और भव्य दृष्टिके निमंत्रणसे चलनेके लिये बाधित करेगा। या फिर किसी फूल पर आरामसे बैठे एक सांपका हरा और विषाक्त सिर अपनी सिकुड़ी आंखोंसे उसकी सूक्ष्म परीक्षा करेगा और धूर्ततासे उसके सौन्दर्यकी सराहना करेगा। सिंहों और सांपोंके भयसे लूइला गुप्त स्थानोंमें न जाती हो ऐसी बात न थी। वह जानती थी कि वह दुनियाके किसी भी विध्वंसक

जीवके — चाहे वह दृढ़ पैरों वाला हो या बिना पैरोंवाला , उसे खाने या डसनेका निश्चय करे उसके पहले, अगर लूइलाको तीन मिनट मिल जाएं तो वह हिंस्रसे हिंस्र संकल्प को भी ढीला कर सकती थी। किन्तु उन निश्चित स्थानोंसे न तो सिंह ही घूमते-भटकते आये और न सांप ही झाड़ियोंमें से सुनहरी चिड़िया सबसे पहले उड़कर लूइला-के सामने आयी थी।

लूइलाने एक डालसे दूसरी डालपर फुदकती चिड़ियाको देखा, और उसकी आंखें चौंधिया गयीं और उसकी आत्मा विस्मित हुई। क्योंकि चिड़ियाका नन्हा शरीर उड़ते और भागते सुवर्णकी अस्थिर लौ था और खुलते, फड़फड़ाते पंख एकदम सजीव सोनेके थे। उसके छोटे सुडौल सिरपर सोनेका चूड़ा था और लम्बी ललित कांपती दुम पंखदार सोनेको घसीट रही थी, आंखोंके सिवा चिड़ियाका सब कुछ सोनेका था और आंखें क्या थीं हमेशा बदलते रहनेवाले हल्के रंगोंके दो रत्न थे जो अपनी कोमल चमक-दमकमें प्रेमकी और विचारकी विचित्र दिखती गहराइयोंको आश्रय दे रहे थे। जिस डालपर वह बैठी थी, उसपर ऐसा लगता था मानों कोमल रंगोंके सभी पत्ते अचानक सूर्यके प्रकाशसे जगमगा उठे थे। जैसे ही लूइलाने अपनी आंखें सुनहरी चिड़ियाके फड़फड़ाते तेजको देखनेके लिये अभ्यस्त कर लीं, वैसे ही वह एक डालीपर मंडराई और बैठकर गाने लगी। और उसकी आवाज भी सुनहरी थी।

चिड़िया अपनी बहुत ही रहस्यमय भाषामें गा रही थी; किन्तु लूइलाके कान उसके विचार समझते जा रहे थे और लूइला की आत्मा सुननेके लिये तरस रही थी, और सुनते हुए आनन्दसे रोमांचित हो रही थी। गीतने आसानीसे अपने-आपको मानव-वाणीका रूप दे लिया था। चिड़ियाने जो गान गाया वह यह था — जो चिड़िया मृत्युकी रात्रिसे आई थी, उसने लूइलाको सौन्दर्य और आनन्दका गीत सुनाया।

लूइला! लूइला! लूइला! हरे भरे और सुन्दर हैं वे मैदान जहां बच्चे दौड़-भाग करते हैं और फूल चुनते हैं, हरे भरे और सुन्दर हैं वे चरागाह जहां शान्त आंखोंवाले पशु चरते हैं, गांवके छोरपर लहलहाते खेत हरे-भरे और सुन्दर हैं, लेकिन आसनके अभेद्य झाड़-झंखाड़ वहांके खुले जीवन-भरे मैदानोंसे भी अधिक हरे-भरे हैं। आसनके मैदानों और चरागाहों और गेहूँके खेतोंसे भी अधिक सुन्दर हैं मृत्यु और रातसे भरे उसके जंगल। कुछ लोगोंके लिये चीतेका खतरा बालकके आकर्षक मुखसे अधिक मोहक होता है, चरागाहोंमें भटकते सिंहके पद-चिह्न अधिक सुखद होते हैं, तथा पकते हुए गेहूँके खेतोंसे अधिक सुन्दर और फलदायक होते हैं कांटे और कंटीली झाड़ियां। और यह मैं जानती हूँ कि आसनके मैदानोंकी सुरक्षा और आराम-में खिलने वाले फूल भले पैरोंको गुदगुदे और अत्यन्त रमणीय लगें पर उनमें कोई भी

वैसा नहीं होता जैसे मैंने सुनसान दलदलके किनारोंपर, झरबेरीकी झाड़ियोंके बीचों-बीच और सांपकी बाम्बीके मुँहपर खिलते देखे हैं। उन वनोंमें क्या मैं तुझे, हे लूइला ! न ले चलूँ ? तुम वहां रात्रि और मृत्युके अरण्योंसे फूल चुनोगी, सिंहके केसरपर अपने हाथ फेरोगी।

हे लूइला ! हे लूइला ! हे लूइला !

पुस्तक-परिचय

मुक्तिदाता परसियस –– पहले वन्देमातरम्में क्रमशः छपा था (1907) उसके बाद यह 1942 में (Collected Poems and Plays) में प्रकाशित हुआ।

वासवदत्ता के कई रूप मिलते हैं। शायद अन्तिम रूप अप्रेल 1916 का है। यह पहले पहल 1957 में छपा था।

रोडोगुन –– श्रीअरविन्दके बड़ौदा-कालके अन्तिम दिनोंकी कृति है। इसपर फरवरी 1906 की तारीख पड़ी है। यह सबसे पहले 1958 में छपा था।

एरिक –– पांडिचेरीमें 1912 या 1913 में लिखा गया था। यह सबसे पहले 1960 में छपा था।

बसराके वजीर –– श्रीअरविन्दके बड़ौदा-कालकी कृति है। श्रीअरविन्दको शायद यह खासतौरपर प्रिय था। (Collected Poems and Plays) की भूमिकामें अपनी खोई हुई कृतियोंमें मेघदूतके अंग्रेजी अनुवादके साथ उन्होंने इसका भी जिक्र किया है। सौभाग्यवश इसकी पांडुलिपि अलीपुर अभियोगके कागजोंमें मिल गयी और यह सबसे पहले 1959 में प्रकाशित हुआ।

ईडरका राजकुमार –– 1907 में लिखा गया था जब श्रीअरविन्द राजनीतिक बवंडरके बीचमें थे। यह पूरा नहीं है, पांचकी जगह केवल तीन अंक प्राप्य हैं। **मथुरा-का राजकुमार** शायद इसीका पहला रूप था। इसके भी कुछ अंश ही मिलते हैं।

चक्कीघरकी कन्या और **ब्रूटका राजवंश** दोनों ही अपूर्ण नाटक बड़ौदाके प्रारम्भिक दिनोंकी रचनाएं हैं।

इलनीकी डाइन और **अकब और ऐसर हद्दान** –– इंग्लेंडमें लिखी हुई अपूर्ण कृतियां हैं। इलनीकी डाइन पर अक्तूबर 1891 की तारीख पड़ी है।

कहानियाँ -- **मायावी घड़ी, आबेलार्डका दरवाजा** और **शैतानका कुत्ता** –– जिनमें पिछली दो अपूर्ण हैं –– गुह्य जगत्-सम्बन्धी कहानी-योजनाके भाग मालूम होते हैं। सुनहरी चिड़िया प्रतीकात्मक कहानी है लेकिन यह भी अपूर्ण है। इसके बादकी कहानियां श्रीअरविन्दकी कविताओंके आधारपर हैं।